

गुजरात के संतों की हिन्दी साहित्य को देन

म० स० विश्वविद्यालय, बडोदा की पीएच डी उपाधि के लिये
स्वीकृत शोध प्रबंध

डॉ० रामकुमार गुप्त, एम ए पीएच डी
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
भारतीय विद्या भवन, डाकोर (गुजरात)

प्रकाशक

जवाहर पुस्तकालय, मथुरा.

प्रवागक

कु जबिहारीसात पचोरो एम काम

जवाहर पुस्तकालय

असकुडा बाजार मधुरा

*

लेखक

डा० रामकुमार गुप्त एम ए पीएच डी

*

सभी स्वत्व लेखकाधीन

*

मूल्य

बीस रुपया

*

मुद्रक-

ओमप्रकाश अग्रवाल

अज्ञाता फाइन आर्ट प्रिन्टर्स,

हनुमान गली मधुरा

स्वर्गीय पूज्य—

माता पिता को

जिनकी आँखें—

प्रस्तुत प्रबन्ध को,

इस रूप में देखने के लिए,

अ त तक जालायित रहें ।

—रामकुमार गुप्त

अब न कला चलत नर ज्ञानी ।
जमेहि नाव हिर फिर दसा दिश
ध्रुव तारे पर रहत निशानी ॥ध्रुव०॥

चलन बलन अबनी पर बाकी
मन की सुरत अकाश ठहरानी ।
तत्त्व समास भयो है स्वत तर
जस हिम हात है पानी ॥अकल०॥१॥

छुपी आदि अन त न पायो
आइ न सकत जहा मन बानी ।
ता घर स्थिता भई है जिनकी
वही न जात ऐसी अकथ कहानी ॥अकल०॥२॥

अजब बल अद्भुत अनुपम है
जाकू है पहचान पुराना ।
गगनहि गव भया नर बोल
एहि अखा जानत कोई पानी ॥अकल०॥३॥

—अखा

प्राग्वचन

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जायगा कि इस काल में अन्तिम दो भाषा प्रदेशों के अनुसंधितमुखा के द्वारा भी अनवरत नवीन एवं मौलिक विषयों पर गद्य प्रवृत्ति प्रस्तुत किया गया है। इन प्रवृत्तियों में मुख्यतः तुलनात्मक है और कुछ शारीरिक। क्षयाप अनुसंधान स्वातंत्र्योत्तर गद्य की एक नई एवं विविध विधा है। इसमें किसी मुनिश्चित क्षेत्र की अज्ञान के अनुपलब्ध साहित्य संपत्ति का गवेषणा की जाती है। हमारे देश की स्वातंत्र्योत्तर परिस्थितियाँ न जिस प्रकार मृजलगीन मानसिकता का उदय दाम, कहानी आदि विधाओं में अज्ञानाभिमुख हान को प्रेरणा का उमी प्रकार गद्यविधा का ध्यान भी उपरिष्ठ क्षेत्रों का आरंभ आरंभित किया। इस अज्ञानाभिमुख दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप हिन्दी का बहुत सा अज्ञान एवं अनुपलब्ध साहित्य प्रकाश में आया। पंजाब बंगाल महाराष्ट्र एवं गुजरात आदि अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हुए क्षेत्रीय गद्य-काव्य का विगण महत्त्व इस लिए है कि उनमें अज्ञान की सावधानिक व्याप्ति के प्रमाण समुपलब्ध हुए हैं और गद्य के नये क्षितिज प्रकाश में आये हैं।

गुजरात के हिन्दी भाषी कवियों तथा उनकी हिन्दी कृतियों का गद्य क्षेत्र पर पड़ना प्रवृत्ति गुजरात की हिन्दी समाज नाम से राज्यस्थान विश्व विद्यालय में मई १९७७ में प्रस्तुत हुआ। उसके पश्चात् गुजरात की गद्य संपत्ति साहित्य संपत्ति को गवेषणा करने में जो कतिपय गद्यार्थी प्रवृत्त हुए डा० रामकुमार गुप्त उन्हीं में से एक महिष्ठ संपादक हैं। उन्होंने मर निर्देशन में बड़े ही परिश्रम एवं अध्ययनार्थक साय गुजरात के महत् कवियों पर गद्य काय किया है। पूर्ववर्ती गद्यविधा द्वारा किए गए अनन्त विषयक काय का उन्होंने निश्चय ही आरंभ बनाया है। परन्तु यह भी इस काय का अर्थ है कि नही। इस विधा में अभी बहुत कुछ करना बाक है। पूर्ववर्ती गद्यार्थी जब एक एक कवि और कृति पर गद्य-काव्य प्रस्तुत करेंगे तब तभी इस काय की पूर्णाहुति मानी जायगी। मर विचार में तो गद्य प्रक्रिया पताका दौड़ के सदृश है। पताका लकर दौड़ने वाले प्रतिस्पर्धी का भाँति गोपार्थी भी मुनिश्चित गतव्य तक पहुँचकर गद्य की पताका दूसरे गद्यार्थी के हाथ में सौंप देता है दूसरा गद्यार्थी फिर नई शक्ति एवं उत्साह के साथ

अकल कला खलत नर ज्ञानी ।
जसेहि नाव हिर फिर दसा दिश,
ध्रुव तारे पर रहत निशानी ॥ध्रुव०॥

चलन बलन अबनी पर वाकी,
मन की सुरत अकाश ठहरानी ।
तत्त्व समास भयो है स्वत तर
जस हिम हात है पानी ॥अकल०॥१॥

छुपी आदि जन त न पायो
आइ न सकत जहा मन दानी ।
ता घर स्थिती भई है जिनकी
वही न जात एसी अकथ कहानी ॥अकल०॥२॥

अजब खेल अद्भुत अनुपम है
जाकू है पहचान पुरानी ।
गगनहि गव भया नर बोले
एहि 'अखा जानत कोइ पानी ॥अकल॥३॥

—अखा

प्राग्बचन

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी गाय पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जायगा कि इस काल में अहिन्दी भाषी प्रयोगों के अनुसंधानसुआ के द्वारा भी अनेक नवीन एवं मौलिक विषयों पर गाय प्रबन्ध प्रस्तुत किये गये हैं। इन प्रबन्धों में कुछ तो तुलनात्मक हैं और कुछ शैलीय। क्षयाय अनुसंधान स्वातन्त्र्योत्तर गाय की एक नई एवं विविध विधा है। इसमें किसी मुनिश्चित क्षेत्र का अज्ञात व अनुपलब्ध साहित्य संपदा का खोजपट्टा की जाती है। हमारे देश की स्वातन्त्र्योत्तर परिस्थितियाँ न जिस प्रकार मृज्जन्शील साहित्यकारों का उत्साह, कहानी आदि विधाओं में अचनाभिमुख होने की प्रेरणा का उसा प्रकार गोधारियों का ध्यान भी उपेक्षित क्षेत्रों की ओर आकर्षित किया। इन क्षेत्राभिमुख दृष्टिकोण के परिणामस्वरूप हिन्दी का बहुत सा अज्ञात एवं अनुपलब्ध साहित्य प्रकाश में आया। पंजाब बंगाल महाराष्ट्र एवं गुजरात आदि अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हुए क्षेत्रीय गाय-काया का विनायक महकाम्य लिए है कि उनमें हिन्दी की सावदेशिक व्याप्तिके प्रमाण समुपलब्ध हुए हैं और गाय के नये क्षितिज प्रकाश में आये हैं।

गुजरात के हिन्दी सभी कवियों तथा उनकी हिन्दी कृतियों की गाय खोज पर पहला प्रबन्ध गुजरात की हिन्दी सेवा नाम से राजस्थान विश्वविद्यालय में सन् १९५७ में प्रस्तुत हुआ। उसके पश्चात् गुजरात का न्यम महाय साहित्य संपदा की खोजपट्टा करने में जो क्षितिपथ गायार्थी प्रवृत्त हुए, डा० रामकुमार गुप्त उहाँ में से एक सप्रिय संगोधक हैं। उन्होंने मर निदेशन में बड़े ही परिश्रम एवं अध्यवसाय के साथ गुजरात के सप्त कवियों पर गाय काय किया है। पूर्ववर्ती गायार्थियों द्वारा किए गये एतद् क्षितिपथ काय का उन्होंने निश्चय ही आगे बढ़ाया है। पर यह भी इस काय का अर्थ ही है शक्ति नहीं। इस शिष्टा में अभी बहुत कुछ करना शेष है। पूर्ववर्ती गायार्थी जब एक एक कवि और कृति पर गाय काय प्रस्तुत करके वस्तुन तभी इस काय की पूर्णशक्ति मानी जायगी। मर विचार से तो गाय प्रक्रिया पताका शीट के सहज है। पताका लेकर दोढ़ने वाले प्रतिस्पर्धी की भाँति गायार्थी भी मुनिश्चित गतव्य तक पहुँचकर शोध की पताका दूसरे गायार्थी के हाथ में सौंप देता है दूसरा गायार्थी फिर नई शक्ति एवं उत्साह के साथ

अपने मुनिचित गतव्य की ओर बढ़ना है। मरणापेक्षा प्रक्रिया के विकास का स्वस्थ एवं सुव्यवस्थित प्रणाली तो नहीं है क्योंकि एक ही व्यक्ति किंवा व्यापक विषय का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत कर, यह न तो मभव है और न वाछनीय है।

प्रस्तुत अध्ययन न सत साहित्य का समज्ञान के लिए एक नया परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया है। इसमें इस बात की पुष्टि हुई है कि सभी सत एक ही ज्ञान गुण्डी के धाग हैं। जो नामदेव है वही कबीर है वही नानक और अखा भी वही है। मध्यकाल में सारंग म ज्ञान गुण्डा सिद्धी थी। छोटे स छोटे गाँव में भी ज्ञान गुण्डा का कार्य न कोई रत्न अवश्य विद्यमान था। कुरान में कहा गया है, एक भी गाँव ऐसा नहीं जहाँ खुदा की तरफ स खबरदार करने वाला न भेजा गया हो—

व इम्मिन उम्मिन इल्ला खलाफीहा नजीदन

कुरान (३५ ३ २४)

खुदा की तरफ स खबरदार करने के लिए भेजे गये समाज के इन मजबूत प्रहरियों के व्यक्तित्व भी विचक्षण थे। उनके जीवन सब धी तथ्यों का अनुशीलन करने पर विदित हुआ कि इनमें स कितने ही सत साधारण से आध्यात्मिक परिवार त्यागकर विरक्त हुए थे। सत त्रिविक्रमानन्द जिन मडप में पुरोहित के मावधान में रहने पर भाग छोड़े हुए और विरक्त हो गए। सत मूलतः दावानि में चाटिया का जलता देखकर जीवन की नश्वरता से अभिभूत हो उठे। अग्रा प्रायः धीरा आदि महात्मा अपनी भार्याओं के कर्ण स्वभाव एवं मर्म मर्वाधिया के दुर्व्यवहार में सतत हाँकर श्वरा-मुख हुए।

य सभी बीतरागी महात्मा परोपकारा थे। लाकसवा हा जैसे उनके व्रत था। कच्छ के मत्त मकण दास रगिस्तान के प्यास पथिका का पाना पिनात थे। सत मारार भूखा का भाजन दन के लिए कंध पर कावड रखकर घूमन थे। सत शवानन्द जलाराम आदि न गरीबों के लिए अन्न उप शोध रखे थे।

इनमें स कुछ महात्मा सिद्ध एवं चमत्कारा पुरप भा थे। अपने कमहन में स सबका व्यक्तिया का भाजन करा देना कए में हाथ डाल कर कमहन में पाना भरना सरावर में चादर बिछाकर मा जाना खड़ाक पहनकर ताबाब का सतह पर स सटासत पार जतर जाना, मृतप्राणा की

जीवित कर देना—गम चमत्कार है जिन पर विनाश व युग म महमा विनाश
 नहा हाता । किन्तु यह एतिहासिक सत्य है कि जिन म जिन न मता न
 सामूहिक रूप म जीवित ममाधिगै लकर दह को नश्वरता और आत्मा को
 अमरता प्रमाणित की है । इन महात्माओं का योगाधार जिन क्षत्र म अमर
 हो गई है ।

जावन की तरह जिन मता का वचन (वृत्तित्व) भी विनश्वर है । य
 महात्मा गगन का दाहन करके दूध पीने वान श्वानुभवो मत थ । जिन
 दरिया म टुबका नगाकर राम रतन का दूधने वाल मरजीवा थ । ममम्पन
 पर ताककर तीर मारन वाल मच्च ममत्रधा मूरमा थ । सभी निष्काम
 निस्पृह एव निभय महात्मा थे फिर जिनका वाणी विनक्षण कम न हानी ?

मध्यकाल म जन विपत्तिया का शवानन घषक रहा था तब जिन क
 मनत हृत्प पर सतवाग्य का सुख बौद्धार हुई थी । अय प्राता का भक्ति
 महान घटा गुजरात म भा उमरा धुमरा और धरमी । जिन क्षत्र क तादुर
 मयूरा न भी मुखर हाकर आत्मा का उत्लाम यक्त किया । यह दृष्ट्य है कि
 यज आत्मालनाम प्राय मत टक्मान का मधमुनभ मधुक्कडो गणा म हा
 प्रम्पृथित हुआ । आज हिन्द का भारतव्यापा हान का जा शौरक प्राप्त है
 उमका वाम्नात्रिक श्रध मत टक्साल का हो है । जिन टक्मान का प्रत्यन
 गद अनर्फी है । उस जिन के एक छार म दूमर छार तब जहाँ ज्ञान
 मुनाता । क्या विषय क्या भाषा और क्या कथन का भगिमा, नभा हिन्दिया
 म गुजरात का तत साहित्य भारतीय मत साहित्य का एक अभिध बडी
 और राष्ट्र की अमूल्य सपना है ।

सत साहित्य आत्मा का अलौकिक सङ्गीत है जिनका मूल्यावन
 साहित्य एव कता क सामाजिक निकष पर करना उमक माध धार अयाम
 करता है । जो नाग एसा कर रहे हैं व कचन परखन की बमोटा पर परिणाम
 का मूल्यावन करने की अनधिकार चष्टा कर रहे हैं । सत दादूत्याल न
 एम हा पारलिया को नश्य करके कहा था बत पारित पधि मुय कीमत कहा
 न जाय । इन अमूल्य रत्ना का मूरपावन हा भी ता कस ? भाषा छत्र,
 अलकार आदि अभियक्ति के जिन उपकरणों क आधार पर सतवाणी का
 परवा जा रहा है, सन्ता न उह कभी महत्व नही दिया । गुजरात के मत
 अथा न तो स्पष्ट कहा है, 'अरे मूखों, भाषा स क्यों चिपट हुए हा ? हृषिया

की तरह भाषा तो एक साधनमात्र है। रंग म विजयी हान वाता गुरवीर
क्याता है वह किम हथियार स विजया हुआ इमका कोइ महत्व नही।
यथा—

भाषा ने शु बलगे घुर जे रणमा जोते ते गुर।

तात्पर्य यह कि मूल्यांकन करते समय सतवाणी व प्रतिपाद्य पर दृष्टि
रखनी होगी। महात्मा कबीर ने ठीक ही कहा है मान करो तलवार का
पना रहन दो म्यान। अथ वभव एव गुणवत्ता की दृष्टि में खेलन पर जनगण
मत-वाणी निश्चय ही ऊँचे घाट की सिद्ध होगा। म-मकीनन को अब मैं
गान्धामी नुनसीनास जी व न गथा व माय समाप्त करना चाहूंगा—

बिधि हरि हर कधि कोबिद बानी कहत साधु महिमा सकुचानी।
सो भो सन कहि जात न कसैं साक बनिक मनि गुन गन जसैं ॥

अत म डा० रामकमार गुप्त व प्रति गुभांगमा व्यक्त करना भी मैं
अपना कतय समझता हूँ। उन्होंने गुजरात व सत साहित्य का गवपणा एक
जागृक अनुसंधित्मु की तरह की है। तथ्या का सकलन नियोजन कवि
जयवा वृत्तियों का अवलाकन विवचन तथा प्रवध का विभाजन निवधन मभा
बाय उहाने गोधार्यो का मुनिश्चिन मामा म रहकर किय हैं। एक मातापोर
का तरह गत्र पानी पठकर उहान मोता बटार हैं पर मुद्री म आय प्रत्यन
पनाथ का अमूय रत्न समभन का दावा उहान कभी नपा किया।
यह तटस्थ एव वस्तुनक्षा गाथ दृष्टि हा उनका सबसे ध्यान पात्र विगपता है
मुझे विश्वास है हि ना जगन उनक गाथ प्रवध का समुचिन आदर करगा।

अम्दाशकर नागर

रामनवमी सवत २०२४

रात्र व अध्ययन हिन्दी विभाग
गुजरात मुनिवर्मिटी अहमदाबाद

दो शब्द

श्रद्धेय डा० अम्बागकर नागर एम ए पीएच डी (रीडर तथा अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गुजरात युनिवर्सिटी) द्वारा निर्देशित यह अध्ययन हिन्दी साहित्य का गुजरात के सत कविता की दा' अधिनियम के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

भारतीय साहित्य क्षेत्र में मना का योगदान तो अपूर्व है ही साम्प्रतिक नेता के रूप में भी इनका स्थान अग्रिम है। भावात्मक एकता का जो प्रयास आज देश के नेताओं द्वारा हो रहा है तो पाँच शताब्दी के वही प्रयास इस देश के सत्ता द्वारा होता आया है। कहते लौकिक राग रग से विरक्त हान हुए भी 'वमुधक कुटुम्बकम्' की भावना को साधना की भूमि पर परलवित किया। सत्ता का यह साम्प्रतिक आन्दोलन अविनाशनीय है। भाव जगत के सत्ता सांस्कृतिक नेताओं का वाणी जो विक्रम की २० की शताब्दी के अन्तिम चरण तक साहित्यिक दृष्टि में उपेक्षित रही पिछले पाँच दशकों में नव प्रवाण में नान का पादचात्य एक भारतीय मनीषिया न श्रुत्य प्रयत्न किया है। इन चानिया के प्रवाण में विविध दृष्टि शिद्दुजा की लकर इनके आलोचनात्मक अध्ययन का विशेष गति मिला है। इस क्षेत्र में अब तक साधारण्य में अनेक यशस्वीतक गमशिमूतक तथा तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किए हैं। फिर भी क्षत्रीय अध्ययन का दृष्टि में शोधवाय की जावश्यकता अब भी बनी हुई है। भारतीय सत्ता साहित्य में एम अनक अनमोन रत्न भरे पत्र हैं जो अब तक उपेक्षित रह हैं। कुछ तो एम हैं जिन्हें कबीर जी मृत्तरदाम जस मना का काशि में बिटाया जा सकता है। देश भाषा में य भन ही परिचिन एव पूव रह हा किन्तु हिन्दी का समस्त निगुण वाव्यधारा में सम्भवत उच्च भुनाया गया है।

आज जबकि हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप पर विचारकर उस पापक वनान का अथक धर्म उठाया जा रहा है तथा अहिंसे क्षत्रा में शिना के प्रचार एवं प्रसार में अगणित हिन्दी प्रेमा मस्याओं एवं प्रयास सलग्न हैं शिना का अपनी वाणी का माध्यम प्रना वात सन धन्याय मना की उपेक्षा कर कर्नातिन हम अपने नक्ष्य तब पदुवन में सपन नहा हा मवग। हिन्दी का घर घर अन्तर्जगान वात गुजरात के इन मना का वाणी वस्तुतः भारतव्यापी सत्ता परम्परा की ही एक अविच्छेद्य कड़ा है। क्षत्रीय अध्ययन की दृष्टि से इस प्रकार के महत्व का स्वीकार कर्त हुए प्रस्तुत अनुसंधान का

प्रतिपाद्य विषय है—गुजरात क सत्ता की हिन्दी वाणी का अनुगानन और उसकी उपलब्धियाँ। इस दिशा में अब तक जा काय हुआ है यह प्रायः गवपणात्मक ही विचार रहा। पूर्ववर्ती गान्धाधिया द्वारा किया गया काय क महत्त्व को स्वीकार करते हुए मैं इस दिशा में कुछ आग बत्तन का प्रयत्न किया है। मैं इस एतद् विषयक शोध का पूरा विराम नहीं कहना। साहित्य क विविध मानदंडों की कमीटी पर सत्ता की उपलब्ध हिन्दी-वाणी का मूल्यांकन इस दिशा का प्रथम मौखिक एवं विनम्र प्रयास है।

प्रस्तुत अधिनिबंध सुविधा का दृष्टि से सत परिच्छेदों में विभक्त है। इनक अतिरिक्त विषय प्रवण क अतगत सामग्री सञ्चन के सूत्रों का परिचय देन हुए विषय का स्पष्टीकरण करके उसका मर्यादा निश्चित की गया है।

प्रथम परिच्छेद में गुजरात की ज्ञानमार्गी गान्धा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गयी है। उत्तर के समस्त धार्मिक एवं राजनीतिक प्रवाहों में प्रभावित होने हुए भा गुजरात का ज्ञानमार्गी धारा की कुछ निजा प्रेरक परिस्थितियाँ रही हैं जिन्हें प्रस्तुत करने का प्रयत्न इस परिच्छेद में किया गया है।

द्वितीय परिच्छेद में गुजरात क प्रमुख सत्त सम्प्रदायों का अध्ययन किया गया है। वधएक जन तथा स्वामानारायण सम्प्रदायों का सतमन स मीधा सम्बंध न होने क कारण उनका अध्ययन इस प्रबंध में नहीं किया जा सका। सत सम्प्रदायों में भा जिन छोटे भा सम्प्रदायों का काइ निश्चित परम्परा उपनय नहीं शतों और जिनक कविया का हिन्दी वाणी भा अप्राप्य है उन्हें इस अध्ययन क अतगत नहीं लिया जा सका।

तृतीय परिच्छेद क अतगत इस अक्षर क तमभग ८५ सत्ता का अधिवृत्त जीवन तथा उनक कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। क्षत्राय गवपणा की दृष्टि में प्रस्तुत अधिनिबंध में यद्यपि छान् बड़े २०० स उपर मन्त्रों का उल्लेख हुआ है जिनका एक तात्रिका परिशिष्ट में जोड़ दा गयी है। य मभा मन एम हैं जिन्होंने गुजरातों क साथ साथ हिन्दी में भा लिखा है। जिन मन्त्रों न बचन गुजरातों में ही रचनाएँ की हैं उन्हें यहाँ सम्मिलित नहीं किया जा सका। समभव है गुजरात क अनक उच्चकाटि क सत विषय की मामा क अन्तर्गत न आने क कारण छूट भा गये ह। आनाय्य मन्त्रों का मूलाक्षर भा उनका उपनय हिन्दी वाणी क आधार पर ही किया गया है। अन्तर्गत भा सम्भव है कि किमा मन्त्रों का गुजरातों में उच्चकाटि का स्थान

हाने पर भा हिंदी वाणी के अध्ययन क आवार पर उस हिन्दी कवि के रूप म उतना महत्त्व न भिन सका हा । इसी प्रकार गुजराती म सामान्य स्थान प्राप्त कवि भी यदि हिंदी म उच्चकांति की रचनाएँ करता पाया गया है ता उसे ऊचा स्थान पान का अधिकारी समझा गया है ।

चतुर्थ परिच्छेद म गुजरात के हिंदी सभी सत्ता की दार्शनिक विचार धारा का अध्ययन किया गया है । जद्वत के उपासक इन सत्ता की साधना जहा एक ओर जाचाय गौडपाद के अजातवाद तथा शंकराचाय के मायावात् स प्रभावित है वहाँ दूसरी ओर प्राणनाथ जैसे सत्ता पर भा रामानुजाचाय क विगिष्टाद्वत तथा अखा जस ज्ञानी सत्ता पर सूफी प्रेम माग का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित हाता है । तात्पर्य यह कि इन सत्ता पर विभिन्न दशन पद्धतियो का प्रभाव बताते हुए उनकी सद्धातिक विचारधारा एव भक्ति साधना का अध्ययन प्रस्तुत परिच्छेद के अंतगत किया गया है ।

पंचम परिच्छेद म साहित्य क विविध मानदण्डा के आधार पर गुजरात की हिंदी सतवाणी का मूल्यांकन किया गया है । यह सच है कि सत्ता का काव्य साहित्य की कसौटी पर पूरी तरह खरा नहीं उतर सकता । उमे उम तरह कसा भा नहीं जा सकता क्याकि सत्ता का लक्ष्य न ता काव्य परम्परा म रहकर कविता करना था और न उस प्रकार का नाताजन हा उहान किया था । फिर भी हृत्य एव अनुभव की प्रयोगशाला म बठकर उहाने जो अभिव्यक्ति की उस म महज भावेन प्रतीक छंद अकार संगीत रम आदि की अवतारणा हुड है । पंचम का अधिकांश साहित्य यद्यपि नागनिकता स बोधिल जवश्य है तथापि सत साहित्य का क रागात्मक भ्रम जा सिद्धांत नीति अयत्ना उपदंग क अंतगत नहा आना निश्चय ही साहित्य की कांति म स्थान पान याग्य है । काव्यत्व की दृष्टि स गुजरात की हिन्दी सतवाणी क ऐसे ही बुद्ध भ्रमा को प्रस्तुत करन का प्रयत्न नम परिच्छेद म किया गया है ।

षष्ठ परिच्छेद म गुजरात क सत्ता द्वारा प्रयुक्त विविध काव्य प्रकार का परिचय किया गया है । साम्बा पद और रमनी क अतिरिक्त इन सत्ता न चारहमासी गरबी गरबा कववा घाल आरता जवडी नावणा होरी और गजल जाति मुक्तक काव्य रूपा तथा चरित् मसनवा गीता गात्री जीर बडवा आदि प्रबंध काव्य रूपा का प्रयोग किया है ।

सप्तम परिच्छेद क अंतगत प्रतिपाद्य विषय का उपलब्धिया पर विचार किया गया है । अर्थात् गुजरात क इन सत्ता की भावा साहित्य

एव मन्त्रिणी की दृष्टि से हिन्दी को जा देन है उमका निष्कप यहाँ प्रस्तुत किया गया है । परिगिष्ट क अतगत हिन्दी मवा सत कवियों का नामावली गुजराता सता तारा रचित हिन्दी ग्रन्था का सूची पारिभाषिक गणना तथा सदभ ग्रन्थ सूचा जाड दी गयी है ।

अत म पूय नागरजा क प्रति में अपना हार्त्तिक कृतनता चापिन करता हू जिहान प्रस्तुत प्रव ध क निर्माण म निरन्तर तान वष का अथक प्रम ता उगाया हा है एमक पश्चात् भी डा० साहब न ग्रन्थ क मद्रान एव परिवधन म मुझे महत्वपूर्ण मुभाव पिय हैं । अत्यत व्यम्न रहन हुए भी उहान इस विषय की आधिनारिक भूमिका लिपकर ग्रन्थ का गरिमा का ओग ना यथा दिया है । एतन्थ में उनका जितना भी आभार मान था है । आचार्य कुवर चन्द्रकागमिह आचार्य विनय मोहन गर्मा डा० कन्हैयानाथ मुगा तथा जय गुरुजना क प्रति नवक ह्य स आभारा है जिनक अपूव मुभावा जीर मुभागापा म वह सदब ताभावित हाता रहा है । माथ ही, नवक न अपन विषय की उपायता म जिन विद्वाना की कृतिया का लाभ उठाया है उन सभा क प्रति वह अपना कृतनता चापिन करता है ।

म म वि विद्यालय बडोदा न प्रस्तुत गोध क प्रकाशन का स्वाकृति प्रदान कर मुभ पर मन्ता अनुकम्पा का है । मैं विविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री जुत्सी साहय तथा उप्पुटी रजिस्ट्रार श्री अमीन साहब का ह्य स आभारा हू जिहान जय स रति तक इस काय का सम्पन्नता म अपना अपूव याग पिया है ।

प्रस्तुत गाय प्रवध हिन्दी साहित्य का गुजरात क सत कवियों की दन नाम म पा एचडा क लिए प्रस्तुत किया था पर वा म अपने अभिन्न मित्रा का मन्त्राह पर एम गुजरात क सता की हिन्दी साहित्य का दन कर पिया गया है ।

जवाहर पुस्तकालय मधुरा न एम ग्रन्थ क प्रकाशन की सम्पूर्ण जिम्मनारा उगाकर अपना अपूव आत्मीयता का परिचय पिया है । मैं श्री कानरनाथ पचौरा तथा उनक सुपुत्र श्री कजविहारीनाथ का अत्यत आभारा हू जिहाने ग्रन्थ का साज सजा म अपना पूरी शक्ति लगाकर उन य आकार पिया है ।

अनुक्रमशिका

विषय प्रवेश

पृष्ठ १७ से ३२

- १ सामग्री सङ्कलन के सूत्र (अ) सतवाणी सग्रह । (ब) जालोचनात्मक सामग्री ।
- २ एतद विषयक शोध काय का विहंगावलोकन (अ) गवेषणात्मक गाथ काय । (ब) तुलनात्मक शोध काय ।
- ३ प्रेरणा एव महत्त्व
- ४ विषय का स्पष्टीकरण एव उसकी सीमाएँ (अ) पथ, प्रणानिका और सम्प्रदाय । (ब) 'सत' गण का व्याख्या । (स) गुजराती सत कवि का व्याख्या । (द) गुजरात गुजराती एव हिन्दी स—हमारा सात्पय । (य) हिन्दी तथा गुजराती की निकटता—एव पारस्परिक सम्बन्ध । (र) काल निर्णय ।

प्रथम परिच्छेद

पृष्ठ ३३ से ५०

गुजरात की ज्ञानमार्गी धारा की पृष्ठभूमि

भारतीय सत परम्परा की एक अभिन्न कड़ी

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

- | | |
|-----------------|--------------------|
| १ हिन्दू शासन । | २ मुसलमान-युग । |
| ३ शासित काल । | ४ सक्रांति-ज्ञान । |

सामाजिक एव धार्मिक पृष्ठभूमि

- १ कठोर सामाजिक एव धार्मिक व धन ।
आ त्रिक प्रभाव । जनमत का प्रभाव ।
वपुणव धम का प्रभाव । स्वामीनारायण सम्प्रदाय ।
- २ उत्तर तथा दक्षिण भारत के सत्ता का सम्पक एव प्रभाव
(बाह्य प्रभाव)
- ३ परिस्थितिजन्य ब्यक्तिक प्रभाव ।

द्वितीय परिच्छेद

पृष्ठ ५१ से ८२

गुजरात के प्रमुख सत सम्प्रदाय

- १ गव शासित साधना एव गारख-पथ ।
- २ महानुभाव अथवा अच्युत सम्प्रदाय ।
- ३ रामानन्द सम्प्रदाय ।
- ४ कवीर पथ ।

अ राम कवारिया पथ । व सत कवीश्या पथ ।
स निर्वाण साह्य का परम्परा ।

५ दादू-पथ । ६ प्रणामी-पथ । ७ सूफी सम्प्रदाय ।

८ दत्त सम्प्रदाय । ९ रामसनेही सम्प्रदाय ।

१० अथ सम्प्रदाय —

- | | |
|----------------------------|------------------------|
| (अ) अन्ना प्रणालिका । | (ब) निरात सम्प्रदाय । |
| (म) कुंजर-पथ । | (द) ब्रह्मचारी-आश्रम । |
| (य) श्रय साधक अधिकारी बग । | |

तृतीय परिच्छेद

पृष्ठ ८३ से २०७

गुजरात के प्रमुख सत कवि जीवन और कृतित्व

१ प्रस्तावना कालीन सत कवि (स० १२५० से १५५०)

चक्रधर, कबीर साह्य नरसी मेहता पीपा रोहीदास (रदाम)
मारीवाई गल बहाउदान बाभन काजा महमूद दरियायी माडण ।

२ मध्यकालीन सत-कवि (१५५० से १६००)

पूर्वकाल (स० १५५० से १७५०) हाराणास समथदाम गाह
अलागाम धनी माधवनाम दादूनाम प्यारेदाम गानी कवि अन्ना नरहरि
गापावदाम नावनाम प्राणनाथ मुकुण्ठास माहम्मद अमीन नायभवान
(अनुभवानंद) वृश्या तथा अथ ।

उत्तर मध्यकाल (स० १७५० से १९००) भागसाह्य कृष्णनाम
मदननाम दान दरवण हाणिम अनी रविसाह्य दवामाह्य खाममाह्य
प्राणनाम धारा श्रावममाह्य मोरारमाह्य गवरीवाई केवलपुरा
त्रिविक्रमाना सत निमनाम वस्ता विन्वम्भर कुवरनाम निरात सत
हाया जावरनाम दामाजीवण वापुमाना गायकवाण भोजा मनोहरनाम
(मन्त्रिनाम) जीनामुनि नारायण कल्याणनास रसीननाम मतगाम
मन्तराज नभू छोटम सत महात्मयराम अनवर तथा अथ ।

चतुर्थ परिच्छेद

पृष्ठ २०६ से २५६

गुजरात के सत कवियों की दार्शनिक विचारधारा

- पृष्ठसि १ अन्त वदनात और उत्तका प्रभाव
आचाय गोहपाण और उनका अज्ञानवाण ।
धा गवराचाय तथा उनका अन्तवाण ।
- २ विनिहान्तवाद और उत्तका प्रभाव

- ३ सूफी साधना और उसका प्रभाव
४ सांख्य, योग तथा गीता का प्रभाव

हिन्दी त पक्ष

- १ ब्रह्म निरूपण । २ जाव निरूपण ।
३ माया निरूपण । ४ जगत निरूपण ।

साधना पक्ष भक्ति और ज्ञान । भक्ति का स्वरूप ।
भक्ति की विशेषताएँ । भक्ति के साधन और निष्पत्ति ।

पञ्चम परिच्छेद

पृष्ठ २५७ से ३२६

गुजरान के स तो की हि दी वाणी साहित्यिक मूल्यांकन

वर्ण्य विषय

१ आध्यात्मिक वर्ण्य विषय

- १ सृजनात्मक । २ ध्वसात्मक ।

२ सामाजिक वर्ण्य विषय

- १ राजनीतिक व्यवस्था । २ धार्मिक व्यवस्था ।
३ वर्ण भेद । ४ नारी भावना ।
५ आर्थिक जीवन । ६ मनोरंजन एवं आमात्र प्रमाण के साधन ।

प्रतीक प्रधान १ पारिभाषिक प्रतीक । २ भावात्मक प्रतीक ।

भाषा भाषा के विविध प्रयोग

ब्रजभाषा पड़ी बोली, फारसी उर्दू राजस्थानी पंजाबी सिन्धी,
बच्छी मराठी गुजराती और भूजरी ।

विगिष्ट शब्द प्रयोग

विगिष्ट कारक रूप

विगिष्ट अर्थ्य रूप

विगिष्ट क्रिया-रूप

शब्द विकार अथवा ध्वनि परिवर्तन

मुहावरे और कहावतें
निष्पत्ति

अलङ्कार

रूपक दृष्टान्त, उदाहरण उपमा, विभावना अनुप्रास अयान्ति
भ्रान्तिमान निदाना यमक श्लेष, सम लोकोक्ति, वीर्या, अतिशयोक्ति
तथा अन्य अलङ्कार ।

छन्द दोहा चौपाई कुडलिया, छप्पय, हरिगीतिका मयया घनाधरी
(कवित्त)

रस भक्ति रम, गा त रस अद्भुत रस, वीर रम हास्य रम वीभरम रस
निष्कप ।

सगीत आन्तरिक सगीत बाह्य सगीत ।

पद्य परिच्छेद

पृष्ठ ३२७ से ३४६

गुजरात के सत्ता द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट काव्य प्रकार

प्रबन्ध रचनाएँ

- | | |
|----------------------------|----------------|
| १ आख्यान अथवा चरित काव्य । | २ ममनवी । |
| ३ कडवा तथा ऊयनो । | ४ गोथी (सवान्) |
| ५ गीता । | |

मुक्तक रचनाएँ

- | | | |
|----------------------|---------------------|------------|
| १ माथी । | २ रमनी । | ३ पत् । |
| ४ वारमानी (वारहमासी) | ५ गरवी गरवा । | |
| ६ कक्का । | ७ धान अथवा मगनगात । | ८ आगती । |
| ९ लावणी । | १० हारा । | ११ छप्पा । |
| १२ जकनी । | १३ गजन । | |

सप्तम् परिच्छेद

पृष्ठ ३४७ से ३५६

उपमहार

गुजरात के हिंदी सेवी सत्तों की देन

- | | | |
|-------------|---------------|----------------|
| १ भाषाकीय । | २ साहित्यिक । | ३ साम्प्रतिक । |
|-------------|---------------|----------------|

परिणिष्ट

पृष्ठ ३६१ से ३८३

- | |
|---|
| १ गुजरात सत्ता द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक गणना । |
| २ गुजरात के हिन्दी सेवी सत्ता की नामावली । |
| गुजरात के सत्त-कविता द्वारा लिखित हिन्दी ग्रन्थ । |
| ४ सप्तम ग्रन्थ सूचा — हिन्दी गुजरात सप्तमेजा । |

विषय-प्रवेश

१ सामग्री सकलन के सूत्र—

गुजरात की पानमागी-परम्परा का अध्ययन करने के लिए उपलब्ध सामग्री को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं —

अ सन्तवाणी-सग्रह प्रकाशित एवं अप्रकाशित
 व आनाचनात्मक सामग्री प्रकाशित एवं अप्रकाशित

अ सन्तवाणी सग्रह

गुजराती सना की वाणी अधिकांश अभी अनान एवं अप्रकाशित है। कुछ सग्रह जो गुजराती लिपि में प्रकाशित हुए हैं उनमें भी कुछ को छोड़कर शेष अप्रामाणिक एवं साधारण स्तर के हैं। फिर भी बृहद् वाय दोहन (आठ भाग) प्राचीन काव्य माला (छत्तीस भाग) भजन-सागर (भाग १ २) अध्यात्म भजनमाला (भाग १ २) तथा मस्तु माहित्य बंधक कार्यालय द्वारा प्रकाशित विभिन्न सना की वानियाँ प्रकाशित सामग्री-सकलन के अंतर्गत प्रस्तुत आनाचना व विश्वमनीय आधार-स्तम्भ रहें हैं। गुजरात क सना की समस्त हिन्दी-वाणी भी गुजराती पत्रों के बीच-बीच ही उपलब्ध होती है। अतः स्वतन्त्ररूपेण उनकी समग्र हिन्दीवाणी के सग्रह एवं सम्पादन की भी आवश्यकता है। इस दृष्टि से यत्नचित् प्रयत्न हुए अवश्य हैं लेकिन ये प्रयत्न विनाल अम्बर से दस चार तारें बन्देरे के समान ही हैं। कहानजी धममिह द्वारा संपादित अध्यात्म भजनमाला (भाग १ २) में गुजरात तथा उत्तर भारत के प्रसिद्ध सना की वानियाँ संग्रहीत हैं। इन दोनों भागों में प्राचीन तथा अर्वाचान युग के लगभग १७५ भक्त कवियों द्वारा रचित १ ०० पत्र संग्रहीत हैं। इनमें गुजराती सना द्वारा रचित उनके हिन्दी पत्रों का विनाय रूप में समाविष्ट किया गया है। गुजराती सना की आनाचना प्रकाशन में मस्तु माहित्य बंधक कार्यालय (अहमदाबाद तथा बम्बई) गुजरात वर्नाविपुत्र भागावटी (अहमदाबाद) 'गुजराती प्रिंटिंग प्रेस (बम्बई) पांचम गुजराती सना

(बम्बई) तथा म स विश्व विद्यालय (बडोला) जाति मस्थाओं का विविष्ट यागदान रहा है ।

अप्रकाशित सतवाणी प्राय तीन स्थाना पर उपनघ होती है —

१ विभिन्न पुस्तकालयों एवं प्रकाशन मस्थाओं म विगत भी जे विद्याभवन (अहमदावाद) डाह्यीरक्ष्मी पुस्तकालय (नडियाद) तथा प्राच्य विद्या मन्िर (बडोला) ।

२ विभिन्न मन्दिरों तथा साम्प्रदायिक पीठों मे गुजरात के मन्ी की अप्रकाशित वानियाँ म क्षेत्र के विभिन्न मन्िरा तथा साम्प्रदायिक पीठा म सुरक्षित हैं जिह प्राप्त कर्न के निय अनिवायत अनुमधिन्मु का उन विभिन्न स्थानो पर घूम घूम कर मामग्री का सकलन करना पडा है । कबार मन्िर एवं निराल मन्िर (बडोला) भराडा (जि खण) बडतान (आनद) मारमा (आनद) सतराम मन्िर (नडियाद) आड (जि सेण) टकारा (मारखी-मौराष्ट्र) मावनी (बडोला) जमरेभी (मौराष्ट्र) तथा नेरखी (बाजवा बन्ी) आदि स्थाना स सामग्री सकलित की गई है ।

३ ध्यक्ति विनेष के पास नेलक का सम्पक इन विषय के अध्यनाम स भी र्णा है । इन रूप म उनक अपुव मुभावो के साथ साथ उनक शारा मद्रगत बाणिया का उपयोग भा दूट स हा सका है । आचाय प्रवर कुवर चम्प्रकागमिह डा अम्बालकर नागर डा० सुरेण जोगा डा यागात्र त्रिपान डा० ष्जुनाल मजमुनार डा गोवधन गमा प्रा नरग पन्ना तथा मित्रवर रमणभाई पाठक का लखक विनाय रूप स आभारी है । कच्छ तथा मौराष्ट्र के सत्ता पर श्रा दूनराम काराणा और मूरत के मन्ता पर श्री माणकान्त गकरलाल राणा की एकत्रित सामग्री का भा सवक न माभार उपयोग किया है ।

व आनाचनात्मक सामग्री

गुजरात की जानाश्रया घारा क विविष्ट अध्यनाम म दा क कृष्णनाल नवग रा गोवधनगम त्रिपानी रा नरमिहराव त्रिवनिया डॉ० कन्हैयालाल मुन्ता रा विजयगय बद्य आचाय अनन्तराय रावन डा० भागानान मन्मरा रा उमागकर जागा रा विगुमना त्रिवना डा यागात्र विन्ना श्रा काननान टकरर डा मुग जागा डा कुवर चम्प्रकागमिह

डा० अम्बानकर नागर तथा श्री बे का शास्त्री आदि प्रमुख हैं। जहाँ तक गुजरात के सत्ता की हिन्दी-बाणी की विवेचना का सम्बन्ध है इन वर्षण्य विवेचका की प्रकाशित एव अप्रकाशित दोनों प्रकार की उपन्यास सामग्री का अध्ययन करने का सुअवसर लखन को मिला है।

२ एतद् विषयक शोध काय का विहंगावलोकन

इस दिशा में अब तक किया गया शोध काय का हम दो रूपों में देख सकते हैं — १ गवेषणात्मक शोध काय। २ तुलनात्मक शोध काय।

अ गवेषणात्मक शोध-काय गुजरात के मत्त कवियों की हिन्दी बाणी का प्रारम्भिक अध्ययन प्रायः गवेषणात्मक ही है। श्री डाह्याभाई त्रासरी द्वारा लिखित गुजरातीओए हिन्दी साहित्यमा आपने फालो।^१ लघु निबंध में निम्नलिखित सत्ता का परिचयात्मक उल्लेख मिलता है मोरबाई दादूदयानजी धोन वेण्णती कवि अखो महैराज त्रिविक्रमानन्द, मनाहरम्बामी खुमानवाइ महर्षि दयानन्द सरस्वती।

गवेषणा की दृष्टि से इस दिशा में पुस्तकाकार यह पहला प्रयत्न है। फारम गुजराती सभा बम्बई द्वारा प्रकाशित महात्मक ग्रन्थ के तल विनोय में जिन विविध सत्ता का परिचय मिलता है उस प्रकार है २ फकरद्दान भाग भाष्यदास सत मयूखदास भाभाराम जीर रेकी तुलजा मन्गज रविसाह्य।

तसम महाराज के गुप्त देवचन्द्र को राधाम्बामी सम्प्रदाय का प्रवर्तक बताया गया है^३ जो एक भ्रामक कथन है। स्वामी देवचन्द्र बन्तुत प्रणामी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे।^४

गुजरात के हिन्दी सेवा कवियों की परिचयात्मक लेख भाना में कुछ प्रमुख रचनाएँ और भी हैं —

१ श्री जगजीवन क मोदी गुजरातनु हिन्दी साहित्य मन् १९२१

१ गु ध सो द्वारा प्रकाशित सं० १९६३ पृ० ६२, प्रथम संस्करण का आधार पर।

२ महोत्सव ग्रन्थ पृ० ६१४ से ३२२।

३ वही पृ० ३१०।

४ देखिये—निजानन्द चरितामृत नवतनपुरी, जामनगर से प्रकाशित ग्रन्थ।

- ० श्री भवानीगकर मानिक गुजरात के हिन्दी कवि
मरस्वती हीरेक जयती विगपाक पृ ५८५ स ६२
- ३ श्री जनक दवे सुरत जन हिन्दी शिक्षण अने माहित्य
मासिक ग्रन्थ जुलाई १९५१-५२ ।
- ४ श्री० नटवरनाल अम्बालाल व्याम गुजरात के कविया का
हिन्दी काव्य माहित्य का जन स्वीकृत गाथ प्रबन्ध
१९६० ई० आगरा विश्व विद्यालय आगरा ।

एतद् सम्बन्धा उपयुक्त गवेषणा का शिवा म डा० अम्बालाल नागर द्वारा मन् १९५७ म राजस्थान विश्व विद्यालय का पी एच डा उपाधि के लिए प्रस्तुत अधिनियम गुजरात का हिन्दी सत्ता म प्राय पहली बार गुजरात का जानमार्गी धारा पर प्रकाश डालन हुए तगभग ५० छात्र मात्र सत्ता के जावन तथा कृतित्व पर विचार किया गया है ।

जाचाय परगुराम चुर्वेदी न उत्तरा भारत की सत्त परम्परा के नवान मम्बरण म रविभाग मम्प्रणय के कुछ प्रमुख सत्ता की चर्चा की है । एमा प्रकार डा० कुवर चम्प्रकाशमिह न जत्ता का समस्त हिन्दी वागी का सम्पादन अधपरम के रूप म प्रस्तुत कर जत्ता प्रणालिका के नानी कविया पर माहित्य लिपिलिपी लिखी है । एमी प्रकार डा अम्बालाल नागर द्वारा रचित गुजरात के शिवा गौरव ग्रन्थ म गुजरात की हिन्दी परम्परा का विद्वान्वाचनन प्रस्तुत करने हुए नाना कवि अत्ता और उनकी कृतिया का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । सत्त माहित्य के इतिहास म इम प्रकार के सभी प्रयत्न निम्न एक महत्वपूर्ण कड़ी का जान्त है । अधपरम की नीति निरात धारा रविमान्प्र प्राप्त छात्रम वस्ता विश्वम्भर आशि सत्ता का समस्त हिन्दी वागिया के सम्पादन का क्षेत्र अभा तक अछूता ही है ।

व तुलनात्मक शोध-काय गुजरात के सत्ता का शिन्दी गुजराती वागी का तुलनात्मक अध्ययन ता और भा कम हुआ है । यद्यपि गवयको का इति जेक एम क्षेत्र म भी चचुपात करने लगा है । श्री कुजविहारी वाष्णैय न शत्रुता म अपना गाथ प्रबन्ध शिन्दी गुजराती सत्ता का जानाथयी धारा का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर बम्बई विश्व विद्यालय से पी एच डी प्राप्त की है । तुलनात्मक गाथ एव ममाभा के क्षेत्र म अनुसंधितगुभा के लिए अभा पयात अवकाश है । उद्गाहरगाय-अवा धारा मात्रा निरात

प्रीतम छोटम आदि उच्चकालि के गुजराती सत्ता की तुलना समकक्ष हिंदी सत्ता से का जा सकती है ।

३ प्रेरणा एवं महत्व

इसमें कोई सन्देह नहीं कि श्रद्धा डा० अम्बाशंकर नागर के अधि-निबन्ध गुजरात की हिन्दी सेवा में गवेषणा के इस पथ पर अप्रसर होने वाल पथिका को एक नवीन दिशा सूचित की है । लखक का काय उनकी प्रेरणा से फलित होकर उन्हा के निर्देशन में परिपूण हो रहा है । दिशामूचन की दृष्टि से आचार्य विनयमोहन गर्मा द्वारा लिखित हिंदी का मराठी सत्ता की देन का भी विनिष्ट हाथ रहा है । लखक का प्रस्तुत अधिनिबन्ध के गोपक की प्रेरणा भी इसी ग्रन्थ से मिली है जिसके प्रथम पृष्ठ की प्रथम पक्ति^१ में ही उसे इस काय की ओर प्रवृत्त कर दिया । प्रस्तुत शोध काय के द्वारा लखक का महाराष्ट्र एवं उत्तर भारत की सत्त परम्परा की शृङ्खला की टूटी हुई कड़ियाँ उपलब्ध हुई हैं जिनका जाडकर दखन से गुजरात के सत्ता की वाणी भी भारतव्यापी सत्त परम्परा का एक अविच्छेद्य कड़ी प्रतीत होती है ।

गुजराती साहित्य के विज्ञाना में इस दिशा में कुछ स्तुत्य प्रयत्न किये हैं —

- | | | | |
|---|-----------------------|---|-------------------------|
| १ | अन्ना एक अध्ययन | — | श्री उमाशंकर जाशी |
| २ | नरहरि अन ज्ञानगीता | — | श्री मुटा जागी |
| ३ | सागर जीवन अन कवन | — | श्री योगीन्द्र त्रिपाठी |
| ४ | मीरा एक मनन | — | श्री मजुलाल मजुमदार |
| ५ | कवि चरित | — | श्री क० का० दास्ती |
| ६ | शोरठना सत्ता | — | श्री भवेरवन्त मघाणी |
| ७ | बच्छना सत्ता अन कविया | — | श्री दूतराम नारायण |

उपयुक्त ध्यष्टिमूचक अध्ययना में आचार्यका की दृष्टि प्रायः सत्ता की गुजराती वाणी तक ही सीमित रही है । इसी प्रकार अत्र तक किये गये समष्टिमूलक अध्ययना में भी हिन्दी वाणी के प्रति उनकी उन्मानता प्रतीत होता है । यथा—

१ 'समस्त भारतवर्ष में महाराष्ट्र ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ अनेक सत्तों की मराठी के साथ हिन्दी रचनाएँ भी उपलब्ध होती हैं । हि म स दे, पृ १ ।

- १ वल्लाह त इन गुजराती पायट्री — श्री योगीन्द्र त्रिपाठी
- २ मध्यकालीन गुजराती साहित्य — श्री अनतराय रावल
- ३ गुजराती साहित्यना स्वरूपा — प्रो० मजुलान मजुमदार
- ४ मध्यकालीन साहित्य प्रकारा — श्री चन्कात महता

इस प्रकार के ग्रन्थ सत् काव्य की किमी विविष्ट धारा अथवा प्रवृत्ति का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। हिन्दी वाणी की खाज तथा उसकी उपलब्धियाँ को प्रस्तुत करना उन अध्ययताओं का प्रतिपाद्य विषय नष्ट रहा। मारागत गुजरात की ज्ञानाश्रयी शाखा के समग्र अध्ययन की आवश्यकता अभी तक क्यों की गयी बनी हुई है।

४ विषय का स्पष्टीकरण एवं उसकी सीमाएँ

गुजरात के सत्ता की हिन्दी वाणी का अनुशीलन एवं उसकी उपलब्धियाँ का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत प्रबंध का प्रतिपाद्य विषय है।

गुजरात के सत् कवियों की हिन्दी वाणी का अध्ययन करत समय सबसे पहले निम्नलिखित बातों का स्पष्टीकरण करना समाचीन हागा

- अ पद्य प्रणालिका और सम्प्रदाय।
- ब सत्ता शब्द की व्याख्या।
- क गुजराती सत् कवि का व्याख्या।
- ङ गुजरात गुजराती एवं हिन्दी से हमारा तात्पर्य।
- च हिन्दी तथा गुजराती का निकटता एवं पारस्परिक सम्बन्ध।
- छ काननियम।

अ पद्य प्रणालिका और सम्प्रदाय

सन्तमत्त से हमारा अभिप्राय प्रायः कबीर आदि सत्ता की उन स्वातंत्र्यनिष्ठा से है जिनका प्रचार लगभग पाँच सौ वर्ष पश्चिम हुआ था किन्तु जिनका एक परम्परा बराबर एक समान अविच्छिन्न रूप में प्रचलित चला आयी है।^१ सम्प्रदाय अथवा पद्य प्रणयन के विराधी हाज हुए भी सत्ता के सम्प्रदाय उपसम्प्रदाय तथा पद्य आदि चले पड़े। घर घर जातन की माया में आचार्य त्र्यम्बकप्रसाद त्रिवेदी ने सत्ता शब्द प्रचलित विभिन्न पद्यों के उद्भव एवं पतन की अत्यन्त मूर्च्छिपूर्ण व्याख्या की है।^२ सत्ता मत्त

१ हिन्दी साहित्य कीर्ण पृ० ७८७।

२ दक्षिण—प्रसंगिक क. पू. पृ० २८ से २४।

बड़ी विपत्ता ता यह है कि विभिन्न आचार्यों की भाँति इनमें काँ तात्विक भेद नहीं मिलता। दूसरे इनका सबसे बड़ा आधार प्रायः लोकाचार तथा विचारादि पर निर्भर रहता है। पद्य और सम्प्रदाय में काँ तात्विक भेद ढूँढना कठिन है फिर भी सामान्यतः जिनके अंतर्गत आचार तथा विचार दोनों प्रकार की पद्धतियों का समावेश हुआ है उन्हें सम्प्रदाय कहा गया और जिनमें आचार विचार में से किसी एक पद्धति का अनुसरण मिलता है उन्हें पद्य के नाम से अभिहित किया गया। 'प्रणालिका' इनमें कुछ भिन्न है। किसी प्रणाली विशेष विनिष्ट माध्या अथवा गली विशेष का अनुसरण प्रणालिका के अंतर्गत होता है। उदाहरणार्थ अथा ने किसी सम्प्रदाय अथवा पद्य का प्रणयन नहीं किया फिर भी उनके परवर्ती शिष्या न उनकी गली पर ज्ञान चर्चा की है। इस प्रकार के अनुगामी अपने का न सम्प्रदायगत मानते हैं और न पद्यानुयाया हा वल्कि य सभी अथा की विनिष्ट प्रणालिका (माध्या एव गली) के उपामक तथा परिपायक प्रतीत हान हैं। मारागत यह कहा जा सकता है कि प्रणालिका में बवल विचारपक्ष पद्य में विपत्तया आचारपक्ष तथा सम्प्रदाय में आचार तथा विचार दोनों का समन्वय होता है।

व स न' शब्द की व्याख्या

सत्य की प्रतीति एव परम तन्त्र की खोज करने वाला व्यक्ति सामान्यतः जनसमाज में सत कहा जाता है किन्तु साहित्य व इतिहास में इस गत्त का विनिष्ट व्याख्या मिलती है। विनिष्ट लक्षणा क अनुसार मन्त्र गत्त का यकार बवल उन आन्त मन्त्रपुराणों के लिए ही किया जा सकता है जा पूजन आत्मनिष्ठ हान क अतिरिक्त समाज में रहत हुए निस्वाय भाव में विश्व बल्याण में प्रवृत्त रहा करत हैं। इससे सिधा यह गत्त अपन रुद्धिगत अथ में उन पानश्वर आन्ति निगुण भक्ता के निय भी प्रयुक्त हाता जाया है जा दक्षिण व विद्वल या वारवगी सम्प्रदाय के प्रचारक थे और बन्धित अनक बाता में उहा व समान होने के कारण उत्तर भारत व यवीर आन्ति क निय भा इसका प्रयोग हान लगा है।^१

ध्युत्पत्ति की दृष्टि से डॉ० बडध्याल ने इसकी सगति पालि भाषा क उम गत्त गत्त से जोड़ी है जिसका अथ निवृत्तिमार्गी या विगयी हाता है।

१ हिंदी साहित्य की ग पृ० ७८७।

एक रूप में इहान सता का निगुणिया भी कहा है।^१ आचार्य परगुराम चतुर्वेदी ने अपराक्ष की उपलब्धि के लिए अखण्ड सत्य में प्रतिष्ठित होने वाले अनुभवी व्यक्ति को सत काटि का कहा है।^२ मराठी साहित्य में सत गुरु का प्रयोग अत्यंत व्यापक अर्थ में व्यवहृत हुआ है। वहाँ 'भक्त' एक मन्त में बीच वस्तुतः कोई सामा रखा नहीं। इसलिए आचार्य त्रिनयमाहृत गर्भा ने अपने अधिनिबंध में सत गुरु की व्याख्या इस प्रकार की है—जा आत्मोन्नति सहित परमात्मा के मितन को साध्य मानकर लोकमगन की कामना करता है उसे हम सत की श्रेणी में रखते हैं।^३ गुजरात के सता न भा वस्तुतः अपना साधना का कही भी एकांतिक कहा जाता अपितु अन्त नरहरि न स्पष्ट गुरु में यह घोषित किया कि जो भक्ति तथा ज्ञान में भेद उत्पन्न करता है वह जन भूत है।^४ अतएव केवल एतना है कि एक का आधार भावात्मक है तो दूसरे का बुद्धिपरक किन्तु अतः दोनों का एक ही है आत्म प्रतीति।^५ पाननिष्ठ भक्ति यह वय है किन्तु गुणज्ञान की इहाने कठोर टीका भी की है। एतका पान स्वानुभवपूर्ण एवं भावमूलक है। एस सता को बगानी साहित्य में मर्मों और सघानी आदि गुरु में अभिहित किया गया है। पाहुण्डू में सघानी गुरु का प्रयोग इसा अर्थ में मिलता है।^६ आचार्य क्षितिमोहन न जहाँ यह अनुभव साध पथी कहा है वहाँ श्री उमागकर जागी न एस सता का अनुभवमिद्व जयवा अनुभवाशी कहा है। डा० रानडे न वारकरो सम्प्रदाय क सता की चर्चा करन हुए यह सत नाम स जगत् जगह अभिहित किया है तथा यह बताया है कि एन मना ने निगण क साध मगुण की साधना का त्याग किया ही एमा प्रतीति नहीं होता।^७

१ हि का नि स पृ० ३२।

२ उ भा स प पृ० ५।

३ हि म स दे पृ० ५६।

४ नरहरिहृत-गीषी-उद्धव-सवाद ३३।

५ डा० योगीन्द्र त्रिपाठी के गु षी पृ ५५।

६ पाहुण्डू २८ ब।

७ भित्तिस्थित्य इतु महाराष्ट्र प्रो आर० डी० रानडे।

गुजराती सतों के आधार पर—गुजरात के सत ने अपने को जगह जगह जानी की मना से अभिहित किया है। ऐसा जानी नर जिसे जवन बना व सल का अद्भुत परिचय है और जिसकी दृष्टि ध्रुवतारे की तरह तत्त्व की सोज में अटल एक अविचन रहती है।^१ अखा न दस प्रकार के जानी बताय है गुणजानी, ज्ञानगुण वितण्ड जानवल निदकजाना भ्रमजानी गठजानी, गून्यवादी और गुद जानी। लेकिन उनमें सच्चा जानी सिर्फ दसवां है गण जाना हैं क्याकि गुद जाना हा अनिवचनाय तथा अनुभववेत्ता होता है।^२ मनोहरस्वामी सच्चिदानन्द न भा जानिया का विविध वाटिया गारुण एव व्यवहार के आधार पर सूचित की है किन्तु सच्चा जानी उद्धाने उस बना है ता ब्रह्म के रहस्या का चारा बदा की भाँति जानता हा।^३ प्रीतमदास न सत का ब्रह्म का लहर कहा है तथा सतजागी की उमवी तरंग।^४ बापू माहव के कथनानुसार जा अर्गाति में गति पदा करे वही सत है।^५ तथा जो मत् नाम का समझता है वहाँ जानी है।^६ लहरि ने जागीता में सत को बल्पन कहा है। अखा क मतानुसार सत वह अनुभवसिद्ध जानी है जो सगुण निगुण का भेद छोड़ भक्ति एव वगम्य क पय गंगा लाक मगन के लिए तत्त्व का खोज में निकल पडे। मारागत जहाँ हिन्दी में सत गत केवन निगुण मागिया व लिए हू हो गया है वहाँ गुजरात में उमका प्रयाग प्राय व्यापक अर्थ में लिया जाता है।

क गुजराती सत 'रवि' की व्याख्या

गन गत की व्याख्या के साथ-साथ हम यह स्पष्ट कर जना भी आवश्यक समझते हैं कि गुजराती सत कवि किस कह ? प्रस्तुत अधिनिर्घण

१ जसत पला खेलत नर जानी जसेहि नाथ हिरे फिरे दसी दिनि ध्रुव तार पर रहत निजानी ।'—परिचित पद सप्रहृ पृ० ६ ।

२ अखाकृत छप्पा दगविघ्न जानी को जग ।

३ ब्रह्म को सहै अमेद जस बोले चारों वेद मनोहर सोई सत्यजानी की निजानी है ।' मनहर पद—११ पृ० ३८८ ।

४ प्रो० बा०, पृ० १०३ ।

५ गति पमाइ तने तो सत बहीण एना दासना ते दास यइने रहीए ।' परिचित पद सप्रहृ, पृ० २५१, पद १५ ।

६ समजे सत नाम सन तो बहीण जानी ।' वही, पद १६ ।

यद्यपि मेत्रीय अध्ययन की दृष्टि से लिखा गया है किन्तु यह सबमात्र सत्य है कि सत कभी किसी क्षेत्र विंगप अथवा कान विंगप के हाकर नहीं रह। व ता रमत जोगी थे। जत उह किमी सीमा म बाधना उतना ही मुश्किल है जितना किसी जगम सागर की गहरोई का मापना अथवा आकांग की मामा रेखा खाचना। फिर भी मुविधा की दृष्टि से इम अधिनियम म गुजराती सत उसे कहा गया है—

- १ जो जम पितृ परम्परा अथवा गुरु परम्परा से गुजरात से सम्पकित हो।
- २ जितन गुजरात की अपनी साधनाभूमि अथवा प्रचार का क्षेत्र चुना हो।
- ३ जो गुजरात की भूमि में सम्पकित न हाकर भी गुजराती में काव्य रचना करता हो।

ड गुजरात गुजराती एव हिंदी से हमारा तात्पर्य

गुजरात—दमवा गतांग पूर्व इस प्रदेश का नाम गुजरवा गुजरवा मडल गुजर गुजर देग आदि रूपा में उल्लिखित मिलता है जिनका सम्बंध प्रायः पाँचवो गती उत्तराध से छठी गता पूर्वाध तक भारत में प्रविष्ट हान वाली गुजर जाति से है।^१ दसवी गती के आम-पास भिन्नमान से पाटण तक का यह भूमि भाग सालकी तथा बाधेना राजाओ के अधीन रहा और इसके पन्चात् मुमत्रमाना के हाथो में आने पर इसका सीमा विस्तार पश्चिम तथा दक्षिण का आर होता गया।

गुजरात की भौगोलिक सीमा के अतगत यद्यपि आबू तथा दमगगगा का मध्यवर्ती भाग ही समाविष्ट हाना है तथापि उमका भाषाकाय विस्तार अधिक व्यापक है और गुजरात के निम्नलिखित भूमिखण्डों तक विस्तृत है।^२

- १ उत्तर गुजरात आबू तथा महा नग का मध्यवर्ती प्रदेश।
- २ दक्षिण गुजरात महा तथा दमग गगा का मध्यवर्ती प्रदेश।
- ३ दमग गगा का दक्षिण भूभाग जिनमें सानीमट एव बम्बई का मिथभाषा प्रदेश भी समाविष्ट हो जाता है।
- ४ मौराण कल्याण
- ५ बच्छ प्रदेश

१ हिंदी साहित्य कोण पृ० २१७।

२ गुजरात एण्ड इटम सिटरेवर पृ० १२।

गुजराती—उपयुक्त विन्दुत भूभाग में बाँट जाने वाली भाषा का नाम गुजराती है। आज जिसे हम गुजराती भाषा के नाम से अभिहित करते हैं प्राचीनकाल में वही भाषा का अपभ्रंश गुजर भाषा अपभ्रंश गिरा, प्राकृत या भाषा कहा जाता था। मगधवा गती में हुए रमिक कवि प्रेमानन्द ने (सन् १६६६ स १७१४ ई०) पहल पहल अपने काव्य दाम्बघ में गुजराती शब्द का प्रयोग अपना भाषा के लिए किया।^१

‘बाधु नागदमण गुजराती भाषा ।

इसके बाद ई० १७३१ में जमनी के मुख्य नगर बरिन के एक नायबखियत सा कोस में अपने एक खत में गुजराती भाषा का उल्लेख किया है। इसके बाद तो धार धार गुजराती शब्द व्यवहार में आने लगा और आज वहाँ एक शब्द में भाषा के लिए प्रचलित है।^२ गुजरात के तमाम भागों में बसने वाले हिन्दू मुस्लिम पारसी, ईसाई तथा अन्य लोग भी गुजराती भाषा बोलते हैं। भारत के बाहर भी विश्व के अनेक भागों में जहाँ गुजराती जाकर बस गये हैं यह भाषा बोली जाती है। जनगणना के अनुसार वर्तमान समय में भारत के लगभग १ करोड़ ६३ लाख ११ हजार ६० व्यक्ति गुजराती बोलते हैं।^३ क्षेत्रीय बातिया में नागरी बर्गीतनी मूरता मार्या प्रमुख बातिया हैं। इन बातिया की अनेक उपबातिया भी हैं किन्तु उनमें बाच का अर्थ अतना सूक्ष्म है कि उन्हें यहाँ उद्धृत करना उचित नहीं।

हिन्दी—इस अधिनियम में हिन्दी शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में किया गया है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भी इस शब्द का प्रयोग किया एक रूपा भाषा के लिए न होकर एक भाषा परम्परा के लिए ही जाना आया है।^४ गुजराती मना न गुजराती के अतिरिक्त जिम भाषा का अपना वाली का माध्यम बनाया वह ब्रज, अवधी खड़ी बोली पंजाबी राजस्थानी के साथ-साथ प्राचीन प्रभास में भी अछूता नहीं थी। हिन्दी साहित्य के विद्वानों ने इस प्रकार की मिली जुली सत बाणा के लिए ‘मधुकरा हिन्दी साधु भाषा’ का नाम का उल्लेख किया है। अध्ययन का सुविधा के लिए

१ हिन्दी साहित्य कोश’ पृ० २६७ ।

२ वही पृ० २६७ ।

३ गुजराती साहित्य का इतिहास’ धी जयन्तकृष्ण दवे, पृ० १ ।

४ हिन्दी साहित्य’ आचार्य हजाराप्रसाद द्विवेदी ।

एक प्रकार की सत बारीगी को एक प्रकार में हिंदी भाषा में अभिविहित किया गया है। यह वस्तुतः वही भाषा थी जो कि आज से शताब्दियाँ पूर्व भारत के मासट्टिक केन्द्रों पर बारीगी और समझा जाता था तथा अंतर प्रांतीय व्यवहार के लिए अंतर भाषा के रूप में प्रयुक्त होती थी। इस बात का समर्थन ग्रियसन महादय ने भी किया है।^१

इ हिंदी तथा गुजराती की निकटता और पारस्परिक सम्बन्ध

वस्तुतः गुजराती और ब्रजभाषा दोनों ही भारतीय आयकुन की भाषाएँ हैं तथा दोनों का मूल पश्चिम गौरसनी अपभ्रंश में है।^२ प्रो टनर तथा ज्यो० ग्रियसन ने जिस गौरसनी अपभ्रंश को कहा है उसे ग्रीक का गाली ने आभार अपभ्रंश के नाम से अभिविहित करना अधिक समीचीन समझा है।^३ ईसापूर्व सत्रहवीं शताब्दी तक अपभ्रंश भाषा प्रचलित थी। उसके बाद दो सौ वर्ष तक अपभ्रंश और पुगना गुजराती का अन्तरावस्था रूप रहा। एक रूप को कुछ लोग अन्तिम अपभ्रंश या गोजर अपभ्रंश कहते हैं।^४ उसके पश्चात् जिस भाषा का उद्भव हुआ उसे डा० टेमिटरी ने जाल्ट वस्त्र राजस्थानी और नरसिंहराव त्रिवेदिया ने गुजर अपभ्रंश या उमागजर जागी ने मारु गुजर तथा डा० होरालाल माहेश्वरी ने मरुभाषा कहा है।^५ इस पुगनी पश्चिमा राजस्थानी से गुजराती एक शताब्दी की स्वतंत्र मता मानहवीं शताब्दी में कायम हुई। इस प्रकार का उल्लेख डा० मुनालिकुमार चेटर्जी ने भी किया है।^६ सत्रहवीं शताब्दी के मध्य से अब तक गुजराती के चिह्न स्पष्ट लिखायी पत्त हैं।^७

गुजरात से हिंदी की व्यापकता—मध्ययुग से ही गुजरात में ब्रजभाषा का व्यापक प्रचार रहा। गुजरात के अनेक वद्वय कवियों तथा

१ Linguistic Survey of India vol IX Part I Page 44

२ 'गुजराती फोनोलोजी प्रो टनर। पृ० २।

३ 'गुजराती स्वर व्यंजन प्रक्रिया पृ० २३।

४ हिंदी साहित्य कोश पृ० २६७।

५ 'राजस्थानी भाषा और साहित्य डा० होरालाल माहेश्वरी। पृ० ४।

६ Gujarati must have differentiated from old Western Rajsthani in the Sixteenth Century into a separate language

-Onion & Dev of the Bengali Language Vol 1 Page 9

७ 'हिंदी साहित्य कोश' पृ० २६७।

सत्ता न ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में रचनाएँ की हैं। वच्छ मुज की ब्रजभाषा पाठगाला अपन समय की सुप्रसिद्ध एव ममृष्ट पाठगाला थी जहाँ उत्तर भारत से भी लोग पढ़ने के लिए आने थे। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि गाबिन्द गिल्लाभाइ सौराष्ट्र के गिहार गाँव के थे। गुजरात के बदाती कवि अखा और उनके परवर्ती गताधिक ज्ञाना कवियाँ न हिन्दी में उच्चकाटि की रचनाएँ की हैं। गुजराती कवि दयाराम का सबसे बड़ा रचनाएँ हिन्दी में उपलब्ध हाती हैं। आज भी गुजरात के नवोदित लेखक और कवि स्वभाषा गुजराती के साथ-साथ हिन्दी में भी कविताएँ कहानियाँ उपन्यास आदि लिख रहे हैं। हिन्दी के विकास में जिन अहिन्दी क्षेत्रों का प्रमुख हाथ रहा है गुजरात उनमें से एक है।

हिन्दी के प्रति गुजराती सत्तों का आकर्षण और उसके कारण डा० अम्बाशंकर नागर न गुजरात में हिन्दी की व्यापकता के कारण इस प्रकार गिनाएँ हैं— एक तो हिन्दी भाषा प्रयोग का निकटवर्ती प्रदेश हान के कारण दूसरे बल्लभ सम्प्रदाय सूफी सम्प्रदाय जन सम्प्रदाय और सत्त मत के व्यापक प्रभाव के कारण और तीसरे गुजरात के मुमनमान वादगाहो और राजपूत राजाओं के हिन्दी प्रेम के कारण गुजरात के प्रचल में हिन्दी को फलन फूलन का पर्याप्त अवसर मिला था।^१ जिन प्रकार मिथिला के विद्यापति पद्मावती के नानक महाराष्ट्र के नामदेव दक्षिण के पद्मनाभ बचिपाल आदि भक्त कवियाँ न हिन्दी का अपनी वाणी का माध्यम चुना था ठीक उन्ही प्रकार गुजरात के माडण जगा धीरा बस्ता और मनाहर आदि सत्ता द्वारा रचित हिन्दी की उच्चकाटि की रचनाएँ इसका प्रमाण हैं कि इन सत्ता न हिन्दी के प्रति अपनी सहज प्रमत्ता ही प्रकट नहो का अपितु स्वभाषा की भाँति हिन्दी में माधिकार रचनाएँ भी की हैं। अपनी वाणी के व्यापक प्रसार के हेतु उत्तर भारत के सत्ता के सम्पर्क एवं प्रभाव के कारण तीसरा एव भ्रमणशीलता के नान तथा लोक रचित आदि अने कारणों से हिन्दी के प्रति इन सत्ता का अभिमुख हाना निरान्न स्वाभाविक था। हिन्दीभाषी प्रयोग के निकटवर्ती हान के कारण इन सत्ता के लिये हिन्दी का गान सुनभ एव मानुबूत मिद्ध हुआ। अने क्षत्रीय भाषाओं की तुलना में लिपि तथा व्याकरण की दृष्टि में गुजराती और हिन्दी के बीच का अन्तर भी अल्प है। इन दोनों भाषाओं की मुख्य प्रकृतियाँ परस्पर इस प्रकार दृष्टिपात कर सकते हैं —

१ देखिए—'गुजरात के हिन्दी गौरव प्रथम पृ० १।

हिन्दी और गुजराती की मुख्य प्रवृत्तियाँ

लिपिभेद —

१ हिन्दी और गुजराती दादा भाषाओं की लिपियाँ कुछ गताब्दियाँ पूर्व देवनागरी ही रही हैं। कालांतर में उनमें किंचित् परिवर्तन हुआ है। गुजरात की नागर ब्राह्मण जाति अब भी उस लिपि का उपयोग करती है। गुजरात में सामान्य प्रचार की लिपि का नाम है गुजराती बणमाला अर्थात् जिसमें हम गिरोरेखा विहीन देवनागरी का विकसित स्वरूप मान सकते हैं। एक अन्य लिपि शराफी अथवा बोडिया है जिसका विविध प्रयोग व्यापारी वर्ग में पाया जाता है।

२ गुजराती में पूर्ण विराम की जगह अंग्रेजी की भाँति छोटी बिन्ती () रखी जाती है। हिन्दी की भाँति खड़ी पाई (।) का उपयोग नहीं होता। अर्ध विराम चिह्न हिन्दी में ही है।

३ गुजराती में प्रत्यय 'द' के साथ ही लगते हैं। मात्राएँ हिन्दी की तरह लगाई जाती हैं।

४ गुजराती में प्रयुक्त फारसी अक्षरों के नीचे न बिन्ती लगाई जाती है और न उनका उच्चारण फारसी उच्चारण की तरह होता है। ट और ड के नीचे भी बिन्ती नहीं लगायी जाती।

उच्चारण भेद —

१ स्वरा में क़ का उच्चारण क़ के समकक्ष होता है। मराठी में भी इसी प्रकार किन्तु पश्चिमी हिन्दी में रि।

२ व्यंजन में ज़ का उच्चारण ज़ के अनुरूप होता है।

३ गुजराती में मूधय ए तथा जिह्वामूनाय ल है। मराठी में भी इसका अधिकांश प्रयोग होता है। राजस्थानी उडिया तथा पंजाबी में म ध्वनि का ईषत् प्रयोग मिलता है।

४ वण उच्चारण गुजराती में हिन्दी तथा मराठी में ममान है। म का उच्चारण ह्रस्व अ ही होता है बग़ान का तरह जानना।

५ मराठी तथा गुजराती में तान लिंग पुल्लिंग स्त्रीलिंग तथा नपुंसक नान्यतर हात हैं जबकि हिन्दी में मात्र दा लिंगा पुल्लिंग और स्त्रीलिंग का ही प्रचलन है। सामान्यतः नपुंसक लिंग पुल्लिंग में समाविष्ट हो जाता है। व हिन्दी का कुछ वाक्यांश तथा लिंगन के प्राचीन ग्रन्थों में तान लिंग मिलते हैं।

६ गुजराती में सामान्यतः ओ लगान से एक वचन का बहुवचन होता है। उमम दा हा वचन है।

७ खड़ी बोली की एक वचन भूतकालिक क्रिया था मराठा में होता बुन्ने-खड़ी और गुजराती में हतो हा जाती है।

८ स्वर के पश्चात् समुक्त व्यंजन का सामान्य वनाकर स्वर का दीर्घ कर दिया जाता है जैसे—

हिन्दी	गुजराती
मकलन	माक्कण

९ ह कार के पहले आने वाले अ कार धारी अरबी फारसी के शब्द गुजराती में ए कार वाले हो जाते हैं जबकि हिन्दी में इस प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाता। उदाहरणार्थ

दाहर	देहेर अथवा गहेर
महर	मेहेर अथवा मेहेर
लहर	लेहेर अथवा लेहेर

१० हिन्दी में जहाँ ऐ और औ है वहाँ गुजराती में मिथी तथा राजस्थानी के अनुरूप ए तथा ओ है। उदाहरणार्थ

बठा	बेठी
लोण्डी	लाडी

११ हिन्दी में इकारान्त वाले शब्द गुजराती में अकारान्त हो जाते हैं। उदाहरणार्थ

विगडना	बगडवु
लिखना	लखवु
मिलना	मलवु

१२ हिन्दी में जहाँ उ है गुजराती में कहा-कहा अ है। उदाहरणार्थ

तुम	तम
मानुम	मण्णत
हुआ	हो

१३ हिन्दी में व का व हा जाता है और कहा-कहा दोनों रूप मिलते हैं जबकि गुजराती में यथावत् है। उदाहरणार्थ

बनिया	बारिया
बिना	विना

१४ हिन्दी की जल्पप्राण ध्वनि गुजराती में महाप्राण और हिन्दी की महाप्राण ध्वनि गुजराती में जल्पप्राण हो जाता है। यथा

घबराना गभराववु

१५ ह्रस्व का दीर्घ तथा दीर्घ का ह्रस्व हिन्दी में गुजराती की प्रवृत्ति है। उदाहरणार्थ

द्विस दीवस

नही नहि

ई काल निणय

गुजरात की नानाशैली भाषा के शकुर यद्यपि १३ वां शताब्दी में प्रसिद्धि प्राप्त हुए दिखाई देते हैं किन्तु इसका निश्चित स्वरूप हम १६ वीं शताब्दी में मिलता है। इस आधार पर प्रस्तुत निबंध के अध्ययन को सन् १८८० से १९०० तक सामित रखा गया है। यद्यपि प्रसंगिक प्रस्तावना काल के सत्ता के परिचय देना भी समीचीन समझा गया है। प्रस्तावना काल के सत्ता में अधिकांश का सम्बन्ध यद्यपि मजरात तथा उत्तर भारत से है किन्तु गुजरात का नानाशैली धारा के उद्भव एवं विकास में उनका योगदान अविस्मरणीय है। अतः उक्त प्रस्तुत निबंध में नौवें के पर्यन्त की भाँति उपयुक्त समझा गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए हम समस्त काल को हम दो युगों में विभक्त कर सकते हैं —

१ प्रस्तावना काल स० १७५० से १८८० तक

२ मध्यकाल स० १८८० से १९०० तक

अ पूर्व मध्यकाल (स० १८८० से १७५० वि)

ब उत्तर मध्यकाल (स० १७५० से १८८० वि)

उपरोक्त काल विभाजन में उपरोक्त सामग्री के आधार पर तथा आचार्य परशुराम चट्टानी और डा. गणेश त्रिगुणायत द्वारा समर्थित उत्तर भारत का सत्त परम्परा के काल विभाजन के आधार पर किन्तु परिवर्तना महिनि निश्चित किया है। मनु-मवना के अन्तर्गत भी प्राप्त एवं ध्वनि सामग्री के आधार पर ज्यों के त्यों उद्धृत किया गया है। मनु का मवतु में परिवर्तित करने समय ५६ वर्ष का अन्तर स्थापित किया गया है। मवना के निष्कारण से अन्तर्गत का अन्तर्गत के नियम तत्काल सामग्री है।

प्रथम परिच्छेद

गुजरात की ज्ञानमार्गी धारा की पृष्ठभूमि

★

प्रथम परिच्छेद गुजरात की ज्ञानमार्गी धारा की पृष्ठभूमि

भारतीय सत परम्परा की एक अभिन्न कड़ी—

गुजरात के सत कबिया की हिन्दी वागा का अनुशीलन करत समय हम यह नही भूना चाहिए कि हम परम्परा का मूल ऋग्वेद अथर्ववेद वृत्तारण्यक छात्याय कठोपनिषद् आदि उपनिषत् तथा जनमुनि रामतीग क पाहुड-दूहा सरहपा एव कण्हाद के बौद्ध दूहा नाथ अवधूता रामानन्द कबीर नामन्द तथा सूफा सता का विद्यान निगम परम्परा म निर्हित है। हम रूप म गुजरात क सता का ज्ञानमार्गीधारा जा पदहवी गता स आज तक अनवरत गति स विकसित होती रही है—भारतीय सत परम्परा की हा एक अविच्छन्न एव अभिन्न कड़ी है। हमके मूल म जहा एक आर वद और उपनिषत् का महित सम्पत् है वहा अयत्र उत्तर तथा दक्षिण भारत स निष्पन्न स्वतन्त्र पथ का निर्माण करन वाली सतो की भावधारा भी है। मध्ययुग म प्रचलित जिन दो विचार धाराओ क दगन हान है वे इम प्रकार हैं —

१ प्राचान प्रणानिवाओ म आवद्ध मुआरवादी भावधारा ।

२ स्वतन्त्र पथ का निर्माण करन वाला सतो की भावधारा ।

गुजरात क सता की भावधारा उम पथ का प्रवर्तन करन वाला स्वच्छन्द विचार-नरणि था जिनन युग का जजर परम्पराओ पर मन्त्र प्रणार विष और मय क मधान म जात्मा का शाप जनाकर आ निरन्तर आग बन्ता रही। मयप म वह भावधारा निनात अमाभ्रन्तयिक मामजम्यवाता एव मय का आत्मा म पूर पान वाला एक विरण है ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—

गुजरात का ज्ञानमार्गी धारा क उद्भव एव विकास म जिन राजनानिक परिस्थितिया न याग गिया उह हम चार युगा म विभक्त कर सकन हैं —

१ सिद्ध-ज्ञानन जयवा मानका-वापता युग ।

२ मुननमक-युग जयवा मूवन्ती नामन-प्रथा ।

- ३ गतिकाल अथवा केन्द्रीय प्रशासन ।
- ४ मक्राति-काल अर्थात् राजनीतिक अव्यवस्था और अगति का काल ।

१ हिन्दू-शासन

सोलकी और वाधेलायुगीन अपभ्रंशोत्तर गुजराती साहित्य का काल गति समृद्धि और वाणिज्य विकास का स्वर्णयुग था । तत्कालीन जन जीवन उत्साह, प्रवृत्तता और उत्साह से परिपूर्ण था । सिद्धहम में गुजरात की इस समृद्ध अवस्था का सजीव वर्णन मिलता है । सिद्धराज का समय समृद्धि का सर्वोच्च गिरार पर पहुँच चुका था । दंग विदेशों से व्यापार जन-स्थल मार्गों से होता था । वीर ध्वज और वासलत्व जैसे राजाशा द्वारा अभिवृद्धि तथा विमान वस्तुपाल और तेजपान जैसे मंत्रियों का स्थापत्य और उच्चकोटि के साहित्य-मृज्जन में प्रोत्साहन देखावाडा पशुजय गिरनार पत्तन सिद्धपुर वडनगर और मोठेरा के कलापूर्ण मन्दिर तथा हमचण्णचाप का साहित्यिक योगदान इसके द्योतक हैं । गुजरात का अन्तिम हिन्दू शासक कण वाधेला था । तत्पश्चात् गुजरात में मुसलमानों की सत्ता का आविर्भाव अलाउद्दीन गिलजी के आक्रमण के साथ ही अर्थात् सन् १२९८ ई० में होता है ।^१

२ मुसलमान युग

हिन्दू शासन को गुजरात से छिन्न भिन्न करने के लिए अलाउद्दीन ने अपने भाई उतुगखाँ और सनापति नसरत खाँ का एक विमान सना सन्नि भजा । कण वाधेला उस समय गुजरात का मख मत्ताधारी शासक था ।^२ अनहिलवाँ उसकी राजधानी थी । काहडण प्रवृद्धि में उस समय की राजनीतिक व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक व्यवस्था का भी सजीव वर्णन मिलता है । मुस्लिम आक्रमणों ने वेबन अनहिलवाँ के ही नष्टभ्रष्ट नष्टी किया अपितु मामनाथ पर भी अपना आधिपत्य जमाकर उस खूब चूटा । नगरत खाँ सभात की आर बढ़ा जो अपने समय का समृद्ध एवं सम्पन्न वाण्यग्राह था । उसने सभात के व्यापारियों का चूट कर अतुल धनराशि इम्नगत की । गुजरात की चूट में अलाउद्दीन को अपार धन के साथ दा अमूल्य रत्न भी हाथ लगे—(१) कणधेला की पत्नी कमनावा । (२) सभात

का गुनाम मलिक काफूर । मुमनमाना आक्रमण से घबराकर बगधला अपना पुत्री दवलम्बी सहित दण्डिणी की आर भाग गया जोर नवगिरि व राजा रामचन्द्र रामन्द की गण ली । अलाउद्दीन का दूसरा युद्ध देवगिरि पर भी हुआ जिमके फलस्वरूप कण की मृत्यु हुई तथा दवलम्बी का विवाह अलाउद्दीन व पुन खिखलाँ से कर दिया गया ।^१ इस प्रकार तरहवा गता व अनम गुजरात का स्वतन्त्र सत्ता दूती हुई प्रतीत हाती है तथा मुमलमाना सत्ता का निरकुगता का कान प्रारम्भ हाता है । अलाउद्दीन खिलजी का गुजरात विजय (स १३५३) से गुजरात के इतिहास में एक नया परिच्छेद जुन्ता ह और सूबदारी गानन व्यवस्था कायम हाता है । विजय व तान वप पन्चान् हा अलाउद्दीन न अपने सान मलिक अज्जार अलप खीं का गुजरात का गवर्नर बनाकर भेजा । इस प्रकार व सूबदारी गानन तक (ई सन् १४११) पानन अनहिलवाड गुजरात का राजधाना रहा । तमूरलम के आक्रमण से दिल्ली का शासन अत्यन्त दुर्बल बन गया । फलत गुजरात व नियुक्त सूबदारा तथा दिल्ली का निरकुग सत्ता व बीच मधपों का ज्ञाना अचानक घबक उठी और गुजरात का सूबदार जफरखीं स्वयं मुल्तान बन बठा तथा मुजफ्फर खीं का पत्नी धारण का । इस रूप में हम गुजरात में मुस्लिम सत्ता का स्थायित्व मुजफ्फर खा व समय में देन सकन है ।^२ वन् गुजरात का अन्तिम नियुक्त सूबदार और पत्ना मुमनमान गानन था । पन गामका न अपनी निरकुग सत्ता का जमान व निय अनक मठ जोर मन्दिना का ताडा और उनको जगह मस्जिद और मीनारें खडा का ।^३

१ A History of Gujarat Vol 1 Page 4

२ Like all successful founders of great dynasties the new ruler was an active and successful general and we find him waging incessant campaigns not only against the Rajput rulers of Gujarat and Kathiawar but also against the neighbouring muslim ruler in Malwa

A History of Gujarat Vol 1 Page 53

३ In 1415 Sultan Ahmad attacked the holy town of Siddhpur on the Saraswati in North Gujarat where he broke the images in the celebrated Temple of Rudramahalaya and turned the building into a mosque

A History of Gujarat Vol 1 Page 61-62

चौदवी शती के अंत तक मुसलमानों ने गुजरात की भूमि का मस्जिद और मीनारों से सुसज्जित कर लिया जिसमें खभात की जामी मस्जिद (मन् १३०८) ईदगाह (मन् १३८१) भडाच की जामी मस्जिद (मन् १२६) और धानवा की जामी मस्जिद (मन् १३६१) उस समय की प्रसिद्ध मस्जिदों में से हैं। भाए जेठना का महान जामी मस्जिद के रूप में बसल दिया गया। यही नहीं मन् १६०२ में जब हिंदुओं ने मामनाय की आराधना में अपना विश्वास पुनः जागृत किया उस समय मुजफ्फर खान ने मामनाय पर द्वारा युद्ध किया और मंदिर के टुकड़े-टुकड़े करवा लिए गए। विनाश मंदिर का इस तरह भूमि धूमरित कर उन जगह पर मस्जिद बनवायी गयी।^१ स्वतंत्र मुस्लिम साम्राज्य के क्रूर मत्ता के बीच गुजरात प्रायः एक शती तक पिथना रहा। मुल्तान बहादुरशाह (मन् १२०५-३६) ने स्थानीय अमीरों की जगह विन्गेला साम्राज्य का विनाश आश्रय देकर पतन के बीच अकुलित कर लिये जिनका फत्त महमूदशाह तृतीय (मन् १५३६-५४) का भोगना पडा। अमीरों ने अन्तिम मुल्तान मुजफ्फरशाह की दुबलता का लाभ उठाकर मल्लनत को छात्र-छात्रों टुकड़ा में विभक्त कर बाँट लिया।^२ इनकी धर्म कट्टरता से हिंदुओं की स्थिति स्थानीय हानि गयी। धर्म का रक्षा के लिये नाग अयाय जगहों में जाकर उमन गंग और जा स्थानान्तर नहा कर सब उहाने अपन चारा जोर परधर्मिया के अत्याचारों से बचन के लिए कट्टर रीति रिवाज सम्प्रदाय उपमप्रदाय और स्थिति के कठिन घर डाल लिए।^३ गुजरात की हतप्राण चेतना का जाग्रत बनाने में नरसिंह, भीरा तथा प्रेमनाथ का वागी का जपूव यागदान है।^४

३ शांति का न

अकबर की गुजरात विजय (मन् १५७२) में नित नय विनाश का आग शांत हो गयी और उस दिन से गुजरात की स्वतंत्र मल्लनत का अंत हो गया तथा सम्पूर्ण गुजरात कन्द्रीय सामन के अधीन हो गया।^५ इन

१ A History of Gujarat Vol 1 Page 55

२ डा० छोट्टीभाई नाथक-गुजरात एक परिचय पृ० १०२।

३ पादल सन विन्गेलाक मई जून १६५५ पृ० २२०-२२१।

४ आदि वचनों-डा० के सा मुनी, पृ० ८०।

५ A History of Gujarat Vol 1 Page 527

प्रकार मुगल सत्ता व अधीनस्थ सालहवी एवं मप्रहवी गती का गुजरात गतिमय वातावरण का अनुभव कर सका। अकबर न गुजरात का अधिक परिस्थिति का सुधारण का काय राजा टोडरमल का मौपा। उसन जमीन की पमाणा कराके नगान का नया प्रबंध किया जिमसे इम मूस से गाही खजान म पचाम नाप रपया मानाना आने लगा। राजा टोडरमल के बाद एस मूस का प्रबंध गिहाबुद्दीन अहमदखान का मौपा गया जा टाटरमन की ही तरह योग्य हाकिम था।^१ गाहजहाँ और औरंगजेब जम प्रसर मुगल सम्राट अपने पूर्वकाल म गुजरात क सूबदार रह चुके थे। गुजरात क प्रति औरंगजेब का विधिप आकषण था। अपन एक पत्र म उमन एस प्रकार का उत्तरस भी किया है कि—गजगन हिन्दुस्तान का आभूषण है।^२ गुजरात म मुगल यादगाहा की तरफ से कुन ५६ सूबदारा का नियुक्ति हुई जिनम अजीज काका अदुल रहीम खानखाना और दारा गिकोह की सूबदारी गुजरात क लिए विधिप मुखबर प्रतीन हुई। गुजरात का विधिप कारीगरी का देव गहांगीर भा रोम उठा था।^३ एन प्रकार हम देखते है कि मुगल बादगाहा का गुजरात क प्रति विधिप सहानुभूति थी। मूरत उम समय का सबसे बडा बन्दरगाह था जहाँ दुनियाभर क व्यापारी आत जात थे। मूरत बस्तन मुगल जमान का बावुन मक्का और बन्दरमुबारक था।^४ राजनीतिक गति एव अधिक सम्पन्नता क बाव जो साहित्य रचा गया व अधिकान म गहनाक का शड परभाव की कामना म रचा गया। गुजरात क समथ जानी कवि अन्ना का अभ्युत्थ एमी युग म हुआ।

४ सक्रान्ति काल

औरंगजेब का मृत्यु क पश्चात् मरणाग सूबदारा जीर मराठा का स्वयंशासकता मिन उठा। गतिन का वातावरण पुन विधुष हा उठा। विन्ना व्यापार गुजरात का अपना व्यापार-कुशलता मिखा रह थ जबकि गिवात्री का बन्ता हु मना मूरत की तान बार नू चवा था। सन् १७०२ म बनीम म गदकवादी गामन कायम हा गया जीर गुजरात तथा मौराठ - बोध और मरणागमुखा आदि क नियमित रूप म दमन किय जान ग।

१ डा ईन्दरो प्रसाद— भारत का इतिहास भाग २ पृ० ६४।

२ दक्खिन अममगरीरी फारसी।

३ मिरान (६) अहमदी भाग २ पृ १६०-१६३। फारसी।

४ गुजरात एक परिचय डा टाडरमल नायक पृ १०८।

सन् १८१६ ई० में गुजरात में मराठा की सत्ता का अन्त आ गया तथा कपना सरकार की सत्ता सर्वोपरि बनी। इस समय भी महाराजा और ब्रिटिश रजिस्ट्रेट के बीच अनेक भगने होने रहते। ब्रिटिश सरकार ने सौराष्ट्र वच्छ तथा गुजरात में पालनपुर वगैरे महीकाण्ड रेवाकाठा खभात नारकोट धरमपुर वासदा तथा सचीन राज्यों में एनेसो प्रथा कायम की। सन् १८५७ की विप्लव की चिनगायिया से पूर्व ही गुजरात में सांस्कृतिक क्रांति गुरु हा चुकी थी। ई० स० १८२६ से १८५६ के बीच गिभा साहित्य और सामाजिक क्रांति का नवीन युग सन् १८५७ के बाद ही गुरु हुआ।

सामाजिक एवं धार्मिक पृष्ठ भूमि—

सोलहवीं शती का उत्तरी भारत निगुण को छोड़ सगुण की ओर प्रवृत्त हो रहा था जिसके प्रचार एवं प्रसार में उत्तर तथा दक्षिण के विविध धारा प्रवाहों को विगेष सुयोग एवं गति मिली। गुरु ने जिस निरुपाधि निगुण ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता स्वीकार की थी उसकी अवहेलना में रामानुज सत्कर श्री बल्लभाचार्य तक जितने भक्त दार्शनिक या आचार्य हुए उन सबने गुरु के मायावाद और विवतवाद से पीछा छुड़ाना चाहा। विक्रम की पन्हवीं और सानहवीं शताब्दी में बष्णव धर्म का आन्दोलन देश में एक छार से दूसरे ओर तक हुआ जिसके प्रधान प्रवक्तव्य में स्वामी बल्लभाचार्य विठ्ठलनाथ नया चतुर्थ धर्म। सगुण भक्ति के प्रचार में विठ्ठलनाथजी ने गुजरात की ओर छ बार भ्रमण (स० १६१३ से स० १६३८) कर अनेक बष्णव मन्दिरों की प्रतिष्ठा की। द्वारका तथा डाकोर के विनाल मन्दिर बष्णव धर्म के प्रमुख केन्द्र बन गये जो गुजरात के प्रायः दो सीमा क्षेत्रों का स्पर्ण करत हैं। जनमत में प्रभावित गुजरात का पूर्व जनमानस बष्णवमत में प्रवृत्तवात् नित्यनीना तथा माधुष्यभाव की ओर महज ही आवर्षित हा

१ 'Thus Bhakti grew into the most creative force in the country bringing joy to every home and re-vitalising the Aryan culture

The new Bhakti impulse spread from Vrindavan into

गया यद्यपि इससे पूर्व भागवत बिल्कमगन और जयदेव के ग्रंथ गुजरात में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे। जयदेव से भी पूर्व राधा-कृष्ण का उपामना अपभ्रंश ग्रंथात्मकता है। इनके कुछ उदाहरण हेमचंद्र के व्याकरण में भी दृष्टिगत होते हैं। पुष्टिमात्र में सवा प्रकार का निम्न गुजरात के व्यापारियों के लिए अधिक अनुकूल साबित हुआ।^१ इस प्रकार नरसिंह एव मारा की सगुण भक्ति में सम्पूर्ण गुजरात एकबार निमग्न हो गया और पानाश्रयी धारा का अविच्छिन्न बड़ी जा कबार पीपा रदास और नाथपथी कापातिका से जुड़ा हुआ था—दृढ़ता से दिखाई देने लगी। यहाँ तक कि मात्स्य और धनराज का कविता भी इस क्षेत्र में कोई विनिष्ट प्रभाव नहीं छोड़ पाता। उत्तर का सगुण साधना में गुजरात के आंचल को ब्रज-साहित्य के कुसवा रंग से रंग लिया। अठारहवाँ शती में इस सम्प्रदाय के प्रायः बारह कवि हुए जिनमें दयाराम सर्वश्रेष्ठ थे और जो संभवतः बल्लभ धारा के अंतिम गिरामणि थे जिन्होंने नरसी का इस परम्परा का वाच्यत्व के सर्वोच्च निस्तर पर पहुँचा लिया।

इस रूप में गुजरात का समस्त मध्ययुगीन साहित्य धर्म भावना से भ्रूणित है। जन बल्लभ स्वामानारायणजी से तत्कालीन और सूफी कवियों का समस्त रचनात्मक आधार धर्म भावना है। धर्म से जनक करके मध्यकालीन साहित्य का नष्ट किया जा सकता। इस धर्म प्रधान साहित्य में पान-वराग्य विषयक वाक्या का बन्धना और जीवन के उल्लास की पूर्णता है।^२

बन्धुन गुजरात का निगमधारा के उद्भव एवं विकास में राजनीतिक परिस्थितियों में बड़ा अधिक धार्मिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का योग है। त्रिम राजनैतिक उद्यम-सुद्यम में उत्तरा भाग्य का निगुण साधना के बावजूद ही हुए इस प्रकार का वाच्य विवक परिस्थिति गुजरात के साहित्य में प्रायः उपलब्ध नहीं होता। गुजरात के सूत्रार गण्य शिरी का ओर अपना दृष्टि जमाने से और शिरी का मन्तनन किम तरह उनके हाथ में भाव बम समा के स्वयं दमन से। जवब और जगानार के वाच्य में गुजरात का जनता समृद्धि के सिद्ध पर था। आधिक दृष्टि में वर सम्पन्न था। निराने मिकार तथा विभिन्न विद्या साधना के कथन में वाच्य

१ गुजरात साहित्य का इतिहास—धा जयदेवके दृष्टिपर दय पूष्ट ६०।

२ गु हि म — डा अम्बालापुर नगर। पृ ०।

क वचन इस बात क प्रमाण हैं कि सूरत खभात और अहमदाबाद उम समय के प्रमुख व्यापारिक नगर थे । इन्हनबतूता ने खभात को स्थापत्य-कला का प्रजा नमूना बताया है ।^१ तथा मिरात अहमदी के अनुसार अहमदाबाद की कारीगरा की प्रणाम करान तूरान मिश्र और सीरिया आदि विन्गा तक फनी हुई थी ।^२ सूरत मुगल जमाने का सबसे बड़ा बन्दरगाह था जहाँ स विदेगा के साथ माल-भामान का हेर फेर किया जाता है ।^३ मुगल बादशाहो गारा जहाँ मदिरा को तोडकर मस्जिदें खडी करन के उल्लेख मिलते हैं वहा उनक द्वारा मदिरो धम-मस्याआ एव हिंदू जातिया को जागीरें दन के दृष्टात भी पाये जाते हैं ।^४ मुमलमान बादशाहा म धम-कट्टरता अवश्य रही किन्तु गुजरात की प्रजा के प्रति उनकी हमदर्दी भी थी । इस प्रकार मुगलकाल तक आने आन सम्पूर्ण गुजरात म गति एव समृद्धि फल चुकी थी । मुस्लिम जाति उत्तरभारत का भक्ति गुजरात म उबर उबर नही गयी थी अत यहाँ हिंदू मुस्लिम दा भिन्न जातिया म इस प्रकार का बमनस्य भी नही पाया जाता । पन्हवी शती की सतपथी हमामगानी तथा पीराणा प्रभृति मुमलमान मिगनरिया ने अपनी धार्मिक एव नतिक कट्टरता को त्याग कर गुजरात का हिंदू जाति के माय ऐसा अपनत्व जोड लिया कि वे रीति-नीति म हिंदुआ से गायक ही कही भिन्न प्रतीत हाते हा ।^५ वस्तुत गुजरात की

१ This city is one of the finest there in regard to the excellence of its construction and the architecture of its Mosque

—A History of Gujarat Vol 1 Page 24

२ मिरात अहमदी पृ ७ अली मोहम्मद खान ।

३ गुजरात सब सग्रह पृ २५७ ।

४ Imperial Mughal Farmans in Gujarat (Plate III)

—By Khan Bahadur M S Commissariat

५ The spirit of caste and its regulations still dominate the customs the ideas the prejudices and practically the whole life of the members of the community who are thus in their manners and dress hardly distinguishable from the Hindus

—A History of Gujarat Vo 1 Page 139

निगुण साधना के अत सत म जिन प्रमुख प्रेरक परिस्थितिया का बल है ।
वे इस प्रकार हैं

- १ कठोर सामाजिक एव धार्मिक बंधन आंतरिक प्रभाव ।
- २ उत्तर तथा दक्षिण भारत क सन्ता का सम्पर्क एवं प्रभाव
बाह्य प्रभाव ।
- ३ परिस्थितिजन्य व्यक्तिगत प्रभाव ।

कठोर सामाजिक एव धार्मिक बंधन

गुजरात के सन्ता मे न तो मगुण निगुण के स्वप्न मण्डन की प्रवृत्ति
हा है और न सिद्ध मुसलमान का भगना हा बल्कि ज्ञान के प्रकाश म उन
आत्मा का खोजन का प्रयास है जा सामाजिक कृतियों एव धार्मिक बंधना
क बीच भटक गयी थी । गुजरात का समस्त मध्यकालीन साहित्य वस्तुतः
धार्मिक संस्कारो स आवद्ध था । परलाक एव परमेस्वर का कामना करन
वान लोगो का इस युग क सन्ता न ज्ञान गगा क किनारे बठ आत्मा के स्पर्श
पर छाया हुई धून का धोया और अनुभव की प्रयागगाला म परमात्मा क
साक्षात्कार करने का जाणै लिया । कबीर क ज्ञा मो वष बाए उमक जसा हा
प्रवर व्यक्तित्व अन्त के नाम मे गुजरात म अवनति हुआ । जब कि सत्रहवा
शती का उत्तरभारत भक्ति का छात्र राति का अपना रहा था गुजरात समृद्धि
क बीच भटकी हई आत्मा को डूढ रहा था । इस युग क सन्ता की बाणा
धम क नामुरा का चार कर ममाज की सहाय का निकाल फवन म नन्तर
का काम करना है । असा और भाजा क चावना ममाज पर स्मातिा वरस
पहन है । असा क समय म (म १६५७-१७१) साम्प्रदायिक जाचार्यो
तथा धम-गुत्रा का बचन्य स्तना अतिर बन् चुका था कि मन्त्रिा और मन्त्रा
म धम क नाम पर धार बभव दिनामिता और अनाचारो का स्वर भा
जनता उमका प्रतिहार नना कर पाता था । सम्प्रदाया और स्तना का
विनहावा आन्ति जना स्तना था । वपणव एव गव सम्प्रदाया का
परम्पर विद्वेष सामान्य जनता क विप विरुध प्रगन बन चुका था । स्म रूप
म धम हर धाया नव स्त जम स्तना गुत्रो कम म डर कर भम्म स्तान
वान मन्त्रिमिता बधा नगदव मनाकर आजाविका प्राप्त करन वान योग
दस्ता विरामिता क स्त म डूढ स्त धम क टवारा तथा गतापतिया का
असा न स्मातिा आ हाया निना है । वगनन् का समयया ता नगमि
नगना क काम म हा विरुध स्तना बना आ स्तो था । काणा जावर गगा म टुवका

लगा पाप धोने धान तीय यात्रियो एव पुण्यात्माआ को कभी अखा के काब मे नही थी । लोगा का विश्वास ज्योतिष विद्या तथा ग्रह दशाओ म बढता जा रहा था अत कमवाण्डिया की पाँचा घेंगुनियाँ धी म थी । गुजरात की भोनी प्रजा उनके बताये हुए विधाना का अ धानुसरण करती जा रही थी । इतिहासकारो की दृष्टि प्राय इस प्रकार की सामाजिक विपन्नता शुधता एव अध पतन की ओर नही पडी थी जिसे सतों ने बिना किसी हिचकिचाहट के साफ-साफ अभियक्त किया है । कठोर सामाजिक एव धार्मिक बंधना को तोड मुक्त वातावरण मे इहान पान की स्वगगा बहायी है । इन सतों के काव्य मे हम सबत्र उस घुटी हुई जजर सामाजिक एव धार्मिक अवस्था के दगन होते हैं जिसकी नीव म युगो से दीमक लग चुकी थी । समाज म प्रवर्तित इस प्रकार की सभी रुढिवादी मायताआ को उखाड फेंकने का बीडा युग के इन सजग पहरेदारो ने उठया और सत्य के गीग म इहाने धम की प्रतीति करापी ।

गुजरात की पानवादी धारा का जिन तत्कालीन धार्मिक प्रवाहा न विनेप रूप से प्रभावित किया वे इस प्रकार हैं

जन मत का प्रभाव—महाराष्ट्र म जिस प्रकार बौद्धमत का अत्यधिक प्रभाव दिखाई देता है ।^१ ठीक उसी प्रकार गुजरात मे जनमत का अत्यधिक प्रचार पाया जाता है । यद्यपि प्राचीन काल म सौराष्ट्र की राजधानी वल्लभी बौद्ध धम का केन्द्र थी और प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य शान्तिदेव ने गुजरात म बौद्ध धम का प्रचार किया था ।^२ किंतु ग्यारहवीं गती तक जनमत के व्यापक प्रभाव म हमके अज्ञेय विलीन हो गय ।^३ गुजरात का अपभ्रंश कालीन माहित्य अधिकांग मे जन-कवियो द्वारा रचित है । इमम काई सन्देश नहीं कि म युग क जनेतर कविया ने भी उच्चकाटि का माहित्य निम्ना हागा किंतु दुर्भाग्यवग वह अनुपलभ है । जनमत कयाकि राय द्वारा प्रतिरित था

१ हिंदी को मराठी सतों की देन— पृ० ५६-५७ ।

२ गु० हि० से डॉ० अम्बानकर नागर पृ० २६ ।

३ When Mularaja came to the throne of Patan Buddhism had long disappeared and jainism had no important following But the immigration of the osvals porvads and other important communities gave Jainism an important position

अतः उसका अधिकांश साहित्य सुरक्षित रह सका। सत्रहवीं शती के अंत तक हम जन-साहित्य के पल्लवित पुष्प दिखाई देते हैं। विनय मुन्दर ममय मुन्दर ऋषभदाम आनन्दधन तथा चिन्तानन्द प्रभृति जन-भावुआ द्वारा गुजराती साहित्य की अनन्य सेवा हुई है जिनमें ऋषभदाम आनन्दधन आर चिन्तानन्द द्वारा रचित उच्चकाव्य का हिंदी रचनाएँ भी उपलब्ध हाता हैं। ये साधू अथवा के सम सामयिक भा थे। अतः इनकी वाणी कहीं-कहीं अथवा का पानाश्रया भावधारा में प्रभावित-सी दीख पड़ती है। सन्ना की भाँति आनन्दधन के पदों में इडा पियला सुपुम्ना ब्रह्मरक्ष अनहन्ता यम नियम आमन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा अजपाजाप आदि याग युक्तियाँ का चर्चा है। ज्ञान वराम्य भक्ति प्रेम और विरह से संपृक्त इनके पदों में सन्ता की ही उत्कट वेदना एक गहन अनुभूति प्रतीत हान्ती है। फिर भी इनका रहस्यवाद निगुनियाँ एक मुक्ति का सन्निह है। इनका अध्यात्म जन धमानुबन्ध है। जन दान का अभिव्यक्ति में रहने सन्ता का स्वकात्मक गली का अनुसरण किया है। आनन्दधन की गहनरी के पचात् जन-साहित्य में चिन्तानन्द की गहनरी का स्थान अप्रतिम है। जन देरामरों में इनके पद बड़े चाव से गाय जाते हैं। अथवा के प्रायः दो सौ वर्ष पश्चात् तिसवीं शती चिन्तानन्द की वाणी पर अथवा का गली का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इनके कुछ पद अगाहन मतप्रिया की गली से कितना भेन सान हैं। इनके प्रमाण में इन दाना के एक-एक पद दविए —

अथा २

श्लथ कहे कोई भड कहे पाखड कहे कोई कहे मित्तारी ।
 मुजन कहे डुरिजन कहे चोर कहे कोई कहे सहाचारी ॥
 बीऊ को पाप टक नहीं ताँटा जाहाँ जाय बीनी अनेतु पयारी ।
 जोनु दम्प्यो जसे तोनु तमो घायो बोहोत रहे जु वाचारी-बीघारी ॥

चिन्तानन्द

ज्ञानो कहे ज्य भजानो कहे कोई ध्यानो कहे मत मानो ज्यं कोई ।
 ओगिन हो भाड भोगो कहे काँ जाक जिण्यो मन मासत होई ॥
 होवि कहे निरदोवि कहे—विह-योवि कहे कोई औगुन जोई ।
 मापु-गु सन मृत कहे कोई भाव कहे निरगध पियारे ॥

१ मज्जरान्तक शिखरी गौरव प्रथम—३१ अम्बागढ़ नगर पृ० ९-३७ ।

२ 'अनर्था'—६२ ।

चोर कही चाहे ढोर कही कोऊ, सेवरु हो काऊ जान दुलारे ।
धारे सदा समभाव चिदानन्द लोक कहावत सु नित पारे ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि १७ वीं शती के पश्चात् जन-कवियों ने राजभाषा तथा खडाबोली में भाषा-असम्प्रदायिक एवं बोधप्रद पदा की रचना की है। इन कवियों का कविता में भी मस्ती, वही प्रेम वही अनासक्ति और श्रमियों का त्याग वही अन्तर्मुखी प्रवृत्ति और वही समय गीत और सलाचार का उपदेश है जो ज्ञानमार्गी निगुण सतो ने दिया है।^१ गुजरात के एस हिंदा-भवी जन कवियों में ऋषभदास, आनन्दधन विनय विजय यथाविजय विष्णुदास और चिदानन्द प्रमुख हैं।

जिस प्रकार मन्त्रहवीं शती एवं बाद के जन साधुओं पर इस प्रकार की निगुण भावधारा का सहज प्रभाव पड़ा था ठीक उसी प्रकार गुजरात की सततव्राणी की पृष्ठभूमि में जन दर्शन के आचार पत्र का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। श्री सुरेश जोशी ने अपने अधिनिबन्ध में जनमुनि राममीग का पाहुड दूहा के साथ अथवा कल्पना की विनाद तुलना की है।^२ इन मन्त्रों में दान तथा गीत और सत्याचरण को जो भावना मिलती है वह जन साधना का ही दान है। जनमत में परिपुष्ट सत्य और अहिंसा का चरमात्मक एवं समुन्नत तत्त्व हमें गीतों में दिखाई देता है। गुजरात का सांस्कृतिक जीवन का मूल में भी जनमत का अपूर्व योगदान है। यहाँ का भूमभूतावादी अहिंसा मूलक शांत स्वभाव भी इसी की देन है।^३ फिर भी सन्ता का साधनापत्र का जनमत न उतना प्रभावित रहा कितना जनसाहित्य ने। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में गुजरात का सन्ता ने उन समस्त काव्य प्रकारों को अत्यन्त महत्ता पूर्वक अपना लिया है जो अपभ्रंश-काव्य का जनसाहित्य में प्रमुख स्वरूप उपलब्ध हात है। इन काव्य प्रकारों की चर्चा प्रस्तुत अधिनिबन्ध का पत्र परिच्छेद में की गई है।

वर्णन धर्म का प्रभाव—प्रायः दसवीं शती में लेकर पंद्रहवीं शती तक वर्णन धर्म का प्रचार गुजरात में अत्यधिक हुआ।^४ विष्णुपूजा तथा

१ गुजरात के हिंदी गौरव ग्रंथ डॉ० अम्बागकर नागर पृ० ६ ।

२ A Critical Edition of Narahari's Jñān Gitā—

—Dr Suresh Joshi, M. S. University Baroda

३ Gujarat and Its Literature Dr. K. M. Munshi Page 126

४ श्री जयचन्द्रकृष्ण हरिकृष्ण दवे—'गुजराती साहित्य का इतिहास' पृ० ६७ ।

अत उगवा अधिकांश साहित्य मुर्गिा रह गया । गवहवा शती क अा तक ह्म जन-साहित्य क पल्लवित गुण सिगार्द ढेा हैं । तिनय गुात्र गमय गत्र ऋषभदाग आनदधन तथा चिाना प्रभृति जा गापुभा ारा गुजराता साहित्य की जनय तथा दृढ़ है तिनम ऋषभदाग आनदधन और चिानद द्वारा रचित उगवाति का सििी ररागर् भी उपनरुध हाता है । य गापु अगा क सम-मागयिक भा ष । अत न्ना वागी कही ागा अगा का पानाश्रयी भागधारा म प्रभावित-सी दीग पन्नी है । गन्ना की भौति आनदधन के पदा र्म इडा पिगला गुगुम्ना ब्रह्मरघ्न अनन्ना यम नियम आमन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा जत्रगाजाप आि याग युक्तिया का चर्चा है । ज्ञान बराग्य भक्ति प्रेम और विरह म सपृत इनर पना म सन्ता की ही उरवट वेना एव गहन अनुभूति प्रनीत हाभी है । फिर भी इनका रहस्यवाद निगुनिया एव मूफिया म भिन है । न्ना अध्यात्म जन धमानुबूत हैं ।^१ जन दान का अभिव्यक्ति म न्हने मना का रूपकात्मक गली का अनुमरण किया है । आनदधन की बहातरी क पपात् जन-साहित्य म चिानद की बहातरी का स्थान अप्रतिम है । जन दरारगों म इनके पद बर चाव स गाय जात है । जला क प्राय दा सो वप पश्चात् तिली गयी चिाना की बाणी पर अगा का गरी का स्पष्ट प्रभाव परिर्लात होता है । न्ने कुछ पद अगाहत सतप्रिया की गली स जितना भेल खान हैं न्ने प्रमाण म न दोना के एक-एक पद दवितग —

अथा

लठ कहो कोर् भड कहो पाखड कहो कोर् फहो मिलारी ।
 मुजन कहो डुरिजन कहो चोर कहो कोई कहो ब्रह्मचारी ॥
 कोऊ की पाप टक नहीं साहां जाहां जाये कीनी अलेखु पधारी ।
 जीनु देखयो जसे तोनु तगो घायो बोहोत रहे जु बीचारी बीचारी ॥

चिदानद

मानो कहो ज्यु अजानी कहो कोई ध्यानी कहो मत मानी ज्यं कोई ।
 जोगिन हो भाष भोगी कहो कोर् जाक जिश्यो मन भासत होर् ॥
 दोषि कहो निरदोषि कहो—पिड-पोषि कहो कोई औगुन जोई ।
 साधु-मु सत महत कहो कोई भाव कहो निरगम पियारे ॥

१ गुजरात क हिन्दी गौरव ग्रंथ—डा० अष्यागकर नागर पृ० ३६-३७ ।

२ 'सतप्रिया — ८२ ।

घोर बहो घाह डोर कहो कोऊ, सेवइ हो कोऊ जान दुलारे ।
घारे सदा समभाव चिदानंद सोक कहावत सु नित यारे ॥

इस प्रकार हम देखते हैं कि १७ वीं शताब्दी के पश्चात् जन-कवियों ने व्रजभाषा तथा खड़ीबोली में भी अमाम्प्रदायिक एवं वाक्प्रद पदा की रचना की है। इन कवियों की कविता में भी मस्ती, वही प्रेम वही अनासक्ति और श्रमियों का त्याग, वही अन्तर्मुखी प्रवृत्ति और वही समय, शील और सदाचार का उपदेश है जो ज्ञानमार्गी निगुण सत्ता ने दिया है।^१ गुजरात के एस हिंदी-सर्वी जन कवियों में श्रृणुदास आनंदधन विनय विजय यशोविजय किशनदास और चिदानंद प्रमुख हैं।

जिस प्रकार मन्त्रहो शताब्दी एवं बाद के जन साधुओं पर इस प्रकार की निगुण भावधारा का सहज प्रभाव पड़ा था ठाव उसी प्रकार गुजरात का सतवाणी की शृणुमि में जन देशन के आचार पत्र का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। श्री सुरेश जोशी ने अपने अधिनियंत्रण में जनमुनि रामसींग का पाहुड देहा के साथ कल्पना की विनाद तुलना की है।^२ इन मन्त्रों में नान तथा गीत और मत्याचरण की जो भावना मिलती है वह जन-साधना की ही देन है। जनमत में परिपुष्ट सत्य और अहिंसा का चरमात्मक एवं ममुक्षत तत्त्व हम गांधी में दिखाई देता है। गुजरात के सांस्कृतिक जीवन का मूल में भी जनमत का अपूर्व योगदान है। यहाँ का मममौतावादी अहिंसा मूलक शांत स्वभाव भी इसी की देन है।^३ फिर भी सत्ता का साधनापत्र का जनमत न उतना प्रभावित नहा किया जितना जनसाहित्य ने। अभिव्यक्ति के क्षेत्र में गुजरात के सन्तों ने उन ममस्त काव्य प्रकारों की अत्यन्त मन्त्रता पूरक अपना लिया है जो अपभ्रंश-काल के जन साहित्य में प्रमुखरूपण उपलब्ध हैं। इन काव्य प्रकारों का चर्चा प्रस्तुत अधिनियंत्रण का पत्र परिच्छेद में की गई है।

वर्णव धम का प्रभाव—प्रायः दसवीं शताब्दी में लेकर पन्ध्रवीं शताब्दी तक वर्णव मत का प्रचार गुजरात में अत्यधिक हुआ।^४ विष्णुपूजा तथा

१ गुजरात के हिंदी गौरव ग्रंथ' डा० अम्बागकर नागर पृ० ६।

२ A Critical Edition of Narahari's Jñān Gitā—

—Dr Suresh Joshi M S University Baroda

३ Gujarat and Its Literature Dr K. M. Munshi Page 126

४ श्री जयतकृष्ण हरिकृष्ण बवे—गुजराती साहित्य का इतिहास पृ० ६७।

भागवत की प्रतिष्ठा गुजरात में गुप्त काल में चली आ रहा है।^१ वष्णव धर्म के प्रचारका में मध्य और निम्नका का उनका स्थान नहीं जितना बल्लभाचार्य और विठ्ठलनाथजी का है। वष्णवतीर्थों में द्वारिका और डानार न केवल गुजरात में ही बल्कि समस्त भारत में मन्थन पुण्य-स्थला में समझे जाते हैं।

गुजरात के सत्ता की पानमार्गी गाथा यद्यपि वष्णव धर्म के अनाचारा के विरोध में खड़ी हुई किन्तु वष्णवी विचारधारा का वह नितान्त परित्याग नहीं कर सकी। अन्त में और मादण सन्कारा से वष्णव हुआ है। अन्त में प्रीतम तथा निरात की पानवादी का यथारा में प्रमनक्षणाभक्ति का जो स्वरूप स्पष्ट रूपमें भलकता है वह उनका वष्णवी सन्कार ही है। प्रातम धीरो निरात नरभे तथा अय सन्तो न ब्रह्मलीला का निरूपण कृष्णलीला के आधार पर ही किया है। गुजराती सत्त काय की यह एक ध्यानपात्र विषयता है। वस्तुतः सोलहवी गीता से लेकर (नरसिंह-युग) दयाराम के समय तक ममम्त गुजराती कविता वष्णवी भावधारा एवं सन्कारा से अनुप्रेरित है। मक्षप में गुजरात के सत्त साहित्य पर हम वष्णव धर्म का प्रभाव म प्रकार देख सकते हैं

१ भागवत का अत्यधिक प्रचार पद्महवा एवं सोलहवी गीता में प्रतीत होता है। अतः सत्ता ने भी भागवत की कथाओं का अपना वष्णव विषय बनाया और अपन ढंग पर मौनिक गाथाएँ तयार कीं। प्रीतम और छोटेम इस क्षेत्र में सम्भवतः सबसे आगे हैं।

२ साधना के क्षेत्र में सगुण निगुण की समन्वयात्मकता। एक ही भक्त निगुण निराकार राम और सगुण माकार कृष्ण की भक्ति करता पाया जाता है।

३ ब्रजभाषा का प्रचार। सत्ता की भाषा यद्यपि सधुक्कडा है फिर भी उसके मून में ब्रजभाषा का आधिक्य सम्भवतः मालिए है। गुजरात के सत्तो की भाषा में पूर्वीपन नहीं के बराबर है जबकि मकी प्रकृति ब्रजभाषा और खड़ी बोली के अधिक निकट है।

४ गुजरात की भक्ति-साधना का स्वरूप प्रायः सगुण में निगुण की ओर है। नरसी और मारु के काव्य में अकुरित निगुण-साधना के बीज हम अन्त में पूरणपण प्रस्फुटित हात हुए प्रतीत हात हैं। यही कारण है कि उत्तरभारत में जहाँ हिन्दी की रीति-युगीन काव्यधारा प्रबल वेग से

गुजरात की ज्ञानमार्गी धारा की पृष्ठभूमि

प्रवाहित हो रहा थी, उससे बिल्कुल भिन्न गुजरात में उस समय काव्य धारा का अविरत प्रवाह पूरा पड़ा था।

स्वामीनारायण सम्प्रदाय—१८ वां शताब्दी के परिवर्तन बल्लभ का प्रभाव क्षीण होना लगा और नवीन सरकारों के परिवर्तन में नारायण सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। तत्कालीन राजनीतिक तथा धार्मिक अवस्था अत्यन्त ग्राहनीय हो चुकी थी। राजाओं धर्म होने का और ब्रह्मजी सत्ता की भाव जमाने लगी। जहाँ जहाँ जाकर अधिपत्य का भावना प्रबल होता जा रहा था। १८ वें के कथनानुसार मारे लोनी तरवार जीत लोनी देग बरे लोनी नहीं लोनी लोनी—उस समय की कहावत हो चुकी थी। भौतिकता और धर्म नग्न-नृत्य में व्यभिचार शिष्टतत्त्वोरी हत्या डाकैजनी और घात का भावना नागा का दिला का बढ़ावा दे रही थी। समाज विपन्नतावस्था से लाभ उठाकर विभिन्न सम्प्रदायों का सत महान लो समाज पर अपना प्रभाव जमाने में प्रयत्नशील था। संक्षेप में औ मृत्यु का बाद का पूरा का न-वर्ण अराजकता अव्यवस्था और अ युग था। समाज में चरित्र भ्रष्टता दिन दिन विकसित होती जा रही प्रवाह की सभी कुरीतियों का दूर करने के हेतु सन् १८५६ में स्वामीनारायण सम्प्रदाय का अभ्युदय हुआ जिसे हम एक रूप में व का ही परिष्कृत परिष्कारित एवं परिनिष्ठित संस्करण मान सकते सम्प्रदाय का प्रवर्तक स्वामी सहजानन्द थे जिन्होंने गुजरात की ल विभिन्न जातियों का अपने सदुपदेशों से प्रभावित कर चरित्र निर्धता मिटाया। पद्य का इय प्रवर्तक न सुखभोग के सामने बन्ध प्रति तथा आचार विचार की कथनी एवं करनी का एवता पर बल दि सम्प्रदाय का मूल मंत्र है—भक्ति नत वाम नहि अंतरा। दृष्टि में शम्भू रामानुज और बल्लभ सम्प्रदाय का सिद्धांत का अपूर्ण हुआ है। स्वामी सहजानन्द स्वयं अपने मत का श्री सम्प्रदाय का मानते थे। रामानुज का त्रिगिष्टान्तवाक्य उक्त विषय माय था। स्वामी का प्रेरणा में सम्प्रदाय का अन्तगत ससृष्ट गुजरात का क अनक सुकवि हुए जिनमें से प्रमुख हैं—मुत्तानन्द ब्रह्मानन्द, निष्कुरानन्द भूमानन्द देवानन्द दयानन्द और मजुकोशानन्द कवि गणत का जानकार थे जिनकी कारण अष्टधाप का कवियों से।

म उतरती हुई नहा यद्यपि य मभी अलिनी मात्र क भाव प्रवण बनाचार
 थे । नव भावोमत अंतर म पूर पडन धानी वाणी वराग्यजनित मुक्त
 भावना के पट का भी रममय बनाय रगता है और नम प्रवार गुक्ता म भी
 रगता का निरूपण इनकी विगिए न है । उगागरा क निय ब्रह्मान
 द्वारा निरूपित गवर जोर भगवान ऋष्य क न रूपचित्रा का मनोहागता
 यहाँ दृश्य है—

(१) चाल सिद्धवर की मस्तानी ।

चाल मस्त गि माल मनोहर गीग जटा नहि जात बहानी ।
 सदा उमग भरे गिवगकर वाम अग नवरग भवानी ॥
 घुषमाहड़ गू अति प्राङ्गम नहि जानत मुङ्ग-अतानी ।
 आनद कद मनोहर भूरति बह्यानद सदा मुखदानी ॥
 बह्यानद काथ्य पद ८२६

(२) आलीरो आय बस्यो ह्य नददुलारो ।

बठत चलत जागत सुपन म नेक न होवत यारो ।
 मद-मद मुख ह्लास मनोहर नन कमल मतवारो,
 बह्यानद को नाथ रगोलो दिल को जानन हारो ॥
 वही पद ६०६

साधना के क्षत्र म इनकी सबसे बडी देन है—चरित्र निष्ठा तथा
 जावन म दृढ आत्मविश्वास का जागरण ।

सारागत यह मम्प्रदाय वप्णव मम्प्रदाय गत हुए भी मन भावधारा
 का पोषित करने म सहायक हुआ है । इसके मूढय कविया न जहाँ एव
 ओर सहजानन्द स्वामी का गुणगान किया है वहाँ दूमरा आर नीति वराग्य
 जान एव भक्ति की कविता भी का है ।

उत्तर तथा दक्षिण भारत के मन्ता का सम्पक एव प्रभाव

श्री गकराचाय का अद्वतमत क्याकि गुक्क था नमलिए भक्तिधम को
 प्रधानता मिली और था रामानुजाचाय तथा निम्बाक न भागवन धम को
 प्रात्माहन दवर उमका व्यवस्थित स्वरूप निश्चित किया । नमक पंचान्
 स्वामा रामानु ह्य जिहानि मम्भुन की अप ता लाक भापा प्राकृत म
 धर्मोपदेश देकर भक्ति क नर स्त्री-गुप्प ब्राह्मण गूद्र सभा क निय खोन लिये
 जिहानि प्राचीन जजर परम्पराआ का तोडा और रामभक्ति क प्रचार एव
 प्रमार म निग्विजय यात्रा की । नम प्रवार भक्ति का प्रवाह दक्षिण मे उत्तर

की जार प्रवाहित हुआ जिसका छाया पूर्व तथा पश्चिम में भी स्पष्टपण लियाई देता है। चौन्हवीं तथा पंद्रहवीं शती का सम्पूर्ण गुजरात स्वामी रामानन्द का विचारधारा से प्रभावित है।^१ क्वार पापा रणम आदि श्वा की प्रणाली के बने थे जिन्होंने अपने मन के प्रचार में गुजरात का विविष्ट स्थान दिया।

गुजरात का ज्ञानधारी धारा के ज्वातिधर दादू माण्डल एवं अन्ना उत्तर की इस परम्परा में पूरित प्रभावित हुए थे जिनमें मन्त्र नष्ट। कवीर न पश्चात् सम्पूर्ण सत-मान्दित्य में यदि काइ अन्तित्य रत्न दीव्य पढता है ना वह है अन्ना। वस्तुतः क्वार का जन्म विराम है—अन्ना का प्रारम्भ भी वन्ना है। गुजरात में जिन माधना के बीज कवीर ने राप थे उनका पल्लवित स्वल्प हम अन्ना में प्रतीत होता है। परवर्ती मन्त्रों में धारा प्रीनम कुवर प्रभृति मन्त्र जिनमें रामानन्दा तथा क्वार पय के माधुका में ज्ञानिन एवं प्ररित रसा कान्ति के सत कवि थे जिन्होंने मन्त्राति-वान का उत्पन्न परिधिया में ज्ञान का शीप जनाया था और क्वार तथा अन्ना की विचार मरणि को आग वृत्तन में अपूर्व याग लिया था। क्वारपय का अन्त में स्वन्तर्ध गान्ता प्रगाप्या गुजरात में अब भी फना हुआ है जिन्होंने गुजरात की ममय मतवागी को प्रद्युम्न रूप में प्रभावित किया है। गुजरात का ज्ञान-यागा के विकास में इनका अपूर्व यागदान है जिनकी विविष्ट चचा हमने प्रस्तुत प्रवच के शिवाय परिच्छेद में का है। इस प्रकार महाराष्ट्र के आर से मन्त्रानुभाव शत-मन्त्रदाय तथा नामन्त्र और वगाय की आर से चतय मन्त्रानु की वागी का प्रभाव भा गुजरात का ज्ञानमार्गी भावधारा पर पडा है। इन जगम तार्यों ने ज्ञानगगा के विना एक विनाय बटना मधुचिन्ता नन्ना समझा वल्वि य ता एम जन्त जगा थे जिन्होंने अन्तर् का पुकार श और वन्ना में पर घट घट में की और अघवार में आछने मवाण मामाका का दहाकर श का गान्धित्व एवना एवं आध्यात्मिक भावना का जागृक बनाय रखा।

परिस्थितिजय वयविविध प्रभाव

मतवाध्य के प्रवर्तन में तत्कालीन राजनानिक साम्राजिक तथा धार्मिक परिस्थितिया का जितना हाथ रहा है उनका ज्ञान मन्त्रा का निजी परिस्थितिया का भी। मध्यमय जीवन में जिनका आमा मन्त्र ऊध्वगामा उत्पन्न भग्ना

१ मध्यकाल की साहित्य प्रवाह' डा० क० मा० मुन्शी पृष्ठ १८।

रहा एम प्रतिक्रियाशास्त्र तथा मत्प गंधाना जयवा मन्त का मना म जभिर्नि न
 किय गय । एम प्रकार की प्रवृत्ति प्राय मभा भागनाय मन्ता म परिर्वात्त
 जाता है । कबार नानक और मुनगा तिया न तिया एमी न परिस्थिति न
 जायान स तिन हाकर सामाजिकता म निरक्त हुए हैं ।

गुजरात के अधिकांश मन्ता की जावनन्तिया का उत्पन्न म सामाजिक
 एवं धार्मिक परिस्थितिया के माय-माय उनका वयत्तिक परिस्थितिया का भा
 दिशिष्ट महत्व रहा है । एम स नरमा जमा कार् स्वमाता अपना भाभा के
 वाक्य-वाणा स विद्व हाकर घरवार छाड बठा है । ता धीरा जमा बाद
 संधाना आत्मनान की स्वाज म अपना पत्नी का त्याग कर मन्ताभिनिष्क्रमण
 कर बठा है अखा जमा कार् नाना अपना धम-वन्ति के जविन्नाग स तिन
 हाकर सदगुर की राज म निक्त्त पया है ता त्रिविक्रमान्ता जमा कार् जागूक
 विवाह मडप म सावधान ! का पुकार सुनकर गठ व धन का ताड ममार स
 भाग खडा हुआ ।

उपयुक्त उदाहरणा म यह सिद्ध हाता है कि सत काय के अध्ययन
 एवं अनुशीलन म उनकी वयत्तिक परिस्थितिया का अध्ययन भी नितांत
 आवश्यक है । एनकी रचनाओं पर एम प्रकार की मार्मिक घटनाओं का
 प्रभाव महज हा देखा जा सकता है । जीवन की परिस्थितिया स विवाह
 करन वान एन मन्ता का वाणी भुक्तभागी आत्मा की मन्धी पुनार है । अनुभव
 का प्रयागगाला म मवप्रथम एनीन स्वय का कमा एमके पन्चात् जीरा का
 पथ प्राप्त किया ।

वस्तुत मभा मन्त आमन्ति स जनामन्ति और एहिकता म पारतौ
 किकता का जाग अग्रमर हुए हैं । समार के जायात प्रतिघाता और उनके
 अपन अनुभवा न मवन्तानन हूय जीर जागूक आत्मा का उध्वगामा वनन
 की प्रेरणा दा है । य सभी सत जन्त समष्टि का कामना म समाज मवा म
 प्रवृत्त हुए है वनी उहानि व्यभि मूनक साधना का भा पर्याप्त महत्व दिया
 है । विचार करन पर गुजरात का समस्त सत-साहित्य यष्टि आर समष्टि
 मूनक साधना का सतु है ।

द्वितीय परिच्छेद
गुजरात के प्रमुख सत-संप्रदाय



द्वितीय-परिच्छेद

गुजरात के प्रमुख सन्न-सम्प्रदाय

गुजरात की नानाश्रया गाथा का पृष्ठभूमि का अध्ययन कर चुकने के पश्चात् अब हम गुजरात की प्रमुख मत प्रणालियाँ तथा एवं सम्प्रदायों का अध्ययन करेंगे

१ शब-शक्ति साधना एवं गोरख पथ—

मध्यकालीन धर्म-साधना में गोरख पथ एवं शब-साधना का महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः यह सम्प्रदाय मध्यकाल की सामान्य जनता में प्रचलित सभी साधना और धर्म पद्धतियों का एक अभिनव समन्वित स्वरूप है।^१ नाथ सम्प्रदाय की प्राण प्रतिष्ठा का श्रय मत्स्य-द्रनाथ तथा गारुडनाथ का दिया जाता है। इस पथ के मूल प्रवक्ता आग्निनाथ अथवा भगवान् शिव माने जाते हैं। इस मत के अनुयायी यागी ब्रह्मचारी दण्डा आदि के नाम से पुकारे जाते हैं।^२ इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेक मत हैं। कुछ विद्वान् इस ब्रह्मयान तथा सहजयान का ही विकसित एवं परिष्कृत रूप मानते हैं। कुछ लोग इसका मूल उद्गम तान्त्रिक बौद्ध धर्म में खोजते हैं और कुछ विद्वान् इस शब-साधना पद्धति को मानते हैं जिस पर बाद में बौद्ध धर्म का प्रभाव पड़ा।^३ डा. त्रिगुणाधर ने इसे स्वतंत्र रूप से विकसित मानकर इस पर हिन्दू शब-शक्ति तथा बौद्ध-तन्त्रा शब-साधना और याग साधना आदि का प्रभाव माना है।^४ डा. मातीमिह के अनुसार नाथ सम्प्रदाय में मुख्यतः कौन सम्प्रदाय कापालिक और हठवादी याग सम्प्रदाय का समावेश है।^५ मध्ययुग में प्रचलित लखकुलीय कापालिक नाथ गारुडनाथी रसेश्वर आदि पाशुपत शब तथा तमिः काश्मीर वीर आदि

१ हि नि का दा डा० गोविन्द त्रिगुणाधर पृ० २६६।

२ Gorakhnath and the Kanphata Yogis Brigs Page 1

३ नाथ सम्प्रदाय श्री हजारोप्रसाद पृ ४-५।

४ हि नि का दा डा गोविन्द त्रिगुणाधर पृ २६६।

५ निगण साहित्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पृ० ५२।

जागम गवा का प्रचार दवा जाता है।^१ इनमें त्रिकुलींग मत गुजरात में शुरू हुआ। भडारकर के अनुसार पाण्डुपत का ही यह दूसरा नाम है जो बाद में मसूर से राजपूताना तक फैल गया। शिव के जो अवतार लिंग रूप तथा वायुपुराण में लकुलि कह गये हैं वही उनके आधार हैं। गुजरात में भारपट्टन में एक लकुलींग मूर्ति भी पायी गई है। माध्वाचार्य ने इसका उल्लेख भी किया है। इनकी सभी चीजें पाण्डुपता जमी ही हैं। वेवल भस्म के बदले व सिक्ता में स्नान करते हैं यही भेद है।^२ मालवी-काल में लकुलींग धर्म राज्य द्वारा प्रतिष्ठित था तथा त्रिकुलींग पाण्डुपताचार्य का शिव का अवतार माना जाता था जिनका जन्म लाट देग में नमदा तट पर कारावण-वायावराट्टण में हुआ था। नमदा गवा के लिये गया के समान पवित्र है।^३

दारुहवा गती में कापालिक पथ गुजरात में प्रवर्तित था। हेमचन्द्राचार्य के सिद्धहेम में इस प्रकार का एक उल्लेख मिलता है—

प्रिय एम्वाहि कर सेल्लु करे छड्डाहि तुहु करवालु
जे कावालिय बप्पुडा लहि अमगु कपालु।^४

अथान् ह प्रिय ! तलवार त्याग कर अब हाथ में भाला धारण करा जिसमें बचारा बपाना जभन कपाल पा मवे। यहाँ पर बप्पुटा गन्तमान तन याग्य है। कापालिक का बप्पुटा कहा गया है। मन्त्र है सिद्धराज के समय जन धर्म का राज्याश्रय मिलने पर कापालिका का जन्म घट गया है।^५ फिर भी चौदहवीं गती तक गुजरात में शैवमत का प्रभुत्व था। सिद्धा प्रगप्ति में गुजरात के अनेक पाण्डुपत आचार्यों का उल्लेख

१ एन आउटसाइड आफ दि रिस्कोजस लिटरेचर आफ इण्डिया फकरर

पृ १६०-६१।

२ हिन्दी और मराठी का निगण सात-वाक्य डा प्रभाकर माचवे पृ० ५१।

३ गुजरात नो सांस्कृतिक इतिहास पृ० २५२।

४ आ० हेमचन्द्राचार्य विरचित सिद्धहेम पृ० ३८७-३

५ बल्लभिन काल में शैव-साधकों का अत्यधिक मान था। बल्लभिनरेण तथा नेपाल-नरेण दोनों ही शैव धर्माध्यक्ष की परम दक्षत बप्पु के नाम में अभिहित करते थे इस प्रकार के उल्लेख गिरनार के चतुर्थ गितालेख तथा नेपाल-नरेण बसन्तसेन के ताश्र-सेख में मिलते हैं।

—देखिए— गुजरात नो प्राचीन इतिहास भाग १, पृ० ८८-९०।

मित्रता है। मराठ के आचार्य मुनिव सागा के तथा गुजरात के आचार्य गाय्य सागा के थे। ग्यारहवीं से चौदहवीं शताब्दी के मध्य गुजरात में तान प्रमुख गिव मंदिर थे—(१) मामनाथ (२) मूनखर () रूमनाथ। चौदहवीं शताब्दी में गुजरात पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ और अनेक पगुपत मठों को तोड़ा गया। महमूद गजनवी ने जिस प्रकार मामनाथ के मंदिर को लूटा था और रूम लूट में उस बीम नाग दीनार के लगभग की प्राप्ति हुई थी^१ उसी प्रकार जनाउद्दीन द्वारा रूमनाथ के लूटे जान का उक्त एक हस्त प्रति में भी प्रचार मित्रता है—

अथ श्री रुद्रमाला नु कवीत छ ॥ सवत वार बिलोतरों ॥ सोलकी सीद्धराव ॥ रुद्रमाल नी थापना ॥ माघ मास परमाण ॥ कृष्ण पक्ष चतुदशी ॥ वार चंद्र निरधार ॥ शिव पूजा साच दले ॥ नाम यपु पुग चार ॥१॥ थर सत चौद चौवाल ॥ थम स सोल निरतर ॥ पूतलि सहस्र अडार ॥ हीरा माणक जडिप्र ॥ छपन लाख तो गजतुरी ॥ बोहोतर से बडे ॥ बोहोतर से कनक जातियों ॥ त्रिस सहस्र ध्वज दड ॥ कनक फलन शिर आगली ॥ ते रुद्रमाल ने कराथतां ॥ चौद क्रीड मोहोर ॥ कविजन ने कागल चडी ॥ मोहीर तणु प्रापु करयु ॥ सोल रुपये एक ॥ रुद्रमाल करते वावरी ॥ ते कविजन ने कागद चडी ॥२॥ सवत तेर पासेट मा दहली ने दरबार ॥ असुर थयो जलाबदी ॥ आवी युद्ध कयों अपार ॥ ऊद्रमाल पाडी पाघर कयों नरा उतारयो बाद ॥३॥ माठो कयों भलेचने देवल दीयो गिराई ॥ देव देवीन दवता सरखें रहे छुपाई ॥४॥ इति श्री रुद्रमाल नु कवित सपूरणम् ॥^२

यद्यपि यह प्रति बहुत प्राचीन प्रतीत नही जाती जसाकि हमने अतगत कहा गया है— मोहोर तणु मापु करमु मान रूप्य एक अथान् मुन् की वामत सातह रूप्य के बराबर आज में माठ सत्तर वप पूव समझी जाता थी। इस आधार पर इस हम साठ वप पन्न लिखा गयी प्रति मान सक्त हैं जिनमें एक महत्वपूर्ण बात कही गई है कि दिल्ली अधिपति जनाउद्दीन ने सवन् १३६५ में रूमनाथ का विनाश किया था। रूमन जनतर भी गुजरात में पौराणिक गवमत बना रहा। पूजाविधि की मरतता हा रूमक महत् प्रचार का कारण है।

१ देखिए— गवधम नो इतिहास श्री दुर्गाकर सास्त्री।

२ हस्तप्रति पौ न० ३० अ न १४ डा० पु० नडियाद।

शिव साधना का प्रभाव

नरसिंह महता स्वयं शिवापासक थे। हाग्माला में उन्होंने कहा है कि जा शिव और कृष्ण में भेद मानता है वह अधम और नरक का अधिकारी है। दयाराम के काव्य में कृष्णभक्ति के साथ साथ शिवमत के प्रति आदर्शभाव है। भालणकृत 'शिव भानगी मवात्' नाककृत 'शिव विवाह' नामकृत 'रेवाण्ड और शिव महात्म्य' आदि काव्य ग्रंथ शिव भक्ति में प्रभावित होकर ही लिखे गए हैं। गुजरात के शिव-भाषक मता में शिवानन्द तथा रणछोडजी दीवान का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। रणछोडजी दीवान का 'शिव रहस्य ब्रजभाषा में लिखा हुआ एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इसके अलावा गुजरात के अनेक ज्ञानमार्गी मता पर शिव-साधना का प्रभाव पड़ा है। अला तथा छोट्टम आदि मता का दानिया में जगह जगह शिव शिव का प्रयाग ब्रह्म के अर्थ में ही मिनता है।

शाक्त मत

शिव पावती के युगल जागृण का पूजा आज भी गुजरात में घर घर देखा जाता है यही कारण है कि गुजरात में पौराणिक काल का शिवमत ही अधिक प्रचलित हुआ। साम्प्रदायिक शिव-मात्रित्य प्रायः नगण्य है। दक्षिण की शिव साधना का अपना गुजरात की शिव-साधना अधिक मरत एवं महज है उसका कारण यह है कि यहाँ शिव एवं शक्ति के बीच कोई साम्प्रदायिक भेद नहीं माना गया।

भारत में कुल ५२ प्रधान शक्तिपीठ हैं। कहा जाता है कि जब भगवान् शिव अनेतावस्था में अपने कथा पर मत्ती के शिव का लिंग जगत् में तब विष्णु ने उम ५० गडा में काल दिया। कथा-कथा पर इन पाठा का संख्या १०८ बताती जाती है। दशभागवत में गुजरात के कुछ प्रमुख शक्तिपाठ के नाम इस प्रकार मिनत हैं—(१) शिवती (२) मामावर (३) प्रभास (४) मन्मथता (५) ममृती। मन्मथता पुराण के अनुसार मिदराज ने मन्मथनिग भीन के चारा आर १००० शिवलिंगों का स्थापना का आर १०८ पाठ बनराय जितक मध्य में मन्मिद-शिवी है। मिगडा के ममाप पिहवारा में ६० में ६०) का एक गिलानक है जिगम शिव लमाया का पुत्रा का उत्तर है। गुजरात के प्रसिद्ध कवि नमन तो अपना एक कविता में गुजरात की मामाएँ शिव मन्मिद में ही गिनाया है—

मिथ्या है। मवाक व आचाय कुणिक शागा व तथा गुजरात व आचाय गाय गाय व थे। ग्यारहवीं म चौहथी शता व मध्य गुजरात म तीन प्रमुग गिव मन्दिर थ—(१) मामनाथ (२) मूनर () म्मनाथ। चौदहवीं गती म गुजरात पर मुमनमाना का आक्रमण हुआ और अनक पपुपत मठा को तोडा गया। महमूद गजनवी न जिम प्रकार मामनाथ के मन्दिर का लूटा था और इम लूट म उस वीम नाम दानार के गगभग की प्राप्ति हुई थी^१ उमा प्रकार अनाउद्दीन द्वारा म्मनाथ व लूट जान का उल्लेख एक हस्त प्रति म म प्रकार मिथ्या है—

अथ श्री रुद्रमाला न कबोत छ ॥ सवत बार बिलोतरो ॥ सोलकी सोद्धराव ॥ रुद्रमाल नो थापना ॥ भाघ मास परमाण ॥ कृष्ण पक्ष चतुदशी ॥ बार चद्र निरधार ॥ शिव पूया साच दले ॥ नाम थयु पुग चार ॥१॥ यर सत चौद चौवाल ॥ यम स सोल निरतर ॥ पूतलि सहस्र अणार ॥ हीरा माणक जडिअ ॥ छपन लाख ती गजतुरी ॥ बोहोतर से चडी ॥ बोहोतर से कनक जालियो ॥ त्रिस सहस्र ध्वज दड ॥ कनक कलग शिर आगली ॥ ते रुद्रमाल ने करावता ॥ चौद क्रोड मोहोर ॥ कविजन ने कागत चडी ॥ मोहीर तणु प्रापू करयु ॥ सोल रुपये एक ॥ रुद्रमाल करते वावरी ॥ ते कविजन ने कागद चडी ॥२॥ सवत तेर पासेट मा दल्ली ने दरवार ॥ अमुर थयो अलाबदी ॥ आवी युद्ध कयो अपार ॥ ऊद्रमास पाडी पाधर कयो नरा उतारयो बाद ॥३॥ माठो कयो मलेचने देवल दीयो गिराई ॥ देव देवीन दवता सरबे रहे छुपाई ॥४॥ इति श्री रुद्रमाल नु कवित्त सपूरणम् ॥^२

यद्यपि यह प्रति बहुत प्राचीन प्रतीत नग गता जसाकि म्मक अतगत कग गया हैं—माहार तणु मापू करम सात म्पय एक अथात् मुहर की कीमत सालह म्पय के बराबर आज म माठ सत्तर वप पूव समभी जाती था। इम आधार पर वस हम माठ वप पन्न तिली गयी प्रति मान सकते हैं जिमम एक महत्वपूर्ण बात कही गई है कि तिली अधिपति अलाउद्दीन न सवन् १ ६५ म म्ममहालय का विनाग किया था। म्मक अनतर भी गुजरात म पौराणिक गवमत बना रहा। पूजाविधि का मरुतता न म्मक महत् प्रचार का कारण है।

१ देखिए- गवधम नो इतिहास श्री दुर्गाकर शास्त्री।

२ हस्तप्रति पो न० ३० अ न १४ डा० पु० नडियाद।

शिव साधना का प्रभाव

नरसिंह महता स्वयं शक्तिपामक थ । हाग्माना म उहान कहा है कि जा गिव और कृष्ण म भद मानता है वह अधम और नरक का अधिकार ह । दयाराम क काय म कृष्णभक्ति क साथ साथ शिवमत क प्रति श्रात्रभाव है । भालणकृत गिव भीनटा सवाद नाकरकृत गिव विवाह गामलकृत रेवाखड और गिव महात्म्य आदि काय ग्रंथ शिव भक्ति मे प्रभावित हाकर ही लिखे गय हैं । गुजरात के शिव-साधक मता म शिवान्त तथा रणश्राडजा दीवान का नाम विशेष रूप स लिया जा सकता है । रणश्रीडजी दीवान का गिव रहस्य ब्रजभाषा म लिखा हुआ एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है । उनके अनादा गुजरात क अनक ज्ञानमार्गी मता पर शिव-साधना का प्रभाव पय है । कर्मा तथा शोक्त आदि मता का वानियो में जगह जगह गिव शिव का प्रभाव बहा क अथ म ही मितता है ।

शाक्त मत

‘उत्तरमां अम्वा मात
पूरव मां बाली मात ।’

वतमान समय म गुजरात म तान प्रमुग गति पीठ हैं

१ उत्तर गुजरात म बहुचरा पाठ ।

२ आरामुर म अम्बिका पीठ ।

३ चांपानर के पाम पावापण म बालीपाण ।

आरामुर का अम्बिका का मन्िर बहुत पुराना है । कहा जाता है कि कृष्ण का मुडन-सम्कार महा पर हुआ था । नागर-ब्राह्मण म दवी क विनाप उपासक हैं । गुजरात म नवदुगा क विनाप पव का नारना बना जाता है । गरवाकार भाणम और नाथमवान गति क उपासक थ जिहान दवा की उपासना म गरवियां लिखी हैं और जा गुजरात साहित्य की अमूय निधि माना जाती हैं । वस्तुत गुजरात म गव और गान्त दा भिन्न मत नहा क्याकि—

१ दाना का दाना निव पभ एक मा है ।

२ दोना अतमत को मानत हैं ।

३ तानिक तथा यौगिक क्रियाए एकभी हैं ।

४ दोना ६ तत्त्वा को रवाकार करते हैं ।

५ यहाँ पर गिव गति की पूजा एक माय हाती है ।

नाथ पथ

नाथ पथ का प्रभाव कच्छ और गिरिनार की आर विनाप रण है । कच्छ की उत्तरी भीमा पर अवस्थित धीणोधर-पवत प्राचीन काल म जनक मिठो माधका तथा योगी-महात्माआ का माधना ग्राम रण है । तिम प्रकार कच्छ का काला-पवत’ त्तानय क चरण बिह का नकर प्रमिठ है टाक उमा प्रकार धीणोधर पवत दादा धौरमनाथ की दीघ तपश्चया क वाग्ग प्रमिठ है । दाना धारमनाथ (धुरधरनाथ) मन्व्यन्नाथ क प्रमिठ गिन्वा म म एक प जा उत्तर प्रण स भीराण नान हण कच्छ पधारे तथा मवप्रथम उहाने पाडना बन्तरण क पाम रियाण पट्टण म घूना रमायी । कच्छ म नका आगमन आगवा गना के आम-नाम माना जाता है ।^१ कहा जाता है कि वन्भीपुर क राजा गिलान्तिव को उत्पान गाप दकर वन्भीपुर का

विनाग किया था तथा किसी पाप का प्रायश्चित्त कराने के विना धाणोपर पत्र पर चढ़ाने का व्यवस्था किया था। माडवी में पुनडीगाँव के पत्र पर सिद्ध धीरमनाथ के चरण चिह्न हैं जहाँ प्रति वर्ष अष्टमि मुदा २ को मत्ता भरना है। कच्छ में एन गारखनाथी माधुजा का पार कर कर सजावित किया जाता है। अम सस्ता में गारखनाथजी गरीबनाथजी तथा कथनाथजी का नाम विनाग उल्लेखनाथ है। इन मत्ता की वाणा का कोई सग्रह नहीं मिलता। पत्र-सग्रहा में गारखनाथ के कुछ पत्र अवश्य मिल जाते हैं ठीक जमा तरह उस कबीर आदि मत्ता का बाणी गुजरानी मत्ता का वाणा के बीच बीच मिल जाती है। गोरख-वानी के कुछ पत्रों में गुजरानी का विविध प्रकार यत्र तत्र इस प्रकार देखा जा सकता है—

‘मगत गोरखनाथ हठा राधी नगरी बोर सलाया ।’^१

एणे सतगुरि अम्ह परणाया, अबला बाल कुजारी ।

मछिद्र प्रसाद श्रीगोरख बोणा माया ना मो टारी ॥’^२

मछिद्र प्रसाद जनी गोरख बो पा, नित नवेतडी पाये ।’^३

‘भन पवना धारा जोताधो सतना सतिोडा समयावो ।’^४

एन पत्तिया में एणे अम्ह वात्या मायाना प्रगा नवनी याव जातावा धावो आनि गला में गुजरानी का स्पष्ट प्रभाव परिनिहित होता है। यदि एन पत्रों को प्रमाणिक मान लिया जाय तो गारखनाथी पर गुजरानी का प्रभाव महज हा सिद्ध हो जाता है। गुनगत के मत-मान्त्रिक पर गारखपथ का निम्न विहित प्रभाव देखा जा सकता है—

१ काम की घाट निरा तथा ब्रह्मचर्याचरण पर विनाग नार । मत्ताचरण का प्रवृत्ति ।

२ कथना एवं करना का समानता पर धन ।

चढ़ाने गारखपथ के नितक एवं सामानिक पा का विनाग अपनाया उनना माधना-पा का कष्ट पाध्य एवं दुःख प्रक्रिया का तथा ।

१ गोरखवानी पृ० ६६ ५-१० ।

२ गोरखवानी पृ० १०६ ५-१६ ।

३ गारखवानी, पृ० १०८ ५-१७ ।

४ गोरखवानी, पृ० १२५ २-३१ ।

४ मत्स्य पनाथ की भक्ति गुजरात के गतान मन माधना पर विनोप भार किया है ।

२ महानुभाव अथवा अच्युत सम्प्रदाय —

ईसा की तरहवी शती में महाराष्ट्र में इस सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ और धीरे धीरे यह गुजरात पंजाब तथा कावल तक फैल गया । यह सम्प्रदाय अनेक नामों से अभिहित किया जाता है । महाराष्ट्र में यह मानभाव अथवा महात्मा पथ गुजरात में अच्युत सम्प्रदाय और पंजाब में जयकृष्णा पथ कहलाता है ।^१ महात्मा चक्रधर इस पथ के प्रवक्तक थे जो मूल गुजरात के निवासी थे । उनके जीवन परिचय जागामी परिच्छेद में किया गया है ।

गुजरात में इस पथ का विनोप प्रभाव दृष्टिगोचर नहीं होता । गुजरात में बसे हुए महाराष्ट्र के कुछ नाम हैं जो इस पथ के उपनाम हैं । महानुभाव पथ की सामान्य विनोपताएँ इस प्रकार हैं—

- १ ज्ञान की अपेक्षा भक्ति का इन्होंने अधिक महत्त्व दिया है । उनके मानना है कि निराकार ईश्वर भक्तों पर अनुग्रह रखने के लिए साकार रूप धारण करता है ।
- २ इन्होंने कृष्णभक्ति को अपनाया किन्तु इन पर नाथपथ का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है । इन्होंने नाथों के समान स्त्रीज्ञान का निषिद्ध ठहराकर नतिक चरित्र पर बल दिया है । जाति-पाति के बंधन को भी यथास्वीकार नहीं करते ।
- ३ ज्ञान के क्षेत्र में ये जीव देवता प्रपंच परमेश्वर इन चार पदार्थों का अनादि मानते हैं । जाव कर्मों का भोक्ता है तथा जाव का प्रेरित करने वाली माया है । जीव का मुक्त करने का सामान्य दवनाआ में भी नहीं है ईश्वर ही माय प्रदान कर सकता है ।
- ४ यह पथ द्वैतवादी ज्ञान हूण भी बहूँवापासना का पक्षपाती नहीं है । यह वना में विश्वास नहीं करता अतः यह अवदिक मत है । कुछ बातों में यह लिगायत मत से साम्य रखता है ।^२

१ हिं म स दे पृ० ६५ —आचार्य विनोप मोहन गर्मा ।

२ हिं म स देन पृ० ६६ ।

३ रामानन्द सम्प्रदाय—

स्वामी रामानन्द न जिम सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया वह श्री सप्रदाय रामानदी सम्प्रदाय और रामावत सप्रदाय क नाम स प्रसिद्ध है। कुछ लोग क अनुसार ये तीनों भिन्न सम्प्रदाय हैं। इन सम्प्रदाय के कुछ अनुयायी अबधून कहनाते हैं और कुछ चरागी। इन दोनों साधु-सम्प्रदाया में बगभूपा और मायता आदि सम्बन्धी अन्तर भी है।^१ स्वामी रामानन्द (स० १३५६-१५०६)^२ वस्तुतः युग प्रवर्तक आचार्य थे जिन्होंने अपनी विचारधारा में समस्त मध्यकालीन भक्ति धारा को प्रभावित किया था। निगुण-काव्यधारा का बीजारोपण करने वाले में जहाँ जयदेव नामदेव त्रिलाचन आदि का नाम लिया जाता है वहाँ रामानन्द का स्थान सर्वोपरि है। रामानन्द के बारह शिष्या में म अघिकांग की विचारधारा निगुण परक ही थी। क्योंकि धर्म पीपा और मन इमी पर्य के परिकर थे। संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि निगुण-काव्यधारा की जो नींव स्वामी रामानन्द ने डाली उस पर विगत एक मजदूर नवन बनाने का कार्य उही के शिष्य चरार न किया। हम सम्बन्ध में एक विचिन्ता भी प्रसिद्ध है कि—

‘भक्ति द्राविड अपजी लाये रामानन्द ।

परगट किया कबीर न सत दीप नवलण्ड ॥

सच तो यह है कि चौदहवीं तथा पंद्रहवीं शताब्दी की ममस्त उत्तरी मत परम्परा जहाँ रामानन्द से प्रभावित है उमी परम्परा की एक अशुभ धारा गुजरात की ओर प्रवाहित होती हुई दाम पडती है।^३

वस्तुतः चराराचार्य का मायावादी क्पाकि सुष्व था कमलिय भक्ति धर्म का प्रधानता मिली। स्वामी रामानुज तथा निम्बाक न भागवत धर्म का

१ हि नि का दा पृ० २४-२५ ।

२ जगद्गुरु श्री रामानन्द आचार्य श्री रामानन्द पीठ आबू में प्रकाशित

ग्रन्थ क आधार पर ।

३ Gujarat & Its Literature Dr. K. M. Munshi Page 116

Ramanandra's influence in Gujarat was widespread in the latter half of the fourteenth and the fifteenth century. It taught the learned not to spurn the lowly and the literate but to work with and for them through the medium of their own language.

प्रतिष्ठा कर जगत्वा परस्मिन् स्वरूप प्रज्ञा किया। जगत् पन्चात् रामानन्द
 हुय जिहनि ससृष्ट का अपना प्राकृतभाषा में धर्मोपदेश कर गवगामाय के
 लिए भक्ति के द्वारा मान लिया। उस प्रकार उहान गुजराती जजर परम्पराशा
 का तात्पर्य तथा स्वतंत्र भाग का राजा कर भक्ति का धारा का जगुण बनाय
 रखने का सबसे सरल प्रयत्न किया। स्वामी रामानन्द के विषय में जमा
 रामभक्ति का प्रचार गुजरात के कान कान में किया था। स्वामी रामानन्द
 की त्रिविजय यात्रा में गुजरात का विविष्ट उत्तम मिलता है।^१ उहान
 स्वयं द्वारका सिद्धपुर गिरनार और आनू आदि विभिन्न स्थानों का भ्रमण
 कर अपन मत का प्रचार किया था।^२ जाबू और जूनागढ़ की पहाड़ियों पर
 स्वामीजी के चरण चिह्न मिलते हैं।^३

प्रभाव

मध्यकालीन गुजराती साहित्य पर स्वामी रामानन्द का स्पष्ट प्रभाव स्पष्ट
 परिपक्व होता है इसकी पुष्टि डा. के. मा. मुन्शी ने अपन ग्रन्थ में जगत्
 जगह का है। भालण के काव्य में भानण प्रभु रघुनाथ की स्पष्ट छाया जगत्
 पुष्ट प्रमाण है। भानण के पुत्र उद्धव ने भी जमा से प्रभावित होकर सम्पूर्ण
 रामायण की रचना की जिस उही के पुत्र विष्णुनाथ ने पूरा किया था।^४
 इस प्रकार गुजरात में रामभक्ति का प्रचार हम सालहवीं गता के आसपास
 देख सकते हैं।^५ गुजरात के ज्ञानमार्गी मत्ता पर भी रामानन्द प्रभाव पड़ा
 जा सकता है। मात्ता कृत रात्रण मन्दादा सवाण (सं० १५७६ पूर्व) का
 रचना पर जमा प्रभाव है। गुजरात के अधिकांश मत्ता ने रामानन्द साधुओं
 से दास ग्रहण कर ज्ञान गंगा में अवगाहन किया है जिनमें भाजा प्रीतम
 दास कुचराम आदि का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। इनका
 बानिया पर रामानन्द प्रभाव का छाप पड़ना नितांत स्वाभाविक है।
 गुजरात में रामानन्द सम्प्रदाय के प्रचार एवं प्रसार में अनेक गद्य रचनाएँ भी
 लिखी गयी हैं जो हिन्दू का एक जन्मोदी दन हैं। डाकार से प्रकाशित
 सिद्धान्त पटल नामक ग्रन्थ स्वामी रामानन्द रचित बताया जाता है जिसमें

१ रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव पृ. ६-१०।

२ देखिए—जगदगुरु श्री रामानन्दाचार्य।

३ हि. का. नि. स. डा० पीतावरदत्त बड्डवाल पृ० ६६।

४ म. सा. प्र. डा० के. मा. मुन्शी पृ. १६-२।

५ वही वही पृ. ३२२।

अनक विषया क मात्र हैं तथा जिनका भाषा मधुक्कड़ी है।^१ उस गीता म गाथ साज का विगण आवश्यकता प्रतात हाता है।

४ कबीर पद्य—

कबीर बड जाकि नमदा क तर पर अब भा खडा है—इस तरह एक विचाराता सबप्रसिद्ध है कि कबीर अपन मत का प्रचार करन क निग गुजरात जाय थ। कबीर माह्व क कुछ भजन गुजराती भाषा म भा निख मिलत हैं किन्तु इनका प्रामाणिकता मन्दिह हा है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी^२ तथा त्रिनिमाहन सन^३ न कबीर क गुजरात एवं मौराष्ट्र भ्रमण का उल्लेख किया है। कुछ नाग कबीर क पुत्र कमाल द्वारा गुजरात म कवायमत क प्रचार का उल्लेख करत ह।^४ कुछ भी हा किन्तु जतना अवश्य मानना पया कि गुजरात का ममस्त मन्त्र माहित्य कबीर स प्रत्य ए एवं पराशर ज्ञाना रूपा म प्रभावित है। सभवत गुजरात का एसा काद गाँव गण नहीं जहाँ कोई छाया माग कबीर मन्दिर तथा कबीर मतावतम्बा न पाया जाता हा। गुजरात म कबीर पद्य का एक मुग्ध परम्परा जय तक चला आ रहा है।

या समस्त गुजरात म कबीर-संप्रदाय स सम्बन्धित अनक पद्य एवं उपपद्य प्रचलित है किन्तु ए पद्या का नाम विगण रूप स गिया जाता है।^५

१ राम कबीरिया पद्य २ मत कवायिया पद्य।

१ राम कबीरिया पद्य—कबीर का राम का जवलाग मानन जिन राम-कवायिया पद्य म गीतित भगवा वस्त्र पहनत हैं मित पर गीता जगान गन म माला और बान म खरणी डानत^६। जसक मूल प्रवक्तक क रूप म कबीर क गिष्य पदनाम का नाम लिखा जाता है और यह कल्प जाता है कि उनक एक गिष्य नीलकण्ठ न जिनस गीतित ज्ञाकर गुजरात तथा काश्मिरावात का आग यात्रा का थी।^६ किन्तु ए भा म क एक प्रमुख मत मागन साहब क गिष्य दलुराम माह्व द्वारा रचा गयी एक परम्परा क अनुमाग

१ हि का नि स डा० पितांबरदत्त बडम्वाल' पृ० ६६।

२ उत्तरी भारत की मत परम्परा पृ २८७।

३ Medival Mysticism of India Page 98

४ हि का नि स पृ० ११८—डा० बडम्वाल।

५ धरोतर सब सपह पृ० ८२२।

६ उ भा स प आ परशुराम चतुर्वेदी पृ० २६१।

नीलकण्ठ पद्मनाभ के गिष्य न होकर धीरदाम के गिष्य थे जो कव्या माह्व की छट्टी पीढी में थे। उनके अनुगार कव्या माह्व स्वामी रामानन्द के गिष्य थे और वे स्वयं ज्याति रूप तथा अनन्त स्वरूप थे। सत लोग उन्हें राम कबीर कहकर उनका गुणगान करते हैं तथा वे स्वयं भा अपने आप को यही कहते थे।^१ कव्या पद्य के मोरनी आद्यमत्त के रूप में भाग माह्व का नाम दिया जाता है। भाग माह्व द्वारा प्रवर्तित तथा रविमाह्व द्वारा मज्जित सम्प्रदाय रविभाग सम्प्रदाय के नाम से समस्त गुजरात में प्रचलित है। हमकी मुख्य गदियाँ नेरवी (बनोना के पाम) जामनगर और रापर (कच्छ) में हैं। हम सम्प्रदाय की नाव में भाग माह्व का अपूर्व बनिदण्ड तथा रवि माह्व मोरार माह्व आदि मन्ता का वाणी है जिनसे नाकहृदय में अब भी अपना अगुण्य स्थान बना रखा है यद्यपि हम वाणी पर दो सौ वर्षों का काल चक्र घूम चुका है। कव्य काटियावाड़ जो गुजरात की जनता आज भी इन सतों की वाणी का बड़े चाव से सुनती है और गाती है।

रविभाग सम्प्रदाय की एक नम्बी प्रणालिका साम्प्रदायिक श्रया के आधार पर इस प्रकार उपनघ हाती है —

सद्गुरु कवार साह्व

पद्मनाभ साह्व

नीलकण्ठ साह्व

रघुनाथ साह्व

यादवदाम साह्व

पद्मदाम साह्व

भाणसाह्व

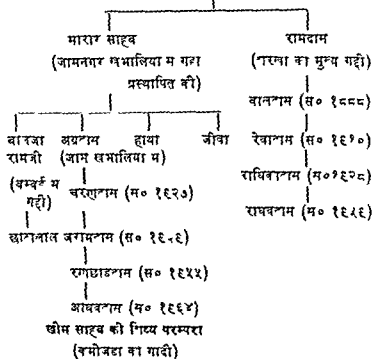
वधाराम

भाण साह्व के दो गिष्य हुए —

- १ नाण गिष्य—रवि माह्व।
- २ विन्दु गिष्य—श्याम साह्व।

भाण साहब के प्रमुख गिणिया म रविसाहब तथा ग्राम साहब थ ।
उनकी गिणिया परम्परा तथा प्रमुख गिणियाँ इस प्रकार हैं

रविसाहब का गिणिया परम्परा
(प्रमुख गद्दा गेरणी)

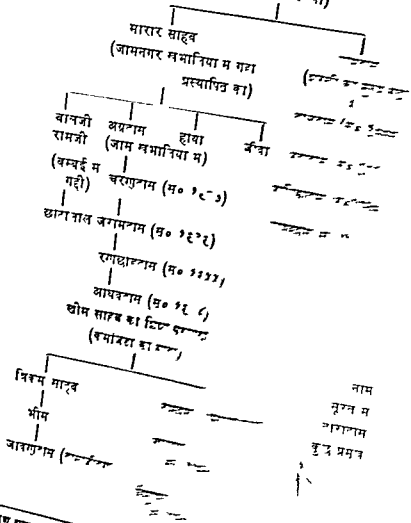


१ भाण साहब के गिणियों की सहया बहुत बड़ी थी । चात्नीस गिणियों का एक विनास कोज 'भाण छ-पौत्र' के नाम से प्रसिद्ध थी जो हुयेगा भाण साहब के साथ रहती थी ।

गुजरात क प्रमुख सात-सम्प्रदाय

भाण साहब क प्रमुख गिप्या म रविमाहब तथा मान साहब के ।
 नका गिप्य परम्परा तथा प्रमुख गिप्याँ एम प्रकार हैं

रविसाहब का गिप्य परम्परा
 (प्रमुख गण गण्डा)

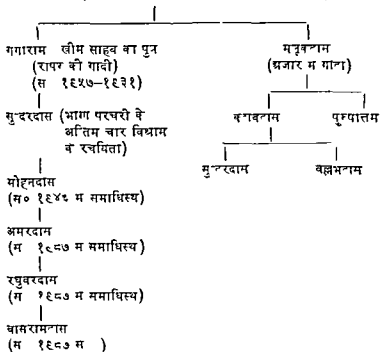


१ भाण साहब क गिप्याँ एम प्रकार हैं
 एम गिप्याँ एम प्रकार हैं
 मार्व क गता

श्रीराम
(स १६७-८४)
हराराम
(स० १६८८)

खीम साहव

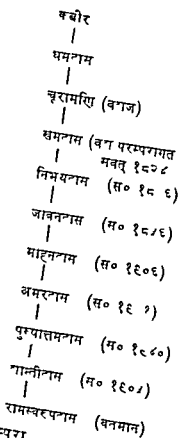
(रापर कच्छ का गानी स १८७ म स्थापित)



सत कबीरिया पथ—घमनामा परम्परा क अनुयायी अपन गुण का तम्बार अथवा मन्त्र तन वान गुण का पूजा करत है। इस मत क अनुयायी मन्त्रकारिया कर्तान है। कबीर आश्रम जामनगर की गुण प्रसारिवा का मन्त्र-घ घमनामा परम्परा क माय जाना जाना है। जा इस प्रकार है।

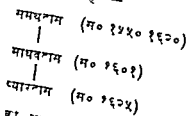
१ अथ घय कथ निरूपणम्—

प्रका० महंत श्री स्वामीदासजी कबीर आश्रम जामनगर।



निर्वाण माह्य की परम्परा

रवीर माह्य का एक अन्य शाखा निर्वाण माह्य का परम्परा का नाम
य ना प्रसिद्ध है। उन शाखा का प्रसक्तक निर्वाण माह्य ३ जिनानि मूरत म
अपना गरा स्थापित का। उन गरा का नामर पुण्य मत हागनाम
(सं १/५ - १९३५) ध। निर्वाण माह्य का निव्य परम्परा म कुट्ट प्रमु
म ता का नामावना एम प्रवार है —



पचारपय का अन्य शाखाओं म वागियाणा का मून निरजन पर

बडोच का टकगारी पद्य भडाच का जीवा पद्य^१ आदि का नाम विंगण रूप में दिया जा सकता है। इन गाथाओं की बाईं पंक्तियों परम्परा मर देयन में अब तक नया आया है। राम कवारिया पद्य की ही तरह राम कबीरिया मङ्गल कवारिया हंग कबीरिया जोगी कवारिया आदि अनक गाथाएँ प्रचलित हैं किन्तु इनका बाईं व्यवस्थित इतिहास उपलब्ध नहीं होता। इतना निश्चित है कि जक्षयवट की तरह कबीरपद्य की विंगण गाथाएँ गुजरात भर में प्रचलित हैं। इन सभी पद्यों का कुछ सामान्य विंगणताएँ इस प्रकार हैं—

- १ सभी सात अपने नाम के जाग साहब अथवा दाम गुरु जाडते हैं।
- २ कच्छ के सत्ता की भाँति प्रायः ये भी जावित समाधि लेते हैं। गृहस्थ हाकर तथा बस्ती में रहकर भी वे सामारिकता में अतिरिक्त तथा अतिरिक्त विरक्त हैं।^२
- ४ इन सत्ता की अधिकांश रचनाएँ सधुक्कडो हिन्दी में हैं।
- ५ साम्प्रदायिकता का इनमें अभाव है।
- ६ कबीर की भाँति इनकी वागा में भाँ गुरु महिमा नाम स्मरण बाह्याधारों का खसन मडन जाति पानि का बहिष्कार समन्वय का भावना प्रेम लभणा भक्ति का लभना क्यनी तथा करनी में एकमूर्तता के गुण मिलते हैं।
- ७ सगात की प्रधानता।

५ दादू पद्य—

दादूपद्य का दूसरा नाम परब्रह्म सम्प्रदाय भी है। इसके प्रवर्तक मन्त दादूदयाल थे जिन्होंने कबीर की भाँति दगा-गातरा का पयटन कर

१ कहा जाता है कि जीवा और तत्वा नाम के दो भाई थे। यद्यपि ये तो ब्राह्मण किन्तु बाबा धाक्ष के पुजारी बनना उन्हें इष्ट नहीं था अतः उन्हें एक ऐसे गुरु की गोध थी जो सूखे ठूठ को हरा भरा करे। कानन में उन्हें कबीर साहब का साक्षात्कार हुआ और कबीर साहब की प्रेरणा से उन दोनों भाइयों के हाथों कबीर बह पस्वयित हुआ।

—चरोतर सब सपह पृ ८२२।

२ बरती में देना जोगी मागी के खाना

परोघर अलख जगाना मेरे लाल

—त्रिकम साहब।

अपन मत का प्रचार किया था। दादू-सम्प्रदाय के दगभर में ५० महत्वपूर्ण अखाड़े हैं। इनकी अधिकांश संख्या जयपुर अथवा मारवाड़ वीकानर मवाड़, पंजाब और गुजरात में पाया जाता है। काणा में भाष्म पथ का एक अखाड़ा है, किंतु दादू के अवसान के पश्चात् इन अखाड़ों का कोई महत्व नहीं रह गया है। यह पथ का गाथात्रा में विभक्त है—

- १ श्रेयधारी विरक्त माधु—जा गन्ना वस्त्र धारण कर भजन और पठन-पाठन में अपना समय व्यतीत करने हैं। इन वरागियों के पाँच भेद माने गये हैं — मालमा नागा उत्तरानी विरक्त और खावा।
- २ सेवक-साधु—जा मफे वस्त्र धारण कर सनावाही फौजी नौकरा और बचकी आदि करते हैं तथा कुछ मूल पर रपय चलाते हैं।

दादूपथ कवीरपथ का तरह सापक और महदपूरण है। इन दोनों में निम्नलिखित अंतर है—

- १ कवीरपथ में माथ पर तिनक लगाते हैं और गन में कड़ी पन्नन हैं किंतु दादूपथी इसका विरोधी हैं य लाग टापा या मुरायठ पहनते हैं आर मत्तराम कहकर अभिवादन करते हैं।
- २ कवीर में खटन की प्रवृत्ति है जबकि दादू का वाणा में इसका अभाव है। दादू के उपरान्त के विषय ध—(१) परमेश्वर की उपासना और अज्ञपात्राप। (२) मन-सयम के साधन। (३) परमेश्वर का मस्तिष्कानन्द-स्वरूप (४) भगवान के परम रूप का ध्यान और धारणा (५) अमृत त्रिपु का पान। (६) ब्रह्म का साक्षात्कार (७) अनन्त-राजा में निमग्न होना। (८) निगकारापामना।

दादूपथ का प्रमुख गढ़ा नगणा (राजस्थान) में है जहाँ प्रतिवर्ष बहूत बड़ा मेला लगता है और दादू की खटारु का पूजा या जाता है। गुजरात में कवारपथ का जितना जाण है उतना दादू पथ का नया।

कुछ मत कवि एम अवगत हैं जा अपना विचारधारा और अभिव्यक्ति पात्रा में दादू का अनुसरण करने प्रतान होत हैं किंतु यह कह सकना प्राय कठिन है कि वे कवार पथ में प्रभावित न होकर मात्र दादू पथ के ही अनुयायी हैं। दादू पथपि गुजरात में जन्म (स० १८०१) था किंतु उनका राधना

भूमि राजस्थान रही। दादू ने हिन्दी के गाय-गाथ गुजरात में भी रचनाएँ की हैं जिनकी प्रतिष्ठा गुजरात में उपर्युक्त है। दादू के अनुयायियों में म सुन्दरलाल जाति मत्ता ने भी गुजराती में रचनाएँ की हैं। यह एक विचारणीय तथ्य है। दादूपंथी साहित्य का अनुशीलन करने में यह तथ्य भी प्रकाश में आता है कि उनका जन्म मतगुरु की जन्मभूमि गुजरात और वहाँ का भाषा गुजराती के प्रति महत्त्व और प्रेम रहा है।

६ प्रणामी पंथ—

करीब पंथ का छान्दकर गण सभी सम्प्रदायों और पंथों में प्रणामानुयायियों का गुजरात में सर्वाधिक महत्त्व रहा है। इस पंथ के संस्थापक निजानन्दनाथ श्री देवचन्द्र थे जिनकी जन्म तिथि सन् १६३८ ख्रिस्तियुग गुजरात चतुर्दश मानी जाती है।^१ इनका जन्म स्थान उमरकाठ (मारवाड़) तथा विष्णु स्थान जामनगर था। इनके पिता का नाम मनु मेहता तथा माता का नाम कुव्वरसाई था। स १६४४ में उन्होंने बन्धु का आर प्रयाण किया तथा ज्ञान की भूष का मिश्रण के लिए तथा ब्रह्म सात्कार का उत्कृष्ट अभिप्राय में उन्होंने बन्धु के दत्त सम्प्रदाय एवं कनफला योगियों से दीक्षा ली किन्तु पत्र कुछ न मिला। अतः स्वामी श्री हरिनाथ से गुरु मन्त्र लेकर तारतम्य प्राप्ति की।^२ प्रणामी मतानुयायियों का मानना है कि पूजा ब्रह्म की गतिविधियों का माया में छुटाने के लिए तथा उन्हें जाग्रत करने के लिए श्री कृष्ण ने अपनी अग्रजा श्री श्यामाजी का श्री देवचन्द्रजी के रूप में भजा था।^३ उन्होंने जामनगर में प्रणामी धर्मपाठ की स्थापना स १६८७ में कार्तिक मास में की थी जो आज भी विजय मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि स्वामी देवचन्द्र ने मन्दिर के आम पाम दो विजय के वृक्ष लगाए व डमी पर सन्त मन्दिर का नाम विजय मन्दिर पना।

स्वामी देवचन्द्र का नियम था कि ब्रह्ममूर्ति का वाचना का परम विना व किमा का तारतम्य की दाया नही देन थ। तारतम्य में वस्तुतः धाम परमधाम ब्रज मन्त्र और राम मन्त्र की धर्मा का गयी है। इस अवष्ट

१ साहित्य सन्दर्भ सत विशेषांक अगस्त १९५८

—श्री मि.श्रीलाल शास्त्री पृ ६२।

२ निजानन्द चरितामृत पृ० २१३।

३ देखिए—सुन्दर-सागर-भूमिका पृ २५-२६।

लोना का बलून उढ़ाने मव प्रथम गााजाभा क आतजना क मम्मुव किया और उन मसी ने नाग्नम्य यहग कर जागृति प्राप्त की ।

२म पथ क प्रचार प्रसार एव निमाणु का मारर श्रय स्वामा प्राणनाथ (म० १६७५-म० १७५१) को है जा बारह वय की अवम्या म हा इम पथ म लीक्षित ही गये थ । प्रणामी पथ का धामी-सम्प्रदाय भा कहा जाता है । २म पथ क अनुयाया अपन को मूलत ब्रह्मधाम का निवामी तथा ब्रह्म शक्तिया का रूप मानत है । अत व जब भी परस्पर मिलत हैं ता क सभी वास्तविक रूप को ध्यान म रक्कर प्रणाम करत हैं ।

स्वामा प्राणनाथ ने २स मन क प्रचार एव प्रसार म गुजरात मवाड मारवाड मानवा एते हुए उत्तर भारत की यात्राए की जहा उहाने म मस्कृतिया क प्राच हाते वाद अमानवाय मधपा का र्ग । जन माग्ग नायिकता का २म रिपम भाग्ना का दूर करन क रिण भारताय एव विजलाय भावनाआ का एया अपूव ममवय किया जिमम न वधभूषा का प्रन था और न बग-मधप का मवाल । कचार न ता मात्र हिन्दू मुन्निम एवता का नी बात कहा किन्तु प्राणनाथ न ता कुगन गीता वाग्गिन एगित तथा जन्वावास्ता की समानता लियाकर लाग का जिम एवात्मवा क मग्ग लिया उमी न आग क रक्कर रामकृष्णमिगत विद्यामाफिकर मयमायग प्रभृति सस्थाआ क प्रणयन म नीव का नाम लिया ।

गुजरात म प्रणामा पथ क प्राय पचास म भी अधिक मन्िर हैं । उन मदिरा म मुरली मुकुट और स्वामी प्राणनाथ विरचित श्यामूव-वाग्गा का पूजा हाती है । इस पथ का मुख्य गदिया पद्मा (सुत्तगवड) नवननपुरा (जामनगर) और मुरत म है । स्वामी दरवर्जा क पञ्चान् जामनगर का गाग गृहस्थ गाती तथा मूरत की गाग पवारा गाग क्ताया । गृहस्थ गाग क अधिपारी स्वामी त्वचड क पुत्र रिहागानाथ थ जर्कि मूरत का पवारा गाती स्वामी प्राणनाथ म गुरू हू । मूरत का पवारा गाग का परम्परा इम प्रकार मितता है—

श्यामनाथ महाराज

↓

गापालदास महाराज

↓

मोहननाथ महाराज

↓

|
 पीताम्बरदास महाराज
 |
 रंगीलदाम महाराज
 |
 गोपाचरदास
 |
 महाराजदाम
 |
 मगनदास

सिद्धजडा मन्दिर जामनगर की गद्दी परम्परा

गुह देवचन्द्रजी
 |
 आ श्री १०८ कंगरीबाईजी महात्मा
 |
 तेजस्वी महात्मा
 |
 ब्रह्मचारीजी
 |
 ध्यानदासजी महाराज
 |
 माहनदासजी महाराज
 |
 फकीरचन्दजी महाराज
 |
 कामरदासजी महाराज
 |
 जावरामदासजी महाराज
 |
 विहारदासजी महाराज
 |
 मुश्लालदासजी महाराज
 |
 धनीदासजी महाराज
 |
 धमदासजी महाराज

प्रणामी-पथ का कुछ निजा विगपताए म प्रचार है

- १ इम पथ का नाम महेराज पथ भी है । जय नाम खिज्ज और चाकला भी सुन जात है ।
- २ इम सम्प्रदाय के अनुयायी भाई, साची भाई कहलाते है ।
- ३ ये कृष्ण के बाल स्वरूप का ध्यान करत पाय जात है । तुलसी की माला धारण करने हैं । तलाट पर कुकुम का खडा तिलक लगाने हैं । य मूर्तिपूजा म विश्वास नही करत ।
- ४ इनमे ग्राम मदिरा और जाति व्यवस्था का निषेध है । दीक्षा के अवसर पर हिन्दू मुसलमानी का सहभाज हाता है । नतिक आचरण और चरित्र शुद्धि पर इनका विशेष जोर रहता है ।

७ सूफी सम्प्रदाय—

भारतवप म इस्लाम धम का प्रवेश या तो आठवी शता म हा गया था तथा मिथ पथ पजाब का हिम्मा इस्लाम धम के प्रचार एव प्रसार का प्रमुग केंद्र बन गया । फिर भा तरहवा—चौदहवी शती म मुस्लिम धम प्रचारका और सूफिया का पूरा जार हम देग के विभिन्न भागो म श्रवत है । बारहवी शती क उत्तरार्द्ध म जब मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया उम समय उच (बहावनपुर) इस्लामी बिद्या का बहुत बडा केंद्र था । यहा म मिथ गुजरात और दक्षिण पश्चिमी पजाब म इस्लाम धम का प्रचार हो रहा था । इसक पश्चात् यहाँ पर कई सूफी साधक आय ।^१ डा० रामकुमार चर्मा न सूफा धम का प्रवेश ईसा की बारहवी शताब्दी म माना है तथा म्मक प्रमुग चार सम्प्रदायो का उल्लेख किया है जो समय-समय पर देग म प्रचारित हुए —

- १ चिश्ती सम्प्रदाय—सन् बारहवी शताब्दी का उत्तरार्द्ध ।
- २ सुहरावदी सम्प्रदाय—सन् तरहवा शताब्दी का पूर्वार्द्ध ।
- ३ कादरी सम्प्रदाय—सन् पंद्रहवी शताब्दी का उत्तरार्द्ध ।
- ४ नबशबदी सम्प्रदाय—सन् सोलहवी शताब्दी का उत्तरार्द्ध ।

य चार सम्प्रदाय अपन मून मिद्दाता म ममान थ । धार्मिक और सामाजिक पना म म सभी सम्प्रदाय अत्यन्त उत्तर थ ।^३ इनम सामाजिक

१ सूफीमत साधना और साहित्य पृ० ४०६-१० ।

२ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ० ३०२ ।

३ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ० ३०३ ।

एकता और समानता पर विशेष बल दिया है। पर यह हुआ कि हजाग और तानवी की मर्याद में हिंदू धर्म के विविध वर्गों के अमनुष्य सदस्य सूफा सतों के चमत्कारों से प्रभावित होकर और उनकी सात्विकता और मन्दिपुत्रा से आकर्षित होकर इस्लाम धर्म के अंतर्गत सूफी सम्प्रदाय में प्रीति हुए और भारत में भुमनमाना की मर्याद वरमाती नदी की भांति बहना ही गयी।^१ कहने है कि कन्नड़ और गुजरात में पीरान के इमामगाने न इस्लाम धर्म में बहता को दीक्षित किया। कन्नड़ में एस गोग रावदगाह पीर की पूजा करते हैं।^२ गुजरात का बोहरा जाति अटुला का अपना प्रथम धर्म प्रचारक मानती है। ईसा की बारहवीं शती में पर्सिया का इम्माइली धर्म प्रचारक अनाभूत नूर मनागर जधवा नूर मौनागर मिदराज के काल में जाया था जिन्होंने गुजरात की निम्न हिंदू जाति कणवी खरवा वारा जाति को मुसलमान बनाया था।

अजमेर के प्रसिद्ध सूफा सत स्वाजा मुल्तुदान चिन्ती (मृत्यु मन् १२६) का नाम विंगप रूप से लिया जा सकता है जिनका विषय परम्परा गुजरात तक कनी हई प्रतीत होता है। अनवर और सत्तारगाह चिन्ती का परम्परा की कथिया है। इसी प्रकार सत्तारी सम्प्रदाय के अन्तर्गत ग्वालियर के ग्राह मुहम्मद गौम के विषय एक उत्तराधिकारी बजारुद्दीन का नाम गुजरात के सूफियों में अत्यंत जादरपूजक दिया जाता है। भारत में एक प्रवक्तक फारम के अटुला सत्तारी व। इस सम्प्रदाय के सत कान्गी सम्प्रदाय वाना की तरफ बरन धारण करने हैं तथा चिन्ती और कान्दिया के साथ उनका कह जान हैं।^३ गुजरात के अय सूफी सतों में खूब मुहम्मद चिन्ती बही महमूद दरियायी माहम्मद अमान रमजान अना गाम ग्राह अपना गाम घना गख बहाउद्दीन वाभन सत गान गदू तथा मागर जाति का नाम विंगप रूप में उल्लेख है।

८ सम्प्रदाय—

महाराष्ट्र में एक पुनरुद्धार पद्धति गती में हुआ। इन विमूर्ति देवता है जिनमें ब्रह्मा विष्णु और महेश का सम्मिलन है जिन्होंने बन्धु धर्म

१ हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ० ३०४।

२ सूफी साधना और साहित्य पृ० ४१६-१७।

सूफी साधना और साहित्य पृ० ४१६-४१७।

की प्रतिष्ठा की। इस सम्प्रदाय के अतगत अद्वैत की प्रतिष्ठा सगुण माधना की नीव पर की गई है तथा जिसमें लोक विरुद्ध आचार-पालन का निषेध और याग माग को ग्रहण करने का निर्देश किया गया है। गुजरात में इस सम्प्रदाय का आगमन श्री वामुदवानद सरस्वती द्वारा हुआ जिनके गिष्य रग अक्षयूत ने नारेश्वर म दत्त आश्रम की स्थापना कर दत्तापासना का प्रचार एवं प्रसार किया।

६ रामसनेही सम्प्रदाय—

संवत् १७६८ में जाधपुर के स्वामी रामदास^१ ने राम सनेही पथ की स्थापना की जिसका कुछ प्रभाव गुजरात में भी देखा जाता है। यह मत मुसलमानी मत से बहुत कुछ मिलता है। इसमें अतगत मूर्ति पूजा का स्थान नहीं। दिन में नमाज की तरह पाँच बार निरावार ईश्वर की आराधना होती है। इसमें जाति पंक्ति का कोई भेद भाव नहीं तथा सदाचार पर विशेष ध्यान दिया गया है।^२ गुजरात में राम सनेही अधिकतर अहमदाबाद, सूरत वम्बई, बलसार आदि स्थानों में पाये जाते हैं। यहाँ गण में माला और माथ पर स्वतः तिलक धारण करते हैं। बाँठ के बमडन में यहाँ जल पीते हैं। मिट्टी के बतना में ये भोजन करते हैं। जाव-हत्या से ये परज्वर करते हैं। वर्षाकाल में यहाँ घर के बाहर इसलिए नंगे निकलते क्योंकि उस समय जीव जंतुओं के कुचले जान की आगका रस्ता है। इनमें अधिकतर माधू मोनी अथवा बदही होते हैं। पथ में दानिष्ठ होने के लिए ४० दिन तक दाना दा जाता है। पथ के सगठन के लिए आरम्भ से ही १२ व्यक्तियों का सम्प्रदाय बना आता है। विसा के मरते ही योग्य व्यक्ति द्वारा इसकी पूर्ति कर दी जाती है। मुख्य महत का मृत्यु पर उत्तराधिकार के लिए एकत्र ग्रहस्थों द्वारा योग्यता के दृष्टिवाण से महन्त का चुनाव होता है। मुख्य महत चाहना ही में रहता है।^३ गुजरात के राम सनेही सन्ता में गमयदास (मृ० सं० १६६२) का नाम विनायक रूप में उल्लेखनीय है जिन्होंने

१ डा० रामकुमार वर्मा ने इनका नाम रामचरण बताया है जिनका जन्म सं० १७१८ में सूरसेन जयपुर में हुआ था। ये पहले रामोपासक थे बाद में मूर्तिपूजा के घोर विरोधी हो गये।

देखिए—हिंसा आ इ पृ० २०८।

२ हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास पृ० २८८।

३ 'सत्त साहित्य' मुबंनसिंह मजोठिया पृ० १०६।

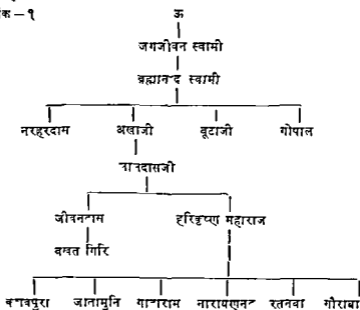
ध्रुवचरित जम बृहत् वाक्य की रचना हिन्दा म की है । य खडापा क सन मनमुखदान की गिप्य परम्परा म आते हैं । साहपुरा (राजस्थान) रण (राजस्थान) और खडापा (राजस्थान) इम सम्प्रदाय क प्रमुख बंद् हैं ।

१० अय सम्प्रदाय—

अ अखा प्रणालिका

कबीर की भाति अखा भी सम्प्रदाय या पथ प्रवृत्तन के विरोधा थ । उहने अपन जावन काल म किमी को गिप्य नही बनाया^१ किन्तु उनक पश्चात् कुछ ऐसे अनुगामी हुए जिहोने अपने को अखा गिप्य बताया और इम प्रकार की परम्परा धीरे धीरे विकसित होनी गयी । अखा के गिप्या का इस परम्परा का नाम अखा प्रणालिका है । इम प्रकार की एब प्रणालिका सागर महाराज द्वारा बनायी हुई मिलती है जा जगजीवन स्वामी स गुरु हानी है —^२

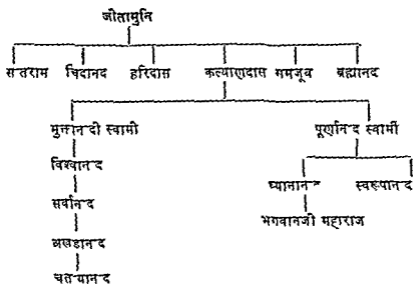
क्रमांक — १



१ गिप्य मेरा कोई नहीं गुरु सारा ससार

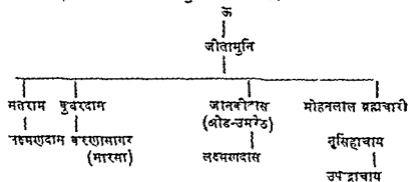
—अखी ।

२ देखिए— अक्षय रत्न' पृ० ३२ ।



प्रमाण—२

जीतामुनि की शिष्य परम्परा^१



इस प्रमाणिका में ब्रह्मानन्द का अन्त नरहरि बूढे और गोपाल का गुरु बताया गया है। किन्तु विद्वानों में इस विषय की कुछ चर्चा हुई है^२ तथा अधिकांश इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि उक्त चारा जानी बकिया का कोई एक गुरु होना सदिग्ध ही है क्योंकि गोपाल ने तो मौमराज को अपने गुरु के रूप में जगह-जगह उद्धृत किया है जबकि नरहरि और बूढाजी इस विषय में

१ अन्वय रस पृ० ३३ के आधार पर।

२ देखिए—'कविचरित' भाग १-२, पृ० ५६७—श्री के० बा० नास्त्री और

'अन्वो—एक अल्पपत्र' श्री उमाशंकर जी की।

मौन हैं और अवाजी में जहाँ जहाँ ब्रह्मानन्द का उदय मिनता है वह व्यक्ति विनाप के अर्थ में सूचित न होकर ब्रह्मक आनन्द के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है एगा प्रतीत होता है। दूसरे क्रमांक—२ में जीनामुनि के साथ सातराय, कुबेरनाम जानकीनाम आदि का जो सम्बन्ध जोड़ा गया है उसका कोई ठोस आधार प्रतीत नहीं होता क्योंकि सातराम मन्दिर (नडिया) कुबेरदास के मारसा मन्दिर (आनन्द) और जानकीनाम के आनन्द मन्दिर के वर्तमान महन्ता से इस सम्बन्ध में पूछताछ करने पर भी हमारे उपयुक्त मत का ही पुष्टि हाता है। और कुबेरनाम का रचनाओं में वही पर भी अवाजा का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इस रूप में जब तक प्रणालिका के सम्बन्ध में कोई प्रामाणिक तथ्य उपलब्ध न था तब तक इस सम्बन्ध का कहा जायगा।

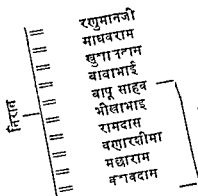
कहावा बगना की प्रणालिका में जिन मन्ता की नामावली दी गई है वह भी अपना सीधा सम्बन्ध अवाजी से नहीं जोड़ने। अला प्रणालिका के अन्तिम सत्त भगवानजी महाराज द्वारा सम्पादित सन्तानी वाणी में लानदास जीनामुनि जीवापनाम और कल्याणनाम आदि पानी-कविया का हिन्दी रचनाएँ मिनता हैं।

४ निरात सम्प्रदाय

निरात (स० १८०३-१६ ८) द्वारा सस्थापित इस सम्प्रदाय के अतगत बापू साहब गायकवाट अजुन भगत तथा गणपतराम आदि गिष्या के नाम विनाप रूप से उल्लेखनीय हैं। निरात भगत ने अपने नाम का सम्प्रदाय चलाने के लिये गिष्या के सोलह घण्टे में चरण-पादुकाएँ अर्पित कर गहिराँ प्रस्थापित का। बरौण का निरात मन्दिर सबसे बड़ा माना जाता है। निरात के गिष्या का परम्परा इस प्रकार है —^१

‘निरात गिष्य परम्परा

निरात	—=	नररदाम
	—=	न्यालनाम
	—=	गाविन्दनाम
	—=	मध्दाराम
	—=	गामनास
	—=	मायवाजा



इनके पदचाव उनकी कोई गद्दी प्रस्थापित नहीं हुई।

निरात के जिन गिप्या की परम्परा आगे चली वह इस प्रकार है —

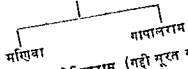
(अ)

बयालदास (गद्दी-बडौला-वाडी म)

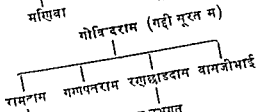
↓
गवरीगकर (निरात)

↓
बहचगराम (वातरमा आभा)

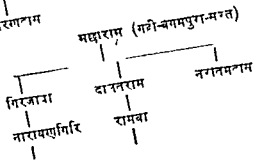
↓
नेवगकर

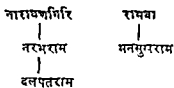


(ब)



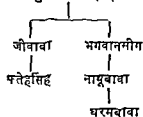
(ग)





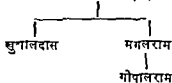
(द)

सुमानसींग (गद्दी-वेडच म)

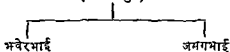


(क)

माधवराम (गद्दी गेडा फलिया-बडोला म)



(ख)

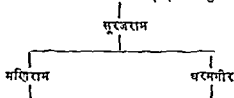
सुगालदास (देयाण म गद्दी)
(निरात पुत्र)

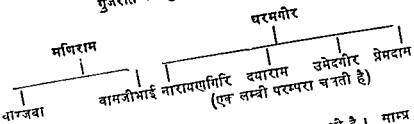
(ग)

बापाभाई (दयालु म गद्दी)
(निरात पुत्र)

(घ)

शामदास (गद्दी-कागोपुरा म)





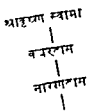
स कुबेर पथ

इसका नाम कवनान-सम्प्रदाय अथवा कायम पथ भी है। साम्प्रदायिक ग्रंथ हमतालव व अतगत कायम पथ की पुष्टि होती है— कायम पथ हमारडा कवन का स्वर। सत् कुबेर है आगवा आवा ने कोई पार।

—हम तालव, अग ५०/१८

इस पथ व प्रवक्त कुरराम (स० १८०६) व जिहान अपना मुख्य गद्दी, जान व पाम जस्यित मारमा म प्रस्थापित की। इस सम्प्रदाय क कुन मिनार १० मन्त्र हैं। ओ आप मद्रत स्वराज कण्ठेण कवन ननामा इस पथ का मून मन्त्र है। सक्षप म कुबेर-पथ की निम्न लिखित मायनाए ह —

- १ कनवा कवन प मगुण प और निगुण व्ह व काव म पर जन प का है।
 - २ विश्व का आ सजनहार एक कवन-वता है। इस कवन पिता न अपन गुढ मकल्प म मृष्टि क प्रारम्भ कान म दा अग सजित विय (१) निरजन। (२) परम गुण। निरजन अग का उहाने मृष्टि क काय-कम म उगाया और परम गुण का भक्त जावा का कवल स्वल्प का वाध करान म प्रवृत्त विया।
- डॉ० व मा मुगा न कुबेर पथ का रामानन्द-सम्प्रदाय का एक मान्य है। वन मभव है कि कवरराम व गुण श्रीकृष्ण स्वामा मन्ताराज रामानन्द सम्प्रदाय क रह ह। कुबेर-पथ का प्रणानिका हम प्रवाह है



१. बेलिए—मध्यकालीन साहित्य प्रवाह।

नारणदास
|
वन्वदाम
|
भगवानदास
|
प्रागदास
|
गित्तलदास

द ब्रह्मचारी आश्रम

यह कबीर पंथ की ही कोई प्रगाखा प्रतीत होती है। एक सम्थापक सत् महात्म्यमराम (स० १८८२-स० १९४५) जी थे जिनकी वाग्गा म उन सम्प्रदाय की निम्ननिम्नित विणिष्टताए मिलती है

- १ गुह्वत् पूजन ।
- २ कबीरजी का अनकग उल्लख ।
- ३ माहव गग का बाहुल्य ।
- ४ सत् रमति राम इनका मूल मन्त्र है ।
- ५ इनकी वाणी म अखा के बहुप्रयुक्त गग का बार बार प्रयाग मिलता है जसे प्रतीत हाता है कि उन पर अखा-प्रणातिका का परोक्ष प्रभाव भी अवश्य पडा था ।

सक्षप म इसका सम्बन्ध कबीर पंथ विणपत राम कवाग्या क शाय छोडना अधिक सगत प्रतीत हाता है। ब्रह्मचारी आश्रम की मुख्य गनी सीमरहा (जि खडा) म है तथा इसकी प्रगातिका निम्ननिम्नित है

महात्मा देवाराम
|
महात्म्यमराम
|
नरभराम
|
निरमनराम
|
रातगराम
|
परागराम
|

पराशराम

|

लायवराम

|

नीकाराम

मतमहात्म्यमराम के प्रमुख गिष्या म मत हरिराम (मृत्यु म० १६१६) भी य जो पट्टव हूए मत थे और जिहने पादग म मन्दिर की स्थापना कर अपन गुरु का उत्पन्न और स्वानुभूतिया का बाध जनजावन वा कराया । इनका गिष्य परम्परा एम प्रकार मिनती है —

हरिराम

|

दयाराम

|

गगाराम

|

नातगम

|

आत्माराम (जावित)

ध श्रय साधन अधिकारी बग

सबन् १६ ६ क आम-याम जबकि चम्बर और अन्मदावात् म प्राथना समाज आम समाज और यियोमाफिकन प्रभृति मम्बाण अपन-अपन ढग पर सिद्धु घम क शाधन म प्रवृत्त थी, उमी समय (म० १६२८) बडौटा म मन्नाका नामक भासिक-पत्रिका द्वारा हिन्दू-तत्त्वज्ञान का जगन् प्रसिद्ध करन का श्रय प्राप्त करन वाला तथा याग क अनकानक चमत्कारपूण प्रयोगा द्वारा अपना प्रभाव फतान वाली एक मस्या इम नाम म बन रही थी जिनक सम्पापक थे आ नृमिन्नाचाय । य अपन समय क श्रेष्ठ मौनिक विचारक ध जिनक सम्बन्ध म बनन आ वात् न एक बार कहा था —

I have come across many saints but have never seen such spiritual halo on any other face

इहाने पारिवारिक जावन की शुद्धता एक उच्चतर भूमिका पर याग की परिभाषा का । एम बग म समाज एक समाज मन्ना का अपन कुटुम्ब मन्ना पर अधिक बन गिया गया और उमी को याग का प्रथम मापान ना कहा । परिशुद्ध जावन का इहाने उत्कृष्ट ज्ञान बताया । इम बग न

अपना रचनाओं द्वारा हिन्दी तथा गुजराती साहित्य का समृद्ध किया है। उपद्राचाम तथा छान्दालाल मास्तर आदि श्रेय साधका द्वारा उनकी अभिवृद्धि हुई। शिक्षित वर्ग हम पद्य का विगण अनुगामा है। स्वामीनारायण सम्प्रदाय का प्रभाव जिस प्रकार गुजरात के निम्न स्तराय भागा पर अत्यधिक पडा मध्यम वर्ग के बुद्धिजीवी एवं सस्वार जय समाज पर उना प्रकार उय साधक वर्ग का प्रभाव भी ऐतिहासिक है।

प्रस्तुत परिच्छेद के अंतगत बवल उना प्रमुख सम्प्रदाया तथा जीर प्रणालिकाओं का परिचय दिया गया है जिन्होंने गुजरात के जनजीवन का विगण रूप से प्रभावित किया है तथा जिनसे प्रेरित हाकर गुजरात के सन्ता न हिन्दी में काय रचना की है।



तृतीय परिच्छेद

गुजरात के प्रमुख सन्त कवि—जीवन और कृतित्व



तृतीय परिच्छेद

गुजरात के प्रमुख सन्त कवि जीवन और कृतित्व

गुजरात में सन्त-साधना की पृष्ठभूमि एवं सम्प्रदायों का अध्ययन कर चुकने पर अब हम गुजरात के प्रमुख सन्त कवियों के जीवनवृत्त एवं कृतित्व पर प्रकाश डालेंगे। प्रस्तुत सामग्री का अध्ययन की सुविधा का दृष्टि से हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं —

१ प्रस्तावना कालीन सन्त कवि (सं० १२५ से सं० १५५०)

२ मध्यकालीन सन्त कवि (सं० १५५० से सं० १९)

प्रस्तावना कालीन सन्त कवियों में हमने कवन उन्हीं प्रमुख सन्तों का सामान्य परिचय दिया है जिनका नाम विद्वान् वाग्दान गुजरात का सन्त साधना का प्रत्येक जगह परास रूप से प्रभावित किया है तथा जिनका नाम ही गुजरात से किसी न किसी रूप में जान्य रहा है। यथा —

- १ वे सन्त जिनका जन्म गुजरात में किन्तु काय भ्रम इतर प्रदेशों जैसे — स्वामी चक्रधर ।
- २ ऐसे सन्त जिनका जन्म इतर प्रदेशों किन्तु काय भ्रम गुजरात जैसे — मीराबाई और पीपा ।
- ३ कुछ ऐसे सन्त जिनका जन्म एवं काय-क्षेत्र इतर प्रदेशों किन्तु यात्राय गुजरात आगमन जैसे — कबीर रामदास ।

सन्तों की घुमक्कड़ी प्रवृत्ति ने उन्हें कला का बाध कर नहीं रखा। वे ता गंगा की नहरों की भाँति किनारों को ता स्वच्छन्द विद्वान् वान रमते जाया थे। हम रूप में इन सन्तों द्वारा भारत का गायन ही कोई काना जड़ता रह पाया है। फिर भी गुजरात से सम्पर्कित जिन प्रारम्भिक काल के सन्तों के उत्पन्न उपपन्न हुए हैं उनका चरित्र मा परिचय देना यहाँ समाचीन होगा।

मध्यकालीन गुजराती सन्त काव्य का अनुशीलन हम प्रथम का प्रतिपाद्य विषय है। प्रस्तुत परिच्छेद के अन्तगत गुजरात के ऐसे सन्तों के जीवन एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है जिन्होंने साधना के साथ-साथ

अनुभूत सत्य का वाणी के माध्यम में व्यक्त किया है। गुजरात के अधिकांश सतना में माधुभावा (हिंदी) तथा गुजराती दोनों में रचनाएँ विधी हैं। जमा कि प्राकृतिक में स्पष्ट किया जा चुका है इस परिच्छेद में हम कवन उहा मन्ता का रंग जिनकी हिन्दी-वाणा उपरच होती है तथा उनका अध्ययन का भा हम उनकी हिंदी रचनाओं तक ही सीमित रखेंगे। यहाँ यह स्पष्ट कर देना अनिवार्य प्रतीत होता है कि कवन गुजराती में रचना करत वान मन्ता तथा उनका गुजराती रचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत प्रबन्ध का विषय नहा है।

१ प्रस्तावना-कालीन सत कवि (स० १२५० से १५५०)

चक्रधर (स० १२५०-१३३०)

महानुभाव सम्प्रदाय के प्रवर्तक स्वामी चक्रधर का जन्म भरवम नामक क्षत्र में (भड़ोच में) स० १२५० में हुआ था। उनके पिता विद्यालक्ष्मण महाराज राजा के प्रधान थे। पूवाश्रम में इनका नाम हृषिकेश देवा था। इनका पत्नी कमला उपाधा जा देह लक्ष्मण प्रेम करता था किंतु एक बार जुए में सभा बुद्ध हार जान के बाद में अपना पत्नी के सामने आवर हाथ फेरान लग जीर बन्धन में निराशापूर्ण उत्तर पान ली अनरा हृत्य दूष्ट गया। तुलसीदास का भक्ति इनके जीवन में भी एक महान परिवर्तन आया और घर-बार त्याग कर के रामरुके की यात्रा के निमित्त महाराष्ट्र की ओर चल पड़े। विष्णु के गावित प्रभु में इन्हीं दो ताता और वहा इनका नाम चक्रधर पना। कहा जाता है कि इनके बन्धन हूण यग का दत्त सवन् १८१० में प्रसिद्ध पत्ति हमाद्री द्वारा उनकी हत्या हुई।^१ महानुभाव सम्प्रदाय के अनुयायियों का यह विश्वास है कि हत्या के बाद भी वे जीवित रहें और उन्नतपथ का चल गये।

चक्रधर की चौपनी अत्यंत प्रसिद्ध है अनरा भाषा मराठी गुजराती मिश्रित लिंगा है। बुद्ध धर्म खडा वाता के क्रियात्मकता का स्वतंत्र मना का निर्माण करन है।^२

कबीर साहब (स० १५५५-१६ वीं शती पूर्वार्द्ध)

कबीर साहब भारतिय सन्त-साहित्य के दायव्यमान जातार-स्वप्न

१ मराठी सतों का सामाजिक काय डा० कोसले पृ० ८-९।

२ वही पृ० ९।

३ हिंदी के मराठी सतों के देन डा० विनय मोहन गर्मा।

है। हिन्दी-साहित्य की तात्कालिक मर्यादा विभूति हैं। अब इनके विषय में जानना कुछ निम्न गया है उम्मीदवा पिष्ट-प्राप्त करना निरर्थक है। यहाँ हम कबार का मात्र गुजरात की सन्त-भाषना के सम्बन्ध में दमना उचित समझते हैं।

यह मंच है कि कबार गुजरात के सन्तों में फिर भी उनका अग्रणी था। एव पद्य का प्रसार गुजरात में जितना व्यापक है वन्तः उतना विन्नी गुजराती सन्त का भी नहः। विन्नीय परिच्छेद के अन्तर्गत गुजरात में कबीर-पद्य का परिचय दत्त हुए हमन यह बतान का प्रयत्न किया है कि गुजरात में कबीर-साहब द्वारा रोपा गया अश्व-वट कालान्तर में किम प्रकार पनवित हुआ। अपने पद्य के प्रचार एव प्रसार हेतु कबार के गुजरात आगमन के उत्तर हम जगह-जगह उपलब्ध हान हैं।^१ गुजरात में उनके भ्रमण का उत्तर प्रायः सूरत सौर और गिरनार में जोड़ा जाता है। इम सदन में सब प्रसिद्ध किंवदन्ता कबीर-वट की है किम विषय में यह कहा जाता है कि जीवा और तत्त्वा नाम के दो भाग्या न सद्गुरु का स्वाज में कबीर को पाया जिहान कबीर साहब के सम्मुख बड की दानुन स क वृक्ष पलवित करने की याचना की।^२ कबार वस्तुतः धुमकण्ड और फकण्ड प्रकृति के मस्तमौला मत थे।^३ उनका नाम व्यक्तित्व में प्रायः मभा परिचित हैं। अतः उनका मनमौजी भ्रमणगीन व्यक्तित्व उह गुजरात तक खीच लाया हो इममें कोई आश्चय नहीं। कबीर मन्दिर के महत्ता के प्राचीन चरण चिह्न का देखन से यह प्रतीत हाता है कि गुजरात में कबीर साहब का आगमन (स० १५६४) के आम पास हुआ था।^४ कबीर वट के नामन निम्ने हुए सबत् से भी इस कथन की सत्यता सिद्ध जाती है।

१ (अ) मिडिल मिस्टिसिज्म आफ इण्डिया आ० भित्तिमोहन सेन पृ० ६८।

(ब) उत्तरी भारत की सन्त-परम्परा आ परशुराम चतुर्वेदी पृ० २८७।

(स) कबीर अने कबीर सम्प्रदाय श्री किर्तनसिंह चावडा पृ० १४१।

२ देखिए—चरोतर सब-सग्रह पृ० ८२२।

३ कबिरा खडा बजार में लिपे लुकाठा हाथ
जो घर फूँके आपना चले हमारे साथ।

४ भ्रमि भ्रमि कबिरा फिर उदास

तीरथ बडा कि तीरथ दास। —बीजक

५ कबीर सम्प्रदाय, किर्तनसिंह चावडा पृ० १४०-४१।

एक मत यह भा है कि कदार माहव न अपन ओगम पुन कमाल का भा सतमन प्रचार क लिए अहमदाबाद का जाग भजा था ।^१ गुजरात क कतिपय सतवागा सग्रहा म कदार साहब की कुछ गुजराती रचनाए अवश्य ही दखन म आती हैं किंतु उनकी प्रामाणिकता अभी सन्दिग्ध ही है ।^२ इन रचनाआ म कुछ प्रतिभ स हैं तथा कुछ स्पान्ति भाय ही उनक द्वारा प्रयुक्त भाषा की पचमन खिचडा म गुजराती का पु अय भाषाआ का तरह सहज भाव मे घुल मिल भा गया है । किन्तु, इन सभा तय्या का पर रखकर हम एक बात निश्चयपूर्वक कह सकत हैं कि गुजरात क ममग्र सत साहित्य को जितना कदार न प्रभावित किया है उतना अय किमी भारतीय सत-कवि ने नहीं । उन प्रदेश को जान धारा म कबीर की विचार-मरणि कतनी गहरी उतर गयी है कि गुजराती सन्त काव्य का माधना और साहित्य क धन म कदार स नितान पृथक करके दखना अत्य त मुश्किल है । गुजरात क कबीरपयी सतः म कबीर की विचारधारा और गली का जा साम्य मिलता है वह ता मन्प्रदायगत परम्परा प्रदय है ही गुजरात क प्रमर ज्ञाना कवि अथा की वागा म कबीर का जा भाव-साम्य मिलता है इम मत क ममघन म यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है । इम मन्म म इन दाना मता क कतिपय उदाहरण दृश्य हैं —

कबीर—

‘कस्तूरी कु डल घसे मृग डूठें बन माहि,
ऐसे घट में पीव है कुनियां जाने माहि ।

अथा—

‘मिरघ क पास कस्तूरी है
सो जाय पत्थर को सूँघना है ।

१ देखिए—सत-काव्य परशुराम घनुषेवी पृ० २२५ ।

२ उदाहरण क लिए देखिए कबीर का एक गुजराती पद —

‘जोयो रे मारी कामाना घडनारा,

काचो रे राम मारी कोले बनावो काया ।

घटडामो खदा रे, घटडामो सुरज रे घटडामो नवनन्य तारा जो ।

घटडामां ताता ने घटडामां कु जो रे, घटडामां क्षाननबासाजी ।

घटडामां अंजाने घटडामां करी रे घटडामो बडण हारा ।

कहे कबीर मुनो भाई तापु खोग्या सोप नर बाया ।

—परि प स० पृ० ५२ पद १७ ।

भया भाष पिछान विना
सय कोई तेसे घुलता है ।

मूलपा'—७५ ।

कबीर—

समुभ देख मन मीत पिपरवा,
धातिक होकर सोना क्या रे ।
कहे कबीर प्रम का मारग
सिर देना तो गीत क्या रे ।

कबीर पृ० २८६ पद ६६ ।

अज्ञा—

प्रम गली की खेलारी रे,
कोई है रे सोहागन नारी रे ।
प्रम खेल है ऐसा रे ।
सो सिर जात अदेसा रे ।

—कवडो १४ ।

कबीर—

'गगनघटा घहरानी साधो
गगनघटा घहरानी ।
पूरबदिस से उठी है बदरिया
रिभभिम बरसत पानी ॥

—कबीर पृ २८३-८७ ।

छा—

ज्ञानघटा छड आई अचानक ज्ञानघटा छड आई
अनुभवजल बरछा बडी दु दन कम की कीच रेलाई ।

—अक्षयरस पृ ६८ पद ११ ।

वस्तुतः कबीर और अज्ञा उत्तरी भारत तथा गुजरात की दो विमान-
नानमार्गी धाराओं का जोड़न वान एम जगम-नाथ = जिनक बाच प्राय दो
गतादिया का अंतरान है फिरभी भाव भाषा एव गीतों में अपुव भाष्य = ।
नरसी मेहता (सं० १४७०-१५३६ के मध्य

गुजरात के बष्पव भक्ता में नरमा मेहता का नाम गव मुखर है
किंतु व मात्र भक्त ही नहीं नाना भक्त भा है ।^१ उन्मान जहाँ एक जार

१ कविचरित भा १-२ पृ ५६ की क का नास्त्री ।

रामा और कृष्ण का श्रृंगारिक लानाओ का निर्णय वरुण अत्यन्त नम्रयता पूर्वक किया है वहा दूसरी ओर उनके वरुणत विषमक पत्रा म सवामवात् का भावना स्पष्टरूपण प्रतीत हाती है। इहान बवाग का भीति मभा जावा का एवना म विश्राम करत हा यह कहा है कि सब कुछ ब्रह्ममय है ब्रह्म क अनिरिक्त जोर कुछ भा नहा। स्वरा और स्वरागनरराग म जिस प्रकार की तात्त्विक भन् नहा परब्रह्म जोर जगत के जीवा म भी उमो प्रकार काइ भन् नही।^१ नरसी न कनक-कुडन का इहान प्रस्तुत क अविट्टन परिणामवात् का स्पष्ट किया है जिसके माध्यम म कवि का उद्देश्य जाव जगत और ब्रह्म की अनन्यता का सूचित करना ही है। स्वप्न दान क द्वारा इहान गकर क मायावात् का भा स्पष्ट किया है।^२ हम दखत है कि नरसी पर न चतय का प्रभाव है जोर न बलनभाचाय का हा कि उह ता न्यमे पूव का भक्तिमाग ही अभिप्रेत है। इनका ब्रह्मरात् और प्रभ माग बलनभाचाय क पुष्टिमाग म नितात् भिन्न वात् का है।^३ इनका भक्ति पद्धति पर जहाँ भागवत् और रात गाविन् का प्रभाव है। वहाँ नान-वरात्म्य के पदा म ठीक उनी प्रकार कबार का सी भावधार का स्पष्ट उमप है। नरसा और मीरा नाना का उपामना मगुण परक है। दाना हा मयीभाव क भक्त कवि थ। अन इनकी विगुद्ध कविता क ऊपर भन ही कबार और रामानद का प्रभाव न पर पाया हा किन्तु जहाँ भक्ति का गौण बनाकर इहाने नान-वरात्म्यपूण काव्य रचना की है वहाँ निश्चय ही कबीर का मा भाव-मात्म्य उत्तर आया है।

१ अखिल ब्रह्माण्ड मां एव तु श्रीहरिं जूजव रूपे अनन्त भाते ।
बहमां देव तु, तेजमां तत्त्व तु द्रुम मां गन्ध चर्षे वेद वासे ।
पवन तु पाणो तु भूमि तु मूषरा, वृक्ष चर्षे फुली रह्यो गाकाग ।
विविध रचना करी अनन्त रम लेशान

शिशु पका जायन थयो छ ज आगे ।

वेद तो एम चदे अति स्मृति गाल दे कनक कुडन थिये नद ना होय ।

—एनन, पृ० ५८२ ।

२ जागीने जोऊं ता जगत दोम नहि, ऊँपमां अटपटा मीग धाम ।

चित्त धतय दितान तद्रूप छ, इह्य सटपां करे ब्रह्म पाथ ।'

—एनन पृ० ५८६ ।

३ कविसरित भा १-२, पृ० ५३ ।

नरसी मेहता—

‘ज्यां सगी भातमा तस्य घोम्यो नहीं
 त्यां सगी साधना राय भूगी ।’

कबीर—

भातम तस्य चीना बिना, सब है भूगी सेव
 बरे सो तो भ्रमणा क्या तीरथ क्या देय ।’

नरसी मन्ना की गुजराती रचनाओं में नरमाना गाविण गमन नामक नामने विवाह सुरत सग्राम गुणमा चरित शृङ्गारमाना जाति प्रमुख हैं। इनके द्वारा रचित कुछ श्रुति पत्र भी उपलब्ध होने हैं जिनका प्रामाणिकता सन्दिग्ध ही है। भाषा की दृष्टि से भी इन पत्रों का प्रामाणिकता पर शक्य प्रकट किया जा सकता है। नरसी के कहे जाने वाले कुछ हिन्दी पत्र यहाँ दृष्ट्य हैं

म्हाने पार उतारो जी, धाने निज भक्तन की आन ।
 हमरे अवगुन नेक न चित्तयो अपनो ही करी जान ॥१॥
 काम क्रोध मद लोभ मोह बस मूल्यो पद निर्बान ।
 भव तो सरन गही घरनन की मत दीजो मोहि जान ॥ ॥
 लल चौरासी भरमत भरमत नेक न परी पिछान ।
 भव सागर मे बह्यो जात हो राखिए श्याम सुजान ॥३॥
 हों तो कुटिल अधम अपराधी, नहिं सुमरियो तेरो नाम ।
 नरसी के प्रभु अधम उधारन गावत घब पुरान ॥४॥

(म सु सा श्रीमत् सपतराम गायकवाड बडौदा द्वारा प्राप्त)

कहाँ लगई एतो देर अरे-अरे सावरे ॥टेक॥
 हों गुजराती सिव को उपासी पूजों सांभ सवेर ।
 भक्तिमम को मार न जानों हांसी कराई मेरी डर ॥
 ऊँचे चढ़ि के देर सुनाऊँ अन सुनिये म्हारो देर ।
 क्या कहिं काज सवारे भक्तन के क्या निद्राने लिये घेर ।
 नरसी के प्रभु अधम उधारन राखिये अबका बेर ॥

(सतबानी सग्रह भा २ पृ० ७३ वेल्वेडियर प्रस प्रयाग)

उप्युक्त दाना पदा में मारवाई के पत्रों का हा गला का अनुकरण मात्रात हाता है। अतः यह कहना कठिन है कि नरसी के कहे जाने वाले पत्र नरसा भगत के हा हैं। मीरजाई का भाति नरसिंह महता की ख्याति

भी दूर-दूर तक फन चुका था और जिस प्रकार हिन्दी गुजराती के जनक प्रतिम परमार के नाम से चतुर्पद उन्नीसवाले प्रचार नरसिंह के नाम से भी चल पढ़ने लगे उस परा का सत्या कम नहीं।

पीपा

रामानन्द के त्रिगुणिया गिष्या से पापा का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। डा० ब्रह्मचान ने जनरल कनिष्क के मत का स्वाकार करते हुए पापा का समय सन् १६१० से १४९० तक माना है।^१ उनके कथनानुसार पीपा गांगरीनग (राजस्थान) के खीची चौहान राजा थे और अपनी छोटी रानी सीता सहित रामानन्दजी के चतुर्पद लिखे गये।^२ जनरल कनिष्क ने पीपाजी का जन्मपाल से चौथी पीढ़ी में माना है।^३ फरवृहत् ने उनके जन्मकाल सन् १४८२ माना है।^४ डॉ० त्रिगुणियात फरहर के मत से पूरागत सहमत हैं।^५ आ परशुराम चतुर्वेदी ने पीपा का समय स० १४६५-१४७५ के आम-पास निर्दिष्ट किया है।^६ पीपा कबीर के बड़े प्रणमक थे जिनके आधार पर हम उन्हें कबीर का समकालीन भी मान सकते हैं।^७ प्रियाणम के अनुसार पीपा गांगरीनग के राजा थे। पहले वे देवी के उपासक थे फिर बाद में देवा के ही आस्था में रामानन्द के गिष्य हो गये। कहा जाता है कि पीपा जिस समय स्वामीजी के पास गिष्य होने के रिवाज में गये स्वामीजी ने कहा कि मुझे राजा से कहीं काम नहीं है। हम पर पापा ने अपना गाना मर्पति गरीबा से बाँट दो। स्वामीजी ने पुनः आना दो कि पीपा से कहा कि यह कुछ में गिर पड़े। पापा कुछ में गिरने जा रहे थे कि स्वामीजी ने प्रमत्त होकर उन्हें अपना गिष्य बना लिया। जब पापा के हृदय में भक्ति के धनुष पूरी तरह फूल पड़े स्वामीजी ने एक वचन बाँट गांगरीनगद बान का यथा स्वर उच्चारण किया। एक वचन बाँट पापा ने जय स्वामीजी का

१ हिं का नि स पृ० १०१।

२ वही पृ १०१।

३ आशियासोत्रिपत्त सख्ये त्रिपोः भा २, पृ० २६५ ६७।

४ एन आउटसाइन आफ रिसेजस लिटरेचर आफ इण्डिया,

—फरहर पृ० २३।

५ हिं नि का हा पृ० ५।

६ उ भा स प पृ० २३६। —नवीन सत्वरण

७ वही पृ० २३६।

बुनाया ता कबोर रत्नम आदि बाग गिष्ठा का लक्ष स्वामाजी गांगरीनगट्ट पदारे । पीपा न स्वामीजी का अपूर्व स्वागत किया । कत्र तिन वही रहकर स्वामाजी जब चले तब तब पापा न भा विरक्त हाकर उनका माय किया । पापा की छाया रानी माता भी हए पूजक उनका माय न गया । यहाँ म स्वामाजी द्वारका गये जीर कुछ तिन वही रहकर काणा चोर आय ।^१ स्वामाजी न अपन सम्प्रदाय का विस्तार करने के लिए अपन गिष्ठा का लक्ष क विभिन्न भागों में प्रचाराय नियुक्त किया जिनमें पापा तथा यागानगट्ट का स्वामाजी न गुजरलक्ष में रहकर धर्म एवं भक्ति का प्रचार करने का आलक्ष किया ।^२ काठियावाड़ में पीपागट्ट नामक स्थान बनाया जाता है जहाँ पापा काफा समय तक रहे थे । पापाजी का गद्दी रामलाल बेंटरकरका गांगरीनगट्ट तथा काठियावाड़ में है ।^३

गुरु ग्रन्थ साहित्य में पापा क एक पद का समूह मितना है । कम पद का अंतर्गत पीपा न जाई पिंड साठ द्रव्याड क मिद्वान्त का प्रतिपादित किया है । मानव शरीर में ही इष्टत्व मन्त्रि और समस्त चर जाय विद्यमान हैं । काया में ही धूप-दाप आर नवद्य है । उसी काया में पून पूजन का मम न सामग्रियाँ है । बिना कहा आय गये ही काया में नवा निधियाँ प्राप्त हा जाता है । जा कुछ ब्रह्माण्ड में दृश्यित है वही पिंड म है । पापा उसी परम-तत्त्व का प्रणाम करता है जा सतगुरु बनकर दिखाई देता है ।^४ प्राचान काव्य विनाट (भाग १) में पीपा का उदाहरण चू दगी गायक एक गुजराती पद में प्राप्त हाना है ।^५

१ रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिंदी सा पर उसका प्रभाव

—डा० बदरीनारायण श्रीवास्तव पृ २३-२४ ।

२ वही पृ० ४७ ।

३ वही पृ १८७ ।

४ गुरु ग्रन्थ साहित्य रागु धनासरी पृ० ६६५ ।

५ अन्तिम चार पक्तियाँ देखिए—

वण रसना गुरु गाइ लो रे, वण बस्ती को देश
वण पिंडनो ए भातमा रे तामु करी लो साधो सनेह
कह पीपो एक रूप लीना बनी कवनी बनाई
जेरो जाणी ए चू दडी रे ते वस्तु रूपे पाई ।

—प्रा का वि पृ० २१६ ।

राहादास (रदाम)

स्वामी रामानन्द क १२ पिढ्या म रणम का नाम विनाप रूप म लिया जाता है। त्रिवाणस ने भक्तमाल की टीका म रणम क सम्बन्ध म जा मध्य प्रस्तुत किय है व सक्षय म न्य प्रकार है

- १ गुण द्वारा गणित ब्रह्मचारी पिढ्य न रणम क रूप म जन्म लिया जिम रामानन्द न आवण दूध पिनाया।
- २ रणम क चरन न्य प्रताप का आदरण सहन नहीं कर सक। रणम न अपना स्वचा क भीतर मान का जनक ग्राह्यणा का लिखाया।
- ३ चित्तौड की राता भाना रणम का पिढ्या था।

रणम न स्वय का चमार जाति का कहा है।^१ रामानन्द के अन्य पिढ्या न भी रणम को चमार अथवा तारा का व्यवसायी कहन हुए माया का परिष्कार करने वाला बनाया है।^२ रणम क समय की निश्चित करने म प्राय विज्ञान म का एकमत नहीं फिर भी अधिकांश उर्दू रामानन्द का समयवानत मानन क पथ म है। आचार्य परगुराम चतुर्वेदा न राती भाला का गंगा गागा (स० १५२६-१५८६) का बहित मानकर रणम का समय विक्रम की गानहवी गनाला क प्राय घन तब माना है।^३ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल न्ह बयाव क पंचान् रामानन्द का पिढ्य मानत है कसकि रणम न अपन एक पत्र म कबीर और मन नाँ पाना क तरन का उल्लेख किया है।^४ डा० त्रिगुणामत ने इनकी सभावित जन्म तिथि १५७१ कि मानी है कसकि इमा सर्वन् म माघपूर्णिमा रजिजान का पहना है।^५ रणम का अत्र तब कागा का रण वावा हा माना गया है जमा कि उनवे एक पत्र म भा य न्य हाता है—

जा क हुडु ब सब डोर डोवत
फिरिहि अजहु वाना सो आसपासा।'

- १ कट रदास छलास चमारा'— ऐमी मेरी जाति विरुपात चमारा' आदि।
- २ गु प्र सा पद्मा भगत राग आसा, पद २।
- ३ उ भा स प आ परगुराम चतुर्वेदा पृ० २०३।
- ४ हि सा इ पृ० ८२।
- ५ हि ति का हा पृ० ३२।

गुजरात में रत्नाम की बाणी का व्यापक प्रसार परिचित जाना है। यहाँ व राहुनाम या राहादाग व नाम से प्रसिद्ध है। गुजरात व अनक सता न रत्नास का उचैय राहादाग व नाम से किया है

नामदेव कबीरजी धीपा अरु रोहीदास
राम धोकार रवि कहे परगट हुआ परकाग ।^१—रवि साहेब
'भक्ति करे जो नीच हू प्राणी याकु ध य कहे मुनि ज्ञानी
सेना धना धीपा, रोईदासा गुनका मोघ अजामेल कसा ।

—प्रीतमदास^२

सना नाई व एक पद में भी राहित्याम नाम मिलता है। पद की अन्तिम पक्षितयाँ देखिए—

धय कबीरा धय रोहिदास,
गावे सेना हाथी ।^३

गजटियर आफ इण्डिया^४ में रामानन्द के द्वारा लिख्या में रोहीदास नाम मिलता है। कागो में रूहा का रूदास या रूदाम के नाम से पुकारा जाता है। निष्कप यह कि रत्नाम तथा राहादाग भिन्न प्रतात नहा हात। गुजरात में रोहीदास नामका एक प्रकार से काई अन्य सम्माननाय सत हुआ हा एमा प्रजात नहा हाता। अत हम नि सकाच भाव से यह मान लना चाहिए कि रोहीदास अन्य काई नहीं बल्कि रामानन्द के कह जान वान लिख्य रदास ही हैं। संभवत राहीदास का भिन्न मानकर उनके नाम के पद का अब तक रदास व पदों से इमालिए अलग रखा गया।^५ रदास रचित हिंदी गुजराती मिश्रित एक पद देखिए—

हरे ते तो मनसा जनम गुमायो
ते ता कोकट करो लायो है।
रामनाम रग एक छे
रोहीदास नो प्राण आधार ।^६

१ रवि भा स बाणी पृ २५२।

२ प्री दा बा पृ १५१।

३ म स हि दे पृ १३३ से उद्धृत।

४ Gazeteer of India Gujarat State Surat District P 247

५ देखिए—अ भ मा भा० २ पृ० २७७ तथा पृ० २४३।

६ सध्या म मा भाग २ पृ २४३।

नडियाद का ह प्र म सकलित रोहीणम का एक पं दृष्टव्य है -^१

श्री रामधनी ताकु काहा कमी,
 मनसा नाथ मनोरय पूरे, अब सुखनोंघान की बात बनो ॥राम॥१॥
 कोण काम रपण की माया करत-करत अपनी अपनी ॥
 खाए न सके खरच नहीं जान, जीउ गर रहेत भुजग मनो ॥राम॥२॥
 सीय विरचो जाको पार न पावे मे वापरे की बोग गमी ॥
 जाकी प्रीत नीरतर हरीसु कहे रोहीदास बाकी सदा हो बनो ॥
 रामधनी ताकु कहा कमी ॥३॥

इस प्रकार हम दखत हैं कि भारीबाइ का भीति रत्नास भा यद्यपि गुजरात क नहा थ फिर भा उनकी विमल-वाणा का प्रमार गुजरात तक परिख्यास था । राट्टाणम तथा मीराबाई क सम्बन्ध का लेकर अनक गुजराती लोकगीत भी प्रचलित हैं ।^२

निम्नलिखित आधारा पर रत्नास का हम गुजरात म सर्पकित मान सकत है —

- १ रदास क गुजराती पं मिलत हैं । यद्यपि अधिकांश पं उनके हिंदी पं के र्पातर भी हैं ।
- २ गुजरात की रोहीणमी नामक चमार जाति अपना सम्बन्ध रदास म जोडता है ।^३
- ३ गुजरात म रत्नास क आगमन एव निवाम क उल्लेख एव प्रमाण मिलत है ।^४

१ परमाथ रत्नाकर (ह प्र) वि स० ३०/४ डा० पु० नडियाद ।

२ एजी तमे मारी सेयाना सालीगराम

मीरां तमे घेर जावने ।

तमे रे राजानी कु वरी ने अमे छइये जातना चमार

जाणने तो मेवाडो कोपणे ने चिप्रोडो छोपि देने गान

मारी तमे घर जावन ।

सोरठी सतो -भवेरघद मेपाणी ।

३ जी इषायु द्वास, दिघमास

—रिस्तीजस लाइफ आफ इण्डिया सिरोज, पृ० २१० ।

४ रामानंद सप्रदाय तथा हिंदी साहित्य पर उत्तका प्रभाव' पृ० २३-२४ तथा 'उत्तरी भारत की सन परम्परा' पृ० २४८-४९ ।

मीराबाई (म० १/६० १६०३)

मार्गीवार् यद्यपि जन्म म गुजरात नहँ था तथापि उनक जीवन के प्राय अन्तिम १५ वष गुजरात म ही व्यतात हुए ।^१ गुजरात म मार्गी की भावप्रवण जाणा का प्रभार बत्ताचित नरगी महता म भा अधिक है ।

मीराबाई की जावन धारा हा उनकी भक्ति भावना का क्रमिक विकास है । य वस्तुत सम्प्रदाय मुक्त गुर गिष्य परम्परा विहीन परम वग्व भक्तिन था ।^२ कुछ विद्वाना न मीरा की रत्नास का गिष्या बनान का प्रयत्न किया है जिनका आधार मीरा रचित कुछ एम पत्र हैं जिनम मीराबाई न अपने को रदाम की गिष्या कहा है किन्तु एस पत्र की प्रामाणिकता अभी तक सन्दिग्ध ही है । य पद रदासा सता द्वारा रचिन भी हो सकत हैं जिह बानातर म मीराबाई क नाम म जाड दिया गया हा । एतिहासिक दृष्टि से भी रदाम तथा मीराबाई के काला म बडा अंतर है । इम सन्म म कुछ विद्वानो का यह मत है कि गुरु की पराशवाणी गारा सभवत मीराबाई न जान प्राप्त किया हागा ।^३ कुछ भी हा गिरधर नागर क सगुण रूप की भाविका मारा का एक रूप निगुण परक भा है त्सम सन्हे नहा । अष्टछाप के कविया की पदावनी स तुनना करने पर यह स्पष्ट विन्ति हाता है कि मीराबाई क पत्रो का ध्यय पुष्टि मार्गीय नही था और न अष्टछाप के कविया का भाँति कृष्णलीला का वसन करना हा । उनक हृन्म म कृष्ण की जो मूर्ति है उस पर किमी सम्प्रदाय की छाप न हाकर स्वानुभव का प्रकाश है । कबीर की भाँति मीरा न भी प्रमलक्षणाभक्ति अथवा दगाधाभक्ति का अनुमरण किया है । मीराबाई का अभिभक्ति का ढङ्ग भी सत परम्परामान्ति है^४ जिनम गुढाचरण गीत बरन एव पिड क रहस्य का चर्चा की गयी है ।^५

कवार क समवानीन तथा उनके पुरागामिया म म कवार को छाक्कर

१ कवि चरित भाग १—प० के का शास्त्री ।

२ देखिए— मीरा की भक्ति और उनकी काव्य साधना का अनुशीलन

—डा० भगवानदास तिवारी ।

३ मीराबाई—एक मदन पृ० ४७ —डा मजुलाल मजुमदार ।

४ नामदेव— सब गोविंद है सब गोविंद बिन नहँ कोई ।

मीराबाई— सब घर दीस आतमा ।

५ 'तुम बिच हम बिच अतर नहँ जमे सूरज घामा । और भी पचरग घोला पहर सखी, मैं भिरमिड खेतन ताती ।'

सुवात कानुन की शक्ति

गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति

गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति
 गमा कानुन की शक्ति

- सब ता शक्ति
 मापना विमुक्त
 मर मीरि न जि
- १ हिंदी बाप्य की
 - २ मीरि तपुनि प्रथ
 - ३ मीरि-एक धरतल
 - ४ धामा धारी हम
 - ५ बहो बुगुम्बी नाग

गार पर ।
 रा वि तु
 व सुपल इत

१ निवारी ।

गढ
 म
 पा
 है ।
 पन
 गग

शक्ति के
 शक्ति का
 शक्ति का
 शक्ति का

वश
 अतु
 वय
 नग

प्रिय का प्रेम यदि उह रगछोत्राय के मन्त्रि में मिनाता व वनी गया
जोय यदि माधु की सगन में मिनाता व वनी भी गयी ।

मीराबाई जन्म से यद्यपि राजस्थान का थी किन्तु उनका सम्मान वाणा
न उह भारत व्यापक बना लिया । वागान से तबकर मुद्दूर रीतिग तक उनका
वाणा का प्रसार है । वे गुजरात का न हाकर भी गुजराती के प्रथम कविया
में स्थान प्राप्त करती है ।^१ इसका कारण यह भी है कि मीरा की काव्य
साधना की परिणति गुजरात का अक्षय निधि है ।^२ उनके द्वारा रच गये
गुजराती के निम्नचय ही मीरा के काव्य की प्रीतिता के परिचायक हैं । भाषा
और भाव की दृष्टि से भी वे अत्यन्त सरस और मुमधुर हैं । भक्ति का
आधारभूमि का जा अपूर्व समवेद्य के पत्र में दर्शन का मित्रता है वह
अयत्र दुर्लभ है ।^३ इस रूप में मीराबाई हिन्दी की ही नहीं गुजराती का
भी प्रथम कवयित्री हैं । उनके गुजराती पत्रों को प्रसिद्ध समझकर हम उनका
अवहेलना नहीं कर सकते ।

डा. भगवानदास निवारी ने मीरा का वाणा का अनुगोलन करते
हुए यह कहा है कि मीरा के हिन्दी पदा की संख्या ४६१४ है । गुजराती
पदों की संख्या ८१७ है । किन्तु इनमें य अदिकाग के विभिन्न भाषा

१ देखिए— मीराबाई —मानुसुखराम निगुणराम मेहता ।

२ उदाहरणाय देखिए—मीरा का एक गुजराती पद —

ऊचा ऊचा आभमा ने ऊचा ऊचा डूगरानी
ऊडी रे गुफामा भारो दीवडो बले रे दीवडो
लाख-लाख चदा चलके कोटि कोटि मानु र
दीवडा जगाही मारा भांखा पडे र
भरमर भरमर बरस मोतीडा नो मेहुलो र
सुरता अमारी एतो भीलवा पड र
बाई मीरा कहे प्रभु गिरधर ना गुण
सतगुरु दीधो भारो दीवडो बले र ।

—मीरा के गुजराती पद पृ ६७ ।

३ देखिए - मीरा के गुजराती पद पृ० ८४ ।

—डा० अम्बागकर नागर (लेखक मु)

हिन्दी तथा भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा विश्वविद्यालय, षष्ठ ३
अंक ३ से प्रति मुद्रित

भाषिया द्वारा मारी भाव का दन है। हिन्दा म मीरी पनावलिया की सख्या ४१ है गुजराती म ८ पन् सग्रहा म मारी क पन् है। दग विल्ग का मव हस्तनिपित प्रतिमा की सख्या २३ है। अग्रेजा म मीरी पनावली क २ अनुवाक तथा बगना म मारी पनावना मम्बधी २ पुस्तके छपा है। पूना का इदिग राय न मारी क नाम पर चार ग्रन्थ रचे हैं जो मीरी क नहीं कह जा सकत।^१

मारी क मून पन् का सख्या का अनुमान गगाना टंडा पार अवश्य है फिर भा सबन् १६४२ का गगानवावा हस्तप्रति^२ तथा नवान अनु सधान क आधार पर^३ मारी रचित कुन १०३ पन् का अनुमान किया जाता है। इनक गय रूपा का सख्या चार गुनी है तथा गान्धिक पाग तरा का सख्या हजार म है।

शेख जहाउद्दीन वाचन (म० १४४४ से १५६२)

उनका समय ६१२ गिग अयात् गिरम की पदन्वा गती उत्तराद्ध माना जाता है। गुजरी क कविया की एक लम्बी परम्परा हम भूभाग म प्राचानमान म उपनन्द गता है। उन सभी मुमत्तमान सता का भाषा जिमका प्रकृति मन्दा वाता का है दगिना क साथ अपूव माध्य राता है। हम परम्परा क सूफा सता म गग जहाउद्दीन वाचन का नाम अत्यन्त प्राचान तथा प्रमुख है। भाषा का दृष्टि स उनका रचना का एक उदात्तग्न दृश्य है

सू वाचन बाजे रे इसरार छाजे
मइस मन म घमके
रयाव रग म मनक
सूफो उन पर ठमके
सू वाचन बाजे रे इसरार छाजे।^४

१ डॉ० भगवानदास तिवारी द्वारा लिखित—

दि० २५-१-५ क एक पत्र क आधार पर।

२ उक्त हस्तप्रति सन १६३५ ई० तक डाकीर म सुरक्षित थी कि तु कसकता विद्यापीठ क हिंदी विभागाध्यक्ष था सलितप्रमाद गुपन इत यहाँ से ले गय। इमम मारी क कुल ६८ पद हैं।

३ मीरी की भक्ति और उनकी काव्य साधना का अनुगोसन

—डॉ० भगवानदास तिवारी।

४ 'गुजरात की हिंदी गवा डॉ अम्बानगर नागर।

नाजी महमूद दग्गियाया (म० ११००)

मानहरी गता पूर्वाद्ध क मूफी गता म नका नाम उन्नयनीय है ।
इनका रचना का एक उदाहरण प्रस्तुत करता यहाँ मधीधान आगा—

पाँचों वक्त नमाज गुजार ,
दायम पढ़ू कुरान ।
साथे हलाल बोलो मुख साँवा
राखो दुदस्त ईमान ।^१

माडण (ज म स० १५३६)

माडण बंधारा का समय विक्रम का मानहरी गता पूर्वाद्ध निर्दिष्ट किया जाता है ।^२ पटपदा चौपाई का मवप्रथम रचयिता माण्डण का नाम प्रस्तावना कालान सन्त कविता म सर्वाधिक महत्वपूर्ण है । जवा का उबरा काव्यभूमि माण्डण से परम्परागत प्राप्त हुई वह किमी म द्विपा नहा है ।^३ इनका काव्य प्रत्या से इनक जावन परिचय के विषय म जा सामग्रा मिलता है वह इस प्रकार है—(१) य मूल मिराहा क निवास तथा जाति क बंधारा थ । (२) इनका माता का नाम मधू था । (३) पिता का नाम रवि था । (४) माडण न अपन का जागीमन्त का गिण्य बताया है ।^४

इनका सबप्रसिद्ध प्रमुख ग्रंथ प्रवाध बन्नासी है जा पटपदा चापाण्या म रचा गया २ वासिया (२ -२० पटपती चौपाई म) का संग्रह है । अग्रा क छप्पा और माडण की प्रवाध बतीमा का तुलना करने पर विचार जाव्यात्मिक भावा तथा गानी म एक विगप प्रकार का साम्य मिलता है । माडण का नाकमानम का जा नान था उसी क आधार पर चार पाँच गा क आसपास प्रचलित कतावता का समावग उमन प्रवाध बतीमा म किया है । अग्रा क छप्पा और माडण की पटपदा की तुलना करत हुए आ उमागकर जागा न स्पष्ट कटा है कि माडण का काव्य जस्यत व्यवस्थित है कवि का अप ता विगपन वह एक कापकार है जिनका मुख्य उद्देश्य प्रचलित कतावता का मचय करना है ।^५ जबकि अग्रा क छप्पा म माण्डण का मा मयवस्थित

१ गुजरात की हिन्दी सेवा—डा० अम्बाशकर नागर ।

२ 'कविचरित भाग १-२ पृ० ७८ ।

३ देखिए—अखी एक अध्ययन—उमागकर जोगी पृ० ७२ ।

—अखी अने माडण ।

४ कविचरित भाग—१-२ पृ० ७८ ।

५ अखी एक अध्ययन पृ० ७५ ।

रचनागति नहा है। माडण न जिस गीगी कहा है अथा न अङ्ग की सगा दी है परंतु वीगी म माडण न २० चौपाइया की जगह २१ या १६ नहा हान दी है जसकि अथा न इस प्रकार का काई बघन स्वाकार नहा किया है। माडण का सबसे बडा योगदान यही है कि उसन सव प्रथम कहावता, ताकातिया तथा दृष्टता का पद्यरत्न करन का प्रया का श्रीगणेश किया इसी स प्रभावित होकर तीन गती परवात् दयाराम न प्रबोध वाचना की रचना की थी।^१

श्री क का गारुधी ने माडण रचित अथ ग्रंथो के नाम इस प्रकार गिनाए हैं। (१) रामायण हनुमतापान्यान सन्ति (२) क्वमागन्कथा। (३) सतभामानु स्मरणु (४) पाडवविष्टि। इसके साथ ही उन्होंने माडण क दा पना को उद्धृत किया है।^२ भाषा की दृष्टि स प्रथम पद की कुछ पक्तिया का यही उद्धृत करना समीचीन हागा—

सोई द्वारका गसिहर सोहि मोहि सेअल ससारो।

फेरी देउल अल समाधि कीऊला मडणचे दातारो ॥३॥^३

माडण की भाषा म मराठी का पुन विनाय उत्कृष्णीय है। माडण का गण अति सामान्य है। का विभक्ति नरसिंह महता क पुरान पना म भी मिलनी है वही नही हाइला गना पीउला आनि रपा म भा मराठी का पुन मिन जाता है। माडण के काव्य म भी विठला गण प्रयाग मिलता है। कम आचार पर श्री क का शास्त्री न माडण तथा नरसिंह मन्ता क ममकातीन होने की सम्भावना भी प्रकट की है।^४ यही माडण का एक हिन्दी पद भी दृष्ट्य है —

भजन करो राम का माई, छोड सब तन की धतुराई
गहरीछोड दे येसी आखर काको नहीं येसी भजन
करे बढगी साई बदा, जोते जिवगी सोई जदा,
फरीरी सोई रहत है फरता तापु सोई रहत है रमता भजन
हिनु सोई धमकु जाणे, कने हक सो मुसलमान,
सबोकु एक राह घतना, आखर तो धार मे मितना, भजन

१ अग्रो एक अध्यायन पृ० ८१।

२ 'कविचरित', भाग १-२ पृ० ७६-८५।

३ वही पृ० ८३।

४ वही पृ० ८४।

समज रहेगे पारा, साहेब का खेल अपारा

माडण की एही चतुराई सुनो हो पार सुन भाई—भजन ।^१

नरमी की भाँति माडण व हिन्दी पद्य का प्रामाणिकता भी सन्धि है किन्तु गुजराती मत माहित्य में अपना गुजराती रचनाओं का आधार पर माडण का विगोप महत्त्व है ।

इनका कुछ हिन्दी जकड़ियाँ भी उपलब्ध होता हैं जिन पर अरबी फारसी की स्पष्ट छाया है । गुजरी भाषा का स्वरूप निर्माण में माडण कृत य जकड़ियाँ निश्चय ही अपना अपूर्व महत्त्व रखता हैं । हिन्दी सनाओ मकनामा तथा क्रियाओ पर गुजराती ध्वनिया का प्रभाव महज ही देखा जा सकता है ।^२ खा की जकड़िया का पूव भूमिका का रूप में भी इनका विगोप स्थान है । माडण की जकड़िया में नीति उपदेश एक बराबर का भावना है जबकि जया की जकड़िया रहस्यवादा भावधारा से आत प्राप्त है ।

२ मध्यकालीन सत कवि (स० १५५० से स० १६००)

गुजरात का सत साधना का प्रभावित करन वान प्रमुख मत कविया का परिचय प्रस्तावनाकालीन मत-कवि गापक का अंतगत हम प्राप्त कर चुके हैं । अब हम पूव तथा उत्तर मध्यकाल का एम मता का परिचय प्राप्त करेंगे जिहान हिन्दी-बाणी द्वारा जान गया की आराधना की है ।

१ 'भजन रतनाकर याने अमरवाणी' प २४३ ।

२ ऊँचे मेहेल कहेल से कचन फूलु सेज बिछाना है
ताजा माल नवाला हाजर मन माने तब छाना है
हस्ती घोडा भाल खजेना मुलक मुलक पर थाना है
कहे माडण सुन दोस्त हमारे धिरना रहेना जाना है ।
जतन कीया या जीवका, फिर मरने का घर ना जोया
चलते फेरो लगा जुलम से कर पीसतावा फीर रोया
प्रम खेतका बना बगीचा नाम धणी का ना बोया
कहे माडण सुन दोस्त हमारे क्या जागा फीर क्या सोया ।
दरद बीराना सो नहि जाना पडा पुराना को होजा
स तसबी नहि छोया मनकु बस नीरजन मनदोजा
कसे नाहो ययो बीन यभे जप तप उठे चित छोजा
कह माडण सुन दोस्त हमारे क्या एकादगी ओर क्या रोजा ।

पूर्व मध्यकाल (स० १५५० से स० १७५०)

गुजराती सता की साधना का यह युग अनक दृष्टिया से महत्त्वपूर्ण है। सप्तहवी गती के ज्ञान गगन म अनक ददीप्यमान नक्षत्र जगमगा रह थ जिनक मध्य म अला और प्राणनाथ अपना प्रखर ज्याति से जालाकित थे। इम काल क सता का परिचय बानानुक्रम से प्रस्तुत किया जा रहा है —

हीरादास (स० १५५०-१६३५)

निर्वाण साहब की शिष्य परम्परा के प्रसिद्ध सत हीरादास का समय सन् १४६४ से १५७६ ई०,^१ तक माना जाता है। इनका निवास स्थान मूरत था। विघ्ना नामक एक गणिका क उद्धार का कथा इनक साथ जाड़ी जाता है। इस सम्बन्ध म निम्नलिखित पत्तियाँ भी प्रसिद्ध हैं—

विमल प्रम पहचान के, खिनी घोषा कलक।

बारा मुखी बहुरि लखे खिनी नाम निष्कलक ॥

इनके द्वारा रचित पन् अधिकांश म उपदेशात्मक है तथा इनकी भाषा सधुक्कड़ी है। खड़ी बोली एक ब्रजभाषा के रूपों से मिश्रित एक पद दृष्टव्य है—

तरी वाली उमरियाँ रे दीवाना क्यों गफलत मे राचेरो।

सन्धा हीरा तेरे हाथ न आवे पाया तोहे काचे।

चेत अभागा अबसर प हो हरि सुमरन साचे रो ॥

सन समागम उर नाही जाना विषय रस पाच।

हरि कथा-कीतन सुख नाही बिरहा घग नाचे रो ॥

आयागमन मिटत नाही तेरा अजहु बड भागे।

प्रीत पुरानी लोभ पिपारे असली अनुरागे रो ॥

अबकी बेर बिनती एक मानो अबधू साध कह्यो

हीरादास हरिमजन बिन बहुरि नन बह्यो रो ॥

समयदास (स० १५५०-१६२०)

इनका मूल नाम बकाजी था। इनका उपस्थितकाल सन् १४६४ ई० म १५६४ ई०^२ बताया जाता है। समयदास का जन्म मिठपुर (उत्तर

१ डॉ० अम्बागडर नागर (सतवाणी अक्ष ६, पृष्ठ ३ म प्रकाशित लेख
—गजरात के सत-कवि)

२ डॉ० अम्बागडर नागर (सतवाणी अक्ष ६, पृष्ठ ३ में प्रकाशित लेख
—गुजरात के सत कवि)

गुजरात) के एक वणिज परिवार में हुआ था। एसा प्रसिद्ध है कि गिडपुर व एक यवन हाकिम व यहाँ व नीकरी करत थ। हाकिम की इन पर वृषा दृष्टि थी इस पर अय मुसतमान उनस द्वप करत थ। बकाजी व रूप-गुण पर मुग्ध हारर हाकिम की युवा पुत्री न बका स विवाह करन का प्रस्ताव किया। बकाजा व गिर यह एक धम मकत था। एमक कारण उह बाफी परगाना भी उठाना पनी और रात्रि व समय व माधुवंग म निकन पड।^१ उहनि राचनगम म दाशा ली और रमत रमत मूरत जा पडवे। मूरत के तत्कालीन बाजा का नक्ष्य करक उनीन कुछ पत्नियाँ कही था जिनम उसे बेहक का गान वाला तथा कृष कता है।^२ इनकी भापा म जावना आवना पावना हरावना जाति क्रियारूप रिगपत मिलन हैं।^३ एहान वराभ्य अग उपलभ्य अग आति अनक अग व अन्तगत ज्ञान तथा वराभ्य स पूण पदा का रचना का है। रेवना एव कूनणा म इहनि मुन्टर पदा की रचना की है। इनका रचना गली का एक उदाहरण दविए —

अलख से प्रीत लगाव पियारे । तोहे यहा से एक दिन जावना है ॥
 यही पुर पट्टन लगे रग लाल । यहाँ बेर ही बेर नहीं आवना है ॥
 कुछ नेक सोदा कीजे मार मेरा । परवर की नाम मुल्ल गावना है ॥
 माई समय कहे सोच दाना । तू पछी मुसाफिर पावना है ॥

— वराभ्य अग ।

शाह अलीगाम धनी (सोलहवी शती)

इनका समय ६६ हिजरी अर्थात् सवत् १५७१ व जामपाम माना जाता है। इनके पिता शाह श्वाहीम जानुना ५ जो अपन समय व प्रसिद्ध मूफा सत थ। शाह अलीगाम धनी का जन्म अहमदाबाद म हुआ था। पिता से ही एहनि दाक्षा ती और धम का प्रचार किया। इनकी मृत्यु

१ का ग म घ पृ० ३११ ।

२ हक तिले सोई साई सचे बेहक गाना छोड बाजी ।

समय की बान सोहे जहर लागे तेरे दिल में कुछ बहुत है बाजी ॥

३ बाव लेना गमगीर ताती कर काल की फोज हरावन कु ।

ज्ञान बरछो बिरपान लेना पीछे सुरसे जाय सतावने कु ।

गमज्ञान की सेज बडूक लेक जुठ क्रोध अहङ्कार बरावने कु ।

साई 'सम्रथ कहे सज्ज रहेगा महासिधु की पीर पतावने कु ।

— का ग घ पृ० ३११ ।

म० १० वि म २२ । य गूजरी बी परम्परा के मन्त्रमूर्त सूफी सन्त हैं ।
उनका जीवन हम प्रत्या का धर्मप्राण मुमत्तमान जनता में जो भी वास्तविक
है । उनका भाषा साफ सुदरा एक स्पष्ट है—

‘कहीं तो मजदूर हो चलावे, कहीं तो लला हुआ दिवावे ।
कहीं तो पुसरो गाह बहावे कहीं तो गीरी होकर जावे ॥’

उनका पद्य का मकलन मर्म पर ही है कि एक गिफ्त अनुकूलन न
किया था । तत्पश्चात् उनका पूर्ण मन्त्रानुसार एक पाठ गाह मन्त्रानुसार
जिन मुस्तफा न किया । मन्त्रानुसार गाह उतअमरार के नाम में प्रसिद्ध है
जिन गुजरात का धर्मप्राण जनता का नाम भी कहना है । उनका जीवन
न साध साध मन्त्रानुसार का जीवन (गूजरी) का मन्त्र स्पष्ट उद्घाष है ।

माधवदाम (म० १६०१)

उनका जन्म मन् १४४१ म० आठ म्बगसाम मन् १४६५ म० हुआ ।
उनका पिता मूला बनवाडा (मवाण) परगना के मिमात्रिया राजपूत थे किन्तु
य मन्त्र मन्त्र थे । उनका पिता का नाम कर्णवर्मिण था तथा माता का
नाम विन्द्या था । कहा जाता है कि माधवदाम न अपना युवावस्था में
मन्त्रना नामक एक बगिचा बनाया कि साध प्रेम किया था । प्रेम न ही रूप
पत्नी किन्तु माता के मन्त्रानुसार मन्त्रानुसार जाय उगा और गरीब पर
नम्र प्रगाकर मन्त्र मन्त्रानुसार का शुभ बना दिया । उनका जीवन
हुआ था कि उपरान्त नम्राना पत्नी मन्त्र पर प्रकाश मन्त्र रहत मन्त्र
अप्रसिद्ध भा है । उनका निधन हुए लगभग १ पर ५६१ कृतिरिया
पुष्ट मन्त्र और मन्त्र आदि यथाय जात है । उनका वाच मन्त्र वाग्गा के
कृष्ट उन्मन्त्रानुसार दृष्ट्य है—

रेखा— बुनियाद के बीच कष्ट क्या रहत दिन में,
दाह के मस्तो तु इन्क करो ।^१

मन्त्र माधवदाम की बगिचा भावना अत्यन्त हृद्य मन्त्रों है किना चार

१ अभावसत (सुमिका) आ चन्द्रु वरतिह पृ० ७८ ।

२ पा म म म पृ २१४ ।

३ डा० अम्बानकर नागर (सतवाण) जक ह पृ २,

— गुजरात के सात कवि)

४ पा म म पृ ३१४ ।

राय हुा हृय की मामिव अभिव्यक्ति है । इनर पत्नी की भाषा भा ऊव पाट का है—

धरर कलिया मे लिपटायो ॥टेरु॥

जल बिच छीर छीर बिच मोतो । स्वानि जाके मुक्ता म ममायो ॥

वृक्ष भूमि म बीज वृक्ष म । वृष्य जाके बीज म छुरायो ॥

धरमक मे आग मेहदी मे लाती । तेल कसे तिन में सिरजायो ॥

तू ही हो मुभमे में हूँ तुभमे । दोनों मे माधवदास दरसायो ॥

इनका भाषा म तत्काल नगिन जजाय वुजुग जम जग्वा फारमा क गता की बहलता है ।

दादूयाल (संवत् १२०१ स सं० १२५६)

दादू कवार का ही भाँति भारतीय मत साहित्य के एक अनमाल रत्न थ । इनक जन्म जाति एक गुरु क विषय म विद्वाना क अनक मतभेद हैं । कत्र यह राजस्थान का हा मानत हैं और कत्र जौनपुर का सिद्ध करत है कि तु अधिकाग विद्वाना का मत है कि दादू जन्म स गुजरात के ध जितवा साधना का अधिकाग समय राजस्थान म पनत हुआ । दादू द्वारा रचित अनक गुजराती पत्र तथा उनकी हिन्दी वागी म गुजराती के टठ गता का प्रयोग इन मत क समर्थन म एक महत्त्वपूर्ण तथ्य है कि दादू गुजरात स संपर्कित थे । गुजराती मत साहित्य भी दादू स पूर्ण रूपण प्रभावित है ।^१

आचार्य त्रिनिमान सन न दादू का जन्म स १५४४ इ० अर्थात् स १६०१ फाल्गुनमास की शुक्लाष्टमी तिथि वृहस्पतिवार का माना है ।^२ दादूपया तथा जय विद्वान^३ इनका जन्म (संवत् १६१) गुजरात क अहमदाबाद नामक स्थान म मानत हैं ।^४ पंडित मुधाकर द्विवेदा क अनुमार दादू का जन्म वागी क पाम जौनपुर म हुआ था ।^५ दादूपयिया का कथन है कि सावरमती क किनारे लादाराम नागर ब्राह्मण का य बहन हुए मिन । डा गकत्व विहारो मित्र न इनका अमला नाम महावनी तथा जानि का

१ देखिए—सत्त दादू पृ० १५ स ३२ पृ० स सा ष का अहमदाबाद ।

२ दादू और उनकी धर्मसाधना (पाटल सत्त सा विनेयांक ।)

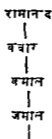
३ डा शुक्देव बिहारो मित्र परमाथ सोपान परिशिष्ट १ पृ १५ ।

४ देखिए—डा० त्रिगुणायत हि नि का दा पृ ३५ ।

५ देखिए—दादूयाल की बानी—मुधाकर द्विवेदी, वागी ना प्र सभा ।

घुन्ना बताया है।^१ आचार्य विनिमान्न सन न भी इह जानि का घुनिया बतान हूँ कहा है कि य वारह वष की उम्र म अहमदाबाद छात्रक माभर बन गय और वहाँ म चार काम का दूग पर नगना गाँव म रहन लग।^२ उन्ननि दादू क घुनिया हान क जनक प्रमाण भी लिय हैं। घुनिया हिट्टजा म भा है और मुमनमाना म भा। एनक कथनानुमार हिदू घुनिया का गाथा स मुमनमान घुनिया की गाथा बनी। घुनिया (पिजारा) बग म दादू क अनक गिप्य मिनन है। पजाब क पिजार भी दादू क भक्त हैं। य पिजार बप क एक भाग म स् घुनन का काम करन हैं और दूसर भाग म चमर (मात्र) की मित्रा करन पाय जान हैं। मभरत इमनिए मुधाकरजा न दादू की जानि का माची समझ बरन की गका उठाया है।^३ श्री चंद्रवा प्रमाण न उनका जन्म स्थान अहमदाबाद बतान हूँ कहा है कि उन्नान १८ वष का अवस्था म अहमदाबाद छाडा एक बाल ६ वर्षी तब मध्यप्रान्त म नाना स्थाना म भ्रमण करन रह एक पश्चान् व माभर म आय। व वष वहाँ रत्कर आमर म रहे। उम समय जयपुर क राजा मानसिंह क पिता भगवानलाल राजा थ। दादू आमर म १६ वष तक रह। भूमत घामत नगणा आय और मन् १६० ८ म ५८ वष तान माम का आयु म उनकी मृत्यु हुई।^४

गद—दादू के गुरु कौन थ इम विषय म सिद्धान्त क अनक मत हैं। गामा द ताया क अनुमार दादू रामानन्त की गिप्य परम्परा म छत्र गिप्य थ। जनधनि क आधार पर दादू का गुरु प्रणानिका एम प्रकार —



- १ परमाय सोपान, एपि इरत १, पृ० १६।
- २ दादू और उनकी धर्म-साधना— पाटल' मत मा वि।
- ३ दादूदयाल की वाणी भा १ पृ० १।
- ४ स्वामी दादूदयाल की वाणी—चन्द्रिकाप्रसाद त्रिपाठी।

जमान
|
विमान
|
बुद्धन
|
दादू

जाचाय परगम 'नुबेला न भा उन्न या वृद्धान' का दादू का गुण स्वीकार किया है^१ जबकि जाचाय 'जाराप्रमान' लिखता है उनका कमान का गिष्य माना है। जाचाय 'तिनिमाहन न दादू क गुण बुद्धन का निरजनराय कहा है। उन्होंने 'म मन्भ म ग्व प' भा उन्न किया है—

रहै जो सात घरस घर माहो
फिर दियो दरग निरजनरा^२।^३

जाचाय रामचंद्र बुद्धन दादू का उदार भाग को भी अनुयाया बताने हुए कहा है कि 'दादूदायन का गुण कान या यत् पात नहा पर कपार का नही वाना म यत्त जगह नाम जाया है जोर 'मम काइ मन्ह नया कि य नहा क मतानुयाया थ।^४ दादू क गुण क सम्बन्ध म विद्वाना क 'नक मतभ' ले सकत ह किन्तु 'म बात म का' 'नकार नया कर सकना कि दादू पर कबीर-वाणी का स्पष्ट प्रभाव पला था। 'म मन्भ म डा त्रिगुणायन का मत उचित ही है कि दादू न विमा जादित मनुष्य का अपना गुण नया बनाया था। व' 'उर' का मभवत अपना मानम गुरु मानन है। उनका यह बात कबीर क प्रति अगाध और अनय 'जाराप्रमान' उक्तिया म प्रकट हाता है।^५

दादू वाणी—कहा जाता है कि दादू न लगभग बास मन्भ रचनाएँ लिखी था परन्तु 'नम म अशिका' रचनाएँ विनुम जयवा विनष्ट हा चुका है। दादू वाणी क जा मय' भित्त ' उनम म बुद्ध य है—

१ सात दादू जीर उनकी वाणी—प्रवाग'क राज 'कुमार' बरिया।

१ उ भा स प पृ० ४१३।

२ हि सा भू पृ० ४६।

३ कबीर मसूर पृ० ६३०।

४ हिंदी सा इ पृ० ८६ का ना स तरहवा सस्तरण।

५ हि नि का और दा पृ० ३८।

- ० दादूदयाल की बानी—मुघाबर द्विक्ता का ना प्र म भा वाणी ।
- १ दादूदयाल का सवद—मुघाबर द्विक्ता का ना प्र म वाणी ।
- ४ स्वामी दादूदयाल की वाणी—सर्विवाप्रमाण त्रिपाण ।
- ५ दादूदयाल की वाणी—वन्दविडियर प्रम प्रयाण ।

दादू क का गिप्या न वनका वन्द मा वानिया का सवद किया वा जिमका नाम ह्म वागा ह ।^१ १० मुक्त्व विवाग मित्र न म् १८०० का वाज गिमा क अनुमार ग्ठन ज्ञ्यात्म कृत्य जीर ममयन अद्ग नामक वा का उन्नम किया है ।^२

दादूदयाल का बानी क त्रिपय म जाभाय गमवन् गवन न कहा है कि दादू का बानी अधिकतर कवार की माया म मिनन जुवन दादा म है कहा-कहा गान क पन् भी है । भाषा मित्री जुवा पचिमा हिन्दी है जिसम गजस्थाना का मन भा है । ज्यो कुछ पन् गुजगना गजस्थाना जीर पजाया म भी कह है । कवार क समान पूरवा त्रिवा का प्रयाग ज्ञान नहा किया है । नका रचना म जर्गी फारमा क ग्ठ अरिब आय है और प्रेम नच का व्यजना अरिब है । ग्ठ का बाना म यक्षपि उक्तिया का व चमत्कार नगी है जा कवार का बाना म मिलता है पर प्रेमभाज का व निरूपण अरिब मग्ग और गभाज है । कवार क समान ग्ठन और वा त्रिवा म ह्म रचि नहा था ।^३ म मग्ग म ग्ठ का एक पन् इष्टय्य है—

भाई रे ! ऐमा पय हमारो ।

दू पय रहित पय गह पूरा अबगन एक अपारा ।

बाद विषाद काहू सों नागों सैं हूँ जग ते पारा ।

ममदृष्टी सूर् भाई सहज म आपदि थाप विषारा ।

कवार नामग्ग नया नानक का भानि ग्ठ भा वस्तुन भाग्याय मन्त माहिय क एक उज्जवन ग्ठ य त्रिज्ञान अन्त विचारा का अय गन्ता की अपगा अधिक धनागगा इग म अनिबन्ध किया है । मायना क पय म ग्ठान महजमाग का अनुसरण किया है जगतिण उनका ब्रह्म मग्ग्याय-मग्ग मग्गदाय भी माना जाता है । प्रम नद मायना पय का इदु मवच था ।

१ उ भा म प पृ ४१४ ।

२ दृष्टिण—परमाप तावान लपिठण-१ पृ० १६ ।

३ हि मा इ पृ० ८० ।

वे उस देग व हैं जहाँ सभी एकरम हा चुक है।^१ गानू व पत्र जिनन मधुर हैं उतनी ही मधुर उनका माथियाँ भा हैं। सागिया व जनगत उहान गुफ महिमा नाम स्मरण प्रेम तथा विरह का अत्यधिक महत्व दिया है। उदाहरणार्थ —

गुरु महिमा—

दादू सबही गुरु मिया, पसु पखी बनराई ।
पच तत गन तीनि भ, सबही माहि खुदाई ॥^२

नाम स्मरण—

दरिया यह सतार है राम नाम निज नाव ।
दादू डील न कीजिए कह अवसर यह दाय ॥^३

प्रम—

दादू पाती प्रम की बिरला बाँच कोइ ।
वेद पुरातन पुस्तक पड़े प्रम बिना क्यों होइ ॥^४

विरह—

विरह जगाव दरद को बरद जगाव जीव ।
जीव जगाव सुरति को पच पुकारे पीव ।^५

प्यारेदास (स० १६२५)

माधवदास के गिप्य और उनकी गरी के अधिकार प्यारदास का जन्म (सन् १५६६—स १६२५) म हुआ था। ये कागी व रहन वान ३। कागी म वीरमती नामक बंद्या स आमक्त होकर ये अपना जीवन बिनष्ट कर रहे थ। सत माधवदास ने इह वम मोह स छुटाया और अपन माथ मूरत न आय। इनक पत्र म प्रेम तथा विरह की याकुनता है तथा जात्मनिवृत्त की निदानस अभिव्यक्ति है। मार्मिकता की दृष्टि स उनका एक पत्र दृष्टव्य है—

१ कविता कोमुदी भाग २ पृ २७१ पद १०।

२ सत दादू पृ ५१ साखी २५।

३ सत दादू पृ० ५२ साखी ४०।

४ सत दादू पृ ५५, साखी ६२।

५ सत दादू पृ० ५५, साखी ६८।

६ सतवाणी वच ३, अक १।

खोजत-खोजन हारी साजन तेरो देग वहाँ ॥टे॥।
 साजन तोहे खोजत निकलत आय छडी दूर देस ।
 आजहु तेरा पता न पाया जल गयो जीवन घेग ।
 काला बग बिलाय गय री गिर ये आय सकेदो ।
 नवरग चीर फीके हो गये उठ गई साल महेंदो ॥
 अबतो बुझाया आया भयापन कापन नाग शरीर ।
 नयन नासिका नीर बहुत है देही म हूत्र गई पीर ॥
 पल-पल विपुजो नाम पुकारव साद मुनो हो गुमाई ।
 प्यारेदास जन करत विनती कहीं हो माधव साई ॥

चानीकवि जखा (उप काल म० १७०१-५)

वदान्त की सर्वोच्च भूमि पर पहुँच हुए^१ अर्थात् वस्तुतः एम अनुभवमिद^२ आत्मवित्तक स्वतन्त्र जाना कवि य^३ जिन्होंने अपने अन्तित्तय ध्यत्तित्व से गुजरात की मन्त्रणा गनी का जानधार का आप्तवित्त किया था । इन्हें क्या गुजरात का काव्य का अग्रय शृङ्गार क्या है^४ ता कहा शास्त्रन की उपमा से विभूषित किया है ।^५ मय ता य^६ है कि गुजरात म जानवा^७ की जा धूमिल परम्परा चक्रधर म उकर माडण जीर धनराज तक चला आयी थी उस अजुण्ण बनाया अर्थात् न हा । म प्रकार गुजरात क ममन्त मध्ययुगीन साहित्य म अर्थात् का स्थान अग्रिम है । अर्थात् का काव्य मात्र आत्म जावन क निमाण म ही उपयागी मिद नग हुआ अपितु इन्होंने समाज क अग्रय रगा का कायमय बनाकर इतने सामिक दग म मजाया कि उसका माहिना न विज्ञान और मय माधारण मभा का ममान रूप म प्रभावित कर दिया । जान क मधान म इन्होंने अपने का साहित्य और दूमग का इन पय का मुनभवा पग कर ती ।^८ अर्थात् का जान चतुरग का

१ He reached the highest stage that a vedantin aspires too
 He had known the unity of Jiva and Is vera He had reached the final b autitude and became one with Brahman
 —Sahityakar Akhe P 212

२ श्री उमागहर जीगी अग्रो एक अक्षयन ।

३ श्री के का शास्त्री—कविधरित भाग १-२ पृ० ५६० ।

४ भा कृंवरचन्द्रकाग तित्—अग्रयस्त निवेदन'

५ श्री मनगुधराम क मेहता—गु क ले क, पृ० २३ ।

६ श्री के का शास्त्री—क ख, भा १-२, पृ० ५८४ ।

रग ने केवल तद् युगीन कवियों पर ही चला शिवि जाधुनिक युग के अधिकांश कवियों की दृष्टि भी उसका चलाचौध में जगमगा उठा। न्यूनतम यदि हम अन्धा का गुजरात का कविरा कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। इनकी वाणी भी कबीर की तरह जीवन के कष्ट अनुभवों को स्पष्ट अभिव्यक्ति है। सभी बात कहने में यकीन नहीं चूक। एक फलवार जाकर अक्षयपन में तो इन्होंने कबीर का भाषा मात कर दिया है।^१

यजमस स्वर्णकार ४ और मन्वारा में बणव। अपने जनक पत्नी में रहाने अन्धा मोनारा २ अथवा माधु मानारा ३ लेकर अपने का अभिहित किया है। इनका जन्म स्थान जलपुर तथा निवास स्थान अहमदाबाद (हमई की पाठ गान्धिया) था। बाम कप का अवस्था में पिता के विद्योह तपश्चान् पत्नी एवं छोटा बन्धु का अकाल मृत्यु ने अन्धा के हृदय पर गहरी चोट पड़ चुका था।

भरी जवानी में अपने सुखी समार को पुत्र हुए स्वर्ण जमा के हृदय में बराबर के अक्षर पूर पडे। य अक्षर सभवत उम समय पूगत विकसित वा चुके ४ जबकि अन्धा की एक घम बन्धि ५ तथा कुल विद्या पानि श्रुति ने अन्धा की ईमानदारी पर सन्देह प्रकट किया।^६ निर्दोष मानित जान के बावजूद भी अन्धा का मन उम समार में उठ गया और मद्गुरु का गात्र में बंधर से निकल पडे। अनुभव का प्रयागगाना में रहाने जात्रा का गाधन किया और मन को तपाया। व जिम आत्मविश्वास के बन्ध पर निभय शक्य समाज के दूषित मिथ्याचारों एवं रूढ़ियों का निराध करन है वह अन्धा का परिणाम है।

ध्रमण—मद्गुरु की योज में अन्धा धूमन धामन गात्रुन गये ६ जन्म का बन्धाचायजी के चौथे पौत्र जी गात्रुननायका में रहाने बणवारा १ राती। वहाँ के कल्ल कान तक रन्धा किन्तु जाना अन्धा का भक्तिमाग में

१ ग हि ष्य डा० अम्बानकर नागर—पृ २५।

२ देखिए—पद ५२ ११६ ११६ १२१।

३ अन्धा लोहकु पारस परसा।

सोना भया सोनारा। म सा पद ६।

४ बधिररित भा १२ पृ० ५६३।

५ वृ का दो भाग ३ पृ १३ प्रस्तावना

६ गुरु करवाने गोकुल गया अ वा पृ १६०।

अनुभूतता दिया न दा त्त प्रकार का त्तव उ त्तान अपने एक दृष्या म नी किया है ।^१ अनुभूतार्थी अथा न अपना बुद्धि का बचकर गुण क चरणा म ज्ञान गिष्य का त्त पर रहन की अप ता आत्मा का त्तप जनाकर मत्य का प्रताति करना अधिक उचित मममा ।^२ अथा नाथों और मत्तिग म त्तित्तान नत्त करत थ फिर भी प्रगति उनका भ्रमणगत रहा ह यत् उनकी रचनाआ क आचार पर कत्त जा मवता थ । उनका रचनाआ म दा वगुन स्पष्टन वार-वार आय थ— एत नात्क जीर त्तूर अहाज क त्रिषय म । उतात्तगाय— भावम त्तारहा त्त नौका ना मूपर' मप बना यथागा आत्ति त्त प्रयागा ना त्तवन हूण कात्तियावात् कराचा काशगापट्टा कच्छ त्तयात्त वत्तगाता तक अथा का जत-यात्रा का अनुमान किया जा मवता है । अथा रचित किया ना ग्रथ म यद्यपि उनकी कागा यात्रा का वगन नही मितता फिर भी त्तित्तना क आचार पर यह प्रमिद है कि अथा गुण का गाध म कागा गय क जीर कापा ममय तक रह त्तया गुण त्तद्गात्त क पार कत्तान त्तगा अय आत्तयात्मिक ग्रथा का अ ययन किया ।^३

गुण—अथा क गुण कान थ ? गात्तनाथजा क पश्चान् उतान गुण बनाया या नहा ' बनाया ता किम नती बनाया ता कत्त ? य मभी प्रान गुजगत क समा त्वा क वाच वत्तुचचित्त रह थै । य त्तव्य य त्तकाण भ्रमित कर दन वाता त्तमनिण भा रहा है कि अथा न एव आत्त गुण का मत्तिमा का अतुव गुणगत किया है ता दूगगा जात्त उताने कत्त ना त्तपत व्यति गु क नाम नत्त दिया है । अथा मत्प्रत्तय क कट्टर विगाधा थ त्तित्तु उनका वात्त उनका भा मत्प्रत्तय चता । जत्तुमर क पाम कत्तानवा वगता क था त्तवानजा मत्तगत अतत का अथा का गिष्य पत्तदग म तात्रा मगत थै । त्तौ० यागात्त त्रिपाठा न अथाजा का गुण प्रगात्तित्ता अत्तन अतिनियन् थ म प्रन्तुन का है त्तित्त त्तमत त्तियाय परिच्छत्त म मानार उदत त्तिया थै । एत मत्तवथ म थ्रा उतात्तवत्त त्तगात्त एव त्तका त्तार त्त त्तया थै त्ति मादात्त

१ गद कर्षा म शोशुस्नाथ, गुजरा मन न घासी गाथ
मन मनाथी सगुरा थयो वण दिचार नगुरा शो नगुरो रह्या ।
—अ द १६७

२ अ उ १६८ ।

३ अ त्तरत कुवर चत्तदकागत्ति प्रका म त्त दिग्दविद्यालय दशीरा ।
४ Kea In Gujarat Lecty Dr Y G Tripathi

रूप में अर्थात् वे वाक्य की तीन गणनाओं में मातृगणिका की मान में अत्रिण पाठियाँ होनी चाहिए अतः गणिका परम्परा का यह अत्युत्तम भवतु जगूग है।^१ अर्थात् राम का भूमिका में भा. श्री कवच चन्द्रकाण्ठा नामात्मक की गुरु प्रणामिका का उद्धृत किया है।^२ जिम उज्जैन सागर मन्तराज का डायरी से उद्धृत बताया है जोर इस आधार पर ब्रह्मानन्द का ही जगया का गुरु बताने का प्रयत्न किया है। जनश्रुति के आधार पर भा. विद्वाना मणक पद अत्यन्त प्रसिद्ध है।^३ जिमके आधार पर अर्थात् गोपाल नरहरि और बूटा का एक ही गुरु ब्रह्मानन्द का माना जाता रहा है किन्तु गोपाल न ता स्पष्ट रूप से अपने ग्रन्थ गोपालनामा में मामराज का ही अपना गुरु स्वीकार किया है।^४ अतः वाक्य तीना चाना कथना के लिए भी यह मत निरर्थक सिद्ध होता है। आलाचक वगैरे जगत् जगत् की रचनाओं में ब्रह्मानन्द नाम का ब्रह्म-ब्रह्म ब्रह्मानन्द को ही अर्थात् का गुरु सिद्ध करने का प्रयत्न करता रहा है। किन्तु अर्थात् न वही भी गुरु के रूप में ब्रह्मानन्द का उद्धृत नहीं किया है। उनकी रचनाओं में ब्रह्मानन्द का अर्थ है ब्रह्म का आनन्द (पद्यी तत्पुरुष) अतः यह व्यक्तिवाचक सनातन शक्ति पद्यी तत्पुरुष मनाम ही है। इस तरह तो अर्थात् की रचनाओं में मध्विज्ञानन्द (पन् २८) महजानन्द (पन् १२२) निररतन (असगीता ४) महानुभाव (पन् १६) आदि जनक नाम गणना मिलते हैं जिन्हें हम अर्थात् का गुरु समझ बठने की शक्यता सवत है।

श्री गोकुलनाथनाम सवगवा नामात्मक पश्चात् जगत् का जगत् कि किमी मन्तान् पुरुष का गुरु मानने पर ही आत्मज्ञान नहीं मिलता। वस्तुतः जगत् यह सपन में भी नहीं भूत पाय है कि गुरु साधन है साध्य नहीं। उज्जैन आत्मा का ही आत्मा का गुरु बताया है।^५ धर्मव भक्ता का तरह

१ अर्थात् ना दृष्ट्या पृ. १६।

२ अक्षयसरस पृ. ३२।

३ अर्थात् कर्णों डसो गोपाले करी घेज

बूटे कर्णों कूगे नरहर ने कहे गीराधा वेत। अ. प्र. पृ. १७।

४ सतगुरु स्वामी श्री सोमराज कृपा यकी हतु ग्रन्थ काज

—गोपालगीता।

५ 'अर्थात् उरअतर लोथो जाण तयार पछी उपडी मुज वाण अ. ध. १६८।

अग भी बहुत काल तक रिरियात रह १ वि तु मिला कुछ भी नहीं । जिम
नित आम तत्त्र व महार परात्पर ब्रह्म की पत्नीति हुई उस दिन अचानक
उत् हरि व साक्षात् दगम हुए । २ जसा जसा आत्म निरीक्षक जत म यह
वह जिना कम रह मवता था वि—

‘अण महापुरुष ते चोयो आप जेहनो धाये न घेदे थाप ।

अथ उरअतर लीघो जाण त्पार पछी उघडो मुज वाण ।’

अर्थात् मात्र तीन महापुरुष—बल्लभाचार्य विठ्ठलनाथ, एव
गात्रुननायजी—की तरण म बडे रहना ही सच्ची साधना नहीं । इन तीना
महापुरुषों व साथ किसी चौथे की आवश्यकता थी लीर वह थी—आत्मा ।
यही था गुरुभक्ति और आत्मप्रतीति का रसायन । अस रसायन को पचाकर
ही अत्मा की वाणी मिल उठी । ३ शो न द मन्ना न अपर पर परात्पर
परब्रह्म नाम की चार ब्रह्मवस्तु की भूमिकाएँ मिल हैं । ब्रह्म का बोध
कराने वाला गुरु परम्परा का अस तरह व क्रमग गुरु परमगुरु परात्पर गुरु
तथा परमी गुरु कहते हैं । अत चतुथ पद का उभरण द्वारा जो बोध कराय
उम मत्यगुरु कहा गया है । प्रत्यग गुरु की परम्परा म तीन गुरु महापुरुष
हैं जिनका उल्लेख अत्मा न प्रपचमग म किया है । अस भी पर अधान्
चौथा महापुरुष है स्वय अन्तर्यामी जामदेव । यही मन्वा गुरु गोरिन्
है । ४ इमानिण अत्मा न आत्मा का ही आत्मा का गुरु कहा है । ५ उहानि
गुरु तथा आत्मा का तात्पर्य सावित किया है । किसी ब्यक्ति गुरु की
दगमवाजी उह पमत् नहीं । स्वय स्वे जाणगगग आप स्व आत्
गवाधन भी हमी वान के सूचक हैं । जमगाता व प्रारम्भ म उानि कहा
भा है—

गुरु गोविन्द गोविन्द गुरु

जसा निगन्तु म्वानुभरी हैं । उहानि स्वय हा ब्रह्म का अनुभव
किया था ६ इमानिण उनका वाणी व मम का भी वग ममभ मवता ६

१ यह पाल टू तो रह्यो अ ए १६८ ।

२ आरी अधानक हरि परगट धयो अ ए १६८ ।

३ अतो एक अधपयन धी उमागहन जोशी पृ० २७ ।

४ असाकत वाप्यो भाग १ पृ० ६२ ।

५ ते माटे गुरु ते ब्रह्म अलेगीता १-८ ।

६ ब्रह्मानंद स्वामी धनुष्यो दे, जग भास्यो दे ब्रह्म वेचारे ।

—अ वा पृ० ६६ ।

जिनका गुरु उनका आत्मा था।^१ आत्मा का ज्ञापना करने वाच निगुण म अथा पञ्च और जन्म नया है अपितु गुरु^२ का ज्ञान उच्चतम अपने समकक्ष है। इस प्रकार अनुभव सा वाचा म आत्मा का ज्ञान ज्ञान वाच जया जन्माय मन य जा जीव का जीव म नये वकि स्वानुभव क प्रन पर जाव जीव जगन क रहस्या का परल मक थ।^३ फिर भा अथा क गुरु क मन्वन्त म म तत्र तक अपना स्पष्ट मन नये म मजन जब तक कि म मध्य ध म का उोग प्रमाण उपलब्ध न हो।

सत समागम—अथा न मत-समागम का सम्पूर्ण नाभ उगाया था। व वन्त एव भ्रमणगत जाना कवि। मत्स्य द्वारा उद्धान यागवामिश्र दत्तगीता महाभारत गान्धिपव भगवद्गीता भागवत पञ्चम आत्मपुराण वृहदारण्यक छान्दोग्य उपनिषद् शांकरभाष्य ज्योत्स्ना समागम परंपसूत आदि ग्रन्थों का जानाजन किया था। ध्यान म मन्ता न जया का रचनाआ पर उपयुक्त ग्रन्थों का प्रभाव बताने का प्रयत्न तथ्य का स्पष्ट किया है।^३

अथा का समय—अथा का जन्म एव जवमान दाना ही विवाहास्पत है। कुछ विद्वान् उनका जन्म सवत् १६६६ म आमपाम मानते^४ और कुछ सवत् १६६३ के आम पास।^५ वृहद्कायज्ञानकार न अथा का जन्म सवत् १६७०-७५ क मध्य हाने का मभावना प्रकृत का है^६ तथा मृत्यु तिथि भी उनका रचनाआ न आधार पर सवत् १७-३५ क राच माना है। वस्तुन जया का जन्म तिथि एव निर्वाण तिथि का निगम करने क नियम हमारे पास कोई ठोस आधार नहीं है।

अन मा य क आधार पर अथा क जन्म-काल का कुछ पता अवश्य लगता है। अथा क दा ग्रन्थों (गुरु निष्य मवाच एव जसगाता) का रचनाकाल क्रमण सवत् १७ १ तथा सवत् १७ ५ मिलता है। गान्ध

१ जे नर ने आत्मा गुरु धन कह्य अथा न त प्रीछुने।

२ सिधे राजा का को नतीं गरु सारा ससार

होते होते हो गयी समजत पाया पार श्री अ सा २८-३।

३ अथाकृत काया—भाग १ पृ २२।

४ कवि धरित भाग १ २ पृ ५६८।

५ वृहद् काय दोहन—भाग ३ भूमिका

६ वही भूमिका।

नाथजी के भासात्कार का उल्लेख भी जगान किया है।^१ गोकुलनाथजी का देहावसान सन् १६६७ माना जाता है। उन जाधाग पर जनाता निसन्द कना जा सकना है कि जना का उपस्थित रात सत्रहवा गनी उत्तराध रा अठारहवीं गनी पूवाध तक रहा हागा। इतरा अन्य अनुभव मासातिक परिताप की भट्टी म गन गन कर साना बन गया है और जना अनुभव काई भी व्यक्ति धरणभर म नहा पा लता। अला न इम प्रकार का एक व्यग्य भी किया है—

‘तिलक करता ोपन घट्टा’^२

असंगता उत्तरकान की रचना है। इम आधार का उदय म रगत हुग श्री उमागकर जागी न अगा व जाउन-कान क विषय म कहा है कि— मवत् १६६७ पूव हा पचामक वय बात गय हा यह भी सभव है। परन्तु एम मभावना का मानन हुग सवत् १७०५ व पञ्चान् अगा व समय का चन्त अधिव गीवन का मभावना कम रह पाना है। इम प्रकार घुमा फिराकर मवत् १६६७ म मवत् १७१० अर्थात् सन् १७६१ म १६५६ द० तक अगा का जावन काल निश्चित किया जा सकना है।^३

कृतित्व—अगा न स्वयं का कवि न कहकर जाना कना अधिक उचित समझा है।^४ कवि-कम उत्तर निय न श्रय या न प्रेय।^५ मच्च अर्थो म व अनुभव निष्ठ जानी-कवि थ जि हान वाह्य कृत्या म विरक्त हाकर अनर प्रतानि का नी कवि मम माना जिनार जूठन का हाग न रगाना अपना माधना का अपमान समझा और च्छाया हुग का चवण करना अपना काय मामझा का हीता। जाना की वाणी ता अमृत का खान है। पाना तथा जमृत म यहा एक अन्तर है।^६ भुक्तभागा अगान जा कुछ भा निगा व अमृत का धार बन गया जा कुछ भा कना ह्याये का चार पर कहा। चण्णक रविगा का तरण मप्रणय व गान निय निय कर अथवा गुण का भूग प्रगानि गा गा तर उजान अपना आत्मा का बच नहा दिया। अगा का

१ गुरु कीथा म गोकुलनाथ (अप्राकृत छप्पा)

२ कुन्तल शक (अप्राकृत छप्पा)

३ अतो एक अप्यया श्री उमागकर जोगी पृ० ७१।

४ ‘जानो ने कवि मां न गणोग किरण मूष मां कम धरणीग’।

५ ‘अतो गु कविपणु बरे जो वात कना ना पहेंचि गरे।’

६ जानी शक। (अप्राकृत छप्पा)

वाणी बल्लभ कविया पर प्रहार करती हुई स्पष्ट प्रतीत होता है। अपन युग के सहगायका से अनग शकर अस्वा न गाकरवत्तात म अनुभूति नानवात् की वाणी द्वारा जीवन के कटु एवं गहन अनुभवा में प्रसून जिम भाव उन्नी का उद्घाप किया है वस्तुतः वही उन्हें युगदृष्टा एवं युग मृग्य के पद पर ला बिठाती है। उनकी रचनाओं में जहाँ एक ओर कमवाड एवं रुनिया में जावट्ट धम एवं समाज का खाखलापन चित्रित है तथा दूसरी ओर रम्य प्रकार भटकन वात मुमुनुओ का सत्य के माग पर खीच नन धाना मगन ज्ञानवात् का डार है। वस्तुतः अत्रा की वाणी का प्रसार पार्थिव न शकर ऊध्वमामी है।

जसा ने हिन्दी एवं गुजराती दोनों भाषाओं में अधिकारपूर्वक काव्य रचना की है। उनके द्वारा रचित ग्रंथों के नाम इस प्रकार गिनाये जा सकते हैं—

गुजराती रचनाएँ—

१	अपंगीता	७	अनुभवविन्दु
२	सत्प्रिया	८	गुरु गिष्य सवाद
	चित्त विचार सवाद	९	कवत्पगीता
४	छापा	१०	सोरठा
५	कवका	११	बारहमासा
६	सातवार	१२	अवस्थानिरूपण।

हिंदी रचनाएँ—

१	ब्रह्मलीला	६	एकलक्ष रमनी
२	सत्प्रिया	७	साखियाँ
३	जकडी	८	भजन
४	भूतना	९	पद
५	कु इत्तियाँ	१०	घमार
		११	विष्णुपद

रचनाक्रम की दृष्टि से श्री बंगवलान ह ध्रुव ने अत्रा द्वारा रचित रुनिया का क्रम इस प्रकार रखा है—पचाकरण चित्तविचार सवाद तत्पश्चात् गुरु गिष्य सवाद अनुभव विन्दु और अमगीता। हिन्दी काव्य में सत्प्रिया पहल एवं ब्रह्मलीला उसके बाद की रचना है। छापा तथा पना

की रचना उत्तरावस्था में हुई।^१ श्री उमाशंकर जागी भा इस मत में पूरण महत्तम हैं।^२ अर्थात् गुजराती ग्रन्था में अने गीता और अनुभवविदु जिन प्रकार सबश्रेष्ठ रचनाएँ माना जाती हैं उमा प्रकार ही नहीं उनका सतप्रिया एवं ब्रह्मलीला का प्रमुख स्थान है। अनुभवविदु और अश्वगाता का तरह सतप्रिया और ब्रह्मलीला का वा-बद्ध एवं दृष्टवद्ध वाच्य कृतियाँ हैं जिनमें गीता की दृष्टि में अर्थात् ब्रह्मज्ञान की एक रम धारा है निरंतर बहने वाला एक प्रवाह है। एसा प्रवाह जो सम्भवतः हम कबाल दादू अथवा मुत्तारस जस सबप्रसिद्ध निगु गिया में भी नहा मिलता। अर्थात् की विचार-मरणि में वहाँ टूटने नहीं वही विद्याराम नहा और ब्रह्मानुभव का इस प्रकार अभिव्यक्ति का मंगवद्धता ही सात साहित्य को उनकी अपूर्व दान है।

अश्वगाता का भाँति अर्थात् सतप्रिया एवं ब्रह्मलीला की रचना विधि नहा दा है यद्यपि भाषा एवं रचना की गत की दृष्टि से हम सतप्रिया का प्रथम तथा ब्रह्मलीला का अन्त का रचना मान सकते हैं। श्री उमाशंकर जागी ने ब्रह्मलीला का चिन्तविचार मवाद एवं अनुभव विदु के मध्य की रचना माना है तथा सतप्रिया का चिन्तविचार स गहन की रचना माना है। पूर्व रचना हान के कारण जनक छप्पा का प्रभाव भी उमम दास पता है।^३ इस प्रकार सतप्रिया अर्थात् का प्रथम हिन्दी रचना है। यह एक बृहद रचना है जो सम्पूर्णतः कदाचित् पन्नी बार अथवा रम में प्रकाशित की गई है इसमें पूर्व के गुजराती मद्रहा में सतप्रिया का कथन सत्राग प्रकरण में उपलब्ध होता है। मर्वाग प्रकरण में कुल १६ छन्द है जबकि बाँ में जाँ गया अवयव्यतिग्य प्रकरण के अन्तगत २६ छन्दों का समाविष्ट किया गया है।^४ सतप्रिया का मूल हस्त प्रतियाँ बम्बई का फावम लामबरा तथा बडोचा विश्व विद्यालय के गुजराती विभाग के निम्न प्राध्यापक डॉ० यागीन्द्र त्रिपाठी के पास सुरक्षित हैं। अर्थात् नम ग्रन्थ का प्रारम्भ गुरु महिमा में ही किया है—

- १ अतो 'ए' अध्यायन प्रस्ताविक पृ० १० ।
- २ वही पृ० १७ ।
- ३ अतो एक अध्यायन (कृतियों अने लेखनों क्रम)
- ४ अन्तरगत पृ० १३६-१६६ ।

गुरु गोविन्द गोविन्द तो गुरु

गुरु गोविन्द गनति नहिं पारा ।^१

सतप्रिया म कवि न अपनप जान-निगमा वचनान जाति का यवता सिद्ध करत हुए अपान के घटागप से परावृत्त धन एवं शृङ्गार नातुप मनुष्य को जान की ऊँचाई पर न जाकर नारायण का पहचानन का उपपन्न किया है। उसने मत्संग का त्याग करन वात कुमारी शिल्पा का कीवा जीव गधा की सजा से अभिहित किया है।^२ कवि का स्वतन्त्र विचार-मार्गिक न तिलक छापा कठी माना जाया थापा जाति बाह्याचार तथा शिल्पा का धार विराध करत हुए कठोर व्यंग्य किया है—

माना न फेरु गीका न बनाऊँ, गरणे न जाऊँ मैं कीऊँ किमी का ।

आपा न मेडुँ पापा न थापूँ मैं मदमाता हूँ मेरी चुगो का ।^३

कवि न अत म अंतर के नयना से राम का परमन का धान बना है। जा पुरुष आहार निद्रा भय मधुन जाति न पर भत्य के मायम म आत्म प्रताति की बात नहा साचता वह पशु म भा बदतर है —

आहार निद्रा भय मधुन भयनी छोना खेलावन नाहीं लक्ष्यारे

पुरुष पशु से बीच नाहीं रच जोपे राम पहचान्यो न पार

केहत अषो चित के मन देखो तो सत्य माने रे राम रचाने रे ।^४

ब्रह्मलोका ४८ दंडा का एक छाती सा रचना है। कवि न अत अतगत मास्य-दान का पाख्या करत हुए निरजन निराकार ब्रह्म म त्रिगुणात्मिका माया और पंचभूतो का उत्पत्ति तथा ब्रह्म के रहस्य का निरूपण किया है। भाषा गता का दृष्टि से कवि का यह रचना अत्यन्त प्राग् है किन्तु सतप्रिया का भी सरमता का अमम किंचित अभान है। यद्यपि कवि का रचना शानी नाकप्रिय सिद्ध हुई है कि अथा के परवर्ती मत्ता म जातम जाति न भासा नाम का अथ उत्कृष्ट काति का रचनाए की है। स्वयं अथा न प्रस्तुत वृत्ति का प्रगसा म यह कहा है —

कहे अथा यह ब्रह्मलोका, बडभापो जन गाय जो

हरि हीरा अनन हृदय म अनायास सो पाय जा ।

१ सतप्रिया — ८ ।

२ सतप्रिया — १०० ।

३ सतप्रिया — ८७ ।

४ सतप्रिया — १३३ ।

अखा के दाशनिक विचारा की मजूपा है— अखगीता जिसमें भारतीय पद्यना क सिद्धान्ता का बगन किया गया है। अखगीता का प्राचान प्रतिया म गुजराती कडवा के बीच-बीच कुछ हिंदी पद भी मिलत हैं^१ जिहें बाप क प्रकागानो म अलग कर दिया गया है तथा उह अखा क अय पदा क साथ जोड दिया गया है। हमारी दृष्टि स यह ठीक नही क्याकि अखा ने गुजराती पदा क बीच-बीच हिंी पदा की जो बानगा प्रस्तुत की है, उसका विनोप महत्व है। अखा को यदि एसा करना हाता ता व स्वय ही इन पदा का अय हिंी पदा क साथ जोड दत। अखगीता वस्तुन जानपूण अय है अत जान का र्धता का मिटान क त्रिए बविध्य का प्रण तथा हिंदी की रस लहरा का आलोडन उस युग की विनोप मांग थी जा न मात्र हम अखा की कृतियों म ही दीख पत्ता है अपितु समस्त मध्य कालीन गुजरात एक महाराष्ट्र के प्राय सभी सत कवियों म परिलभित होनी है।

अदत सिद्धान्ता की चर्चा जहाँ ब्रह्मनीला एव सतप्रिया म हुई है वहाँ उनके १०६ भूतणा पदा^२ म तालिक के मेल की चर्चा है। इन भूतणा पदा की भाषा म हिंी क देगज तथा तद्भव शब्दा की अपेक्षा अनुपात म फारसा एव अरबा शब्दा का बहुलता है। आठ-आठ पत्तिया क एन भूतणा पदा म किया एव विषय का मुमम्बद्ध निरूपण नहीं है। अत माधना की सूफी परिभाषा म प्रकट करन का प्रयत्न यहाँ परिलक्षित होना है। वेदान्त एव सूफी दान क समन्वय की परम्परा म निम्नेह यह एक महत्वपूर्ण बडी है। ख्याती के इस मेल म एन तथा 'गन की विा चर्चा की गई है।^३ गन ता गर है एम उपाधि म मुक्त होकर गन' म तय गन की साधना ही विािष्ट मोपान है। इम माधना क त्रिए पूव अथवा पश्चिम म नयन करने की आवश्यकता नहा।^४ जब अखा का भांकत म णा बोबा मोय हा गई ता हर और गर का रेद कन्भर क त्रिए रट

१ 'अखगीता' पद ५, ७, ९ आदि देखिए— अखा नी बाणी' प्र मन्नु साहित्य बध क कार्यालय अहमदाबाद प्रथम आवृत्ति।

२ 'अक्षरस' पृ० ५५-८४।

३ 'एन गु अखता करता है वहाँ अखा है जीवन मारी' भूतणा ८०।

'आक्षर ऐन तब हुए अखा जब मफी का करार दिया।' भूतणा ७६।

४ ऐन ही अखस आपनी जो, अखा जयही भाव्य रेता।' भूतणा ६।

गया। जिसे पागम का पना मिला है वह तीर का माल बना करगा ? अथा न इन भूतना पना म प्रम की भा विग्न चचा की है। गरियत तरीकत हकीकत जीर मारिपन का नाचकर वामिन हक का तमना अथा न अपन प्रेम-पय म मूचित का है। य चारा मजिनें जगा की नहा है। सूफी प्रेम की इन चारा अवस्थाओं का चित्रण भूतगा पना म जगह-जगह मिनता है। अथा व मन म गरियत का बहुत ज्वाण महत्व नहा है। इसका मम्ब व हीरा मानिक का तरह हाता है। हकाकत हामिन हान पर जावन कुछ पार पा सकता है। मत तथा पथा का आपसी खाचा-नाना देखकर अथा न हमना निकायत की है।^१ मक्षप म अथा न कहा है कि प्रेम का नाग जब बाट जाता है तो समार व ममना कटु अनुभव ना माठ हा जाते हैं।^२ बस नूर व माथ निकार करन की आवश्यकता है। इस माग म पनाई त्रिखार्द कुछ काम आन बानी नहा है। जिस मूम ननी पिथा उसस दूर है और जिनन उम तिन व दान म दखा है वह निगन हा गया।^३

अथाजा का ८ जकडियाँ अब तव प्रकाण म आया हैं।^४ इनम उनका तमयता एव रहस्यात्मकता का स्पष्ट उभय है। मिनन की भावना म ओनप्रान इन जकडियाँ म अथा की आत्मा कभी युग-युग स तपन हुए चार का त्यती है।^५ ता कभी जाह्यान का गात भी गा उठता है— भना विराया माया मरा। कभी साजन व महज मज्ज आन की अनुभूति हाती है ता कभा पचरगी चाना पहन साय्या व माय खेलन का उनका आत्मा रुपा मृगमिन मचल उरती है।^६ स्वय का कामिनी और प्रिय का कामा के रूप म देखकर अपन नन मरूणा माया स हार-जीत का बाजा कर बठती है।^७ यह मायी जूना है अर्थात् यह जनम जनम का माथा

१ 'मत मजहब की खेवता है और डू डता नहीं किरतार कोई।

हो खुवा किस्मात होवे नहीं आवणे जावणे डोर रो' ॥

२ भूलणा १८०।

३ भूलणा १०३।

४ अन्तरस पृ १ से ३६।

५ अथाजा की जकडी ३४।

६ वही १३।

७ वही ८।

है और धूत भी है। धूत हात हुए भी यह उमका है किसी गर का नहीं। रमीणि उस नाज है। धूत है तो गया हुआ ? उसके आन ही मारा अधकार दिनप्र हो गया। उसने जस ही प्रेम पियाना पिनाया और नव सण्ण म उजाना ही गया।^१ अनुभूति की समयता अखाहत जकाडिया का सरस यथा विगपता है।

इसी प्रकार अखाहत २५ हिंदी कु डलिया तथा ३० हिन्दी भजना का संग्रह अभयस,^२ म मिलता है जा अप्रसिद्ध अधयवाणी^३ का हा एव मात्र सक्त्तन है। काव्य-मोदय तथा भाषा गठन की दृष्टि से अखाजा की कु डलियाँ विगप उत्तमनाय हैं।

‘श्री एक लक्ष रमणी अखाजी का अत्यन्त उष्ण रचना है जिमम पूण ग्रह की मर्दिना का गान है।’^४ अखाजा की विपुन मावियाँ तथा पत्ता के वृहद् ज्ञान एव अनुभव क श्रेष्ठ उदाहरण हैं। वस्तुतः स्वानुभव की जो भवक अखाजी न गुजराता छप्पो म प्रस्तुत की है ठीक उगी प्रकार की अनुभूति क दान हम उनकी हिन्दी माविया और पत्ता म जान है। भगा द्वारा जिस प्रकार उजान छप्पा का वर्गीकरण किया है माविया का वर्गीकरण भी उहाने विविध प्रकार के भगा द्वारा किया है। अखा क पत्ता उनक अनुभव एव आत्म ज्ञान के निरंतर मटकत हुए कर्म-पुष्प हैं। जतर सिफ इतना है कि कृतिया एव वाह्याचारा पर जा फरकार अखा क छप्पा म बरगता है वह उनक पत्ता म तथा। उनम गद्य है तेमी गद्य जा हृदय की गहराई म उतरकर अनायास हा भक्ति तथा बराग्य का भावना का जगा ^५। वस्तुतः अखा की चोकरिगता उनक छप्पा एव पत्ता क कारण हा है। मध्यकालीन गुजराती साहित्य म उनका प्रमुख स्थान पत्ता विगिष्ट काव्य स्वरूपा क कारण भी है। डॉ० मुन्गी न इनका वागी का युग की मयाप

१ अखाजी की जकडी ६।

२ आ कृषर चत्त प्रकाशित द्वारा संपादित म स वि बडोदा।

३ सागर महाराज द्वारा संपादित ग्रंथ गु व सो अट्मदावाद।

४ जगत बहो जकडान बहो माया बहो कोई बाल।

पुरुष बहो गाइये हो। इत नही कोई बाल। दक्षपरस पृ १।

जसे हि नाव हिरे फिरे दमों दिग ध्र व तारे पर रहत निगानी ॥१॥
 चलन चलन अवनो पर बाकी मन की सुरत अकाश ठहरानी ।
 तत्त्व समाप्त भयो है स्वततर, जसे हिम होत है पानी ॥१॥
 कुपी आदि अनत न पायो आइ न सफ्त जहाँ मन बानी ।
 ता घर स्थितो भई है जिनकी कही न जात ऐसी अकथ कहानी ॥२॥
 अजब खेल अवभुत अनुपम है जाग है पहवान पुरानी ।
 गगनहि नेब भया नर बोले एहि अखा जानत कोई जानो ॥३॥^२

अखा के व्यक्तित्व एव कृत्रित्व के सम्यक् विहंगावनाकन से हम इस निष्कष पर पहुँचे हैं कि गुजरात के सत्ता म अखा का वही स्थान है जो उत्तरभारत की सत्त परम्परा म कबीर का है । इसी तथ्य का दृष्टिगत रखत हुए डा अम्बागकर नागर न जखा को गुजरात का कबीर कहा है ।^३ जिम प्रकार कबीर क परवर्ती सत्ता न किञ्चित परिवर्तन के साथ उनकी वाणी का उद्धारणी की है उसी प्रकार अखा के परवर्ती ज्ञानमार्गी सत्ता न उनकी वाणी का अनुसरण किया है ।^४ अम्बावाणा (अक्षयवाणी) के अध्ययन से यह स्पष्ट हा जाता है कि गुजराती सत्ता म तो वे सर्वोत्कृष्ट हैं ही हिन्दी सत्त साहित्य म भी व सम्माननीय स्थान प्राप्त करन क अधिकारी हैं ।

नरहरि (उप काल स० १६७२-१६८८)

नरहरि अखा क समकालीन थ ओर उन्ही की कक्षा के ज्ञानी कवि थ । डा सुरंग ज्ञानी न अपने शोध प्रबन्ध म नरहरि को बाबला का कडवा

१ Akha's place in literature depends upon his chhapas and pads in which following a line of early writer like Mandan and other poets of what are styled jnani poets he expressed the dominant note of the age in biting verse

—Dr K. M. Munshi: Gujarat & Its Literature P 231

२ आश्रम भद्रनाथजी नवजीवन पृ० ११६ पद ७७ ।

३ गुजरात क हिन्दी गौरव-ग्रन्थ' पृ० ८ ।

४ Upto the beginning of the modern period many poets echoed the note of Akha

—Gujarat & Its Literature Page 236

पागीदार बताया है।^१ प्रसिद्ध जनश्रुति के आधार पर इनके गुरु का नाम ब्रह्मानन्द बताया जाता है किन्तु इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

इनकी प्रसिद्ध गुजराती रचनाएँ इस प्रकार हैं—

१ ज्ञानगीता	२ गोपा उद्धव सवाद
३ हरिलीलामृत	४ भक्तिसञ्जरी
५ प्रबोध मञ्जरी	६ कवका
७ मास	८ सतना सक्षण

इन सभी रचनाओं का एक ही विषय है भक्ति, वराग्य एवं ज्ञान का प्रतिपादन तथा गुरु एवं गोविन्द के महात्म्य का गान। नरहरि की भाषा असा का तरह बूट न टाकर प्रमादमय एवं सरल है। इनकी रचनाएँ विपुल प्रमाण में अभी तक उपलब्ध नहीं हो सकी हैं किन्तु प्राचीन ग्रन्थ भडारा में इनके द्वारा रचित अनक हिदा पत्रा क मिलन का पूरा सम्भावना है। बड़ोदा विश्व विद्यालय क प्राच्य विद्या मन्दिर की हस्तप्रति (वि सं० ५४६७) में नरहरि क कुछ हिदा कातन मिलत हैं। हस्त प्रति सङ्घित हान के कारण अधिकांश पत्र नष्ट हो चुके हैं। इसमें हिन्दी के कुल दो पद उपलब्ध होते हैं जिनमें से एक तो अपूर्ण प्रतीत होता है। इन पदों की भाषा गुजराती मिश्रण हिन्दी है। नरहरि न कल्या का शूद्र तोडा मराठा भी है। इस दृष्टि से इनका एक पद देखिए—

हरि गुरु सत इहों ओ कहो रे । ईहों कहि घेव पुराण ॥

ओवत मरत गजब होय तब पापि पद नीरवाण ॥हरि॥

और घय सब दीर्घ डिरे । एक तूहि-तूहि सय लाय ॥

कहि नरहरि ए अन्रमय बरो । तापि अमय परम पद पाय ॥^२

गोपाणदास (उप काल सं० १७०५)

य असा क समकालीन ज्ञाना-कवि थ। असाहृत अमगाना का रचना-काल मक्त् १७०५ है ठीक यहा रचना-काल गोपालदास हृत गोपालगाना का भा है।^३ श्री क का छात्री न इन दोनों ग्रन्थों क बीच

१ A critical Edition of Narhari's Jnanigita

—Dr Suresh H Joshi, M S University Baroda

२ हस्तप्रति वि सं० ५४६७ प्राप्त प्राच्य विद्या मन्दिर, बड़ोदा।

३ गुरु प्रतापे पोहोंची आण प्रथ ह्यो ह्यारे ज्ञानप्रवाण,
सक्त् १७ पाँच सार भास बेताल मष्टमी घोमवार।

मात्र उद्भूत भास का अंतर बताया है तथा अम्बगाता का गापालगीता से पहचान की रचना माना है।^१ कवि ने गोपालगीता का नाम जान प्रकाश किया है किन्तु यह प्रथम गोपालगीता का नाम नहीं प्रसिद्ध है। संभव है अम्बगीता की दत्तादेयी गोपालगीता नाम पड़ गया हो। इस प्रथम कवि ने अपना जा सामान्य परिचय दिया है वह इस प्रकार है—

- १ गापालिदास की जन्मभूमि नदावती (नाटा) थी।
- २ जाति से वह मोठ अडालजा क्षत्रिय था।
- ३ पिता का नाम खीमजा एव गुरु का नाम मामराज था।
- ४ अहमदाबाद में फरमानवाडी नामक म्यान में रहकर नामप्रकाश अर्थात् गोपालगीता की रचना की।

स्व दी व नमदाशकर भट्टता तथा डा० यागात्र त्रिपाठा ने प्रचलित दाहक आधार पर जहां गोपाल वृत्तियो तथा नरहरि को एक ही गुरु ब्रह्मानन्द का गिष्य बताया है किन्तु जमा कि पहचान हा कहा जा चुका है कि गोपाल ने स्पष्ट रूप से अपने गुरु मामराज का उल्लेख किया है यही उमका राअहस चतयदेव अथवा ब्रह्मचतय है, जय काई ब्रह्मानन्द नना। अत गोपालदास क गुरु क विषय में यहाँ विगप बुद्ध कहने की आवश्यकता प्रनात नहीं होना। कविचरित में उसकी विनाद व्याख्या का गयी है।^२ गोपाल का मूरत का भी बताया गया है^३ किन्तु पुष्ट प्रमाणों के अभाव में इस प्रकार का कथन भ्रम पूरा ही है। अहमदाबाद में आन क पंचान् गोपाल अगा से मिन या नहा उस विषय में गोपालगीता तथा अम्बगीता दांना ही मौन हैं जबकि टाना का रचन का न एक ना है। गोपालगीता गुजराती में लिखा गई रचना है जिमका निरूपण कवि ने गुफ गिष्य मवात् क रूप में किया है। गोपालगीता के आधार पर कवि के विषय में श्री के का गान्ना ने कहा है कि— दत्तात का पचाकर मानृभाषा में अभिव्यक्ति का यह दुहठ वाय अना के समान कौशल एव कवित्वपूण ने हान पर भी गोपाल ने मफनतापूर्वक निभाया है।^४ गोपाल की तिसवीं हुई हिन्दी रचनाएँ विरत हा हैं। उनका एक हिन्दी पत्र यहाँ दृष्टव्य है—

- १ कवि चरित भाग १-२ पृ० ५५५।
- २ धी क का गारुत्री क स भाग १-२ पृ० ५३६।
- ३ वृ का दो भाग ३ पृ० ५१६ तथा ग सा मा स्तमो, पृ० ११४।
- ४ कविचरित भाग १-२ पृ० ५४०।

मे मतवाला राम का,
अजर प्याला प्रेम का मुज असर आया रे,
मस्त भया गापालिया सामराज पीदाख्या रे ।^१

भाषा का दृष्टि स गोपाल क पत्र अत्यन्त मरन है । इनकी भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है । इस कवि न रासनावा कृष्णभक्ति एव मत्संग महिमा क पत्र की रचना 'दास गोपाल क नाम स की है । बृहद् काम दाहन भाग ५ म ११ पत्र तथा गुजरात वर्तमान्युक्त मानाथटी की हस्तप्रति (विबरण स० ११६) म १५ पत्र सप्रतीन है ।

सालदास उप बाल १८ बी शना पूवाप्र)

य बीरपुर के छापा भावमार थ । जगा का इहान अपना गुरु कहा है ।^२ असा की भौति उनकी वाणी म भी गुरु गोविन्द का गकता अनय भक्ति तथा स्वानुभावपूर्ण ज्ञान का उद्घाप है । इस आधार पर इनक द्वारा रचित पान रवगी पद तथा सावित्री अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । इनकी भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है । भाषा का दृष्टि स इनका एक पत्र दृष्टव्य है—

भा का महरम मिलिया, कहा रे दिल की बात ।

प्रीने प्रभुजी म्द्राती अग रे बसिया रह से न जोई रे जात । ...१

अनत जनम की रोगज मिटियो सहल मई रे समाध । ... २

अत्र-कमल पर महारस बरसे चटपटा जाये स्वाद । ३

कह सालदास त्हारे कृपा रे कीयो बात बिया हे अगाध ।^३ ... ४

प्राणनाथ (म० १६७५ से १७२१ वि०)

हिन्दी मत्रो मसार स्वामी प्राणनाथ और उनका वाग्गु म अपरिचित नहा । भाषा मसृति तथा धम क लेख म स्वामी प्राणनाथ अपन समय क मोनिक विचारक थ । धम एव मसृति क जिन आत्मी का अनुसरण युग पुण्य मन्त्रात्मा गांधी न बिया उन मभा का प्रस्थापना स्वामी प्राणनाथ प्राय २०० वर्ष पूर्व कर चुक थ । मध्ययुग की मनुचित दृष्टि मत्र था उनका सग मूल्यवान न कर सका किन्तु भविष्य की पीढ़िया उनक स्थापक प्रभाव म बच नया सका ।

१ गु प सो हस्तप्रति, ११६-पद ११ पृ० ६५ ।

२ 'असा गुरु करण प्रसाद थी,

एम कहे मेवक सालदास जो । सनोनी बाणो पृ० १ ।

३ सनोनी बाणो पृ० २१, पद २० ।

डा० बडव्याल ने अपने गोध प्रथम इनका मशहूर परिचय देकर संभवतः सब प्रथम समीक्षका का ध्यान उनकी ओर आकर्षित किया था।^१ डा० बडव्याल ने उन्हें जाति का क्षत्रिय तथा काठियावाड़ निवासी बताया है। उन्होंने इनका जन्म सन् १६७५ स्वीकार किया है।^२ साम्प्रदायिक ग्रंथों एवं गुजराती के विवेचन ग्रंथों में इनका नाम महाराज श्रीजी प्राणनाथ आदि मिलता है। निजानन्द चरितामृत के आधार पर इनका जन्म नवतनपुरी (जामनगर) में सन् १६७५ आश्विन मास की (गुजराती भाद्रपद) कृष्णा चतुदशी रविवार के दिन हुआ था।^३ उनकी माता का नाम धनबाई तथा पिता का नाम केगव ठाकुर था।^४ उनके पिता केगवरायजी जामनगर के प्रतिष्ठित त्रिवान थे। उनके पाँच पुत्रों में प्राणनाथ चतुर्थ थे। बारह वर्ष की अवस्था में अर्थात् सन् १६८७ में आसपाम स्वामी श्री देवचन्द्रजी ने उन्हें तारतम्य की दीक्षा दी।

डा० बडव्याल ने प्राणनाथ का विवाहित मानते हुए यह कहा है कि उनकी पत्नी भी कविता करती थी पद्मावती इस दर्पण की संयुक्त रचना है।^५ डा० साहब ने प्राणनाथ की पत्नी का नाम नहा लिया है किन्तु बाद के अधिकांश संगोष्ठीने इस आधार को लक्ष्य रखते हुए कि प्राणनाथ इन्द्रावती की संयुक्त एवं विभिन्न रचनाएँ मिलती हैं इन्द्रावती का ही उनकी पत्नी मानने का भ्रम पदा कर दिया है। डा० सावित्री मिहान ने तो निःसंकोच भाव से इस मत की पुष्टि करते हुए कहा है कि इन्द्रावती श्री प्राणनाथजी की परिणीता थी जिहान अपने पति के स्वर में स्वर मिलाकर उन्हें अपने मत के प्रचार में पूरा महयाग किया।^६ गुजराती में इन्द्रावती नाम से रचित विरह बारमासी * ऋतु वरुण ^७ तथा

१ हि का नि स पृ० १३३-३४।

२ वही पृ० १३३।

३ निजानन्द चरितामृत पृ० २६६।

४ 'कृष्णावपु केगव सदन घरयो महानर वेग।

—सजभूषणकृत वृत्तांत मुक्तावली पृ० ३२।

५ हि का नि स पृ० १३३।

६ मध्यकालीन हिन्दी कवयित्रियों, पृ० ८३।

७ प्रा का सुधा भाग ३, पृ० २४१।

८ वही भाग ३।

पटत्रतु वणन',^१ आदि विभिन्न रचनाएँ मिलती हैं जिनमें 'मारा हा प्राणनाथ' 'अर्द्धांगना तमारी प्राणनाथ' जैसे प्रयोगों का देखने हुए यह प्राणनाथ की पत्नी मान बठन का भ्रम अवश्य होता है, किन्तु उही ग्रंथों में 'प्राणनाथ का प्रयोग प्राणनाथ (प्राणा का स्वामी) के अर्थ में भी हुआ है।^२ इस प्रयोग में यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राणनाथ का प्रयोग व्यक्ति विषय के अर्थ में न होकर पत्नी तत्पुरुष के रूप में ही प्रयुक्त हुआ है। अन यह मान बठना भ्रमपूर्ण है कि इन्द्रावती प्राणनाथ की पत्नी थी। इस भ्रम को भवप्रथम दूर करने का प्रयत्न काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका (संवत् २००८) में किया गया है।^३ माम्प्रदायिक ग्रंथों के आधार पर प्राणनाथजी की दो पत्नियाँ थी—पूतवाई और तजबुवरि। इन्द्रावती तथा महामति के नाम से जो रचनाएँ मिलती हैं वे प्राणनाथ की ही हैं इस प्रकार की स्पष्टता डा० गावधन गमा ने भी अपने नव विषय में की है। उनका मानना है कि प्राणनाथ का प्रारम्भिक रचनाएँ निज के नाम से मध्यकालीन रचनाएँ इन्द्रावती के नाम में और उत्तर-कालीन रचनाएँ महामति के नाम से लिखी गयी हैं। अतः धामी सम्प्रदाय में इन्द्रावती और महामति को जो छाप मिलता है वह स्वयं प्राणनाथ ही है और बार्क नहीं। यह बात धामी-सम्प्रदाय की पृष्ठभूमि का अध्ययन करने पर स्वतः स्पष्ट हो जाता है। तत्सम्बन्धित ग्रंथों के आधार पर स्वल्प-ज्ञान की सच्चाई का मार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

१	आहृणजी	श्री राजजी
२	श्री देवज्ञ	श्यामारूप श्री यामजी
३	श्री प्राणनाथ	इन्द्रावती की यामना तथा माशान् सारतम्बस्वरूप थाजी।
४	श्री मुकुन्दनाथ	ब्रह्मधाम की गतिस्वरूप श्री नवरगवाईजा। ^४

१ प्रा का सुपा भाग ४, पृ० २५७।

२ वही भाग ४, पृ० २८३।

३ प्राधान हस्त लिखित ग्रंथों की शोध—नागरी प्रचारिणी पत्रिका

—संवत् २००८ अथ ५६, पृ० २१।

४ 'मुम्बर सागर (धूमिका) पृ० २५-२६।

साम्प्रदायिक प्रथा में वह माधना की विभिन्न अवस्थाएँ बनायी गयी हैं। इस दृष्टि में इन्द्रावती ग्रह का वासना ही है— श्री पूगग्रह का जिन आवेग स्वरूप तारतम्य का नेवर गुप्तरूप में था अथवा स्वस्वरूप दबचका का धामदिन में विराजमान थी उस आवेग स्वरूप का नेवर था इन्द्रावती का वासना श्रीजी के स्वरूप में प्रकट हुई।^१ हम सत्य में श्री वृजभूषणजी का एक पद दृष्टव्य है—

धर्य सबी इन्द्रावती तारतम्य पति सग ।

त उतरी घब त तहा बटे मुदर अग ॥

श्री इन्द्रावति वासना मिलयो निज आवेग ।

करुणावपु केगव सदन धरयो महानर वेग ॥^२

कन्या में इन्द्रावती को ही तारतम्य का साक्षात् अवतार माना गया है—

इन्द्रावती पिया सगे उदर फल उत्पन्न ।

एक निज बुध अवतरी दूजा नूर तारतम ॥

दोऊ स्वरूप प्रगटे लई मोनों मोने बाध ।

एक तारतम दूजा बुध, देखसी समुल्ल साध ॥^३

श्री इन्द्रावती का धामदिल में था धामधनी का सत्संग से निजबुद्धि और तारतम दोनों अवतरित हुए। ये दोनों आपस में जाबद्ध हो गये अर्थात् जशर का जाग्रत बुद्धि में तारतम को धारण किया जिसके फल में पांच स्वरूप (बुद्धि आवेग तारतम्य आना और दया) राजा का हृदय में विराजमान हुए। इन्हीं लिव्य आभारा का समाहित हो जान पर माधक का स्वरूप महामति कहलाता है। लानाप्रकाश में इन्द्रावती स्वरूप प्राणनाथजी को तारतम्य का साक्षात् अवतार कहा गया है।^४ निजानन्द चरितामृत में हम प्रकार का एक उदाहरण मिलता है कि वराह्य उपनिषद् हान पर प्राणनाथजी स्वामी दमक का चरणा में जाकर कहते हैं— हे मद्गुरु! मेरे शरीर में कौन-कौन से अवगुण हैं। कृपा करके आप मुझे बताइये। कारण यह है

१ 'निजानन्द चरितामृत पृ० २६६ ।

२ वृत्तांत मुक्तावली पृ० ३२ ।

३ कला पृ० २३ ।

४ तो तारतम सारथ श्री इन्द्रावती कही ये स्वरूप पंचमिलि महामति भई ।
ये पंच स्वरूप को निरनय भयो सो श्रीजीके कला में कही ॥

कि मुझे सुन क अवगुण निवाइ नहा दन । इम पर थी निजान न मद्गुण
न बहा—ह महराजजा ^१ तुम तो थी द्वावनी का वासना हा और निमन
आत्मा हा । तुम्हारे अन्तर कोई विकार नहा । उमका चिन्ता मत बना । ^१

बना क चान की रचनाआ म प्राणनाथजा न महामति नाम लिया
है । अत हम यत् मान जन म मकाव नहा जाना चाणिकि द्वावनी जीव
महामति अन्य कोई नहा स्वय प्राणनाथ हा य । उनक अनुयायी भी
पूनुवाई तथा तजकरि का हा प्राणनाथजा की दो पत्नियां स्वाकार बरन
ह । उनका पत्ना बबिता बरती थी या नहीं यह विवादास्पद ही है ।

स्वामी प्राणनाथ अपायु म हा विरक्त हाकर घर स निवन पडे थ ।
एग भ्रमण तथा समय म द्वावनी फारमा मस्तत तथा हिन्दा का पान
महज ही प्राप्त हा गया था । वन् कुरान द्वावत तथा तोरन आनि अनक
पम प्रया का अध्ययन कर द्वावनी जिन पान एक धम का उपरग लिया
उमन तद् युगान विभिन्न मन्त्रतिया क जमानवीय सधर्षों का मिटाकर
ममन्वयवा की वल्लरी का भाचा जिनका मधुर पत्र हम आग चनकर
पियामाफिकल सामायटा रामदृग मिनन और अट्मनिया जस मन्त्राया
क रूप म लिन पत्ना है । कदार एक नानक आनि का दृष्टि ता बवन लिदू
ओर मुमनमाना क धार्मिक मतभटा का हा भन् सबी था पन्नु स्वामी
प्राणनाथ का दृष्टि मस्तत धर्मों (इसाद यदृणी पारमा आनि) क वा
विवादा का मिटाता दूई मवधम समन्वय का आर अप्रमत् हा मका था । य
अपन समय क सबसे बडे ममन्वयवा नता थ । मकर १७३५ म द्वावनी
हरिद्वार क कभ भन म अपन धार्मिक मिटाता क प्रतिपादन क निष्ठ जिम
मवधम परिणत का आयाजन किया उमम द्वाव पूण मफलता मिला ।
स्वामाजी का ममन्वयामक भावना हा उमका पापक थी । कहान ट्ठा
मन्त्रन अच्याम, नाग तनिया आनि अनक द्वीपों का यावाण का तथा उमा
अपष्ट भावना का प्रचार एक प्रचार किया ।

सवन् १७२० म प्राणनाथजा मुरत गया । वही पर प्रणामा गहा
की स्थापना कर इहान पकाग गाहा का आगण किया । मन् पर द्वावनी
बना नामक गुजरात ग्रन्थ का भा रचना का त्रिमका पुणादृति
मवन् १७२१ म ह । स्वामाजा का मवधम हिन्दा ग्रन्थ मनघ बनाया
जाता है जा कुरान पाराफ क मानव प्रेम एक त्या क पापक तादा पर

आधारित है। सनघ का रचनाकाल सवत् १७२५ माना जाता है। गुजरात हरिद्वार एव दिल्ली का भ्रमण करन हुए स्वामीजी सवत् १७५५ म पत्रा (बुदनखड) म पधारे। उहान अपना उत्तरकावीन रचनाए (धुनामा खिलवत परिक्रमा सागर शृङ्गार मिधा मारफत सागर कयामतनामा आदि) यहा पर लिखी। राजा छत्रमान इनके परम गिष्या म मथ। एसा कहा जाता है कि इह स्वामा प्राणनाथ न पत्रा क निकट किमी हार की सान का पता बनावया था। इम सम्बन्ध म डा० बन्धुवाल का कथन है कि— मैं ता समभता हू कि वह खान भगवद्भक्ति था।^१ छत्रमान का प्राणनाथ द्वारा लिखा गया आशीर्वात् का एक पद भी प्रसिद्ध है—

छत्ता तेरे राज मे घक घक घरती होय ।

जित जित घोडा मुख करे तित तित फरो होय ॥

रचनाएँ—

महाराजा छत्रमाल ने प्रणामा सम्प्रदाय के धार्मिक इतिवृत्त का जानन क लिए प्राणनाथजी क सुयाग्य गिष्य दानदामजा स बातक प्रथ निववाया। इमके साथ ही स्वामीजी की सपुण वाणी जा अब तक प्रवाण रूप म था छत्रमाल की प्रेरणा स हा स्वामाजी क जय गिष्य श्री कणव दामजा द्वारा सवत् १७२१ आश्विन कृष्णा चतुदशा का श्रामतागतम्य सागर क रूप म सकलित हुई जिमम स्वामीजी क निम्नलिखित श्रया का सञ्जन किया गया है।

१	रास	१०	खिलवत
२	प्रकाश	११	परिक्रमा
३	पडश्रुतु	१२	सागर
४	कतश (गुजराती)	१३	शृङ्गार
५	प्रज्ञा	१४	सिन्धी
६	कतश (हिंदी)	१५	मारफत सागर
७	सनघ	१६	कयामतनामा
८	कीतन	१७	कयामतनामा (बडा)
९	धुलासा		

मम प्रथम चार श्रय गुजराती भाषा म रचित हैं तथा गप सभा टिप्पण म लिख गय हैं। प्राणनाथ का समस्त साहित्य दा भाषा म विभक्त

है—(१) 'गणवाणी—यथा कुरान के अवात्र सवान गण मीगजा वा सवाद तोमग क्यामतनामा कुरान की पत्रिकाएँ जामिलमार्फत छत्रमाल प्रबोध आदि। (२) वहागवाणी—यथा श्रीमुखवाणी का समस्त रचनाएँ। जखिन प्रणामी समाज श्रामुलवाणी की पूजा करता है और प्रणामी पद्य तथा घम की अदृष्ट सम्पत्ति के रूप में इसकी रक्षा भी। यही कुनजम स्वरूप' अथवा कुनजम रागाफ व नाम से भी प्रसिद्ध है। डा० बडध्वान न इस कलजम शरीफ ही बना है जिनका अर्थ है मुक्ति की पवित्र धारा।^१ श्री मिथानान गाल्सी ने कुनजम स्वरूप का अर्थ इस प्रकार किया है— सम्पूर्ण प्रथा का जमा करन से जा स्वरूप हुआ उम कुनजमस्वरूप कहा गया है।^२ इस पद्य के अनुयायी स्वामी प्राणनाथ का समस्त वाणी का श्रीमुखवाणी के नाम से भी अभिहित कर्म है। सूरत के तुनजाराम भट्ट इन तारतम्य सागर नामक एक अथ ग्रंथ कल्यावती का ध्यान में लिखा गया मिनता है जिनमें परम पुष्टि लावा का संपादन है।^३ तुनजाराम भट्ट बन्नुन प्रणामी पद्य के ही अनुयायी थे जिनका निरवधिहार का नाम कल्यावती था।

स्वामीजी ने अपनी वाणी के विषय में स्पष्टता करन जग किया है कि यह सम्पूर्ण जगत चौंढ लोक्पमन्त माया के फल में पया हुआ है जिनमें प्राणां छल के बंधनों में बंधा है किन्तु उस माया के रूप की जब तक प्रतीति नहीं जाती तभी तक बद्ध आँखा वाला हरकर भी बंधा ही है। एग मायाय प्राणी को तारतम्य ज्ञान आत्मदर्शि प्रदान कर सकता है।^४ तारतम्य ज्ञान का उन्होंने अत्यन्त गम्भीर एवं गहन कहा है। यदि वह कम प्रकृत न कर ता आत्म जिज्ञासु जावन माया के अधिकार में फस छूट भवग ^५ तुनमीगान की तरफ प्राणनाथ ने भी अपनी वाणी का बन्नाम्य भग्मत तथा परम गाय आध्यात्मिक वाणी बना है। हममें जहाँ एक सा

१ हि का नि स, पृ० १३३।

२ साहित्य सन्देश पृ० ६२ अगस्त १९५८।

३ एह सीता भरजादे कहाई

तुनजाराम पुष्टि सीता माहीं।'

—हस्तप्रति भरोश (जिज्ञा सेश), पृ० १६० तथा १६६।

४ रास, पृ० १-४३।

५ रास पृ० १-४५।

मानव-कल्याणकारी मन्त्र निगमागम व मिट्टा-ता वा प्रतिपात्न है वन्त
 दूमरी ओर इस्नाम धम समर्थित करान वा एकता दया और जन कल्याण
 वा उद्घोष है ।^१ सनघ म उहान कुरान की 'याव्या भारतीय दान व
 जावार पर की है । प्राणनाथजी सन्ध अर्थो म मानवता के मच्चे उपायव
 थ । अत मानवमात्र की ममभी और वाता जाने वाती व्यापक एव मरन
 भाषा हिन्दुस्तानी को उन्नि अपनाया क्योंकि उनकी दृष्टि म यही एक मान
 ममथ भाषा थी जो मानव मात्र के हृदय का अन्तर और वाहर म निमन
 बना मवती है ।^२

महामति तथा इन्द्रावती की छाप नकर लिखे गय प्राणनाथ क
 एकाधिक हिन्दी पत्र दृष्ट्य है—

महामती—

छोज थक सब खेल खसम री
 मनही मे मन है उरझाना होत न काहू गम री ।
 मन ही बांधि मन ही छोले मन तम मनहि उजास री ।
 ये खेल है सकल मन का नेहचल मनहि को नास री ॥
 × × ×
 सब मन मे न कछु मन मे खाली मन मनही म बह्य
 महामति मन को सोई देखे, जिन दृष्टे खुद खसम ॥^३

इन्द्रावती—

तुम बिना लाड पूरन कौन करे
 इन माया मे दूजी बेर देह कौन धरे ।
 तुम मौसो गुन किय अनेक सो चुभे मेरे हृदय मे लेख ।
 तुम पर वार डारु जीव सों देह तुम किये मोसु अधिक सनेह ।
 × × ×
 श्री इन्द्रावती चरणो लागे कपा करो तो जागी जागे ।^४

धामी मतावलम्बी प्राणनाथजी का वाणी वा क्याकि जाति ग्रन्थ

- १ हकीकत फुरमान की कहूँ सुनो सब मिस ।
 मूर अकल भागे त्याय क साफ कहूँ तुम दिल ॥ सनघ-पृ १-११ ।
- २ बिना हिताब बोलिया भिन सकस जटान ।
 मयको मुगम जानक कहूँगी हिन्दुस्तान ॥ सनघ-पृ १-१५ ।
 'सतवाणी अक (कहाण) घष २६, सघत २०११ पृ० ३७७ ।
- ४ प्रकाश प्रकरण — १८ ।

मानते हैं अतः उनकी कृति में इस मुद्रित धरना आदि वागी का अपमान है। यही कारण है कि प्रणामा मन्त्रों में मुरखित हस्त प्रतिमा का प्रकाशन अभी तक नहीं हुआ मका।

गुजरात के प्रणामा मन्त्रों में श्रीमुखवाणी का हस्त प्रतिमा उपलब्ध हानी है। भगवाण के महान स्वामी कृष्णप्रिमाचाप न अनक पागानर भन्ना का ज्ञान हुए इसका प्रामाणिक प्रतिनिधि तयार का है जिसमें कुन १६००६ चौपाइयाँ हैं। तामनगर का हस्तप्रति में ५०० चौपाइयाँ मम अधिक हैं। आड (जि० खन्ना) के प्रणामा मन्त्रों में श्रीमुखवाणी का दा हस्तप्रिमा मुरखित है। एक है वावा भिगारोणाम के निप्य ज्ञानाणाम के द्वारा निधी हुई प्रतिनिधि जा मूरन के माण मन्त्र में ज्ञाना गया है। इसका रचनाकाल मवन् १६०५ है। यह हस्तप्रति आड मन्त्र (जि० खन्ना) के मन्त्र श्री मवाणामजा के पाम मुरखित है। दूसरी है अजराम का निधी हुई प्रतिनिधि जा आड में हा विद्वन्नाम ज्ञानाणामजा के मन्त्र में मुरखित है। यह प्रतिनिधि निवाणाम प्रणामी मन्त्राज न का है। प्रथम पृष्ठ की प्रथम पक्ति इस प्रकार है—

'श्री निजनाम आकसनजी ॥ अनाद अक्षरतीत। सो तो अवनी हेरतीये। सब बीघी जनन सहोत ॥ ॥ श्री कित्तव अजीरदाम निधी है।

प्रस्तुत हस्तप्रति पचाम वप में अधिक प्राचान प्रदान नहा हाना। उन हस्तप्रति में एक पं उद्धृत करना ममावीन हागा—

साधो भाई बीनो सब कोई बीनो

एसो उत्तम आकार सोसो बीनो। जिन प्रकट प्रकाम जो बीनो ॥१॥

मनु सदेह अखण्ड फल पाइये। सो क्यों पाइये के वृथा गुमाइये ॥

गो सो अधस्त्रीन को अवसर। गो मभावत मांज नीर ॥२॥

सबदा बहे प्रकट प्रथोन। सबदा सतगुरु मुख कराय पहवान ॥

सतगुरु सोइये जा असख सखाये। अतख सखाय बिन आग न जाव ॥ ॥१

साहित्यिक दृष्टि में प्राणनाथ की रचनाएँ स्तराव नये का जा मकतो मद्यपि कवी-कवी भाषा साहित्य एव काव्यत्व के ज्ञान अवतरण है। उपाटण्णाप—

१ 'रस मगन भई मो क्या गावे। टेका

बिघसो बुध मनचित मनुआ, ताप राख सोधा मुग क्यों आवे ॥

१ कुनजम स्वकर' (हस्तप्रति भोड) पृ० २१६।

बिचल गई गम वार पार की । ओर अङ्ग न कटुए साव ॥

पियारस मे यों भई महामती । प्रम मगन क्यों करसौ गाव ॥

२ बिन्द म सिंधु नमाय र । साधो बिन्द म सिंधु समाय ।

त्रिगुण सहप षो जत भये विसमय । पर अलख न जाय सखाय ॥

कायत्व की दृष्टि से किरतन उनकी अपूर्व रचना है । उनकी रचनाओं में गान्त और शृङ्गार रस की प्रधानता है अथ रमा का प्रनाति गौण रूप में हाता है । विचारों की मुघरता के साथ भाषा ऊँचे घाट की नहा वन पड़ी है । छंदा में सधन जव्यवस्था है । छंदा के विषय में प्राणनाथ ने स्वयं कहा है कि अश्वर और मात्राओं का उधु और शपता का ध्यान रखना तो केवल कविया का ग्विनवाड है त्स में अच्छी तरह जानता हू किंतु यह भरी इम परम आध्यात्मिक वाणा में गोभा नहा गेता । सगीत रनक पटा का प्राण है । इनकी भाषा में अरबी और फारसा क गंदा का पुट है जिसमें हिन्दी गुजराती का अपूर्व मिश्रण है । प्राणनाथ का भाषा वस्तुतः मध्यकाल की वह हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी है जिसे आधुनिक खडी बोली का आदि रूप कहा जा सकता है ।

प्रणामी साहित्य का गाय खोज के पूव प्राय ऐसा माना जाता रहा कि खडी बोला में गद्य लेखन का प्रारम्भ आगरा के गुजराती भाषाभाषी प लखनानजा के प्रेमसागर (मन् १७६४-१८२६) से हुआ किंतु अब यह तथ्य प्रकाश में आ चुका है कि प्रेमसागर की रचना के प्राय १५० वर्ष पूव स्वामी प्राणनाथ ने हिन्दी गद्य का प्रयोग कर अपनी भाषा का सब प्रथम हिन्दुस्तानी के नाम से अभिहित किया था । त्स प्रकार मिथ गुजरात महाराष्ट्र मानवा एव काठियावाड आदि विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण करते हुए स्वामी प्राणनाथ ने जहाँ एक ओर मवषम ममवय की भावना को जगाया वहाँ दूसरी ओर उनका ओजमयी प्रभावपूर्ण वाणा ने हिन्दी भाषा के प्रचार एव प्रसार में भा महत् योग दिया त्समें सन्देह नहा ।

प्राणनाथ के शिष्य—

इनके शिष्या की सबसे बड़ा दन है वातक जिनमें स्वामी प्राणनाथ का जावन चरित्र अद्भुत गला में लिखा गया है । शीनवरग स्वामाहृत वातक नानासहित वातक तथा आ व्रजभूषण वृत वृत्तान्त मुक्तावली रग रूप में

उत्तमनीय ग्रन्थ हैं। वस्तुतः इस प्रकार की वितक गता न हिंसा-साहित्य का एक नवान गला प्रदान की।

मुकुन्ददास—

स्वामी प्राणनाथ के पश्चात् धामी सम्प्रदाय के अतगत स्वामी मुकुन्ददास का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने नवरंग नाम से अपनी रचनाएँ लिखी हैं। साम्प्रदायिकता का मत है कि नवरंग इनका उपनाम नहीं था अपितु ब्रह्मधाम का गति श्री नवरंगबाई जी स्वामी मुकुन्ददासजी के नाम से इस मंगार में अवतरित हुई। अतः नवरंग गुरु का सम्बन्ध ब्रह्मधाम (परमधाम) में जाना जाता है। इनके जन्म हुए करीब १६७ ग्रन्थ बताये जाते जाते हैं। इनका सबसे प्रसिद्ध एवं विद्वान ग्रन्थ है—नवरंग सागर जिसमें २६० चौपाइयाँ हैं। अथ उल्लेखनीय ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

१ मिहिराज चरित	४ सोती प्रकाश
२ मुन्दर सागर	५ गोता रत्न
३ परमात्म	६ गुरु गिण्य-संवाद

७ कुन्दल पद

इनका भाषा श्रेय गुजराती बुद्धवत्सला एवं सड़ी बोली में निहित है। मुन्दर सागर में इन्होंने स्वामी देवचन्द्रजी का जीवन चरित्र लिखा है।

मुकुन्द स्वामी मूर्ख निवास थे। इनका जन्म मवन् १७०४ माना जाता है। उनके पिता का नाम राधवजीभाइ तथा माता का नाम कवरबाइ था। इनकी पत्नी का नाम मुगाबाई था। इनका जन्म के विषय में मतभेद है। कुछ इसे शकाब्द मानते हैं कुछ भावमार और कुछ अम्बान वर्ष। अधिकांश इसे भावमार ही मानते हैं। २५ वर्ष की आयु में स्वामी प्राणनाथ से तारतम्य दास्य ग्रहण की। अपनी प्रबल निष्ठा एवं भक्ति के बल पर कुछ ही समय में वे स्वामीजी के शिष्य हो गये और पन्ना में उत्तम साधु दास बनकर रहे। प्राणनाथजी के धाम गमन के पश्चात् वे उदयपुर चले गये और गणेशधाम में प्रणामा धर्म का प्रचार करने लगे। उदयपुर का प्रणामी मठ भी इन्हीं का बनवाया गया है। मुकुन्द स्वामी का धाम-वाग मवन् १७३४ माघ वद्य दसम का हुआ। उदयपुर में अथ नी दरारा समाधि मौजूद है।

१ मुन्दर सागर (धूमिका) पृ० १२।

मोहम्मद अमीन (उप ज्ञान सं० १६६०)

य औरमजद क रायवान म वतमान थ । इनका समय हिजरी ११०६ अर्थात् सवत् १६६० क आम-पाम माना जाता है । एम युग क अंतिम मसनवाकारा म माहम्मद अमान का नाम मवश्रथ है । युसुफ जुनखा इनकी महत्वपूर्ण रचना है । भाषा और शैली की दृष्टि म यह निश्चय हा गुजरात का श्रष्ट ममनविया म म एक है । प्रस्तुत ममनवा का कुछ पतियाँ यहा दृष्टव्य है—

‘भौरा लेते फूल रस रसिया लेते बास
मानी सोँचे आसकर भौरा खडा उदास ।’

× × ×
तेरे पथ कोई चल न सके जो चले सो चल चल थक ।
पड़ पडत पोथी घोया, सब जान सुध बुध खोया ।
सब जोगी जोग बिसारे सब तपिंग तप पुकारे ।
एक दुरस्ती दरस भुले सिर नागे पाव फुले ॥

यूसुफ जुनखा भारतीय और भारत क बाहर क अनेक मुस्लिम कविया क काव्य का विषय रहा है । भारत म मव प्रथम खुसा दहनवा न अपना काव्य युसुफ जुनखा लिखा । संभवत मुहम्मद अमान न उमा क आधार पर अपन काव्य की रचना का । रचना समाप्ति का तिथि अत माध्य क जाघार पर १७ नवम्बर सन् १६६७ बठता है । अमीन न अपन ग्रंथ का भाषा गाधरी अथवा गूजरी लिखी है—

सुनो मतसब रही जब यों अमीन
लिखे गूजरि मने युसुफ-जुनीखा ।^१

वस्तुत गूजरी का परम्परा म अमीन का युसुफ जुनखा का अपूर्व स्थान है ।

बला (मृत्यु-सं० १७६४ वि०)

गूजरी अथवा दक्खिनी की परम्परा म बला एक महत्वपूर्ण कथा है । बला का महत्व इसलिए भी है कि उन्होंने दक्खिनी का स्वाभाविक धारा का उद्गू का मुमस्ठन जवान म विनात कर लिया । एहा का ज्यानि स उत्तरा भारत म उद्गू क दीप जन और दक्खिनी के अनगिन कवि पतिया का तरह उनका ज्यानि म अपना मुधबुध स्वीकर लिखन म चन गय । इसाणि बला का दक्खिनी और उद्गू क वाच की कड़ी माना जाता है ।

१ दक्खिनी हिंदी काव्य धारा—धो राहुल सांकृत्यायन पृ ३०१ ।

इनका पूरा नाम बली मुहम्मद था। कुछ साग इन्हें औरगावादी कहते हैं जोर कुछ अहमदावादी। धर्म और काव्य की तरफ लेकर ये सूरत औरगावादी और दिल्ली आदि स्थानों का भ्रमण करते रहे तथा जीवन में कविता का भी व्यापक अर्जित की। स. १७६४ वि० में अहमदाबाद में इनका मृत्यु हुई।

बली ने अपनी बली काव्य के प्रायः सभी प्रमुख स्वरूपों पर चलाइ है जिनमें रस्ता गजल बसादे ममनवी क्वाई तरजी और बंद आदि विंगण उत्तमनीय हैं। बली की कविता में बली का स्थान सर्वोपरि है। उत्तर में प्रसिद्ध फारसी कविता में भी बली का जाकपक एक प्रभावपूर्ण बली का अनुकरण किया था यहाँ उनका मिद्धि का परिचयक है।

दिल्ली के हाकिम फायज पकरण आदि अन्य समकालीन फारसी कवि इनसे प्रभावित हुए और देहीभाषा में कविता करने लगे।^१ बली की समय बली का परिचय हम निम्नलिखित एक उदाहरण से कर सकते हैं—

जिसे इश्क का सीर करी सगे ।
उसे जिदगी क्यों न करी सगे ॥
न होये उसे जग में हरगिज करार ।
जिसे इश्क का बेकरारी सगे ॥
बली को कहूँ अगर एक वचन ।
रबीरों के दिल में बटारी सगे ॥^२

नाथ भवान (अनुभवानन्द)

इनका समय स. १७२७ से १८५६ तक निश्चित किया जाता है।^३ पूर्वार्ध में इनका नाम नाथभवान था किन्तु मयाम ग्रहण करने पर अनुभवानन्द का नाम में अभिहित किया गया। य गौराष्ट्र निवासी बहनगरी नाथ भवान जो जूनागढ़ की वापेधरीमाता का उपनाम था,^४ देवी के अन्य उपासक अनुभवानन्द ने गुजरात में मकड़ा गया की स्तना की है जो आज भी गुजरात में नागता (नवदुर्गा उमव) का अवसर पर गाय जाते हैं।

१ हिन्दो साहित्य त्रितीय खंड पृ० ५८४—स० डा छोरेड्ड वर्मा।

२ देविए शाक्त सम्प्रदाय की क म दे भेट्ता पृ० ११५।

३ मध्यकालीन गुजराती साहित्य आ अनतराय रावत पृ० १६२।

४ शाक्त सम्प्रदाय पृ० ११५।

इनके द्वारा रचित भवा आनन का गरबा तो अति प्रसिद्ध है।^१ इनका दृष्टि में दबी का स्वरूप स्पून नहीं था अपितु उस इन्होंने ब्रह्म की विश्व व्यापक चिन्मयी शक्ति ही माना। उपासक के रूप में य शक्ति अवश्य थे किन्तु सिद्धांततः अद्वैतवादी थे।

कतिश्व—आचार्य रावत ने इनके द्वारा रचित श्राधरागाता विष्णुपत् तथा चातुरी आदि का उल्लेख किया है।^२ चौ गु मा परिपत् की रिपात् के आधार पर इनके द्वारा निम्न लिखित ग्रन्थों का पता लगता है—

१ गिवगीता	४ चिद्शक्ति विलास
२ ब्रह्मगीता	(अमाजी की पूजा)
३ भागवतसार (कष्णलीला)	५ ब्रह्म विलास
	६ आत्म स्तवन
	७ पद ७६।

गुजरात वर्नाकुलर सामायटी अहमदाबाद तथा नडियाद का डाह्या नक्षमी लायत्ररी की हस्त प्रतिधा में इनके कुछ पत् (हिन्दी गुजराती) उपलब्ध हात है। डा सुरेण जागा न इनके कुछ गुजराती पत् की समा ता अपन अधिनिव ध में का है।^३ हम यहाँ उनके कुछ हिन्दी पदा का समाधा प्रस्तुत करेगे।

अनुभवानन्द के समस्त हिन्दी पत् अभी तक अप्रकाशित ही हैं जिनमें उच्चकौटिक के पत् की संख्या सौ से ऊपर बठनी है। इनमें से कुछ ता विष्णुपत् में संकलित हैं तथा कुछ फुलकन पत् विभिन्न हस्त प्रतिधा में उपलब्ध हात हैं। इन सभी पत् के संग्रह एव सम्पादन का बडा आवश्यकता है जिनके द्वारा निश्चय ही एक उच्चकौटिक का ज्ञानी कवि प्रकाश में आयेगा।

कवि न कचोर और अस्ता की भाँति पूण ब्रह्म की प्रस्थापना में बहा है कि वत् न स्पून है न मूढम न दीष है न लघु न बह वर्णात्म है जी

१ गरबा का प्र वपद—

भवा आनन कमल सोहामणु

तनां शु कठु वाणी धरवाण रे।

२ मध्यकालीन गुजराती साहित्य—डा अनतराय रावत।

A Critical Edition of Narahari's Jnan Gita

—Dr Suresh Joshi, M S University Baroda

न धम अधम ही । वह ता रूप गुण और कम स पर बिना बाणा व
 चानता है दगा के बिना दसता है और काना क बिना सुनता है परा क
 बिना नृत्य करता है और हाथा के बिना तान लडाता है । उमक बिना
 घ्याता घ्यय और घ्यान मभी निमू ल है । वह तो आकाश की भाँति अविचल
 और अखण्डित है । उसे परगन व निए अनुभव का आवश्यकता है ।^१
 म विराट ब्रह्म की कल्पना म कवि न उम ऊँचे घाट का वानी कहा है
 ब्रह्माण्ड जिमका मिर है जीर च^२ तथा मूय दोना जिमके मत्र हैं जिमके उ^३
 म साता सागर समाविष्ट हैं । अत जिमक मगुण रूप का इतना विस्तार है
 उमक निगुण का पार कौन पा सकता है ।^४ मभी का प्रिय और गभा
 स निराला है यह अन्त चतन जिमका न काई माना पिता है और न रूप
 रस ही ।

अनुभव और कल्पना के सम्पन्न समावेश म आनन्तित है अनुभवान^५
 का कवि हृदय जा अन्वा की ही भाँति पान घटाआ का ^६ आत्म विभार हा
 उठता है—

‘बरपत अनुभव उमायो सावन ।
 जल धल होय रह्यो सब हरिया
 सागे सेत सोहायन ॥’

अनुभव क उमडते घुमडत बा^७ला म कवि का मन मयू^८ नाच उठता
 है और अज्ञान की चानर स्वत सरष पडनी है

‘अभरु भरु सागो है ताते सरिहे अज्ञान की चादर ।
 चिहु दिस बिर ध्यापक नजरावत हरि हरि परतो पादर ॥

- १ स्थूल सूक्ष्म बीघ सगु गार्हि । श्वेतादिक रगरूप न कर्हि ॥
 कजित नाम रूप गुन कम । कर्णाश्रम नहि धर्मा धम ॥
 करत उचार सरा बिन धान । दृग बिन देखे मुने बिन जान ॥
 पग बिन भाषत कर बिन तान । वा बिन नहि द्याता द्य ध्यान ॥
 अक्षत अखण्डित यो आकाश । सूप त्यो सब करत प्रकाश ॥
 अनुभवरूप अनुभवानंद । दृष्टातासि सरा निदू^९द ॥
- २ एरो समे ब्रह्माण्ड तेरा सीस । भूषन तेरे पाँव पछोम ॥
 खद सूप डोड तेरे नेन । सारवा सोइ है तेरे बेन ॥
 तेरे उदर में सागर सात । सत पातार सी चरन बिषयात ॥
 सागुण रूप को एरो विस्तार । निगन के कौन पावे पार ॥

सदगुरु करुणा करि समभाष्यो नजर बतयो नाजर ॥

अनुभवानंद आप परपुरन जब चीहे सब हाजर ॥

आनन्तरूप आत्मा के प्रकृति हान हा माया का अद्वय अपन आप विनष्ट हाता चला जाता है । गाँठ और सत्य का आत्मा से उत्पन्न परमानन्द बानमुकुन्द ^१ को रहस्य के परदे पर खिलत हुए देखकर कवि बघाई के गीत भी गाता है—

बघाई बानत घर घर आज ॥

× × ×

जम नहिं सो जम दिवावत करत जनन के काज ॥

अनुभवानंद भजत तांहां भासत साय लिए सब साज ॥

गुजरात के ज्ञानमार्गी कविया में काव्यत्व की दृष्टि से अनुभवानन्द की वाणी अवश्य ही हमारा ध्यान आकर्षित करती है । अज्ञान का ज्ञान गरिमा कबीर का रहस्य दग्ध और सूर की मार्मिकता इस कवि में सहज ही दृष्टिगन्त है । कवि का भाषा श्रजभाषा के अधिक निकट है यद्यपि गुजराती का प्रभाव भी उसके हिंदी पदा पर पडे बिना रह नहीं सका है । नाजर-नाजर जम अरबी फारसी के गान भी स्वतन्त्र प्रयुक्त हुए हैं । गली में मवत्र प्रामाणिकता एवं सौष्ठव है ।

बूटिया—

धा के का गाला न उनका समय १८ वीं गती का पूर्वादि माना है ।^२ उनके नाम का दखत हुए यह कहा जा सकता है कि वे किसी सामान्य ब्रह्मण्डलर जाति के रहे होंगे । मत्स्य एवं गुरु-कृपा से इन्हें ब्रह्मण्डल विषयक रचनाकौशल प्राप्त हुआ होगा ।

इनके द्वारा रचित कुल १२ पद मिलते हैं जिनमें उनकी ज्ञान-गरिमा का अनुमान किया जा सकता है । हिन्दी गुजराती मिश्रित एक पद दृष्ट्य है—

जेणे गगन बोही न दूध पीछा रे ^३

सोही मतवाला बोण्या दोवाना टेक०

१ निहारयो नहमर बाल मुकुन्द ॥

गाँठ देवकी सत्य बसुदेव त प्रगट्यो परमानन्द ॥ —विष्णुपद ।

२ कवि चरित भाग १-२ पृ ५४७ ।

३ तुलनीय— गोरख तो गोपलतो

गगन गाइहुहि पीबसा । गो वा, पृ० ११३, पद २१ ।

दयान धारणा नाम निरतर

व्यापक आत्म ची या रे हो । सोही०

मुरत मुरत की रे घमण घमाकी

काम कीप्रला ने घा-घा रे हो । सोही०

× × ×

कहे वृत्तियांग कीई अदभुत जानी

आस निराग कई सल रे हो ।^१ साहा०

वृत्तिया ने वास्तव में ज्ञान गगन का ज्ञान कर रक्ष्यानुभूति का पथपात्र किया था। उन्होंने विराट ब्रह्मानुभूति की अभिव्यक्ति करने का काम की है तथा गूँ विचारा को कूट-कूट कर बाध गम्य बनाया है। अन्तिम प्रसिद्ध कविता है कि— वृत्तियांग कूट वाल्या। श्री गान्धीजी ने एक विषय में कहा है— वृत्तिया में हम हिन्दी-सम्बाग की छाप मिलता है। कुछ हिन्दी प्रयोग भी वहाँ हैं अन्तिम यह बन्तु पत्रका जा सकता है कि हम प्रकार के ज्ञान मार्गी गता का हिन्दी परम्परा दिया है।^२ वृत्तिया पूर्व मध्य-काल के अन्तिम प्रखर ज्ञानी-कवि हैं।

पूर्व मध्यकाल के कुछ अन्य मन्त कवियों में हम सूत्र मुग्धमन्त्र चिन्ती (म० १६६६) मयरा गाँ हागिम (मप्रहवा गती) नहाल (मप्रहवा गती) बाबल चमार (मप्रहवा गती का मध्यभाग) मुकुटगुणती (म० १७८) सत मयूरगम (१७ वीं शता उत्तरार्ध) माभागम और श्वा तुनजा (म० १७ वीं शता उत्तरार्ध) धोन तथा रणछाण आदि का नाम विनायक में दे सकते हैं। गुजरात के अग्र मयनवीकारों में सूत्र मुग्धमन्त्र चिन्ता का नाम दिया जाता है जिन्होंने सूत्र तरंग नामक मयनवा का रचना का है। बाबल चमार उत्तर गुजरात के निवासी थे आ गान उतागन का व्यापार किया करते थे किन्तु मूरत के मापकगम के मयूरगम में एक बगम्य प्राप्त हुआ। मुकुट द्वारका के गुणती ब्राह्मण थे जिन्होंने हिन्दी में भक्तमाल नामक अपूर्व एवं बृहत् ग्रन्थ की रचना का थी। आ गाना में १३ गय इस विभाग में ५ भाग—'बगम चिन्त् और गाना चिन्त् उपलब्ध हैं। एसा प्रसिद्ध है कि ज्ञानवा का आ इतना आत्पण कावान मयागो द्वारा हुआ था। मय मयूरगम सूत्र

१ मय सा रे लख १ पृ० १८२-८३ से उद्धृत।

२ मय सा रे लख—१, पृ० १८३।

सुग्हनपुर के निवासी थे। बचपन में ही सत समागम में उनके हृदय में बराम्य जागा और धूमने धामने गुजरात चले आये। इन्होंने अनक हिन्दी पद्यों की रचना की है। सत माभाराम और देवा तुलजा की एक रमप्रघटना प्रसिद्ध है कि माभाराम रचित एक पद्य^१ तुलजा नामक किसी घोड़ी कन्या का कपड़ा धोने धोने हाथ लगा जिसे पद्य ही तुलजा न उत्तर में अर्थ दोहा लिखा और धुल कपड़े की जेब में पूववत् प्रथम दोहा के साथ सलमन कर लिया। तुलजा रचित दाहा^२ पद्यकर माभाराम को अत्यंत आश्चर्य हुआ और उसकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्होंने तुलजा का गिफ्टा बनाया तथा काव्य रचना की प्रेरणा भी दी। माभाराम तथा तृतीया तुलजा रचित अनक समुक्त पद्य भी देखे जाते हैं। रणछाड तथा योन के कुछ हिन्दी पद्यों का संग्रह भजनसागर भाग १-२ में मिलता है।^३

चारणों के सत में ईसरदाम (सं० १५६५) का हम नहीं भुला सकन। यह ईसरा परमेसरा के नाम से अभिहित किया जाता है। जामनगर में इन्होंने चानीस वर्ष तक निवास किया था। इनके द्वारा रचित एक दजन ग्रंथों में प्रायः दस ग्रंथ आध्यात्मिक भावना से ओत प्रोत हैं जिनमें हरिभक्त मन्वप्रिय एवं अद्वितीय रचना है। यह ११६ कवीवद्ध स्मृति का पद्य है जो चारिणीगली के छंदों में योजित है। डा मनारिया ने इनकी भाषा को द्विगत कहा है।^४

उत्तर मध्यकाल (सं० १७५० से सं० १६००)

भाण साहित्य (सं० १७५४-१८११)

गुजरात में भाणों नाम के प्रायः अनक सत हुए हैं। एक है कच्छ माडवा के रहने वाले गिरनारा ब्राह्मण भाणजी माननजी (सं० १६२२) जिनके पाँच हिन्दी पद्यों का संग्रह अध्यात्म भजनमाला भाग २ में मिलता

१ कनक कटारी कामिनी करे कसेजा दाग,

मोभा परसन सन करे अध भमागी जाग । — मोभाराम ।

२ नारी से जग करने दानव मानव दंड

नारी न होते जगत में जन्म किसके घर सेव । — तुलजा

३ दक्षिण—स साय का, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित भजनसागर

—पृ० ६४५ ।

४ 'राजस्थानी भाषा और साहित्य' पृ० ११५ ।

३।^१ दूमर भाग्यनाम का उक्तय गुजरात क आद्य गद्यकार क रूप म श्री क का नाम्नी ने किया है।^२ उहान उनके पिता का नाम भाम तथा माई का नाम दामोदर बताया है। आचाय अनतराय रावन न उनके गुरु का नाम कृष्णपुरी बताया है।^३ इहाने भी अस्तामनक की रचना का थी। इनके द्वारा रचा हुआ ७१ गद्या की एक हस्तप्रति मिली है। आचाय रावन न उनके द्वारा रचित 'अजगर अवधूत मवा' का भी उल्लेख किया है।^४ एक अन्य कवि भाग (स० १७८६) गुजरात क औदाच्य ब्राह्मण (निवाम पाचगेण्णानियर) हा गय हैं जिहान मकर माचन हिती श्रय की रचना का है।^५ यह श्रय बड़ा ही उत्कृष्ट है।

किन्तु इन मनी म वागणी क भाग साह्य अत्यंत प्रसिद्ध हैं जो कबीर क अवतार एक सारठा आद्यमत्त मान जात हैं। प्रसन्न आपक क अनगत हम उही कवि भाग सम्प्रदाय के सम्पादक भाग साह्य का उक्तय करंगे जिनकी प्राणी का अत्यधिक प्रचार मौराष्ट्र म हुआ था। उनक साहित्य पर माण्टी सम्भारा का गहरा छाप है। योग्य क जन मानम म आज ना भाग साह्य का स्थान माण्ट ना कधार क रूप म अवस्थित है।

इनका जन्म (मवर १७५६) गुजरात क बनरीना (चगनर प्रन्ग) नामक गाँव म हुआ था।^६ य जानि क लानागा थ। उनके पिता ठक्कर कयागजा स्वय भनामा थ और माता श्रवाश माध्या शृंगिा था। य अन्य गृहस्थ थ। उनके पत्नी का नाम भानबा थ। जिनम दो पुत्रा का हाना बताया जाता है। एक की मृत्यु पाँच बर की अवस्था म हा गयी दूसरा पुत्र मामनाम था जा भाग्य साह्य क हा अनुसंग जाना तथा अरभन किया। गप (कच्छ) का गाना परम्परा मामनाम म हा गुरू हाता है।

भाग साह्य क युग क सम्बन्ध म बार् प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नग हाता यद्यपि जनश्रुति क आधार पर इनका गुरु काइ अचि-छट्टा

१ 'आध्यात्म भजनमाता भाग २ पृ० १७३-७४।

२ 'कविचरित भाग १-२ धी के का नाम्नी।

३ गुजराती साहित्य पृ० १३८।

४ वही पृ० १३८।

५ कावत गुजराती सामा महोत्सव छन्द पृ० २०।

६ इ म क इनेराय काराणी पृ १४६।

भरवाड़ (गोपाल) बनाया जाता है जिनका उपनाम पाकर ये गृन्थ्य हाकर भी विरामी एवं मत्स्य नाथक बन बढे। नन्तराम अथवा नाथाभाट^१ (कवीरपथा) को भाण साहब का गुरुभार्य बनाया गया है।^२ ये पूजाश्रम में चाणस्मा के नाथा ग्वाराथ और दुधरेज कवार मन्दिर के महन्त भी। पद्मदामजा के उपदेशों से उनके लिख्य बन।^३ उनके द्वारा रचित कुछ हिंदी रचनाएँ भी मिलती हैं।^४ पद्मदाम मभवत आँवो छटना हा है जिन्हें भाण का गुरु कहा गया है।

भाण साहब किसी एक स्थान पर निवृत्त नही रहे। वे अपन भ्रमण में चालास लिख्यो का एक विज्ञान फौज का भी अपन साथ रखन जिसमें माग में उन्हें अनक विकट परिस्थितियों का सामना करना पडना। इनका हृदय जितना उन्तर था उतन ही उन्तर उनके मिद्धांत थे। इसीलिए जामनगर में उन्हें सायब का पद मिला। जामनगर की एक वापिका भाण धीरजी नाम से विख्यात है। एसा प्रसिद्ध है कि भाण साहब के प्रताप से उनका जल मीठा रहना है। भाण साहब के निर्वाण के विषय में अनक दंत कथाएँ प्रचलित है। कहा जाता है कि कमाजडा से प्रस्थान करते समय एक मद्दालु नारी के हठाग्रहपूर्वक यह कहन पर कि—आग बढे ता आपका रामट्टाई है।—उत्तान उमी स्थान पर जीवित समाधि ले ली। वहन है यह घटना म० १८११ में घटित हुई।

भाण साहब के लिख्यो की संख्या बहुत अधिक था किन्तु उनमें सबसे प्रिय लिख्य थे रविमाहव जो विरक्त हान में पहन उलगा के यात्र लाऊ घून एवं हरिविमुख यापारी रवजी थे जिन्हें भाण साहब ने अपन मत्पुत्रों में टापी पहनाई। यही रवजी आगे चलकर रविसाहब अथवा रविदास के नाम से गुजरात के पूरव हुए सत्ता में प्रसिद्ध हुए जिनका विनायक आगामी पृष्ठों में का गया है।

भाण साहब द्वारा रचित दो ग्रन्थो (१) दृष्टामन्त्र (२) रावण

१ चौंसा परि ग्पोट।

२ पागस म प्र, पृ० ३२२।

वही पृ० ३२२।

४ प्राचीन कवियों अने तेमनी कृतिओ पृ० ३० पर सत महिमा अप्रकाशित प्रथम का उत्तेज म प्र म हस्तप्रति सुरक्षित।

मदाररा सवा) तथा कुछ पदा का उल्लार मिलता है ।^१ मस्तु माहित्य यवक बायालय द्वारा प्रकाशित रवि भाण तथा मारार ना वाणी म भाग माहव क कुछ हिन्दी पत्र मप्रदात हैं । इनक पदा का भाषा तथा विचार ना दयन हुए रह करीर का अनुगामी कहा जा सकता है । जगत का भागभगुना की आर दगित करता हुआ इनका एक हिन्दी पत्र रविण—

जागो जग मुरन का मेला ।

राजरिद्ध सगही मन देखत जगत मया अवेला ॥टेक॥

मात तात नस्तार कबीला कदि चलत नहि मेला

एकहि आना एक हि जाना पाप पुण्य घर येला ॥

कहाँ ते भाषा ? कहीं जाओगे ? कर विचार मन मेला

चटक रग है घाँ घडा का ताम कहा परेला ?

राव रक की रबर न पाई गये मुह अद चेला

एकहि नाम राम का सब्बा भाग कहे घर येला ॥^२

कृष्णनाम (उपस्थित काल १८ वी शती मध्य)

य वस्तुतः अष्टछाप क कवि कृष्णनाम म भिन्न हैं । मूरन म य नासा नया क विनार अश्वनी-आश्रम म रत्न ध ^३ कृष्णनाम कवारापया ध जिहान मया पथ क किना विनारना नामक मापु म शशा ना था ।

हिन्दी म कृष्णनाम रविन तान ग्रन्थ हैं (१) पान प्रवाग () यतुनन (२) रघुवगमणि । कृष्णनाम का भाषा मधुकर । मिया है जिम पर मूरता गुजराती का स्पष्ट प्रभाव परिनिहित रहना है । रघुवगमणि तथा यतुनन का रचना महाने राम तथा कृष्ण का वप्य विषय बनाकर की है किन्तु इन ग्रन्थों म कवि न राम-कृष्ण का मगुण रूप ममन्वित विगट निगुण रूप हा प्रस्थापित किया है ।^४ पान प्रवाग कवि

१ भजन सागर भाग १-२ प्रकाशक-मस्तु साहित्य यवक बायालय अहमदाबाद और अध्यात्मक भजनमाता भाग २ कृतानजी धर्मसिंह

—म १९५६ ।

२ भजनसागर, भाग १-२ पृ० ५०८ ।

३ नासा अश्वनीकुमार बिराजन मुरत न्वास सुगहारी ।

४ रामचंद्र की निरजन जान है मानहु अन्न अविहारी । रघुवगमणि ।
और

कृष्णप्रभु हु ऐमे जाणो ममज लियो मन मारो । यतुनहन ।

का विगुद्ध ज्ञान मूलक ग्रंथ है जिममें कवि न दाहा तथा अरिल्ल छंदा का प्रयोग किया है। ग्रंथ का प्रारम्भ में कवि न गुण वदना की है—

परब्रह्म गुरदेव नर चिदानन्द जयिनाग ।

कविचरित ज्ञान प्रकाश का जय विगपताए निम्न लिखित हैं—

- (१) भाषा का स्वरूप—देवजू बरना कहत हा कहा प्राणला ताक जाति ब्रजभाषा के गला स सयाजिन सदी बाली का रूप है।
- (२) गापाल का ज्ञान प्रकाश की भाँति हा रम ग्रंथ का रचना गली सवादात्मक है। अर्थात् कवि न प्रस्तुत ग्रंथ का रचना प्रस्तात्तर गीत की है।

मकनदादा (मृ यु स० १७८६)

श्री दूनराय काराणा न मकनदादा का कच्छ का कवार कहा है। मानवजीवन का गहन अनुभव प्राप्त कराय एक उपन्यास पूरा कच्छी लोक भाषा एवं संस्कारों से रचित मकन की साखियाँ हृदय पर भाषा प्रभाव डालती हैं। कवीर की तरह मकनदादा भी एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने राम और रहीम की एकता पर बल दिया।^१ उन्होंने कहा कि मन्त्र एक ही ईश्वर का वाम है। पीपल में जो परमात्मा है वही बावन (बबूब) में है। नीम में भी वही नारायण है जबकि खजला के पत्र में अथ कोन का सबता है?^२ दादा का वाणाम सामाजिक अध विश्वासों का प्रति विनाश है समदृष्टि की भावना में पूरा सामाजिक एकता का पुकार है। समाज सेवा में ही उन्होंने सच्च ईश्वर का ज्ञान किया है।

उनका उपस्थितकाल अज्ञात रहा जाता है। पूवाइ माना जाता है। उनका जन्म कच्छ के नानी लामणी नामक गाँव में हुआ था। उनका पिता का नाम नट्टा त्रिलोकजी तथा माता का नाम पाषाण था। अल्पायु में निरन्त हाकर वे घर में निकल पत्र तथा मन्त्र जागर के मन्त्र गागा राजा में उत्तम गुण मात्र लिया। किन्तु भाषा का तरह मकन भी एक जगत् टिकना

- १ हिंदु जपे राम राम मुमत्तमान चे अला
मजा नाय मेक्षण चे बय घर भला ॥ मेकनदादा ।
- २ पिप्पर मे पण पाण, नांय बावर म बेओ
निम म ऊ नाराण पोय क्क मे कओ ॥ मेकनदादा ।

नहीं चाहत थे। अतः मन् ध्यानर गिरनार का रास्ता लिया। उनका सम्बन्ध म कहा जाता है—

‘मेका बना मङ्गदर दा रामानर का कबीर
आद अत फिरता रहा करता राम कबीर।

कहा जाता है कि गिरनार की एक गुफा में ३ मास तक अगण्य तप करने पर दत्तात्रय की जगह से उन्हें एक कामना प्राप्त हुई जोर समाज की सेवा करने का आदेश मिला। अपनी माधना की पत्नी धूनी उहाने विनया म रमाया। बारह वर्ष तप करने के पश्चात् वे हरिद्वार की यात्रा के लिए निकल पडे। वहाँ से लौटकर वे मिय के भाव गाँव म आये। दूगरी धूना उहाने जग म रमायी जहाँ मामाया पत्न जम कतर पुरप का नी अपन उपरगा से हरिभक्त बनाकर दादा ने उम आडेमर म गाया का सेवा का भार मँपा। दादा ने तामरा धूना लाडाइ म १२ वर्ष तक रमाया। जन म वे प्रेमाया नामक एक भक्त स्त्री के आग्रह पर धरुण म र्व गये। मकडा स्त्री पुरप दादा के परम गिष्य तथा श्री तानिया नामक गधा जोर मानिया नामक वृत्ता भी उनका अन्य गिष्या म म थे। रगिस्तान के कश्मिन नाम से विख्यात मकनगायक के यदा पुरु गिष्य अपना पाठ पर पद्यान ता रगिस्तान के यात्रिया का प्याम बुभान का काय करने थे। मनुष्यतर प्राणिया पर सत मकन के प्रभाव जोर चमत्कार का यह एक बोधप्रद प्रमाण है। मकत् १७८ आरिक्त मास कृष्णपक्ष चतुर्शी गनिवार का रात ने धरुण म १२ गिष्या के साथ जावित ममाधि ता उनम तानिया तथा मानिया भा थे। उमी समय मामाया पत्न ने जाडमर म मान मन्ना के साथ जावित ममाधि ता। दादा ने अपन पश्चात् अपना स्थान अरजण गना का दिया।

रात का यागा म था म बहुत कुछ कर्तन का अपूर्व क्षमता था। एक बार अपन एक गिष्य का भीवडी बनान दय उहान कथा था—

जब सग दीधी ऊपर्ये तब जग सोनी नाहि
सोभी सो तब जानिये जब नाघत बूदन नाहि ॥

साके व्यवहार के प्रताका गारा गूढ बात कर्तन म मन्त मकन का यागा का अभिव्यक्ति कोषन प्रगणनाप है। इस दृष्टि म उनका कुछ अन्य सागिया दृश्य है—

स्वारथ तां मी को करे परमारथ करे न कोय,
हयो छड मसाण म कुवाडो छडे न कोय ॥'

× × ×

'तायर सहह थोडीयु घट म घलेरियु
हिक्कडयु पुग्यु न थड मये त बडयु उपडियु ॥

सत मवन की हिन्दी रचनाए विरन है। उनकी भाषा म कच्छी सिन्धी गुजराती और हिन्दी का अपूर्व मिश्रण है।

दीन दरवेश १८ वी शती उत्तरार्द्ध से १९ वी शती पूर्वार्द्ध)

य मून पालनपुर क निवासि तथा जाति क तुहार थ। कल्याण क सतवाणी अक म इह उभाडा का बताया गया है तथा इनकी जन्म तिथि स० १८६३ वि दी गयी है।^१ प्स्ट इडिया की एक सना म य मिरुषी का काम करत थ। संयोगवग गोना नगन स उनकी बाह कट गयी और कम्पनी सरकार ने इह नौकरा से निकाल लिया।^२ वहा स घर वार छोक्कर य साधुओ क माथ भ्रमण करन नग जोर अत म किमा नाथपया साधु बाबा बालानाथ का अपना गुरु बनाया।^३ जो गिरनार क निवासि थ।^४ दीन दरवेश न यद्यपि अनक सूफी फकारा और बशाती आचार्यों का सत्सग किया था किन्तु गुरु के जाणानुसार उहाने स्वतन्त्र रूपम अपन सिद्धांत लिखित किय और आजीवन उहा का प्रचार करत रहे।^५ इनक नाम पर चनाय गय एक पय (दीन दरवेश पय) का उ नेव भा मिनता है।^६ इनके गिप्या म पीरुन बाबा फाजल सत हसन खां बाबा नवी सतनुरदीन आलि का नाम विगप रूप स दिया जा सकता है। इनक गिप्या की भा सिन्धी रचनाए मिश्रता हैं। रचनाए उच्च प्रकार की हैं। कुछ उदाहरण इह्य है—

१ कल्याण सतवाणी अक पृ० ४४५ पय २६ सहया-१।

२ सत-काव्य पृ ३६२।

३ सदगुरु बाल किरपा कीन
पाया दीन का घर दीन।

४ सत कहत है दीन गर स्थान गिरनार।

५ सत काव्य, पृ० ३६२।

६ कबीर-सम्प्रदाय किमनसिह चावडा।

'छालिक विन दूजा कहीं साइ तेरा अबूझ ।
नूरे नजर देखे बिना, किम विष पावत सूझ ॥

—पीरहान

मैं जानू हूँ अघम उधारन पतित उवारन स्वामी र ।

—बाया नबी

दान दरवेग की कडनियाँ अत्यन्त प्रसिद्ध हैं । डॉ० ब्रह्मचर्यान नानक द्वारा रचित सवानाम्ब कडनिया का अनुमान किया है । प्रसिद्ध इतिहास महामहोपाध्याय पंडित गोरीगंवर हीराचन्द आभा क पाम उनका यानी का एक मसूदा है किन्तु उनम मसूदात कडनिया की मस्या इमका गताग भी नहा है ।^१

दीन दरवेग रचित कडनिया म जनी ब्रह्म ज्ञान का स्पष्ट व्याख्या है वनी उनम मरन जीवन त्रिद्व प्रम मत्य-बचन तथा शणभगुर ममार क प्रति बाधपूर्ण सदाग भा है । उनक वगन म अनुभव वानता मा प्रानत हाता है । मत् गान जितना अगुण्य है उनना ही नश्वर यह ममार है इम वान का कवि न इस तरह ममभाया है —

जितना बासे घिर नहीं घिर है निरजन नाम ।
टाट घाट नर घिर नहीं, नाहीं घिर घन घाम ॥
नाहीं घिर घन घाम, गाम घर हस्ती घोडा ।
नजर आत घिर नाहीं, नाहि घिर साथ सजोडा ॥
बहु दीन दरवेग बहा इतन पर इतना ।
घिर निज मन सत-गख नाहि घिर दोसे जितना ॥

उगा एक बगनार क त्रिक (स्मरण) बिना जाव का कमा चन नग मिन मकना ।^२ बत् साईं ता घट घट म विगजमान है विगज जवना न विगना है जा जाव रूपा नाव को मन वाना भावि है ।^३ बाया ता वान की परछाया का तरह है जमी आयो है वमी हा चना जायगा ।^४ माया क

१ हि का नि स पृ० ८१ ।

२ 'त्रिक बिना बरतार क, जोष न पावत चन

३ साईं घट घट में बसे दूजा न घोसनगर

बेनी जलवा आपका छाबिद सवनहार ।

४ माया भाया कान है साया सरक्या नाहि

भाया अता जायगा शुभ बादल को छांदि ।'

भाह म जो भी फसा अपना बाजी हार गया । मूल इन्मान यह खन ठूग
भा अचत रहना है कान्फी बाज तिन म हजार बार भपट्टा मारता है ।^१
नक्षप म हम कह सबत हैं कि इनकी बाणा अत्यन्त बाधप्र एव मरन ह ।
भाया खडी बानी क जविक निवट है जिम पर पजावी तथा गुजराती का
स्पष्ट प्रभाव प्रतीत होता है । उदाहरणाय —

- १ बदा कहता में कर करनहार करतार
तेरा कहा सो होय नहि होनी होवण हार ।
२ हि डू बहें सो हम बडे मुसलमान कहें एम्म
एक भूग दो फाड है कुण ज्यादा कुण बम्म
कुण ज्यादा कुण बम्म कभी करना नहि बजिया ।
× × ×

हाशिम जली (उप काल स० १७६३)

हाशिम जली गुजरी की परम्परा के कवि हैं । कुछ नाम एह
बुरहानपुर (मध्य प्रदेश) का मानत हैं किन्तु अत माध्य क आधार पर य
गुजरात क ही प्रतीत हान हैं । एनक मसिया (गावाजनि) क प्रसिद्ध हैं ।
मसिया क अनावा एहा गायद हा कित्ता विषय पर अपनी कतम बनायी
ग । एनके २ ८ मसियो का सग्रह दीवान हुसनी क नाम म प्राप्य है ।
कवि के मसिया भावावेण से परिपूर्ण हैं—

तुभू हासिम अली हुसेन सहर ।
हर बरस मसिया लिखाते हैं ॥
लिखू कहीं तलक में बयाने सितम ।
मुजे हर बरस लेके तीरे-कलम ॥
कहीं तक में लिखू इस गम की खाता ।
कि दिल के जोग सों पुर खां है आँखां ॥

हासिम न वासिम का वाग्गनि कामिम और मकीना का विना
कचना का निमम हत्याजा म हुसन क छाट बच्च जमगन की त्या का वगन
फानिमा विनाप आदि विषया पर ता अपना गावाजनि जपित का ग है
अपन समकालान कुछ कविया रही मिजा कान्नि आदि पर भा उमन
स्मरणजिर्निया लिखा है जिह कवि न गायगान-गिन बना है ।

- १ कास भपट्टा दत है दिन म बार हजार
भूरक्ष नर चेते नहि कस उतरे पार ।

रवि साहब (स० १७२२-१८६०)

१६ वीं शताब्दी के गुजरात के उल्लेखनीय सत में रविसाहब का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। यह तथ्य ही है कि मूल्यार रविगणधर जिन्हें भाण साहब के सत्पुत्रों में^१ सामारिकता से विरक्ति हो गयी और आगे चलकर यही रवजा बनिया मन्त रविगणधर के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके पिता का नाम मनछाराम तथा माता का नाम च्छाबाई बताया जाता है।^२ मवन् १८०६ के वर्षोत्तर में उन्होंने भाण साहब से शीला प्राप्त की।^३ भाण साहब द्वारा राय हुए बाज को बन्तुत मवृत्ति एवं पुष्पित किया रवि साहब ने ही। गरबी (बाजवा के पान) से गद्दी प्रस्थापित कर इन्होंने अपने पान का प्रचार किया। भाण साहब का तरह उनके पिप्या की मय्या भा काफी थी। मारार साहब इनके प्रिय पिप्या में से थे। यही कारण है कि उन्होंने गरबी छोड़कर मोरार के निवास-स्थान-जाम्भानिया में समाधिस्थ हान की अन्तिम च्छा प्रकृत का थी।^४

गरबी से म्भानिया जान समय बाकानर में अचानक बीमार पड़ जान से रविनाथि बना पर मवन् १८६० में निर्वाण प्राप्त हुए। उनके मृत दह का मारार साहब जाम म्भानिया ने मय जगै उन्हें समाधिस्थ किया गया। उनका समाधि पर रामचन्द्रजी का मन्दिर बना हुआ है।^५ रवि साहब ने कुल ७७ वर्ष की आयु प्राप्त की थी।

इनके पत्रों में रवि रवजी रविगणधर रविगणधर रविमाह्य आदि नामों की छाप मिलता है। इन्होंने गुजरातों तथा शिवा शाना में भी काव्य रचना का है।

रचनाएँ—

१ चिन्तामणि— ३१ दूतगय कागर्णी ने रविमाह्य रचिन म्भ नाम का तान रचनाओं का उत्तम विधा है (१) बाध चिन्तामणि

१ 'वाराहो' गहर सोहण वस प्रगटे भाण टासण कत

यादा यासण रविदास भनमे कश्यो हृङ्ग विन्धास ।

—रवि साह्य हृत चिन्तामणि हस्तप्रति स० ६२२ शारी पु नडिवाड ।

२ भारत के सत महात्मा पृ० ७१८ ।

३ र भा स वा, पृ० ५ ।

४ यही पृ० १० ।

५ र भा र वा, पृ० १० ।

(२) जातम न चिन्तामणि । () राम गुजरा चिन्तामणि ।^१ रवि मात्र
रुन चिन्तामणि का एक स्मृति मर दवन म जाया है जा डाह्यानधमा
पुस्तकालय नडिया म मुद्रित है ।^२ ग्र न हि न म है त्रिम अतगत
सन ममागम वशम्य मात्र जात्रि पर त्रिणय भात्रि या गया है । भाया का
दृष्टि स ग्रय की कछ प्राग्भिक पत्तिया त्रिणय -^३

सतगुरु क परताप स खोजा पिड ब्रह्माड ।
परममुन मे परम तत है दरगा गह निसाग ॥
आज्ञा गुरु की पाऊ क गाया प्रम की गाऊ ।
सगत साध की कीजे के पियाला प्रम का पाजे ॥
ग्रत साध्य के आधार पर ग्रय का रचना कान सवत् १८२
वर्षता है—

सवत अष्टदस प्रमाण । बीसा वरस ने उनमान ॥
आमुभास पचमी दीन । कि तमणी कही पुरण ॥

२ भाणगीता—गह ग्रय मूलत गुजराता म त्रिणा हुआ है कि नु
वाच वाच म हिन्दी साखियो म युक्त है । भाण गीता का पहला पत्र म
प्रकार है—

मम भेटण भेद है एसी गीता जाण ।
रबीदास अभेद अष्टेद है अणोंनींगी पद नीरवाण ॥१॥
अणलींगी पद जे अनुभवे जाकु गुरुगम शीय ।
रबीदास गुरु गद सें नीरतर नजरे जोय ॥२॥

अंतिम पत्र—

कर कौतक कल हुता मुपने सुता जोगी जोता मटगीया पोया ।
आपे देरवा पार न पेख्या
घरणी जलथल रूप न रेखा पडत पोया ॥

भागगान्ता क सम्बन्ध म स्वय रविमाहव न कता है—

एकबीस बडवा छबीम साखा गीता गायी ब्रह्म प्रकाण ।
प्रणने ऊपर प्रण चौपाई क्यो महा ब्रह्म बीलास ॥२॥

१ देखिए—क स क पृ० १५८ ।

२ हस्तप्रति विवरण सख्या, ६२२ डा पु नडियाद ।

३ वही पृ १ ।

नास्त्रनु दृष्टा त माहीं वेद गीता नी कही साख ।

माहीं पागे नीरतर सेले, द्रष्टांत दीलमा दाख ॥३॥^१

३ मन समय—प्रस्तुत ग्रंथ गुजराती में लिखा हुआ है। आत्म समय पर अपने विचारों का रविसान्य न हम ग्रंथ में वाग्ना दी है।

४ पंचकोश प्रबंध—यह ग्रंथ उनका नाम गाम्भीय का छात्रक है। ग्रंथ पंचकोश का वर्णन है जो गुरु गिष्य-संवाद के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तावना के रूप में एक उद्गारण दक्षिण—

गिष्य पुछे कर जोर एव अपजो आगवा

पच कोश के माही बध्या राजा अरु रका ।

ग्रह्या इद्र महेश देव सबही अवटाया

धावर जगम आद नीव पचकोश बधया ।

कोश अरु कोण योगीरश। प्रगा कगा कही भात

सतगुरु सो नीने करी कही दृष्टात सीद्धात ॥^२

उत्तर—

अप्र मनोमय कोश का अरु प्राण घोष ना

अरु आनन्दमय कोश ताहीं में सकल रधाना ।

प्रथम अनहीते बधे घोडव अरु धरान

रविदास सतगुरु वहे अनंत कल्पना टाठ ॥

५ रवि भाए प्रज्ञोत्तरी—मृत्यु के भ्रमरगात की गता के आधार पर गांधी उद्धव मंत्रा का चक्र रवि भाग प्रस्तावनी लिखी गई है। ब्रह्म गांधी नी प्रस्तुत ग्रंथ का प्रमुख विषय है।^३ ब्रह्म गानी में याग गांधी का चक्र लिखा गया एक पर स्पष्ट है—

देव दीनवार दीनवाही दे रर कर नामि के बीर निज नाम है ।

मुरत नुगत नेगी सो जात दे रदय कमन मन मार घह ।

जसमस ज्योत अनहृद बाजा याजे ।

काम ओर करोष ब्रह्म अग्नि दरे ।

१ र भा स वा पृ० ३३ ।

२ भा स वा पृ० १६६ ।

३ अथइ उमुनी मुनाए दीवस घने राता र सतगुरु
रविदास ब्रह्म निरुषवा ब्रह्मा घ्राति मारा गरजू ॥

—सतवाणी, पृ० अंक ६ पृ० ३२ ।

बठीया सप्तत सब अदल बादगाही है ज्ञान गरु गम स गेल है ।
दास रविराम ब्रह्म मगन महबूब पाचिया सत को^१ सत है ॥^१
इस ग्रंथ में रविमाहव न बारहमासा वणन भी किया है । भाषा
में अरबी फारसी के शब्दों की बहुलता है ।

६ गुरु महात्म्य—आगराम मारारजी कृत लीलामृत में रविमाहव
द्वारा रचित गुरुमहात्म्य नामक एक छोटी-सा रचना का मकनन है । इस
ग्रंथ में उन्होंने अपने गुरु भाण साहव की महिमा का गुणगान किया है—^२

मेरा सतगुरु भाण है रविदास परमाण ।

× × ×

रविदास गुरु सहेजे मर्या देखत दीन दयाल ।

चटकी दीनी गद की पल में भयो निहाल ॥

गुरु महिमा—

गुरु गोविन्द दो एक स्वरूपा नाम रूप गुन भेद अनूपा ।

गुरु अविचल पूरण पद धामा गुरु स्वाधी गुरु जग विभ्रामा ॥

६६ चौपाइयो तथा २१ साखिया में लिखा गया यह ग्रंथ छोटा गान
हुए भी महत्त्वपूर्ण है ।^३ के द्वारा रचित विमल सत दाणा^३ नामक एक
अथ ग्रंथ का उल्लेख भी मिलता है । जिसमें कवि ने सत महिमा का
अपूर्व गुणगान किया है ।^४

७ साखियाँ—रवि माहव ने अधिकांश साखिया का ही रचना की
है । इन साखिया का विविध अङ्ग में वर्गीकृत किया गया है । जस नाम
महिमा का भग सत नरण का भग उत्तम नारी का भग अधम स्त्री का
भग अजपा को भग आदि । इन साखिया के विषय भी कहा है जा
सामान्यत अथ सत कवियों का साखिया में पाय जात है । जीवन जरा
यौवन प्रेम भक्ति एवं वराम्य आदि उनके प्रमुख विषय हैं । इन साखिया
में आध्यात्मिकता के साथ-साथ सामाजिकता का सस्फुट भा है ।
एक ओर इनमें जहाँ माह माया को त्याग कर वराम्य का ओर जीवन की

१ सतदाणी वय ३ अरु ४ पृ० ३२ से उद्धृत ।

२ 'लीलामृत पृ १ से १२ ।

३ देखिए— भारत क सत महारमा पृ० ७१८ ।

४ देखिए—'पाबस गुजराती सभा महोत्सव ग्रंथ पृ० ३२२ ।

उत्पटा है तो दूसरा आर मानव गुणा का महता का प्रस्थान भी किया गया है।

८ स्फुट पद—रविमाह्वय व सरल एवं मगतमय पं लागा व कठा से पयावज और मजीर की ताल पर स्वरनहरी बनकर आज भी पूर पन्न है। इन पदा म नाक ह्य बोल उठता है। इनम छत्र-योजना का अपधा तान एवं लय की विगेय महत्व दिया गया है। भावाभिव्यक्ति की लाधा गिबता इनकी सबसे बडी विगेपता है। उनके एक पं की कुछ पक्तिमा दृष्य हैं

पो का स्वाद हो जघ्पा जाने बगु कहे मोटा तारा।
 बहे रविराम भाए प्रतापे ईगम अगम अघारा।
 मूल की पूतली गिर गयो जल मां बगु कर निहसे धारा।
 उनक ह्य की मामिकता ता पिया एवं पतिव्रता व रूपता म धनव पटना है—

मे पतिव्रता नार पिया की, बाहेर बबहु न जाऊँ।'

× × ×

में पतिहारी राम की छीतर जले न हाऊँ,
 पढ़ा सोड पिपाड पहोंधु, निरमल जल धरि साऊ ॥

बवार का तरह रवि साह्य की उनट वीतिया भी चमत्कारपूर्ण मचोट एवं बौद्धिक हैं। इनकी वाणा म एक आर जहाँ पतिव्रता दिया बालम अनम सुमारी प्रेम करी लहर आति अनक मपुर गणा का प्रयाग मिनता है वहाँ दूसरी ओर दानिक विन्वन की बान वन्न ममय अवन कहाना अगिनिगा अलग निरजन अभ् आति अनक पारिभाषिक गणा व महज दगन भी हा जात हैं। माय ही अरबी पारमी^१ तथा पजावा गणा^२ का इतन्तन प्रयोग भी उनकी वाणी म दाम्प पटना है। उनकी

१ सोचन से साहु धवे बोन देने महेबूव।

रविरास राती असीपा सासक बोन नहीं लुब।

—र भा स वा, पृ० ३०३।

२ बसाहरी सेज बिदावता, बसीए बसियु मारुहा,

सोही जमोन पर सोग्न साग्या, कबर कोए बहागा।

—र भा स वा, पृ० ३२।

जम बविष्यपूग वाणी म हम कथा भी माप्रत्यायिक रूपभाव जयका मकुचित विचारधारा के दगन नहा हान । उतान सगुण एव त्रिगुण का मरम सम वय किया था ।^१

रविसाहब निरात एव प्रातमत्तम के गमकातीन थे एसा उनके द्वारा लिखे गये कुछ पत्रों से प्रदात हाता है । ये पत्र इन सत्ता के जीवन-तथ्या प्रदान तथा विचारा के स्पष्टीकरण के द्योतक है । निरात के एक पत्र में रवि साहब का तत्त्वानीन महत्व पहचाना जा सकता है—

रविराम ने गरणे गया ते जन तो पारगत थया ।^२

वस्तुतः रविसाहब एक पहुँच हुए ब्रह्मज्ञाना थे जिन्होंने उन्नासवा गता के ममन्त मन्थभाग का अपना प्रतिभा से जगमगाया था । उनकी वाणी में यौगिक साधना तपस्या तथा अद्वैत ब्रह्म राम के नाम का चिंतन है । जिस समय ममस्त देश का राजनीति करवटें ल रनी थी रविसाहब की वाणी गुजरात के ममन्त जनमभाज में आध्यात्मिक क्रांति पदा कर मजग यत्तित्व का निर्माण कर रहा थी । उनोंने मत्स्य प्रेम एवं गान्धि की वह भूमिना तया के जिम पर महात्मा गांधी ने देश का स्वतंत्रता का त्रिगुण बजाया ।

दवा साहब (उप काल म० १८००)

दवा साहब का नाम कच्छ के पहुँचे हुए सत्ता में दिया जाता है । ये जानि के क्षत्रिय तथा सत्ता (कच्छ) गाँव के निवासा थे । उनके गुरुक ममन्थ में विगप जानकारा उपनयन हुआ किन्तु सत्ता निश्चिन्त है कि ये जिमा पहुँचने साधक के गिध्य रहें हान । कहा जाता है कि ग्रहम्यात्रम में प्रवण करने के पश्चात् विरक्ति हान पर ये रह गुरु शीक्षा मिता दी ।^३ वाम वय का भरा जवाना म ये एक पत्र तथा एक पत्नी का छात्रक वरगा हा गये और हमना में चीन का गगा नामक न । का मठ पर कठिया बांधकर बने गये ।

दवा साहब के अंतर चतु अपने आप मृत थे तथा कविता का जन न सान भा हृत्य का शवाग का तात् कर पूर पला था । उनके द्वारा रचित तान अत्रिाय ग्रंथ है—

१ रग रग राम रमि रह्यो निरमन अगुन के रूप
राम श्याम रवि एक ही सुंदर सगण मरूप ।

२ था निरात काव्य पृ १६४ ।

दूतेराय काराणी के स के पृ ८४

(१) राम सागर (२) हरि सागर (३) कृष्ण सागर ।

राम सागर में निम्नलिखित ब्रह्म का साधना है । जान बाण्ड पर निगम गया यह अपूर्व ग्रन्थ है । हरि सागर में जान गीण है जोर उपासना मुख्य है जिममें नवधाभक्ति का सागापाम बगन किया गया है । उपासना बाण पर निगम गया यह अतीव्य ग्रन्थ है । 'कृष्ण सागर' में कहा-कटा जान का पुत्र तथा भवत्र उपासना एव भगवद् लीला का चित्रण मिलता है । राम ब्रह्मकाण्ड का महिमा का गान है । अतः इन तीनों ग्रन्थों में जान उपासना एव राम की समीक्षा का गयी है । राम सागर से कुछ उदाहरण दृश्य हैं—

साहिर नाए सो क्या भया अंतर मेल न जाई,
अंतर भेन उतारिये ज्ञान नीर में नाई ।^१

× × ×

इह माया की फद एक कनक दुजी कामिनी
जीव जेहि मति सब याते छुटी नां सब ।^२

बृहद् बाव्य दोहन भाग ५ में इनके १६ पद्या तथा अध्यात्म भजन माना भाग २ में इनके बहूँ हिन्दी पद्या का संग्रह हुआ है । इनके द्वारा रचित हिन्दी कृद्विनयाँ भी भाषा एव भाव की दृष्टि में महत्त्वपूर्ण हैं ।

निम्न एक प्रमुख गद्यिका—हमना में स्वामीत्व का मुख्य गदा है । हमना की महिमा के विषय में एक दाहा प्रचलित है—

हमला गग गोदावरी हमला है हरद्वार ।

अरसठ तीरथ स्यां बने देवा के दरवार ।

स्वामीत्व के चार प्रमुख निम्नलिखित—बटाराम (चण्डाराम) बगजा (विश्वगीताम) भवाराय और कृष्णाराम जिनमें जेठाराम पट्ट निम्नलिखित । स्वामीत्व की मृत्यु के पश्चात् हमना की गरीबी का मोचन का निगम किया गया, किन्तु जेठाराम इसके विषय में नहीं हुए । अतः स्वामीत्व के मोचन रामनिह का गान अन्तरेय गदा पर बडे और रामनिह के वाचिक ज्ञान का साक्षात् चयन गये । जेठाराम के भजन अत्यन्त भावपूर्ण हैं ।

१ 'राम सागर' पृ० २७ ।

२ 'राम सागर' पृ० २६ ।

हमना की गादी परम्परा इस प्रकार है—

देवासाहब
|
रामसिंह
|
मोहनरामजी
|
पूणरामजी
|
मगलरामजी
|
मगारामजी

अय गिध्या म बिहारीदास ने बाढाय मे सेवाराम न सिध म तथा कृष्णदास न काटडी म इस पथ की गदियाँ प्रस्थापित की । बिहारीदास के बचपन का नाम बेरोजी था । इनका जन्म स १८४४ म बाढाय (कच्छ) म पिता मधराज क घर हुआ था । उन्होंने पिंगल नाम्न का भी अभ्यास किया था । कृष्ण बाल विनोद गुरु स्तुति प्रस्ताविक कुडलियाँ तथा अनक प एव भजन आदि की कहानि रचना की है । भाषा की दृष्टि म इनकी एक बोधप्रद कुडली दृष्टव्य है—

सिर पर जमरा फिरत है ज्यों तीतर पर बाज
सबके पीछे है लग्यो, हस हरन क काज
हस हरन क काज अधिक यह चहृविश घावे
बिल्ली मूषक काल निशी दिन यों हो खावे
कह बिहारी कर जोर चेत मन चचल भमरा
ज्यों तीतर पर बाज फिरत यों सिर पर जमरा ।

सत बिहारीदास की गिध्य परम्परा इस प्रकार है—

बिहारीदास (स० १८०४)
|
क्षेमसागर (स० १८४५)
|
इश्वरराम (म० १८४५-१९१३)
|

ईश्वरराम (सं १८४५-१९१)

नागराम (सं १८१२-३१)

आषट्टदास (सं १९४५-२०१)

उपयुक्त प्रगातिवाक्य मन्ताम ईश्वरराम नागराम तथा ओषट्टदासजी का हिन्दी-बाल्या उपनयन हुआ है। उनके पर तथा मजन अत्यन्त गरव एवं दृश्य स्पर्शा हैं।

छोम साहब (उप काल सं १८२६)

जमा किन्तव विषय म पन्ने हा बहा जा चुका है जिस भाग साहब के पुत्र तथा रापर (बन्ध) की गद्दी के अधिकारी थे। भाग मन्प्रदाय के अनुयायी रह करिया पीर का अवतार मानते हैं। क्योंकि इनके नयना म मूर का दरिया दिखाई देता था^१। अन्तिम अन्व अनुयायी के मन्व करिया खाम साहब भी बन्त हैं। क्या जाता है कि भाग साहब का विवाह अनुकम्पा के पर न राकर रविमाहब पर रना करता। मम इनका हृदय पिछे रा रहा करता था परन्तु जिन समय के रविमाहब के याग तथा पाप का ऊचाई का पता चला इनका सम्पूर्ण दप रन गया।^२

इनके द्वारा रचित चिन्तामणि नामक एक हिन्दी ग्रन्थ बननाया जाना है जिनके अन्तिम संवत् १८२६ तक मुन्ना पूनम का पूरण किया था।^३ एवं कुछ पदा का मन्त्र अध्यात्म भजोमाना भाग १-२ म नी मिलता है। इनकी बाणी म मूर्तिपूजा ताप्याना तथा साहा कम वाण्णा के प्रति मण्डन^४ तथा पर म पा मुग् के प्राप्त करने का अन्तमुग्नी साधना का

१ दान दत्ता मया मन्त मगना, सहेजे मून ममाना

मन आगे मूर निरसिया नहिं मोगे नहिं जाना।

—छोम साहब।

२ क त क पृ० १६८।

का ग म म प पृ २२।

४ तप तीरथ और बकी दवना यव कुरान सिन्तारा

पीर पेगम्बर सिद्ध पीर साधक, ई उरवा बटवारा बाई सरान जाग।

—छोम साहब।

मण्डन हुआ है।^१ इनके पत्नी म गुरु के प्रति अपार श्रद्धा एवं विगुद याग साधना के दान होने हैं। इनका वाणी कवीर का विचार धारा में पालित है। कवी कहा तुनसागत का तरह सियाराम स्मरण का उक्तना भा नीव पडती है—

जिन मुख से सियाराम न सुमरे, तिन मुख में तो घूल परा रे। टेक
धिक तेरा जन्म जीवन तेरो धिक हूँ धिक धिक मनुष्य की देह धरी रे,
जीवत तात भूवे नहीं तेरा क्य जनम्यो तु पाप करी रे। जिन

ता कही आत्मा रूपा हार का प्राप्त कर यागरूपा कर्म का भरण का तीव्र उत्कठा भी है—

अब तो आत्म हीरना पाया हरिचरणे चित्त लाया ।—टेक
घर में माल अमुलख भरिया जुगते जोग कमाया ।
जनम सुधारण सतगुरु मेढ्या नबला घाट घडाया ॥^२

श्रीम साहब द्वारा रचित उपरोक्त पद्यों पर इद्विपात करने से प्रकृत हागा कि उनमें अनुभूति की तीव्रता के साथ भाषा का सरलता और सगीतात्मकता भी विद्यमान है।

प्रीतमदास (मृत्यु सं० १८५४)

गुजराती सत साहित्य में अस्वा के पश्चात् जितना नाक प्रियता प्रीतमदास का मिनी उतनी सभवत किमी जय का प्राप्त न हो सका उनका सावप्रियता का एकमात्र कारण उनका पत्र साहित्य है। इनके जन्म तथा जावन के विषय में पर्याप्त मतभेद है। स्व० इच्छाराम ने इनका आयु ७२ वष की बताया है^३ तथा श्री क एम भवरी ने इनका ७२ वष का अवस्था में इनकी पत्नी का दृष्टवमान सूचित किया है।^४ इस आधार पर प्रानमन्मम की आयु ७२ वष में भी अधिक ठहरता है। साष्टान मन्त्रि के एक वृद्ध महान के कथनानुसार प्रीतमन्मम का दृष्टांत ७४-८० वष का अवस्था में हुआ बताते हैं। अन्त माध्य के आधार पर भगवतगाना के

१ गगन भडल में करले वासा का हे जोगी सहरो

सदरए मुन सान बताया जाप अजपा करी।

२ श्री भजन सागर भा १ पृ० ७५।

क स क पृ० १७०।

४ मृ का दो भाग ३।

५ गु सा भा स्तम्भो श्री कल्याणस भवेरो।

अतः म प्रीतमदाम क पिप्य नारणदाम न निखा है कि सत अणार चापना वमाय वद १२ न त्विम मध्यान न काल वावोजी सधाम पधारा छे ते जागजो ।^१ अर्थात् प्रीतम का जन्मवसान सबत् १८५४ वसात वनी १० अपराहन हुआ था । उन प्रमाणा क आधार पर हम प्रातमदाम का जन्म सबत् १७७५ म १७८० क बीच निश्चित कर सकत है । यद्यपि उनके जन्म क विषय म कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नही हाता । इच्छाराम न उनक पिता का नाम रघुनाथदास बताया है जबकि प्रातमदाम क मन्त्रि (सदमर) म उपलब्ध पाया म उनक पिता का नाम प्रतापसिंह और माता का नाम तजबबरवा मिलता है । प्रातमदाम मूलत वावना क निवामा थ जा सबत् १८१७ क जामपाम मन्सेर पधारे थ । सदमर को हम उनकी जन्मभूमि नही मान सकते ।

प्रीतमदाम क विवाहित तथा अथ हान के सम्बन्ध म भा अनक मत मनातर प्रचलित हैं । था क एम भवेरी न उत्तरावस्था म इनका अथ हाना बताया है ।^२ जबकि प्रीतमदाम क मन्त्रि म एना मायता चनी आ रहा है कि क जमाथ थ । वस्तुतः उनक ग्रन्था की वगुमार अगुदिया भी उका अथ हाना सूचित करती हैं । मन्त्र क वचन मध' अविनाग के बदन अविनाग स्था क वचन प्रमप्रम अवश्यमव क वचन अश्वमन माणि उगारण की एमी भूत हैं जा विपिका क तारा महज ही जा जाया करती हागी ।

था क एम भवेरी तथा स्व इच्छाराम दोनों हा प्रीतम का विवाहित माते हैं किन्तु अतः सार्व एव रहिर्माय दाता आधार पर कथन का मत्यता मिट नही हाता । प्रातम कयाकि त्यागा थ अतः अपन ग्रन्था म जगह-जगह उहान अपन को दाता कहा है । इनक मन्त्रि म आज तक यह परम्परा चला आ रहा है कि इनका महान तथा साधू बना हा मकता है जा रवागी हा । प्रीतमदाम की गुरु प्रणातिका भा त्यागा माधुभा का है ।

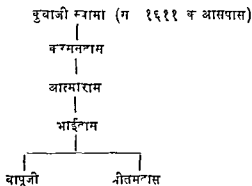
गुरु—प्रातमदाम की गुरु प्रणातिका इस प्रकार है—

रामानंद स्वामी (म० १३५६)

कुवात्री स्वामी (म १६११ क जामपाम)

१ प्री का गृ ३५० ।

२ गु सा भा स्वामी की कृष्णसाल भवेरी ।



उपरोक्त प्रणालिका वस्तुतः खण्डित है। स्वच्छाराम तथा भवंगी मोना ही न गावित्तराम को प्रीतमदास का गुरु बताया है जा रामानदा माधुय। किंतु प्रातमदाम के समकालीन रविभाहव ने गारपी से उनके नाम जा पत्र लिखा था उसमें प्रीतम के गुरु का नाम बापु है।^१ स्वयं प्रीतम ने भी बापु पर बल दिया है।^२ गुरु प्रणालिका को देखते हुए बापुजा प्रीतम के गुरु माने जाते हैं। संभव है भाईदास प्रातम के दीक्षा गुरु हा आर पान की ज्योति जगान वाले बापु रहे हों।

रचनाएँ—

प्रातमदास ने बाणा पृ ४ पर प्रीतमदास रचित ग्रन्थों का एक लंबी तालिका इस प्रकार दी है—

- | | |
|-----------------------------------|---------------------------|
| १ सरसगाता (सं० १८३१) | ७ एकादश स्व घ (सं० १८४५) |
| २ ज्ञान-कवको (सं० १८३२) | ८ ज्ञान प्रकाश |
| ३ सोरठ राग नई महीना
(सं० १८३८) | ९ ब्रह्मलीला (सं० १८४७) |
| ४ ज्ञान-गीता (सं० १८४१) | १० प्रम प्रकाश (सं० १८४७) |
| ५ घरमगीता (सं० १८४१) | ११ दिनचर्या (सं० १८४८) |
| ६ साधो-ग्रन्थ (सं० १८४५) | १२ भगवद्गीता (सं० १८५२) |

तथा सत्यभामा ना गव्या गुरु महिमा भक्तनामावलि नाम महिमा कृष्णाव महाना नियमि वार छप्पा चौपाय्या पत्र घाल आदि का

- १ साचा सतगुरु वरोधा बापु साचो कीछो सेवा
दसधा भक्ति पुरण प्रगनी अतर टल्या अहमेवा। प्री वा पृ० ३८।
- २ प्री वा, पृ ३५०।

विपुत्र मर्यादा में निखरने का उत्कण्ठ मित्रता है। स्वच्छागम न प्रानमदास का पदा का सख्या १५०० का आसपास बताया है।^१ इन पदा को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—

१ पान भक्ति तथा वराण्य स सम्बन्धित पदा ।

२ शृङ्गारिक पदा जिनमें वृष्ण-लाता का पदा का समावेश है। वगत हाला वानरीना रास आदि के पदा का समावेश इसी का अन्तर्गत हो जाता है।

पदावित्य की दृष्टि में प्रातम का पदा बजाह हैं। गात तथा शृङ्गार रस की धारा से सम्बन्धित प्रीतम में हम पान एवं भक्ति का समान बन मित्रता है। वस्तुतः प्रातम का प्रातिमय भाषा में अद्भुत माधुर्य है। वह जगत् का विचारों की तरह कहा भी कामिल नहीं हो पाद है। अन्त में पान का गुमारी है। उद्दिष्ट ब्रह्म का आरम्भ स ही जन्त का रूप में देखा है जबकि प्रातम में भाषा का बल का गूढित करने के लिए परमन्वर का अनुग्रह की कामना है। प्रीतम द्वारा रचित हिन्दी रचनाएँ इस प्रकार हैं—

१ गद महिमा^२ भाग २ ।

६ विनय स्तुति की अन्तिम

२ भक्त नामावली^३ ।

श्रीपाद्यों ।^४

३ ज्ञान प्रकाश का पहला पद ।^५

७ विनय दीनता ।^६

४ ब्रह्मलीला ।^७

८ फुटबल-पद ।

५ साधो ग्रन्थ ।^८

९ सत्सतोकी गीता ।^९

गाथी ग्रन्थ प्रातम का विज्ञान ग्रन्थ है जिनमें २४ अंग तथा ६२८

१ पृ का दो भाग ३ ।

२ प्री का पृ० ३४ ।

३ वही पृ० ५१ ।

४ हरि गुरु सत कपा करे हरे सकल सदेह

पुण्य आदि परमात्मा तासु प्रगटे स्नेह । प्री का पृ० ५६ ।

५ प्री का, पृ० ६७ ।

६ प्री का पृ० १०० ।

७ वही पृ० १५१ ।

८ वही पृ० १५१ ।

९ वही पृ० ३५१ ।

सांगियाँ हैं। प्रस्तुत ग्रंथ उहनि सदमर म ही पूग किया।^१ ब्रज नीला की भक्ति प्रीतम न ब्रह्मनीला का वगन किया है जिमम उहनि भुक्ति को यगोदा भक्ति को राधा तथा ब्रह्म (आनन्द स्वरूप) को नाराय का रूपक दिया है।^२ भाषा की दृष्टि से यह ग्रंथ अपूर्व है। साखिया एव पत्नी म प्रातम का ब्रह्म ज्ञान भी अपूर्व है। उहनि याग माधना^३ जीव माया^४ वराग्य^५ भक्ति^६ विरह^७ जाति का खुलकर बखान किया है।

धीरा (स० १८०६-१८८१)

धीरा का जन्म सावना-गोठडा (बडोदा) बारीट (भाट) जाति म हुआ था। इनका पिता का नाम प्रताप बारीट तथा माता का नाम देवाबा था। धीरा विवाहित थे। इनकी पत्नी का नाम जतनबा बताया जाता है तथा यह कहा जाता है कि इनका गृहस्थ जीवन सुखी नहीं था। बचपन म किमी अन्धकार के पास विद्याभ्यास के हेतु जाया करते किन्तु बर्ना मन गमा नहीं। ठोकर खाते-खाते युवावस्था के कितारे पर पहुँचकर अर्थात् सत्रह वर्ष की अवस्था म महिमागर के कितारे किमा बनवामी साइ का गमागम हुआ तथा बप्पणब कुलधम का ओडकर ब रामानदी पथ म दाक्षित हुए।^८

कृतित्व—प्रा का भाग्य २३ २४ २५ म प्रकाशित धारावृत्त निम्नलिखित रचनाओं का उल्लेख मिलता है—

१ स्वरूप अने प्रश्नोत्तर मालिका	२ आत्म बोध
३ ज्ञान कवचो	४ गुरु धर्म
५ शिष्य धर्म	६ योग मार्ग

७ मतवादी ।

१ प्री का पृ० १४२ २३ ।

२ प्री का ब्रह्म सीला पृ० ६६ ।

३ प्री का पृ० ११० ।

४ वही पृ १२७-२० ।

५ वही पृ० ११६-७ ।

६ वही पृ० ११३ ।

७ वही पृ० १२०-७-८-११ ।

८ रा रा सुरेण दीक्षित (पञ्ज गु स प्रमासिक अंक २ १९४०,

य सभी रचनाएँ गुजराती में हैं। धीरा की कुछ हिन्दी वाणी प्रा. का भा. प्र. २४ म. म. प्र. हीन है। वृ. का. दा. भाग. म. धारा का एक उत्कृष्ट हिन्दी पत्र मिलता है जो इस प्रकार है—

बम का भरोसा मत कर भाई साधन करदा साईं
साधन करदा साईं मे यारी बसवा । _टेक ।
पाव पलक की छबर न जाये करे काल की आग
शीर पर जमडा जइप रह हो गया जगल वास ।
हस्ती घोडा माल खजाना, कोई काम नहीं आवे
अचेत होकर बम बठा हो पीछे धी पस्तावे ।
सद्गुरुजी क शरण जाई घरले गीग नमाधी,
आधीन होकर नोगदिन रहेना जम को प्राप्त मिटाई ।
जेभा आग जान कु भाई रहन कु धोर नाहीं,
सद्गुरु धीरा भगत बतावे रोगी भगवान भलाई,^१

यद्यपि धारा रचित किमी स्वतंत्र हिन्दी ग्रन्थ का उत्कर्ष नहीं मिलता किन्तु उनका हिन्दी गुजराती पत्र की सभ्यता विपुल है। अनुमान है कि धीरा न २५००० पत्र लिखे थे जिनमें से अभा. तक बढ़ते हैं। बम प्रकाश में आ पाये हैं। धीरा का गिण्य-बग विनाश था। कल्पना है कि य अपनी रचनाएँ लिख लिख कर योंग की नया में बन्द करके नयी में बहा दिया करते थे और इस प्रकार दूर दूर तक इनकी रचनाओं का प्रचार हो जाता था।

धीरा की कवियों अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। य कवियों प्रायः अश्रेणी के माने जाते हैं। इन कवियों का प्रधान स्वयं आत्म ज्ञान है। अगला न जगत् तरह गुरु गिण्य सवाण का रचना की है उमा प्रकार धीरा न भी अपनी विचार-भरणी को प्रशान्त रूप मानिका में माना कि मनकों की तरह पिरोया है।

धीरा विभिन्न मत मनांतर तथा सम्प्रदायों का विरोधी था, इगोत्रिण इहान मन्दि मन्दि और नव भूतिया की अवहवना का है। इन्नि वनात का सामान्य स्वरूप बम म बम परिभाषित गाना म जन सामान्य का पठक क अनुरूप सरल भाषा में स्पष्ट किया है। माया को माह क रूप में स्वीकार कर धनमोह विद्यामोह पुत्रमोह स्त्रीमोह कीति माह आदि स्पष्ट

१ कृष्ण काव्य दोहन भाग १, पृ० ७६५ ।

विभाग कर अंत में धीरा न उम अनिवचनाय कहा है। अचनवाणा में धीरा न परमतत्व के विषय में कहा है कि तन के नाचे जस तन रहता है और काष्ठ के नीचे जस अग्नि रहती है उसी प्रकार विश्व प्रपञ्च के स्फोटक रूप में परमतत्व स्थित है। धारा के अनुसार मन एक भ्रमणा है। तृष्णा मन का पवन चक्की का तरह फिरता है। वागा गया गागावरी जगन्नाथ अथवा डाकोर में त्रिभुवन का ठावर नग है। वह ता धारा के अंतर में विराजमान है। राजा का युग करके वह द्रव्य भन्ग भर सकता था अमीर का युग करके वह हाथी घोड़े पा सकता था परंतु गुरु को रिभाकर वह मोक्ष-पद का पा सका है। धीरा गुडाढतवाणी हीन हण भा आत्मा के अस्तित्व को मानने वाले हैं। उनके विचार बौद्ध अनात्मवाद्या की तरह नहा हैं।

श्री कौणिकराम मेहता ने धारा की वाणा के विषय में ठाकुरा कहा है कि धीरा की वाणा सरन स्वाभाविक स्वच्छन्द और वाग्दर में पूग वेधक किंतु मृत् बठार होकर भी मधुर हथी और पानी के प्रवाह तथा तापगाना में भा मूगाय कर दन वागा वागा है।^१ अतएव धीरा का वाणी घागडमल धीरा का वाणा के रूप में प्रसिद्ध है। उनके गाना में कहा गया मनाहर चित्र उभर आन है।

श्रीकम माहव—

वाग के रामबाव नामक गाव में निम्न जाति (ने गोर) में उनका जन्म हुआ था। हरिजन ज्ञान से रह स्वाम मात्र का गिप्य बनने में उनका कठिनाय्या का सामना करना पडा। वागा ने इन पर चग्ग पाटुकाय तक उद्यावा किंतु इनके हृदय का पवित्रता एक नमना को स्व स्वाम मात्र न जनमत का टुकरा कर रह अपना गिप्य बना निया रहान चित्ता जाकर विगान मना तयार का बार वहाँ रहकर रवि भाग मप्रनाय का प्रचार करने गे।^२ स्वाम माहव के प्रति उनका श्रद्धा जहूँ था।^३ अतएव

१ जयती व्याख्यातो पृ ८६ (धीरा अन तेमनी कविता)

—श्री कौणिकराम मेहता।

२ क स क पृ० १८७ या कूनेराय काराणी।

३ सनमुख डरा रे साहेड मेरा सनमुख डरा र
आहीर देहया भीतर देहया देहया अगम अपारा रे
है तुम्ह माही मुभत नाहा गरबीन धोर अघरा

—अघरा अघेरा ॥ सनमुख ॥ र भा स वा पृ० ४४४।

अपने अपन गिण्या स अपना अतिम रूद्रा प्रकृत का था कि उनक गरीर त्याग क पश्चात् उनक रूद्र का रापर म खाम माह्व का ममाधि क पाम ही ममाधिस्थ किया जाय । मवत् १८५८ म रूद्रान जावित ममाधि नी ।^१ उनक पत् अत्यन्त मार्मिक हैं । भाषा-मौख्य की दृष्टि म इनका एक पत् यत् उदित वरगा ममाधान हागा—

मान सरोवर हाता नीसन आयोजी !
इन्दी का वाण्या अवधूत, जोगीन के ना एजो !
जय लग मनबो न बाण्यो मर लाल
लाल मेरा दिल मा लागी बरागी !
खाम करे घेला अवधूत श्राकमदास बालियाजी !
साधुडा न जुगति मां रेना मेरे लाल
नान मेरा दिल मा लागी बरागी ।^२

भागर माह्व

य भागवत गिन थरान नामक रजवार क राजपुत्र थ । बाधना गणावग म उनका जन्म सवत् १८१४ म हुआ था ।^३ इनका पत्ता नाम मानमिथ था जिहान रविनाम का बाधप्रत् वाणा स प्रभावित हाकर विवात् बनन म रूबर कर दिया । अपना विधवा माता का एकमात्र रूद्र का टुकरा कर^४ य बरागा हा गया । क्ता जाता है कि एक आयत् म बणाभूत हाकर स्वयं उनका माता इह रविनाम क पात स गग जीर जामनगर म भय दिनवादा ।^५ बुद्ध नागा क अनुमार मवत् १८०८ म रूद्राने रविमात्र म गरगा म हा गीगा ता ।^६ बुद्ध भी ना भय नन क याद य मानमिह राजवर न भयघाग भागर वग गम तथा जाम मभाविया

१ र भा स वा १० ४४२ ।

२ र भा स वा १० ४५२ ।

३ क स क १० १७१ ।

४ 'मया मारो मनबो टुषो र बिरागी

मारो स तो भजन मां लागी रे । —मोरार साहब ।

५ मारटी सन बाणी —भदरस-ब मघाणी ।

६ र भा म वा (भूमिना) जबकि था बागानी न सवत् १८५५ दिया है ।

इति—क स क १० १७२ ।

म गुफ आना स गगी स्थापित की । रविमान्त्र का विगप कृपा इन पर थी ।
सवत् १६०५ म इनका समाधिस्थ हाना बताया जाता है ।

मारार मान्त्र का वाणी म प्रेम पीडा एव कग्गा का भाव सहज ही
उमन् पन्ता है । कवि की विरहानुभूति म आत्मा की प्रज्ञाभिमुखता का एक
उत्कृष्ट दृश्य है

मेरे प्रीतम चले परदेश जीवन मे कैसे जीव ?

आये न जाव कोई खबर न लावे, कोवन की कहाय सदेव ?

साच कहो तो मे सग चलगी हां रे म दिल किया दरवश ।

नाहीं कहो तो मे निश्चय मरुगी

हां रे मे ऐसो लियो उपदेव ।^१

कवि की ज्मा विरहानुभूति म रहस्यानुभूति होता है । मन का
वराग्य एव गगन ध्वनि क प्रति आकषण ही कवि क प्रेम पथ का प्रथम
गापान है ।^२ सद्गुरु का गन्त वाण गगत ही उमक हृदय कपाट खुल जात
हैं । उम अमर पुरुष क स्थान पर पृच कर कवि रहस्य की प्रतीति कम
प्रकार कराता है—

मध मइय मे इवत सिंहासन लाल भइर जडानारे

ता पर राजे सच्चिदानंद सदगह कोटि कोटि गारापल माना रे ।

अनत सखी तहाँ अनत सखा है निरखी नेन सरानारे ।

हास विलास रास रग रचियो मान ता ग सुखतानारे ।

अगम अगोचर अदभुत सीला नेति नेति निगम निरानारे ।

रज मोरार रवि के घरणे सेजेसेज समाना र ।

मधय म मारार मान्त्र की वाणा काव्यत्व म पूण मरत एव हृदय
स्पर्शी है ।

गबरावार्द (सवत् १८१५-१८६५)

य मून डू गरपर का बहनगरा नागर था ।^३ इनका माता पिता क
नाम अविन्ति है किन्तु इनका एक बहिन थी जिनका नाम चपु था ।^४ कहा

१ र भा मो वा प० ७२ पद २५ ।

२ भारी सगन गगन धून लागी रे

मनषी बेरागी रे बेरागी ।'

३ श्री गु सा प की रिपोर्ट ।

४ देखिए— गबरी कीतन माला प० २७ ।

जाना है कि गवराबाई का विवाह पाँच छ वर्ष की अल्पायु में ही हुआ गया था और विवाह के एक वर्ष बाद ही इनके पति का देहांत भी।^१ माता पिता न पुत्रों के बंधन्य भार का कुछ हल्का करने के हेतु गवराबाई का पठा लिया कर चतुर बताया। इनके बढते हुए ज्ञान एवं योग में प्रभावित शाहू राजा गिर्वामिह (म० १७२६-१८४२) ने उनको त्रिग एक भव्य मन्त्र बनवाया था।^२ अपनी उत्तरावस्था में यह बागी चला गया था।^३ इसमें पूर्व के कुछ समय तक मधुरा और वृन्दावन टन्गी थी। सन् १८५५ चतुर्गुवना नवमी का बागी में गया तब पर गवराबाई ने समाप्ति की। इनके गुरु के सम्बन्ध में अधिक पान नहीं गुजरात में श्री नाम की एक और गवराबाई हा गयी हैं जो क्लेशभाय दण्डव था।

गवरीबाई के पृष्ठकन पत्नी की मर्यादा हैं मातापाल मेनागिया ने ८१० बताया है।^४ गवरी कीतन माला में भा गवराबाई के कुल ६१० पत्र संकलित हैं किन्तु संकलनकार ने इसे अपूर्व मग्नह बताया है।^५ जो गु मा प की रिपाट के अनुसार इनके नीति तथा उपपन्न के पत्र की मर्यादा ६१२ है। इन पत्रों की भाषा गुजराती राजस्थानी तथा हिन्दी है। परन्तु कटगना करणा मत मवाया र्गण आदि माग्वाणी पत्रों का पत्र भा इनकी भाषा में यद्यत्तत्र लिखा द जाता है। हिन्दी में निम्न गद्य इनके पत्रों का मर्यादा तीन-तीन में ऊपर बठती है।

निम्न के साथ-साथ कृष्णि नगुणभक्ति के पत्रों की रचना भी की है जिनमें गवरी गीरी की मा तन्मयता दास पत्नी है। उक्तपत्राद्य—

होरी लले मदन गोपाल।

मीर मुकुट कट काद्यती आछे चचल नन विपाल।^६

गवरीबाई के काव्य की गवरी महा विगपता एवं नारी हृदय का अटल आस्था है—

१ तीसरी गवराती साहित्य परिषद-सेत्र गुजरात नी स्त्री कविया

न विद्यागौरी नीलकण्ठ।

२ गवरी कीतन माला प० २६।

३ गु मा मा स्त प० १७७ — श्री कृष्णमाल भवेरी।

४ राजस्थानी भाषा और साहित्य प० २०१।

५ विप्रिण—गवरी कीतन माला प० २७६।

६ गवरी कीतन माला पृ० ५५ पर ११७।

प्रभु मोकु एक भरोसो तिहारो ।

तुम समान मेर और न दूजो सरल भुवन निहागे ।^१

उनकी साधना का प्रथम मापान मगुण परक है जसकि पयवसान निगुणभक्ति म दूजा है । था क का० गाम्ना न ८० गुजरात की गाना श्रया कविता लिखन वाला कवियत्रिया म नव प्रथम स्थान दिया है । एमा लगना है कि गवरावा^२ की कविता पर मनमन तथा कृष्णभक्त कवियों का कविता का समानांतर प्रभाव पना था । उनके द्वारा रचिन नियियाँ एक बार तथा अनेक पना म गराओ और आरमा ब्रह्म जीर जाव मन जीर माया^३ का गान्त एव मनोहर भरना अविरत वह उगा है । अलाउत अखगाता का भाँकी तथा पना की भूनक गवगजई क पना म हम प्रत्यम रूपण त्रिवाई देता है । उगाहरगाव—

अखा—

ज्ञान घटा चढ़ि आई अचानक ज्ञानघटा चढि जाई ।

अनुभव जल खरखा बडी बु दन कम की कीव रनाई ॥^४

गवरोबाई—

ज्ञानघटा घेरानी अब देखो

सतगुरु की किरपा भई मुज पर

गद्व ब्रह्म पहचानी ।^५

तुलनीय—

अज गिब याको पार न पाव

सो हरि अहीर के घर चोर चोर ।

—गवरोबाई ।

ताहि अहीर की छोहरिया

छद्दिया भरि छाछ पे नाच नचावे ।

—रसखानि ।

१ गवरो कीतनमाला पृ० २५१ पद ५५८ ।

२ घर भीतर गिरघारा पाया सुख सागर घर मे गाविंदो

माईरो ये देह म दीपक जररो । —गवरोबा

३ मोर मन गगा प्रगटो दे माइ अडसठ तीरथ तन भीतर पाइ ।

अब भन्कद नहि जाइ र भरभगुफा बिच उधाति कु जोई ।

—गवरोबाई

४ अक्षयरत्न' पृ० ६८ पद ११ ।

५ 'गवरो कीतन माला पृ० २४७ पद ५ १ ।

ववनपुरी (म० १८१५-१८०१)

य मूत्र उज्यपुर क निवासी थ। चा नाम वय का जन्म म उमरठ आकर बस गय और अंतिम समय तक वहा रह। इनका जन्म मवन् १८११ क आमपात तथा निवाण मवन् १६०५ माना जाता है। राजवगा कुत्र म जन्म लेने क कारण तथा वायावस्था म चारण एव भाषा क समय स इनका भाषा पर चारणो प्रभाव स्पष्ट परिनिमित्त हाता है।

सवन् १८४० म ईडर क मागानाय क अन्धारे म आकर इन्ने मजपुरी अथवा मजापुरी स गुरु दीप्ता त। उमा समय म य पूण वरगा बन बठ और गुरु क समाधिस्थ हान पर इन्ने अपन नाम म गद्दी प्रस्थापित की। इनक नाम के अन्धारे ईडर डाकार चारण उमरठ आनि स्थाना पर हैं। ६० वय का आयु म इन्ने समाधि ले। इनक पिप्या म वायागपरी भाजपरी तथा कुवरत्त आनि का नाम दिया जाता है। कहा जाता है कि कुवरत्त का मन्त्रमा ववनपुरी क २०० भजन कटाप्र थ। उनक मुग म मुना दूआ हिन्नी का एक भजन रचिण जा प्राचान काव्यमाता ग्रंथ २ म प्रकाशित है—

घुन घर नेहेर नेहेर घर बस्ती दम जागे तन सोता है,
सास हमारे हम सासन ये, दम जागे तन सोता है। टेक
एसी घुन मे रना जोगेसर, बबनाल रस पीना है
बबनाल रस पीओ जोगेसर बबनाल रस पीना है।

× × ×

ध्रव पिवा प्रहनादे पिवा, पीव सद्गमन बाला है
दास बेवल न एसा पीना, एक नाम की आसा है।

य पूणुन अभन् ब्रह्मज्ञाना थ। इन उनक मन था ही नहीं।^१ यहाँ तक कि कृष्ण चीना म भा उहाँने अन्न का हा निरूपण किया है।^२ ववनपुरी न पन्ना क माध-गाय कवता बरह मागा मानवार आनि का ले रचना की है। इनकी भाषा हिन्ना गुजराता मिश्रित है। इनक द्वारा रचित गुजराता पन्ना म भी हिन्नी और राजस्थानी क प्रत्यय एव निभक्ति चिह्न

१ मनषा मेरा भया मगन गगन मगन घुनि गावता है

कुदनाद तिपासन बटे बाजा छत्रोग बजावता है।

२ गीतोड के पार गीतोड गाजते

कृष्ण स्वामी रूप भूय कहावे।

मिलत है। हिंदा में इनके द्वारा रची हुई कतिपय गद्य रचनाएँ उपन्यास होती हैं।

त्रिविक्रमानंद (सं० १८१६-१८७६)

य जूसर क जीतीच्य ब्राह्मण थ।^१ बचपन में य साधुआ के अखाड़े में जाया करने जिसका प्रभाव में अनायास ही इनके मन में बराबरी जाग उठा। कहा जाता है कि १५ वर्ष का अवस्था में इनका पाणिग्रहण संस्कार किया गया जहाँ विवाह मंडप में मावधान की पुकार सुनते ही य गठ-बंधन ताड़ कापी की ओर चल पड़े। किमी आनंदराम शास्त्री के सम्पर्क से ब्रह्मचर्य कौमुदी का अभ्यास किया था। कापी में य पन मूरत पधारे जहाँ ब्रह्मचर्य अपने जावन की उत्तरावस्था व्यतीत की।^२

रचनाएँ—त्रिविक्रमानंद रचित अनेक हिन्दी गुजराती ग्रंथों का उल्लेख मिलता है।^३ इनकी हिन्दी रचनाओं में सबसे कवित्त ध्यान तथा उत्कृष्ट काव्य क कथा की मस्या विपुल है। भाषा खूनी बाला क अधिक निकट है जिसमें गुजराती पंजाबी ब्रज अरवा फारसी आदि विभिन्न भाषाओं क गन्ना की पंचमन विचनी है। भाषा का दृष्टि में इनकी कतिपय पत्तियाँ दृश्य हैं—

१ मैं देह्या दिलदार तेरा ह्याल समजते

तु आदी निरगुण सगण भया समजते।^४

२ सुनबे सयाने मन मेरा इक लागे सागा सालसु।^५

मत्त निमलदास सं० १८२०-१८३५)

य मूरत क प्रभावगाना मत्ता में म एक थ। इनका पिता का नाम बानाजा तथा माता का नाम पावताबाई था। मत्त निमलदास पट्टेच इला माधव थ जिन्होंने अपना प्रथम धूना दापी बन्ना में रमाया। एक पञ्चानु अपने प्रिय पिण्य प्रभुताम क आग्रह पर य मूरत पधारे जहाँ अन्तिम समय

१ फा गु म प्र पृ २२।

२ राधाभक्तो पृ १४३।

प्रा क ते क पृ० ७८-७९।

४ अ भ स भाग-१।

५ वही पद १८६।

तक रहे तथा स० १६३५ भाग वनी १, सामवार को इहान सूरत म जोवित समाधि ना ।^१

सूरत क अय सता की भाँति इनकी वाणा पर भी सूरती प्रभाव स्पष्ट परिचयित हाता है । इनकी भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है । वही वहा ब्रजभाषा का पुट भी लिखाई द जाता है । भाषा की दृष्टि मे इनकी कुछ पक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

‘सत मतवाला रे रामरस पीबता रहे ।^२

× × ×

‘सघराघर व्यापी रहे देला तो कई खाली नहीं ।^३

× × ×

जब गद्य शब्द कियो परकागा, तबसेँ ज्ञान मयो मन मे र ।^४

हिन्दी म उनके द्वारा रचित पानमूलक बारहमासा-वर्णन विनिष्ट रचना है जो निश्चय हा गुजरात का श्रेष्ठ ज्ञान-बारहमासिया म स एक है । इहानि ब्रह्म-मासात्कार का अनुभूत आनन्द मधुप्र प्रकट किया है । गद्य-ब्रह्म नाम-स्मरण तथा गुरु की महत्ता का प्रतिपादन निमलदाम का वाणी की सबसे बड़ी विशेषता है ।

सत निमलदास के अनक गिप्य थे किन्तु उन सभी म प्रभुदास का नाम विनाप उल्लेखनीय है । प्रभुदास की हिन्दी-वाग्गा की हृन्प्रतियाँ दाडी बन्ना क ययोवृद्ध मत जमनादास क पाम सुरगित हैं । इहानि भा नाम का महत्ता का प्रतिपादन किया है ।^५

वस्तो विश्वम्भर (उपस्थित काल स० १८३१)

गुजरात म वस्तो नाम के प्राय दो व्यक्ति हुए । एक हैं वस्तो बोडिया (उप काल सवन् १६२४) जा बारम अथवा बीरमघ क लडवा पाटीदार म ओर दूसरे हैं वस्तो विश्वम्भर (उप काल सवन् १८३१) जा

१ ‘राणा भक्तो’ पृ० ११६ ।

२ अक्षयाम भजन माता भाग २ पृ० १३६ ।

३ वही पृ० १३६ ।

४ वही पृ० १३७ ।

५ मैं बीवाना नाम का, मोहे पीब मिलन की आस ।

अब तो मिलि हो जायके जहाँ गुरु निमलदास ॥’

सभात के पास सरखपर पार क निवामा थे । कुछ विद्याना न इन दाना का एक हान का मभावना प्रकट की है^१ तथा कुछ ने भिन्न होन का किन्तु निश्चित रूप स कित्सा न कुछ नही कहा । नवीन गोथ खाज क आधार पर अब यह स्पष्ट कहा जा सकता है कि वस्तो विश्वम्भर वस्तो डाडियो स नितान्त भिन्न है ।^३ य वस्तुन सभात निवामी थे जो सरखपर पार म रहत थ ।^४ आज भी उम जगत् पर उनका समाधि बताया जाी है । नरसा महता का तरह य भी अपनी भाभी स अस्त होकर जावन दिया बदवन वात थ । पत्न म कणाग्रनुद्धि न हान क कारण भाभी स कटु वचन सुनकर य घर त्यागकर चर ग्ये । कहा जाता है कि रामानन्-मम्प्रदाय क विमा विश्वम्भरदासजी म उनका समागम हुआ तथा उन्म स दाया ग्रहण का था । उनक पत्नी में वस्तो क साथ विश्वम्भर नाम मभवत नामानिए सलग्न है । उन्होंने अपन गुरु के गुरु श्री अमरदास की स्तुति म एक छाटी-मी रचना अमरपुरागाना भी लिखी है । इसम वस्ता क गिष्य किमा विन्नुदास का उन्मव भा मिलता है । वस्ता ने हिन्दी तथा गुजराती दाना म काव्य रचना की है । इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं—

गुजराती रचनाएँ—(१) वस्तुविनास (२) अमरपरीगीता
(३) वस्तुगीता (४) माम (५) कक्का (६) तिनि (७) गरवी
(८) प्रभातिया (९) पत् ।

हिन्दी रचनाएँ—(१) साधीप्रथ (२) गुरुगाता (३) मगत ।
(४) घाम (५) फुक्कन पत् ।

वस्ता न कुन मित्राकर २६४३ साधियाँ निव्या हैं जिन्ह ८८ अगम म विभक्त किया गया है ।^५ इनक हिन्दी पत्नी की मख्या ३ ० स ऊपर बन्ता है । य पद विभिन्न राग रागिनिया म रच गय हैं । उन पत्नी की सबसे बन्ता

१ देखिए— साहित्य प्रवेगिका—हिमतलाल अजारिया पृ १ ।

२ कविचरित भाग १ २ पृ० ३२३ ।

३० अनिलकुमार त्रिपाठी (सख विगय) २ थी साहित्य परिषद की रिपोर्ट पृ० २३१ ।

४ गुजरात मध्ये सभात नाम सरखपुरमाही छे निम्नघाम ।

५ टखीसमें एशतालीम साधी बोल्या सिद्ध

अक्षर अक्षर मुक्तदाता पूरणपद की विध ।

—साक्षा प्रथ ।

निपेता यह है कि विषय के अनुरूप इनमें विविध रागा की योजना की गयी है। रागा के अनुरूप विभिन्न गुच्छा में वस्ता न ६३ धाल भा लिख हैं। इसमें प्रनीत होता है कि उह समीत का विगिष्ट पान था। इहाने राग विहाग,^१ व वन्ग^२ म मिथ्या भेषघारी तथा भाव भवया की सुलकर भत्मना की है। यथा—

‘बुन का एक डोमर बनाया कहे समुद्र का घाहा लावु ।
जे पीयाहले मोती लेर फेर पीछा माह्या आवु ।
ऐसी बात कबु ना नीपजे सुधरा समजे साने ।
नुधरा तो हां हां कहावें ।

वस्ता न स्पष्ट गाना में यह कहा है कि एसे भेषघारी योग नद्विया के आहार करने वान पागन का डोग बनाकर घर घर पट भरन वान और तान की तरह रटी हुई बातें मुह से बहने वान हात हैं जा मन के वान हान हैं। वस्ता तथा अग्या में वस्तुगत भावगत तथा वनागत अपूर्व साम्य मिलता है। अत्र एव चर्हिमांस्य के आधार पर भी य अग्या प्रणानिका के भाव प्रनीत होत हैं। यथा—

- १ वस्तावृत सभा अप्रनामित रचनाएँ अस्ता मन्दिर (बहानवा बगना) में उपनम्प हुई हैं।
- २ अता नाम का शिखर प्रयोग इनकी रचनाओं में जगह-जगह मिलता है।
इनका पाषिया में अग्या प्रणानिका के तदमात्राग गापात्राग नररि आदि का उल्लेख मिलता है।
- ४ इत्यान अमंगीता का भाति वस्तुगाता गुग्गाता तथा अमरपुरागाना का रचना बटवाबट्ट का है।
- ५ अग्यात्रा एव उनका प्रणानिका के पर्यवर्ती गतों द्वारा प्रयुक्त अनेक विगिष्ट गानों का प्रयोग वस्ता का रचनाओं में भी हुआ है। वाकन बाहर नुगगा मुगगा, तामर गुग्गाविग्गा भावमभात आदि नमी प्रकार के विगिष्ट गान प्रयोग हैं।
- ६ हिन्दा कवियों का जानाश्रयी परम्परा का अनुसरण करना हुई उनका एक रचना यगल ना है त्रिनम आठ आठ पतिया के

१ वस्तुगत पद १८।

२ वही पद १२६।

दम मगल गीत हैं। नानाष्टक परम्परा की एक महत्वपूर्ण कृती हम इसमें दीख पड़ती है। प्रत्येक प्रगतन के अंत में साथी है। घीरा के गात्रिन्दरम की भाँति वस्ता न वमम अतररम का प्रयोग किया है जो अपन में विगिष्ट प्रयोग है। बिल्कुल अक्षा क अक्षररस का तरह।

- ७ वस्तावाणी के गुणके में एक निप्य न इन प्रकार का वस्ता प्रणालिका प्रस्तुत की है—

माधवानंद
|
गरीबानंद
|
सक्ष्मीदास
|
गोपालदास

नरहरदास
|
कूवाजी
|
प्रह्लादनाम
|
अमरदास
|
विश्वम्भरनाम
|
वस्तानाम
|
विष्णुनाम

प्रस्तुत प्रणालिका की प्रामाणिकता सदिग्ध नहीं है किंतु यना अवश्य प्रतिभासित जाता है कि वस्तो गोपाल और नरहरि का परम्परा के नाना-कवि हैं। इन्होंने भी दादू की भाँति सहज-साधना पर भार दिया है—

नां हम नाचे ना हम गाथ ना हम तान मेल्लाथ।
ना हम पायो पड़े पढीत की सृ-य अमर पद पाथ।'

कवि का कहना है कि - मैं स्तुति पूजा किसका करूँ ? किस भाषा में और किसके आगे ? साधना भी किस करूँ ? सभी ता उमका लिया हुआ है । तन मन उमी का दन है । नमी उमके चरणा म अर्पित करें ? किन्तु लगना ता उमकी अर्द्धांगिना है । नामरूप का धारणकर्ता भावही है अन्न जन भी उमी क हाथ म है । वही गता है और वही भाना है । अत श्री चरणा म ममर्पित करन योग्य मरे पास है हा क्या ? महज की साधना म देव-मन अथवा बाया-वना का कोई काम नहा । यही गान्न पान भी थापा है । हत्याग की साधना का कवि न मुष्टि का है किन्तु वह म साधना की अनिम मात्री नहीं मानना । वस्तो क गना म इठयाग नो साधन का गुद करन का प्रतिक्रिया है एमी गगन गुफा म गुन का देना का यह एक प्रयास है ।^१ वस्ना के प एव भाविया म निम्न-पान क माय मत्तकता का अपूव सम-वय हुआ है । वान क विराट मुभ का वगन कवि न कितन मुत्तर गना म किया है —^५

एक बाध्य आसमान में, एक सगी पाताल
छोटी मछल है नहीं, है बड़ी मछल-काल ।

उपनिषद क पूणमित् पूणमादाय का कवि न स्पष्ट भाव प्रवण गना म इग प्रकार अभिव्यक्त किया है—

‘पूरण-पूरण क प्रम स पूरण-पूरण की छोट,
वस्तो विन्वम्बर स्वय भरत, एक ही भ्रमभोल ।’^६

प्रम क निरूपण म कवि न मयाग एव विद्योग की गनी अनुभूति क माय आत्मा का तनाकार क लिया है ।^६ कवि न विरह का वर्षाश्रु की तरह विरहश्रु का है ।^७

१ वस्तो कत पद ५-११७ ।

२ समरपण मु करु सेइने मुजमें कइना माहार । पद-५ १२० ।

३ वस्तो कत पद-२० ।

४ अग चेतावनी को ।

५ ताग्री प्रप, अग चेतावनी को-२० ।

६ भर मन कएु और है सोगो के मन और
पियु बिजोगे कामिनी बने कोण से टोर ।

—अग विरहोजन को साखा-८ ।

७ विरह बिना हरि ना मते कीजे कोटि उपाय
मायो सीचे पुसतु श्रुतु बिण फल ना पाय । —वही ताग्री-१६ ।

अभियक्ति के क्षेत्र में वस्तु वस्तु अला की कानि का ही नानी कवि है जिसकी भाषा अला का तुलना में अधिक सरल एवं बाधगम्य है।

कुवरनाथ (ज. म. सवत् १८२६ मृत्यु सवत् १९३४)

इनका जन्म कासार जीर अजरपरा क बीच (जिला खेरा) सर नामक तानाब के पास हुआ था। कीर की तरफ इनके विषय में भी यह विद्वन्ती प्रसिद्ध है कि इन्होंने जगत् में अज्ञानक वानक स्वरूप धारण किया। सर स्थान पर अब भी इसकी साक्षात् एक छोटी सा मन्दिर विद्यमान है। ऐसी मान्यता है कि सातोल्या क्षत्रियवर्ग क किसी घर में इनका लालन पालन हुआ था। जोड़ गाँव (जिला खेरा) क श्रीकृष्ण स्वामी महाराज से इन्होंने दीक्षा ग्रहण की। इन्होंने सारसा में कुवरपथ का प्रवर्तन कर कवल ज्ञान का सन्तान दिया।

रचनाएँ—आध्यात्मिक ज्ञान से भरपूर कुवरदाम क प्राय १८ ग्रन्थ उपलब्ध हैं —

- | | |
|------------------------------|--------------------------------|
| १ मुक्त चिन्तामणि । | १० तियिग्रन्थ ज्ञान गिरामणि । |
| २ स्वाचार पत्रिका । | ११ गिणापत्री । |
| ३ हम तावेव (ज्ञानगीता) | १२ पञ्चम स्वसमवेत् । |
| ४ विज्ञान मन्त्रत मगिताप । | १३ भवतिमिर भास्वर । |
| ५ विश्वभ्रम विवस । | १४ परम सिद्धांत प्रणव कान्तर । |
| ६ अगाध गति । | १५ कवल प्रकाश । |
| ७ अन्तत नखद चिन्तामणी । | १६ गुरु महिमा । |
| ८ विवबोध चामरा । | १७ अगाध बाध । |
| ९ ज्ञानभक्ति-वराग्य निरूपण । | १८ भजन यजन उपासना विधि । |

उनके अलावा कुवरनाथ रचित फुलबन पत्र रेखा निधि कवन्ता मन्त्रा उमग उनाम आदि मितन हैं। इनका भाषा का स्वरूप अपरिच्छिन्न है। उल्लेखनीय मुक्त चिन्तामणि से कुछ पत्तियाँ दृश्य हैं —

ऊ परम सक्त सामृत पन नीज्ज बल कहलोग ।

एक अन्ध स्वराज जेहन क स्वय प्रकास सधेय ॥१॥

तही पत ने बीज सृष्ट रधी जब बोहोत जतन कर जास ।

तीनही साहाय करन मूर सरजे ईद्वर छद्वर रधी तास ॥ ॥^१

परब्रह्म-ज्ञान में उनकी गला विविध दृष्टान्तपूर्ण तथा तब-ममत्त है।

हम-नामक स्वाचार-पत्रिका मुद्रित चिन्तामणि आणि इनकी महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं। हमतानक का दूसरा नाम जानगाना भा है जा १० अक्षरों में विभक्त एक वृत्त रचना है। इसका याजना सातों एक रेखा छटा में बा गया है। विषय का दृष्टि स समक जातगत हिन्दू मुस्लिम दाना पक्षा क सम्म रिवाजा की चचा करत हुए कवि न बाह्याचारा की व्ययता सूचिन का है तथा सच्चे कवन पत्र का बाध कराने क हेतु ग्रहा निरूपण किया है। राम और रहाम का एवना का बाध करत हुए कवि न इन दोनों स परे अपने निहग भय का चचा हम प्रकार की है—

‘राम रहेमान रमुज आ कुज म राजधी शत्रु कामम एका ।
बहे कुबेर हिन्दु मुसलमानते हम पाराध निहग भेला ॥’

—हम तालिब खग ६/५ ।

छ भगों में विभक्त स्वाचार-पत्रिका में कवि न सम्प्रदाय क माधु सत महन्त और हरिजना क आचार नियम प्रतिपादित किए हैं। मुद्रित चिन्तामणि में कवि न मय प्रथम ममार की उत्पत्ति का वगल किया है तथा अत में मान आचार विषयक बाधपूर्ण पत्रा का रचना का है। एसा प्रसिद्ध है कि महात्मा छोटम प्रारम्भ में कुबेरदाग क विपिक रहे चुके थे ता कबेर दाम क शय्या का प्रतिनिधि करत-करत एक दिन स्वयं महात्मा बन गये। प्रस्तुत ग्रन्थ क अंत में छोटम की कविपय गुजराती गरविषीं मकवित हैं जिनमें कवि न कुबेरदाम क प्रति अपना अगाध श्रद्धा प्रकृत का है।^१

कुबेरदाग क अधिकार पत्र उपलक्षणपूर्ण है जिनमें कवि न ज्ञान धराय आत्मप्रतीति आचार विचार तथा गान आराधना पर विगय भास दिया है। इन दृष्टि स कुबेर का एक पत्र दविए—

‘ज्ञान की गुन अरुम्भ न सून्धन जोर बना सेइ शोले हो ।
विचरण सेहमी देहेगी रर जैसे ज्ञान-कपाट न छोले हो ॥
स्वाय धराय ओरन कु देखावे अंतर माया का दयाना हो ।
हमा होइ करो मुल बोले करणी का गणमाना हो ॥
करत क्या नित पाठ सोइ की, प्रदना गांठ नव छुटे हो ।
बहे कुबेर सत ताइ तामभ यिना पकर पकर नाम सूटे हो ॥२

१ छोटम साहब कुबेर कीषा अन करी
ते मरने ली छ टरवानो गमजो ज्ञान ।

—हस्तप्रति १११ अ० पु नदियाद ।

२ हस्तप्रति ११३ अ० पु नदियाद ।

निरात (स० १८३६-१८०२)

समस्त गुजरात को एक मूत्र में बाँध देने वाली अथा सत्कर धीरो तक की ज्ञान-गृहणी में निरात की वाणी एक अविन्द्य कड़ी है। इनका जन्म करजण तालुका के अन्तर्गत दयाण गाँव में सन् १८०३ गार्हिल वंशीय राजपूत कुटुम्ब में माना जाता है।^१ डा० मुन्गा ने इनका समय सन् १७७० ई० से १८४६ ई० अर्थात् सन् १८३६ से १६०२ तक माना है।^२ तथा इन्हें जाति का पाणीयार कहा है।^३ इनका पिता का नाम उमदसिंह तथा माता का नाम हनाबा था। मानव्य की अवस्था में गाँव की पाठशाला में इन्हें पढ़ने के लिए बिठाया गया। बचपन से ही यथावार्ता के शौकीन थे तथा स्वभाव से अत्यन्त स्नेही एवं मिननमार थे। बरणभट्ट में किसी रामानन्दी-माधू के पास इनका अधिक उत्कृष्टक बतायी जाती है। निरात काव्य में किसी साधू का इन्द्र गुरु मात्र देन वाला भावताया गया है। जनश्रुति के अनुसार निरात हर पूर्णिमा को हाथ में तुलसी लेकर डाकार जाया करते थे। कहा जाता है कि रास्ते में किसी मुसलमान ज्ञानी ने अपने उपदेशों से इन्हें सगुणोपासना से निगुण-साधना की ओर अभिमुख कर लिया।^४ यद्यपि स्वजनश्रुति को कोई ठोस सांख्यिक आधार नहीं मिला पाया है। तथापि श्री गावधन त्रिपाठी ने इस किंवदन्ती पर विचार कर लिया है।^५ प्रा. का. मा. भाग १० में किसी मिथा माह्व का इनका गुरु बताया गया है।

निरात ने दो विवाह किये थे जिनमें १२ सन्तानें थीं। इन्होंने

१ निरात काव्य—

० Gujarat & Its Literature—Page 258

३ —Do— Page 264 तथा प्रा. का. मा. भाग १० में भी इन्हें पाठोद्धार कहा गया है। देखिए—पूमिका

४ निरात के ५ पद विशुद्ध सगुण साधना के मिलते हैं (देखिए—निरात काव्य पृ० ६४२) जिनकी भाषा गजराती है।

५ On of these Niranta got his philosophy even from a Mohom dan these people present the various shades of Akho Kabir and their poems generally consist of detached and isolated songs—G M Tripathi—Classical poets of Gujarat and their influence Page 63

अपना सबसे पहला उपनाम भिवागाम का निवासी भीवाभाई मियावत को लिया। इनकी प्रसिद्धि दिन बढती गया और इस प्रकार उनके गिष्या की संख्या पून म हमारी से रेवातट पश्चिम म कावा से दहन भाडभूत और भूवा तक उत्तर म महिसागर से लेकर दक्षिण म मूरत तक फैल गयी। बढीन म इनका निवास सामायत प्रेमजा भगत क यहाँ हुआ करता। कहा जाता है कि बनमाती कहानजी चौक (बढीन) म एक बार उनकी भेंट स्वामी सहजानंद से हुई था। उनका वाक्य गारुण्य भी हुआ किन्तु दानो ही ज्ञान चित्त के अन्तर निराकरण न निकलने पर ज्ञाना चुपचाप लौट आय। निरात क समकालीना म प्रातमदाम सहजानंद और कबरदास का नाम विनाय रूप म लिया जा सकता है जो अपने अपने संप्रदाया का स्थापना म लगे हुए थे। निरात को भी इच्छा हुई और अपने मामन ही निरभिमाना सात-सेवी, ज्ञान क मुमुक्षु तथा सरन प्रवृत्ति क १६ गिष्या को चुनकर उन्हें निरात संप्रदाय की गद्दी स्थापित करने का आदेश दिया। इन गिष्यो न गुरु की माना तथा चारण (चरण पादुका) लेकर अपने-अपने घर म गुरु गद्दी स्थापित की। निरात की गिष्य परम्परा म प्रथम १६ गिष्या के नाम इस प्रकार है—

नरेश्वर दयालदास गाविंदराम मध्वाराम गामगाम मायबाजी सुमानमि मायवराम खुगानगाम बावाभाई बापू साहब मायकवाक भीवाभाई रामदास बगारसी मा मध्वाराम (बापाडिया) और कंगवलास।^१ इनमें गाविंदराम तथा बापू साहब मायकवाड का नाम विनाय उल्लेखनाय है। बापू साहब न बढीन म तथा गाविंदराम न मूरत म गद्दी स्थापित की। गाविंदराम क चार गिष्य थे—

रामगाम गणपतराम रणछाडगाम और धामजीभाई। गणपतराम क हिंसापना का संप्रह भजन-नागर भाग १ म मिलता है^२ जो योग मायना क उत्कृष्ट उपाहरण कह जा सकता है। पट चक्र की आवण म पटपत्रा तथा ब्रह्मरथ तक पहुचने का गिनियों का बगन किया गया है।^३ उनका अर्थ पना म आम-दान को विनाय महत्व लिया गया है। कवि ने आत्मा का जन को मछली कहा है जो भव-सागर म गान गा-गा कर भक्त

१ निरात-काण्ड पृ० २१।

२ भजन नागर' (स सा क का) भाग १ पृ० १७७

३ वहा पृ० १७७ १७९ पर १६०, १६१-१६६।

गयी है।^१ उनके पदा की भाषा हिंदी गुजराती मिश्रित है।^२ निरात काय में वह मवाडा मुखार (वर्क) कहा गया है। चौथा साहित्य परिपत्र का रिपोर्ट में सीसादरा (भरुच जि०) निवामी किमी गणपतराम का उक्त मिनता है जिसे ब्राह्मण जाति का बताया गया है तथा उनक द्वारा रचित द्वादश मास वंदात के स्पुट पद होरियाँ आदि रचनाओं का विवरण भी दिया गया है। यह कहना कठिन है कि ये दोनों सत्त कवि एक ही हैं। निरात सम्प्रदाय के सत्त कवि गणपतराम ने अपने पत्र में अपने गुरु गोविन्द का स्पष्ट उल्लेख किया है। इस सम्प्रदाय के अन्य गिष्या में बापू माहक गायकवाड तथा रणछोन्दास के गिष्य अरजण भगन (अजुन भक्त) की हिंदी वाणी का विषय महत्व है। निरात के गिष्या की संख्या काफी थी जिसमें तीन गिष्याओं (गिरिजावर्क वरणासीवर्क जमनावाड) का नामोल्लेख भी मिलता है जो थोड़ी बहुत कविता करना जानती थी।^३

कवित्व—निरात की कविता गान्तरम में ओतप्रोत है। गहन साध्य तथा योग से सम्बन्धित पदा की रचना की है जिनमें यम नियम तथा उनके भेद आसन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधि इत्यादि पर खूब प्रकाश डाला है। माध्यमज्ञान के पत्र में जड और चतय का स्वरूप निरूपित कर निरात ने बताया है कि उनके मम्मिनन में जगनात् का आविर्भाव हुआ है। चतय पुरूप और जग प्रकृति के योग में महत् तत्त्व उत्पन्न हुआ और महत् तत्त्व में से अहङ्कार की सृष्टि हुई। यह अहङ्कार तीन प्रकार का है (१) तामस—जिसमें पंचमहाभूत और उनके काय पत्र हुए। (२) राजस—जिसमें रचियाँ पदा हैं। (३) मात्सिक—जिसे बुद्धि निर्मित है। इनके पश्चात् निरात ने सूक्ष्म गरीर कारण-कारण जाग्रत आदि अवस्थाओं का भी वर्णन किया है।^४ उन्होंने बताया कि तथा विभिन्न अवतारों का अपन काव्य का विषय बनाया है। अवतारवाच का वर्णन कर गहन कहा है कि एक ही ब्रह्म को जानने में मुक्ति मिलती। वस्तुतः य नाम महिमा के गायक ब्रह्मजानी कवि थे।^५ माय प्राप्ति के

१ भजन सागर (स सा व का) भाग १ पृ २३३-२३४ पद २४५।

२ वही पृ २५-२३५ पद २४३-२४६।

३ प्र का मा भाग १० पृ २-३।

४ देखिए—प्र का मा भाग १०।

५ नाम निरजन में अधिक नाम एक निज नाम

सब घट में ध्याया रह नाम निरजन टाम।—निरात काव्य पृ० २-१०।

निरात इन्होंने निगुण भक्ति तथा पानवान पर जोर दिया है। निरात का दार्शनिक विचारों की विगद व्याख्या आग की गई है। इन्होंने भूलगा कवित्त बु डतियाँ तथा रेखा छत्ती म अनक हिन्दी पत्ता की रचना की है, जो भाव एव भाषा का दृष्टि म अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।^१ इनकी रचनाएँ धान, गरवा गरबी हारी कत्तारो आदि विभिन्न राग रागनियाँ म उपलब्ध हाती हैं जिमम इनक संगीत प्रेम का भी पता लगता है। निरात न एक जगह कत्तार राग की प्रणामा करत हुए उम सभी रागों का दवता कहा है—

बेदारो जब कीजिए मुल्लमे जपिये राम,
सब रागन को देखे है, बेदारो महाधाम।^२

दाव्य मोटव तथा भाषा मोटव की दृष्टि स निरात का एक पद दृश्य है—

कीन बात पर राजी न जानु पिपा कीन बात पर राजी,
मे रे अजानी कछु मरम न पाऊँ, यहोत बनाई बाजी
बाजी से बाजी मोल सेलें मूले हैं पडित बाजी,
गिय सनकादिक नारद आवे भारे पद द्रह्यानी
अप्य उपासी को कीन गिनत है बादन मत माँ बिराजी,
बाजी की में जाऊँ बलिहारी, बाजी ऊपर सब राजी
बाजीगर को कोऊ न मूजे ऐसी अकल मत छाजी।^३

इनकी भाषा अरबी फारसी तथा गुजराती मिश्रित हिन्दी है।^४
निरात की भाषा का सम्बन्ध म डा० मुन्शी न ठीक ही कहा है—^५

His outlook was philosophic and his language
simple and charming. He used urdu words more freely
than any other poet of his time

१ निरात-काव्य पृ० २०४ से २१३।

२ प्रा का भा भाग १० पृ० १६५।

३ निरात काव्य पृ० ६५, मजल १३८।

४ आजकल माँ चलक सब छन गया, देख देख दागीना कछु न रह्या।
एक नाम साटेब बिना सब पना मेही बरी रा भ्यारा रे, गाफल बना।

—निरात-काव्य पृ० १०७।

सत होथी

य मोरार साह्य क प्रिय गिध्या म स एक थ । इनका ज म नकनाम गाँव म सधी मुसलमान जाति क अन्तगत हुआ था । इनक पिता का नाम मिक्दर था । कहा जाता है कि पिता का मोरार माह्व की भजन मडली म हाथी की विशेष उठक बठक पसन्द न थी । कई बार वे अपन पुत्र क सामन अपना विरोध दर्शा चुक थ । किन्तु इनका कोई प्रभाव न दखकर अन्त म एक दिन पिता न अफीम का प्याना लेकर कहा— या ता तू पी अथवा मैं पीता हूँ क्योंकि इस प्रकार का बदनाम जावन जब सधी कौम म नही सहा जाना । पुत्र होथी ने विष पी लिया और कहा जाता है कि पिता का अत्यन्त जाशचय हुआ जबकि उन्होंने अपन पुत्र को प्रात काल उसी भजन मडली म पाया । पिता न अपना भूल स्वीकार करते हुए पुत्र क पर पकट लिए ।^१ कुछ भी हो मत हाथा आडम्बरहीन सरल हृद्य भक्तात्मा थ जिनक हृदयशाही पद आज भी दासहाथी क नाम स अत्यन्त लोकप्रिय हैं ।^२ था मघाणी न इनक विषय म उचित ही कहा है कि— जय पयो की तरह म् मुस्निम सत क उद्गारो की भा यहा विगिष्टता है कि इनम अनामा एकापामना का बोध है ।^३

जीवणदास

इस नाम क प्राय तीन कविया का उन्व मिनता है । एक है तुनावाडा के पाम मही नदी क दक्षिण तट पर स्थित मीमलिया गाँव क निवासी जो जाति म वन्थ थ । अस्तानी का गिध्य परम्परा म य जवा क गिध्य लाननाम क गिध्य थ । जावनगीता इनकी प्रमुख गुजराती रचना है । हिन्दी म तिम हुए इनक भजन पन् जोर माणियाँ उल्लेखनाय हैं । अकरमण नामक इनि म कुन ६४ माणियाँ हैं जिनका भाषा गुजराती हिन्दी है । दूसर कवि हैं वत्रवती (वात्रक) टा क विनार अवस्थित मच्छ नगर क निवासा जिनकी कछ गुजराती गरबियाँ (प्रा का सु भाग ४

१ सोरठी सतवाणा (भवेरचन्द मेघाणी क्त) पृ० ४२ ।

२ एक उदाहरण— भक्तिभाव बिना नाँह आवे

गुरुगम ऋषु पावे रे

सतो ऋषु पावे रे ।

— भजन सागर भाग १-२ पृ० ७६४ ।

३ सोरठी सतवाणी पृ० ४२ ।

पृ० ३०८) प्रकाशित हुई हैं। तीसरे मन्त-कवि रवि भाणु सम्प्रदाय में सम्बद्ध हैं जो गोडन में तीन काम की दूरा पर घाघावन्तर गाँव में निवासी थे। यह जानि क चमार थे। इनके पिता का नाम जगाभाई तथा माता का नाम मामबाई था। इनके पदा में दामी-जीवन की छाप मिलती है क्योंकि इन्होंने ब्रह्म का उपासना दामी भाव में की है जिस पर बष्णुवा प्रभाव माना जा सकता है।^१ इनका स्वस्व में अब भी कुछ लोग उन्हें स्त्रीभक्त ही समझते हैं। इनके गुरु का नाम भीम था। भीम श्रीकृष्णम के शिष्य थे। कहा जाता है कि जावण न प्राय मत्तर गुरु बदने, किन्तु पूजा थडा कहीं भी न जम सकी। अतः मन्त भीम की भेंट हात ही इनके हृदय में पेट गूना गया।^२

इनकी दा पत्नियाँ बतायी जाती हैं। उनका भेष घरवारी शान हुआ भी मस्ताना था। इनके पत्न मारीबाई के पत्न की तरह अत्यन्त सावप्रिय हैं। मर्यादा का दृष्टि में भी इनके पत्न की मर्यादा काफी बतायी जाती है। मृत पारय चमत् का चार कर्म भाग करने बाद एक चमार के हृदय में काव्य-जीवा क भनभनान हुआ कामन तारा का स्वर मचमुच आचय हुआ है। इनके एक पत्न में कवीर का-मा मर्यादा है—

मैं मस्ताना मस्ती सेतु मैं दीवाना दगन का टेक
क्षमा छद्म सई आगे होतु मैं सिपाई हू मेदमका
घनन घनन छडियाला बाग ताल परवाज अब मरदगा
शूय निखरगद सेन चलातु, नाम नचातु नवरगा।^३
गुजरात में इनका एक अत्यन्त सावप्रिय पत्न है—

मीर तु अबडांत रूप कयाँची साखी रे
मीरसो भरत लोकमाँ आव्यो

ह मार! तू एसा रूप कहीं में न आया। इतना मुन्द मार
मृगुनाक में अवतरित हुआ है।

१ इनके सम्बन्ध में एक लोकगायता भी है—

जीवण जग माँ जागिया नरमाँ चो विद्या नार
बासो नाम दरसाकियु ए राया अबतार।

२ जीवण ज्योत जागियु, भीम दगटिया भाण,
बापडा घर दीवो हूवो जीवण पडे जण।

३ मञ्जुसार भाग १, पृ० ३५३ पर ५।

बापूसाहेब गायकवाड

बापू का समय स० १८२५ स १८६६ व आसपास माना जाता है ।^१ अर्थात् य निरात जीर धीरा व समकालीन थ तथा इन दाना व गिष्य भी । उनके प्रथम गुर धीरा थे और द्वितीय निरात । बापू साहेब जा वचपन स ही सतप्रेमी थे अपनी गोठडा (बनौटा) की जमीन का प्रबंध करन जाया करत थे वही उह धीरा का समागम और उनके उपनेगा का नाम मिला । जिस समय निरात बढौटा पधारे बापू का उनके उपनेगा का भी लाभ मिला और इस रूप म इन दोना सता का बापू पर काफी प्रभाव पडा । कहा जाता है कि पिता न जब क्रोधित होकर उह घर स बाहर निकाल दिया य बेपरवाह होकर निकल थ ।

बापू भी प्रीतम धीरा और निरात की तरह पान मार्गी थे । इहान हिंदी गुजराती म बहुत म पन गरवा राजिया और काफियो की रचना का है । बापू रचित धारह मासा वगन भी उल्लेखनीय है जिसम विरह की अपेक्षा ब्रह्मानुभव का मस्ती है । सक्षप म उनके का प का एक ही विषय है—ब्रह्मानान और वराग्य । मध्यकालीन गुजराती साहित्य क विज्ञान समीक्षक जा अनतराय रावल न इनक विषय म कहा है— कवि क रूप म प्रीतम तथा निरात की अप ता बापू का कवि हृष्य अता एव धीरा की वाग्नि का विगप प्रतीत होता है ।^२ बापू साहेब व चाग्रया भी अला की तरह परम्परागत रूटिया गव वल्लुव गाक्त योगी जन यति ऊच नीच का भन रवन वान ब्राह्मण्य और धम क ठकदार ढागी मुलाओ और महात्माआ पर वरारी चान करने वान हैं । उगाहरण क निर उनका एव पन दमिा—^३

निमात्र पढतां तो बोले विसमिल्ला रे

भाई रे निमात्र पढतां तो बोले विसमिल्ला रे ।

तीस रोज रलता और मच्छियों कु चखता,

ओर बकरे का काटता है गल्ला

साहेब का जोब बदे मार बयों त द्वारा,

एक बदी खाने दोजख मे टल्ला रे २ ।

×

×

×

१ कबीर-सप्रदाय पृ० १६७ किर्गनसिंह धावडा ।

२ आ अनतराय रावल (मध्यकालीन गु सा) पृ० २०० ।

३ प्रा का भा पय ७, पृ ३ ।

आसुरी जवानी का सहोत डर हेगा

और साहेब की सग करो सल्ला

बापु कहे नाम एक अस्ता का सचब हे

और रफे दफे होमगी तरी बल्ला रे ५ ।

बापू की मातृभाषा यद्यपि मराठी थी तथापि इनक पदा की भाषा शुद्ध गुजराती अथवा मधुवकी हिन्दी है। इनक लिखा पदा म गंगा का अनगड यात्रना है फिर भी भाषा चाण्णार एक जायगपूण है।

भोजा (स० १८४१-१८०६)

गुजरात म एम नाम क एकाधिक कवि हए हैं। एक हैं मुग्रमिद 'चावगा बाल भाजा और दूसर हैं मूर्गन निरामा चद्रहामा-श्यात क रचयिता।^१ मूर्गन म एम कवि क नाम म (भोजा गेरी) एक परिचित गरा बताया जाना है। नवमाग म भाजा भगन की एक दहरा भा है।^२ इन दाना कविया क एक गान का काई टाग प्रमाण उपरुध नहीं हाता। हमारा सम्बन्ध चावगा क रचयिता म है।^३

भाजा की सावत्रिया भी कहा जाता है। एम गत हाता है कि इनक पूर्वज मारनी क निवासी थ किन्तु किमी कारणवग बहुत बान म काशियावाड स्थित जन्तु क पाम ग गानान नामक गाँव म जा बस थ। इमा कुटुम्ब म बरगनगाम नामक बगवा क यहाँ मवन् १८४१ म भाजा भन का जम हुआ। इनकी माता का नाम गगावाई था। भाजा क दा भाई भी बतए जात हैं जा इनक प्रभाव स बरमण भत तथा जमा भत क नाम म प्रमिद हुए। कहा जाता है कि बारह बप की अवस्था तब य दूध पर हा पन। बगवा परिवार म जम नन बान दम ग्रामीण बानक को विद्यासम्कार ता कनी स मिलना किन्तु इनका अवयव कहा जा सवना है कि बहुश्रत हान म इनका दाए बगनत तथा गमार का भात भ्रयन विगान था। श्री ब्रजारिया न इस सम्बन्ध म कहा है कि भाजा का जावन यनि

१ मूर्गन निवासी भोजा की एक रचना 'सहोना (गुज)

—प्रा का मु भाग ४ पृ० २८८ पर सप्रोत है।

२ वही पृ० ३०१।

३ इनका विानृत जीवन परिचय शृ का दो भाग ७, तथा प्रा का भा घप ५ में दिया गया है।

अधिक सस्वारजय होता उमका योग तथा अय अभ्यास किमी याग्य विज्ञान गुरु क पाग हुआ हाता ता भोजा भा जवा की तरह कुछ दे सकता था । ऐसा न होन स भाजा की कृति म हृदय की ऊमा प्रतीत हाती है प्रामाणिकता और जीवनभर का तमयता प्रतात हाती है किन्तु उमम सस्कार नहा नान नहा यवस्या नही जोर इस प्रकार साहित्यकार क रूप म उसकी गणना सभव प्रतीत नही हाता । किन्तु इस प्रकार के विचारो का पुष्टि दना भाजा क प्रति सरासरा आयाय हागा क्याकि सस्कारा क अभाव म भोजा भा वाणी कही भी कठित नही हो पायी है । हृदय की ऊमा प्रामाणिकता तथा तमयता ही ता एक सच्च कवि हृदय की निगानी है । फिर सत साहित्य म जा कुछ भी लिखा गया अनुभव क बन पर ही । साधना और सच्चाई की यह पगडडी अवस्थित जहूर है किन्तु सिद्धत नगी । भाजा क चावलो म चावुक कीसा जा फटकार है उम हम भोजा की असम्कारिकता नही मान सकत । प्रश्न यह है कि जवा के छपा के बाद भी भाजा का चावला निवन का आवश्यकता क्या पडी ? वस्तुत भाजा के चावला म तत्कालीन ममाज त्पान म इस प्रश्न का सर्वोचित उत्तर है ।

भाजा क गुरु क सम्बध म कोई प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध नहा हाता । जनश्रुति क अनुसार उहान गिरनार की ओर स आने वान किमी रामनवन नामक सत म दा ता ती थी । भाजा क विवाहित हान का भी कान् राम उतक नहा मित्रता । व अजपा जाप करत थ । क्या जाता है कि शरह वष क अथर तपावन म एक जनक मिद्धिया प्राप्त हुइ । इनकी प्रमिद्धि भा चागे आर फनत गगा । एम विषय म एक प्रमिद्ध जनश्रुति है कि मोगर क निवानजा मिठनगर (मिठावा) न इनकी परी ता उन क निण एक बार इनम बुद्ध मुनन क निण जाग्रह किया । कहा जाता है कि भाजा न १५० चावला का रचना उमा समय का था ।

भाजा क मभा चावला का पता नहा गगता क्याकि उहान न ता म्यय हा इनका सङ्ग किया जोर न किमा म करवादा । व अपन गिप्या को मुना मुना कर यात करान थ । इनक गिप्या म जवा भगत का नाम विणय उल्लेखनाप है । य वारपुर क निवामा थ जिनका प्रमिद्धि भा इतना अधिक थ कि इह गुजरात म जवा जल्पा क नाम म अभिहित किया गया । अपन इहा गिप्य क आश्र पर भाजा क वार वारपुर आय थ और

बही सन् १६०६ में इन्होंने अपना देह त्याग लिया। वीरपुर में भाजा का देवन (मन्दिर) है जहाँ उनकी पादुकाएँ पूजा जाती हैं। फनहपर (अमरती के पास) में भी इनकी एक मूर्ति है जहाँ उनके पैरों और भाजा की पूजा होती है।

भाजा की प्रतिष्ठा उनके चारों ओर फैली है। गुजरात में जहाँ अग्रा के छप्पा दयागम का गरवी प्रातम के पद धीरा की कविताएँ प्रसिद्ध हैं, वहाँ उनसे ही आकर एक रवि के माघ भाजा के चारों ओर भी गाये जाते हैं। चारों ओर की भाषा गुजराती है। हिन्दी में इनका कोई स्वतंत्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। इन्होंने धान बानन होरी धमार आदि अनेक राग रागिनियाँ में पद्य की रचना की है। भाजा के पद्य में शुद्ध हिन्दी के दृश्य सुनभ हैं। इनकी भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है जिसमें दृश्य गद्य की बहुलता है। कहीं-कहीं पर एक ही पंक्ति में क्रिया का रूप हिन्दी और विभक्ति का रूप गुजराती दीव्य पड़ता है। इनकी कविता के कुछ उदाहरण यहाँ—^१

‘सतो दिया रे अगम पर डरा,

पिया पियाला जैसे प्रमत्त करे नायकु निरहया नेरा।’ मतो-१

× × ×

सतो मुनिबरे मन समझाया

समझी चर्या गन्ध सदगुरु का तो परब्रह्म कु पाया। मतो-१

पाँच कु मारी पञ्चोत्त कु यारी काम शोध हठाया।

हृद बेहृद अनहृद गति आवो, कम बिना नी जाया। २

कम धम नी छमणा गागे, एक सासन से लेहे लाया।

अवता हुता तो सयता बीघा सगिया फेर सलाया। ३

मनोहरदास ‘मञ्जिवदानद’ (म० १८४४-१८०१)

य जूनागढ़ के नागर गुरुप थे किन्तु अग्रा का भ्रान्ति इनके जीवन में भी कुछ समा घटनाएँ घटित हुईं जिनके कारण वे मन्व्यामी होकर घर में निवृत्त हुए। मन्व्यामी होने पर इन्होंने अपना नाम बदलकर ‘मञ्जिवदानद’ ग्रहण कर लिया। इनके विरागा होने के प्रायः दो कारण बताये जाते हैं—

१ प्रा का प्रथम पृ० ७७।

२ बही पृ० ८१।

- १ जूनागढ क वप्पगव स्मार्तो क भगना के कारण य परेगान हो गय ।
- २ एन पर भी जाली त्स्तावेज बनान का आगेप लगाया गया किन्तु आनेप से निर्दोष साभित होन ही य विरामी जीवन व्यतात करन लग । सबत् १८६५ म एहान सयाम ग्रहण किया ।

मनोहर स्वामा अनेक भाषाआ के जानकार थ । सस्कृत फारमी गुजगती तथा टिटा पर इनका अधिकार था । यही कारण है कि इनकी बाणा म जहाँ विषय बविध्य है वहा भाषा बविध्य भी है । इनके बष्प विषय को हम दो भागा म बाँट सकत हैं —

१ केवनात्त सिद्धात्ता का निरूपण ।

२ बाह्याचार मन्त्रि गमन मूर्तिपूजा तीथात्न आदि का विरोध स्वरूपनान द्वारा मोम प्राप्ति तथा सद्गुर की महता पर विरोध भार लिया है । असा और मनाहर स्वामा टाना हा अत्तवात्ता हैं और दाना न ही अत तप जप सेवा पूजा अचना धम कम आदि क बाह्याचारा का म्पन्न किया है ।^१ अत्तर सिफ एतना है कि असा न आत्म प्रतीति का बात बहा है और मनाहर हृत्य ग्रिय का भट गानना अधिक उचित ममभन हैं । असा क धन हर घावा नव हर का भाति मनात्तर ने भी पून पडिता की मिनी उडाया है । असा का बाणा मनोहर म अरिक् गूट है और जहाँ मरन है वहाँ भय भा है किन्तु मनात्तर म मात्र भावपरक मरनता है । एतना निश्चन है कि आत्म पान जावमुनि और पावण्डिया का भडाफोर खुनकर किया है ।

जीतामुनि नारायण (उप का १६ वा गती मध्य)

असा प्रगाठिका क अत्तगत जानामुनि का नाम पट्टव टूण माधना म

- १ तप तीरथ अत स्नान दान जप विध विध कर उपाय हृदय प्रिय को भेत् न जाणे अयला आसड छाया ।
- २ मन कलिपुग म भाड मवया परम हम बना बत्त मया कुत्सित नरकु कृत कनया । बहाविद्या की बात न जानत नुम भननन ठुम निनन बजया ।

लिखा जाता है। इनकी वाणी में हम वदात का सातवीं भूमिका के दान हान हैं जहाँ इन्होंने गान की ताली उगा कर ब्रह्माण्ड का द्वार खोला है।^१ इनके गुरु अथवा प्रणालिका के प्रसिद्ध सात हरिकृष्ण थे। सात जीतामुनि का जन्म यद्यपि नडियाद में हुआ था किन्तु इनका निवास-स्थान मूरत के निकट अमरानी गाँव में था। इनका आश्रम अश्वनाकुमार के सामने बाल तट पर स्थित है। इनके प्रमुख गिण्या में कयाणनाम मोहननाम ब्रह्मचारी (मूरत) आदि का नाम दिया जाता है। नडियाद के सातराम महाराज को भी इनका गिण्य बताया जाता है।

सात जीतामुनि का रचनाशा का मग्रह 'सातवीं वाणी' के अंतर्गत हुआ है। इनकी हिन्दी रचनाएँ इस प्रकार हैं—

- १ काफर बोध । २ सातियाँ (हिं गु ६४)
३ पं—२२ ।

'काफर-बोध' इनकी विविध रचना है जिसकी गीतों में प्रकृत है। ऐसा प्रसिद्ध है कि गुजरात के मुस्लिम शासक मुजफ्फरशाह के राज्य में रतनबाई नामक किसी गाँव की लड़की को मरकाय भोकरा द्वारा तंग किया जाने पर जीता मुनि ने वाणना को एक पत्र लिखा था, जिसमें 'मुगीद' और 'काफर' की तुलना की गयी है तथा अन्त में हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रतिपादन है।^२ वाणना का निरास गय इस पत्र का नाम ही 'काफर-बोध' है। इनकी साक्षियाँ में भा हम हिन्दू मुस्लिम एकता का बोध होता है।

हिन्दू ध्याये देहरा, मुसलमान ध्याये भस्त्रिब
परीर वहाँ ध्याये जहाँ दोनु की परतीत ॥^३

- १ सातवीं साणी गद्य की पूट गया ब्रह्मांड,
साहेब निरासा देखिया सात द्वीप नथ छण्ड ॥'

—सातवीं वाणी पृ० १५८ ।

- २ 'साओ पार ! दो गद्य का करो विचार !
कौन बोलिए काफर कौन बोलिए मुरिब ?

× × ×

ये पानी की पराग क्या हिन्दू क्या मुसलमाना
पौर जिसका अवलम्ब है, मुरिब कुरस्त ध्याना ॥

- ३ सातवीं वाणी पृ० ३० ।

कल्याणदाम (ममाधि स० १८७६)

य सत जोतामुनि के गिष्य थ जो पूर्वोत्तम म उनन (जि रभात) के पाटादान थ । अखा प्रणालिका क अन्तिम अवधूत क नाम स रहू अभिहित किया जाता है । अपन गुरु की देवज्ञेयी इहान भा काकर बाध की रचना की है जिसम नाम स्मरण तथा जत माधना पर बन किया गया है ।^१ हिन्दी गुजराती मिश्रित भाषा म रचित अजर बाध तथा कुछ पत्र भी इनक नाम म मिलन है । माया का इहान धूतारी कहा है क्यकि उनका मोहिनी का रग पूरे जगत पर चला है । उनकी धूनता स जा बचा है बहा अवधूत है—

धूतारी माया ने सब जग धूत लियो
धूते बिन रह्यो एक ऐसी अवधूत है ।^२

रगीलतास (उपस्थित बाल स० १८६०)

य मूरत के निवामी थ । जाज स १५ वष पूव रागा जाति म इनका जन्म हुआ था ।^३ बचपन स ही य गात एव विवका थ । तापी के अन्विनकमार घाट पर य सत्मग क निमित्त जाया करत थ । नीलकण्ठ घाट क किमी विष्णुतास नामक महात्मा स कहाने दी ता ग्रहण की था । हिन्दी म इनक शारा रचित रगीन मतमइ कुरानिया छत्र म योजित एक वृहत् रचना है । सत-काव्य म इन प्रकार की यत्र एक अनूठी कृति है । काव्य शीघ्र की दृष्टि स बड़ उगाहरण दृष्टव्य है —

पछी अब बघों सो रहा देख मयूरी गौर
गाफील बना लोलीय अब तो भये री मोर ।
अब तो भये री मोर पार हो गये सवेरा
कसे रह्यो अचेन, यर्ग को पार न तेरा ।
रगालदाम' सुभाव क विरया नर तन ग्योपा
विष्ठा त्रिपय क बीव हाय पामर बघों गोया ?

१ जिंकर की फिर कर पद छूटे सबे दित ग्हेर घर मीज पाये
मुरत की मुरत म सार् मम्मुख लडा, प्रम का प्रात मु तुगत आवे ।'

२ सतनी बाणी पृ० १७२, पद ६ ।

३ रागा भक्ता भाग १ पृ० ६१ ।

और भा

हरिमुख देण यावरी मन में लखी उदाम
इत उत आवत देणती लगी हृदय की प्यास ।
सगा हृदय की प्यास, बिलखत नना मोरे
बुरी बिरह की पीर यार बहूँ मालुम तारे ।
रगोतदाम जग भूलक, लाल की देख मुलाई
मग में लखी है यावरी हरिमुख देखत आई ।

रगोतदाम का भाषा में प्रामाणिकता एवं भावा में माधुर्य है। दाहा तथा भूतगाद्यना में उन्होंने पान भक्ति तथा वराग्य के अनक पर रच है।

सतराम (उप काल म० १८७२-१८८७)

मगर मन्तराज के डायरी के आधार पर सतराम अन्तःप्रणालिका के मन्त प्रनात हान हैं तथा जानामुनि उनके गुरु ठहरते हैं किन्तु सतराम का मुख्य गरी नडियाण का गुरु प्रणालिका में जानामुनि का कहा भा उल्लस तथा मित्रता और न सतराम का गिष्य परम्परा के जावित मन्त जानकाणग ही म तथ्य का स्थावार बरन के लिए तयार है कि सतराम का सम्बन्ध प्रमथ एवं परम रूपण अन्तःप्रणालिका में था।

सतराम पहुच हुए गिद्ध मन्तरमा के जा रमन हुए म० १८७२ के आमषाम नडियाण में पधार। उन्होंने नडियाण के हुगावई वाले मग म गीव म दूर लकात म्यान में माधता की धुनी रमाया। वे एक गिनी के वृष के पान तन में बठ रहते और विमा में यावता न बरन किन्तु मन्त की समरकारिक गिद्धिया में प्रभावित हास्य गात्र के नाग उनका जार गिष्यत मग। नित प्रतिनिधि बरनी हुई जनमन्तिना का दयकर सतराम अन्तःप्रणालिका का तयार हुए लकिन पू जानाई नामके एक अनन्त भक्त न राम्ण में मटक के ना— मवक का छाता पर अपन परमण रगत हुए जाण्य। पू जानाण के आण पर सतराम के गय। उन्होंने म० १८८७ में बरन पर जीवित ममाधि नी और उनका अण्ण यानि पापणार्ता में उकर आया। बरन में कथित ईन्तर मरन है मग ममागम और मन्तराज का पानन उनका बाप मग था।^१

बावन साखिया म रची हुई गुरु बावनी को छाँकर उनके किमा अय हिंदी ग्रंथ का उ तब नहीं मिलता । गुरुबावनी की भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है जिममें गद्दा को खूब ताडा मरोग गया है ।^१ इमका प्रतिपाद्य है—गुरुनिश तथा मन की एकाग्रता । पन् सग्रह म इनक द्वारा रचित कतिपय हिंदी गुजराती साखियाँ भी मिलती हैं । यथा—

१ सतराम मत जानिए दूर देश को यास
नेनु से अतर भये प्राण तमारी पास ।^२

२ सुरत गदमा जा मीली हुआ प्रम प्रकाग
सोही कहावे सतराम राममिलन की आग ।^३

इनकी मुख्य गद्दी नडियाद म है । अय मंदिर बडौला उमरठ पादरा करमसत् कायती और र्टु म पाय जात हैं । मुस्त गद्दी (नडियाद) का गिष्य परम्परा व्म प्रकार है —

सतराम महाराज (स १८८७)

↓
लक्ष्मणराम (स० १८८७-१९२५)

↓
चतुरदाम (स १९२५-१९४१)

↓
जयरामराम (स १९४१-१९४७)

↓
मुण्णराम (स० १९४७-१९६१)

↓
माणिकराम (स० १९६१-१८७३)

↓
जानकराम (स १९७२ म)

सतराम क अत्रिकाग गिष्या न गुजराती म रचनाए का ^३ । लक्ष्मणराम क कद्य हिन्दी पन् अवश्य मिलन हैं ।

१ दक्षिण-पदमग्रह पृ० १२७ प्रकाशक-मनराम मंदिर नडियाद ।

२ पन्मग्रह पृ० ६ ।

३ वही पृ० १० ।

नभू स० १८५८ स म० १८२८ वि०)

य नडिया निवासी श्री दानतराम महता क मुपुत्र थ । उनका जन्म स० १८५८ क आमपाम तथा अयमान स० १९२८ माना जाता है ।^१ य दाम्त्र कवि हान क माय माथ उच्चवाटि क भक्त तथा ग्रहणानी थ । बाठ वष का अवस्था म ही य काव्य रचना करन लग थ । हिन्दी गुजराती और ससूत पर इनका अच्छा अधिकार था । इनक सम्पूर्ण कृतित्व का हम ५ भागा म बाट सकत हैं । (१) गुजराती काव्य (२) हिन्दी-काव्य (३) ससूत हिन्दी मिश्र काव्य (४) गद्य (५) चित्र काव्य । मिद्धातन य त्रिगुण उपामक हैं यद्यपि भावना सगुण-वर्णन की आर भा टन पड़ी है । कम उपामना पान भक्ति वराग्य और नीति की चर्चा क साध-भाय हरि लीला वर्णन इन्होंने गरवा गरवा प्रवच घान मगन प्रभात हागी दानरा रेखा आदि म किया है । इनकी कित्ता का परिचय हम राग स्वराज्य बान ज्ञान मतरत्र जम विषया पर निम मय पना म हाता है । इनका चित्र काव्य भा अपन ढग का अनूठा है ।^२ हिन्दी का नभू की किंगिट देन है चित्र काव्य गली जा हम अय सता म सभवत उपलभ नहा हाना ।

छोटम (स० १८६८-१८५१)

उग्रामवी दानी उत्तराध क प्रमुख साता म महात्मा द्यात्म का नाम अप्रगण्य है । भक्ति वराग्य एव ज्ञान का गरिमा छ पूण द्यात्म की वागी सरल एव हृदय सर्गी है । य मोक्षिना क पाग मदानत्र गाँव (त्रि० सत्ता) क निवासी थ । इनक पिता काजीराम मातोरा जानि क नागर प्राहण्य थ । द्यात्म बचपन म ही कुणाप्र बुद्धि थ । पान का भूग का मिथान क त्रिण य सत्क वचन रहा करत थ । पान की अन्म्य भूग न एव त्रिन इनम नीचरी तक छुडना दी और आत्मा का कृति क त्रिण य मलय करन गये । नमन क विचार त्रिणा पुण्यात्तम गिद्धयोगा म इहाने गुण मत्र निया और य पूणत वरागी बन बठ ।

कृतित्व—द्यात्म का गुजराती रचनाआ की मन्त्रा वाचीम स अधिक बठनी है त्रिनका सम्पादन एव प्रकाशन मन्नु मात्त्रि वषक कापात्रय अमन्त्रावा द्वारा हुआ है । इनम म अधिकार्य रचनाएँ आम्नान गनी की

१ नभूवाणी पृ० ९ ।

२ यही पृ० २७५ २८० ।

है। जत छोटम पर आख्यान परम्परा का प्रभाव स्पष्ट रूपेण परितरित जाना है। पुरुषोत्तम योगीनु आख्यान नरसिंह कु वरनु आख्यान मन्त्रमा अत्रक आख्यान आदि इमा काटि की गुजराती रचनाए हैं।

द्वितीय म छोटम कृत साखिया पद भजन कानन जीर लावनियाँ प्रसिद्ध हैं। इनका साखिया पर उत्तरी भारत क मन्त्रा जीर भक्ता की बाणी का विविध प्रभाव पडा है। विगपन कबीर तुलसी रहीम वृत् तथा बिहारी के दोहा की स्पष्ट छाया हम इन साखियों पर देख सकते हैं। उदाहरण क लिए छोटम की कतिपय साखियाँ यहा उद्धृत की जाती हैं—

- १ दुरिजन सज्जन ता घन कीज कोटि उपाय
घोवे नित नित दूध से काग हय न थाय ।^१
- २ मुजन वृष समान है पर उरगाः अमान
फल छाया दे और कु आप सहे नीर ताप ।^२
- ३ निज मत नीकी सब फहे और करे सवाद
काग कहे नहि कोखिला तेरो सुन्दर नाद ।^३

छोटम का कत द्वितीय साखिया का संख्या १५० से ऊपर बढता है।

य साखियाँ १० अंग म विभक्त हैं—^४

- | | |
|------------------------|-----------------------|
| १ कपटी को अंग । | २ दुरिजन को अंग । |
| ३ सज्जन को अंग । | ४ आदर को अंग । |
| ५ आतुरता को अंग । | ६ जीव को अंग । |
| ७ माया को अंग । | ८ विविध विषय को अंग । |
| ९ स्वमताभिमान को अंग । | १० जादमवार को अंग । |

१ कपटी को अंग—कवि न नाति एव उपलक्षण जाना म कहा है कि कपटा क मधुर वचना का विचित्र भ्रूणक भा नहा करना चाहिए क्योंकि वर मार का तरंग जानन म ता मधुर जाता है त्रिभु मरण विषय नाग का करता है फिर मामास का ता जान ही क्या है ।^५ हमारा का कामन एमा काग मभा म नया जाता ^६ जा गुणधीना का गाँव है ।^७ श्री क

१ छोटम कृत साखियाँ १८ (श्री छोटमना द्वाणा भाग ३ पृ० २४६)

२ वही (सज्जन को अंग)
वही (स्वमताभिमान को अंग १)

४ दृष्टिए—श्री छोटम की द्वाणी भाग ३, पृ० २४ - २४६ ।

५ कपटा को अंग १ ।

६ वही ७ ।

७ वही ६ ।

अन्नगत कवि इन्द्रिय निग्रह दाप-मन गान-या तथा घम-वम की चनाबनी ना दता है ।

२ दुरिजन को अंग—दुजन उम काच का फली व ममा है निमर म्पमात्र म हा मार गरीर म पाग का मचार हान गता है ।^१ विपत गप वा एक वाग पत्र द्वारा वगाभूत विना जा सकता है तितु दुजन ता दुश का मिरमीर है जा किनी म वग म नही गना ।^२ विद्यत व ममान जा अपन कथन म अस्थिर गता है ।^३ दूमर व गुग का दखकर जो र्द्व्या करता है वह उम मकधी व ममान दुजन है जा जय व अहित म अपन प्राणो का भी खा बैठता है ।^४ एम लुग नाग नाग प्रयत्न करन पर भी गजन नही बन सकता क्याकि कौद का रोज गज दुग्ध-स्नान करान पर भी यह हम नहा हा जाता ।^५ स्नान ध्यान पूजा पाठ करन म क्या होता है ? जब तक मन म दुष्टता व ध्वर पनपन है । कवि न एम पुग्प का गद्दा का म्वान कहा है ।^६

३ साजन को अंग—साजन पुग्प उम मूय व ममान है जा अगान म्पी अफवार को विनष्ट कर मारामार का भ्रम स्पष्ट कर गता है ।^७ उमका चित्त विपत्तिया व बाणो स डगमगाना नहा वह ता हाग है जा घन वा मकटा चाटे सहन करता है फिरभी दूगता नहा ।^८ कवि न साजन को उपमा उम गभीर मागर स दा है त्रिमम त्रिधा गुणु और गान का बाण कभा नहा आता ।^९

४ आदर को अंग—कवि न इमर अन्नगत उद्यम का महत्ता का प्रतिपादन करत हुए कता है कि इग्दर न भाग्य का रचना उद्यम करन का प्रेरणा म हा का ।^{१०} फन और फुनान ईग म म गुग या दकार उद्यम

१ दुरिजन को अंग २ ।

२ वही ३ ।

३ पल म सावा सो बके पल में बके अनीत

विजयो अद दुजन की, देखो एक्हि रीत । - दुरिजन को अङ्ग - ४ ।

४ वही १२ ।

५ वही १८ ।

६ वही ३८ ।

७ 'साजन को अङ्ग - १ ।

८ वही ५ ।

९ वही ३७ ।

करने पर ही मिलती है।^१ किरतार को रिझाने व लिए हिम्मत हिक्मत सत्यता सुधमविकार तथा परोपकार की भावना का होना आवश्यक है।^२ मनुष्य का गरीर ही परोपकार के लिए बना है।^३ कवि न आत्मी की महत्ता का प्रतिपादन इस प्रकार किया है —

आदर ते भक्ति बनें आदर तें तप त्याग
आदर तें सब छाड के मन धारे वरग।^४
आदर को महिमा बडो केतो कहु बनाय
छोटम सो महापुरुष को जग जग मे सब गाय।^५

५ आतुरता को अंग—मिद्धि व लिए मन म वाच का अपमा आतुरता (लगन) की आवश्यकता है।^६ गुफ का पान भी आतुरता के बिना घट म नहीं उतर पाता।^७ भावहान भाजन पत्र म अजाग ही पदा करगा।^८ यह आतुरता का ही परिणाम है कि प्रिय विरहिणा सता अग्नि बानाआ का दक्ष भयभीत नहीं होती^९ जोर जावाग व मघ तक घरती का प्यास का बुभान व लिए नीच उतर आत ह।^{१०} अन्तर म अनुराग उत्पन्न करन व लिए भी इस लगन का आवश्यकता है।^{११}

६ जीव को अंग—चनती हुई दह को दग प्राय सभी जीव जीव चिन्तन हैं किन्तु जीव का रूप अभी तब सन्नेहात्मन ही है। उम वेत् उपनिषत् और पुराणा म वायु रूप तजल्प अणु रूप अगुष्ठ प्रमाण अन्न प्रतिविव ब्रह्म आभाम जविनागी अगागी आदि नामा म अभिन्न किया है किन्तु जाव वस्तुन जत् और चनन क वाच का गया कल्पना मात्र है। जाव जिम ममय तुरीय पत्र का प्राप्त कर गता है ता वत् स्वत गिव बन पाता है। कवि न जाव व विषय म कवीर का भाँति हा कहा है—

जाय गया तुम्ह्या पद जीव गिव हो जाय,
गिधु म सिधय मिह्या दूत भद न रहाय।^{१२}

१	आत्मी को अङ्ग	६।	७	आतुरता का अंग	३।
२	आदर को अङ्ग	— १३।	८	वही	४।
३	वही	१८।	९	वही	१०।
४	वही	७।	१०	वही	१२।
५	वही	४०।	११	वही	१७।
६	आतुरता का अङ्ग	— १।	१२	जाव का अंग	६।

७ माया को अग—कवि ने माया को नभ की उम ध्यामलता के समान कहा है जो म्यून गरीर म सूक्ष्म बनकर परिख्याप्त है, जिसे पकड़ना मुश्किल है।^१ मन का वृष्णा ही वस्तुन माया है।^२ यह्य का आभास ही ही माया परना अपने आप विनाम हो जाता है।^३

८ विविध विषय को अग—इसके अतगत कुन पाँच सागियाँ ह जिनम कवि न विविध चलावनियाँ दी हैं। उनके अतगत सजन दुजन की पुनरावृत्ति ही प्रनीत होती है।^४

९ स्थमतामिमान को अग—कवि का कथन है कि इग समार म स्वयं का बुरा कहने वाला कोई नहीं।^५ कौवा कभी काकिल क सुंदर ना की प्रगमा नहीं करता उतूक रात्रि का ही मराहा करता है और कबवा भार की प्रनीत म रात भर किलनाता रटना है। प्रत्येक अपनी स्थिति म मगहूम नजर आता है।^६

१० आत्मसार को अग—कवि न आत्मसार को निगुण की मना म अभिन्ति करत हुए उम मन् रज और तम से परे बताया है।^७ धुधा वृषा उग्रे निद्रा राग द्रव रज्जा, प्राण, अपान ध्यान जम मरण रूप गोक स्मृति चिना विवेक वराम्य अह और मद म विलग होकर ही निगुण आत्मा का मार प्राप्त किया जा सकता है।^८

छोत्रम का मागिया म इग प्रकार हम कवि का साथ जीवन दृष्टि स्ववहागमान तथा सूक्ष्म निरीक्षणगति के दगन होते हैं। उनके पर भी अनुभव की आग म तप तेस स्वर्णिम कग हैं जो बजन हैं ता सगीन की ननभनाट लवर—

जेने रग न साग्यो राम को
से मर पामर झूड़ गमार रे,
सेने महि ठरी की टार रे।

हिन्दी म इनक शारा रचित बोधमुधा नामक वृहद् ग्रन्थ का उल्लेख मिनता है किन्तु अब यह अनुपलभ है। भक्ति धम महिमा नामका एक अन्य वृहद् हिन्दी ग्रन्थ मिनता है जो छोत्रम रचित है। छोत्रम की कथा

- | | |
|----------------------------|---------------------------|
| १ 'माया को अग' २२। | ५ स्थमतामिमान को अग' १। |
| २ वही २३। | ६ वही २। |
| ३ वही २५। | ७ आत्मसार को अग' १, २, ३। |
| ४ देखिए 'विविध विषय को अग' | ८ आत्मसार को अग ६-२८। |

करने पर ही मिननी है ।^१ किरतार का रिझान के लिए हिम्मत हिकमत सत्यता सुधमविकार तथा परापकार की भावना का हाना आवश्यक है ।^२ मनुष्य का गरीर ही परापकार के लिए बना है ।^३ कवि न आन्तर की महत्ता का प्रतिपादन इस प्रकार किया है —

आदर ते भक्ति बनें आदर तें तप त्याग,
आदर तें सब छाड के मन धारे बरग ।^४
आदर की महिमा बडो, केतो बहु बनाय,
छोटम सो महापुरुष को जग जग मे सब गाय ।^५

५ आतुरता को अग्र—मिद्धि के लिए मन में बाध का अपाग आतुरता (लगन) की आवश्यकता है ।^६ गुण का ज्ञान भा आतुरता के बिना घट में नहीं उतर पाता ।^७ भावहीन भाजन पट में अजाण हा पदा करेगा ।^८ यह आतुरता का ही परिणाम है कि प्रिय विरहिणा सना अग्नि चानाआ को दख भयभीत नहा होती ^९ और आकाश के मध तक धरती को प्यास को बुभान के लिए नीचे उतर आता है ।^{१०} अन्तर में अनुराग उत्पन्न करने के लिए भी अम जगन की आवश्यकता है ।^{११}

६ जीव की अग—चाती हुई देह को देव प्राय सभी जात जात चित्तान हैं किन्तु जीव का रूप अभी तर सन्नेहारमन ही है । उन के उपनिषद और पुराणा में वायुरूप तज्ज रूप अणुरूप अणुप्रमाण ब्रह्म प्रतिबिम्ब ब्रह्म आभास अविनाशी अगाणी आदि नामों में अभिहित किया है किन्तु जाव वस्तुतः तत् और चनन के बीच का गया कल्पना मात्र है । जाव त्रिम ममय तुगाय-पत् का प्राप्त कर जाता है ना वह स्वतः गिन बन जाता है । कवि न जाव के विषय में कबीर का भाति हा कहा है—

जीव गया तुगिया पदे जीव शिव हो जाय
गिषु में मिधय मिहदा इत भद न रहाय ।^{१२}

१	आन्तर की अङ्ग	६ ।	७	आतुरता का अग्र	३ ।
२	आदर की अङ्ग	- १ ।	८	वही	४ ।
३	वहा	१८ ।	९	वही	१० ।
४	वहा	७ ।	१०	वही	१२ ।
५	वही	४ ।	११	वही	१७ ।
६	आतुरता का अङ्ग	— १ ।	१२	जाव की अग्र	६ ।

७ माया को अग—कवि न माया की तम की उम श्यामलता व नमान क्य है जा म्यून गरार म सूक्ष्म बनवर परिव्याप्त है जिस पकडना मुक्ति है ।^१ मन का तृप्ता ही वस्तुतः माया है ।^२ ब्रह्म का आभास मोन न माया परन्तु अपन आप विनीत हो जाना है ।^३

८ विविध विषय को अग—इसके अन्तगत कुन पाँच साखियाँ हैं जिनमे कवि न विविध चेतनावनियाँ दा हैं । इनके अन्तगत गजन दुजन की पुनरावृत्ति ही प्रतीत होना है ।^४

९ स्वमताभिमान को अग—कवि का कथन है कि इस समार म स्वय का बुरा कहने वाला कोई नहीं ।^५ कौवा कभी काबिल व मुन्तर ना की प्रणामा नही करता उनूक रात्रि का ही मराहा करता है और चकवा भार की प्रतीका म रात भर चिन्ताता रहता है । प्रत्येक अपनी स्थिति म मगून नजर आता है ।^६

१० आत्मसार को अग—कवि न आत्मसार का निगुण की मना म अभिहित करत हुए उम मनु रज और तम म परे बताया है ।^७ गुषा तृषा उग्य निद्रा राग द्वय, नजा प्राण अपान ध्यान जम मरण तप गाक न्मृति चिन्ता विवेक वराय अह और मद म विलग हाकर ही निगुण आत्मा का मार प्राप्त किया जा सकता है ।^८

छात्र्य की नाखिया म तय प्रकार हम कवि का तीर्थ जीवन दृष्टि प्रबहारान तथा मूर्ख निरीक्षणशक्ति के दान हान हैं । उनक पर नी अनुभव का आग म तप एस स्वर्गिम बग हैं जा वजत हैं ता सगीत का मनमनाह नकर—

जेत रग न साधो राम को
ते नर पामर मूढ़ गमार रे,
तेन नहि ठारन की ठार रे ।

हिन्दी म इनके द्वारा रचित बोधगुषा नामक वृहत् प्रथम का उत्तरय निरता है किन्तु अब वह अनुपलभ है । भक्ति घम महिमा नामका एक अन्य वृहत् त्रितीय प्रथम निरता है जा छोटम रचित है । छोटम का गनी

१ माया को अग २२ ।

२ वही २३ ।

३ वही २५ ।

४ देखिए 'विविध विषय' को अग

५ स्वमताभिमान को अग' १ ।

६ वही २ ।

७ आत्मसार को अग १ २, १ ।

८ आत्मसार को अग' ६-२८ ।

अत्यन्त बोधगम्य एवं प्रभावपूर्ण है तथा भाषा में गुजराती ब्रजभाषा और खड़ी बोली का अपूर्व यम बंध है।

सन महात्म्यमराम (म० १८८२-१९४५)

ब्रह्मचारी आश्रम के महापात्र सन महात्म्यमराम सीमरडा गाँव (जि. सता) के निवासी थे। इनके पिता का नाम हमार तथा माता का नाम मलबाई था। इनके गुरु का नाम महात्मा त्वराम था।

इनके द्वारा रचित निम्नलिखित रचनाएँ मिलती हैं—

- १ छोटी चिंतामणि। २ बड़ी चिंतामणि।
- ३ गद्दबाण सुधा सिंधु। ४ भक्त महिमावली।
- ५ कवचा, मास त्रिय इत्यादि स्फुट रचनाएँ।

भक्त महिमावली एक ऐसी विशिष्ट रचना है जिसमें कवि ने पौराणिक सत्ता अभिमानभारत के मराठा सत्ता उत्तरभारत के हिन्दी सत्ता तथा गुजरात के सन भक्ता का भक्तिपूर्ण उद्देश्य किया है।

यस अर्थ में जो महत्त्वपूर्ण बात कही जा सकती है वह यह है कि गुजरात के तानी कवि जसा गोपाल नरहरि और बूटा इन चारों का एक ही गुरु ब्रह्मानन्द का बताया गया है।

अष्टा नरहर बुटा गोपाला

ए-थी ब्रह्मानन्द के बाला। —म बा पृ० ८।

यस प्रकार कवि ने कवच के सग जसा का विज्ञान का प्रयत्न भा किया है। उदाहरणार्थ—

उठो नम को भग बुनु न धना सतसग यो बाल न लागे सता।
ए सुमग बबीर अष्टात्री कने गजमर के मस्त के मोनी बने।

वसुधा का भीति मन्नायमगम न भा अथा के वसुप्रयुक्त गंगा का अनकण प्रसाग किया है। यथा तथा कथा कथा पर ता भावे भाषा एवं गंगा में अपूर्व साम्य मिलता है। यथा —

अष्टा— धन हर धाष्टा नव हरे।

महात्म्यमराम— 'धन तर्ष धाष्टा धर दीया।'

बला— गकटनो भार ज्यम श्वान तारे ।^१

महात्ममराम— आपमा भार ओरनकु बधा तारे,
वस्तु विस्वामे पडे जल खार ।

अनवर (स० १८६६-१९७२)

य विमनगर क पटुन हूण सूफा मान थ । इनक पूवज जरबस्तान क मून निवामी थ जो इस्नाम धम क प्रचाराथ भारनवप चन आय । मुनन माना की वस्ता गुजरात म जस जस वनी उनका आगमन भी पाउन म हआ । विमनगर म इनक पूवजा का जागीरें भेंठ की गया तथा काजी का खिताब भी लिया गया । वही अनवर मियाँ का जन्म हआ । इनके पिता का नाम अजामियाँ जनुमियाँ था । धम क प्रति अनवर की आत्मिक वचपन म ही थी । अनवर क प्रति मन्त्र जावपण जान ले ममार अमार लियापी मन तथा । व प्रारम्भ म ही या ता मत्मग क जान थ जयया एकांत खाना करन । यहाँ तक कि उन्होंने अपनी युवावस्था भा जगना और बचरस्ताना म भन्व भन्व कर गुजार ले ।

अनवर वस्तुन पानी एन मर्मी मत थे । एक जोर जन्म क सूफा थ दूमरी ओर भारतीय दान क गहन अध्यता भी थ । उन्होंने अपन बान म मन दाना विचार धागजा का जपूव ममवय किया था । जवा का नीति अनवर न भी अपनी रचनाआ म स्वय को पाना क कर अभिन्न किया है—

सतन का सेवक हो जानी भेद ब्रह्म का खोचू^१

और

बहेता जानी मुनो भरे सनो अगम पय म पाया रे ।^२

अनवर रचित भजन पन गरबी और गजन अत्यन्त तावप्रिय हैं । इनक भजना म जहाँ भारतीय आयात्म की भन्व हैं गजनों म वहाँ सूफी प्रेमवाण का विस्तार है । भजना म उन्होंने आत्मा का जमरना^३ आत्म

१ अनवर काव्य पृ० ३ पद २ ।

२ वही पृ० ५ पद ४ ।

३ ध्यानम अमर रङ्गीगा रे कास से नहीं मर ना जो ।^१

जल्दत वो गम्य एव प्रभावपूर्ण है तथा भाषा में गुजराती ब्रजभाषा और खड़ी बोली का अपूर्व मम बंध है।

सन महात्म्यमराम (म० १८८२-१९४५)

ब्रह्मचारी आश्रम के मध्यापक सत महात्म्यमराम सीमरडा गाँव (त्रि० खेज) के निवासी थे। इनके पिता का नाम हमार तथा माता का नाम मलबाई था। इनके गुरु बाई मन्दात्मा देवराम थे।

इनके द्वारा रचित निम्नलिखित रचनाएँ मिलती हैं—

- | | |
|---|------------------|
| १ छोटी चिंतामणि। | २ बड़ी चिंतामणि। |
| ३ गद्दबाण सुधा सिंधु। | ४ भक्त महिमावली। |
| ५ कक्का, माम तिथि इत्यादि स्फुट रचनाएँ। | |

भक्त महिमावली एक ऐसी विनिष्ट रचना है जिसमें कवि ने पौराणिक सना दक्षिणभारत के मराठा सना उत्तरभारत के सिन्धा सना तथा गुजरात के सत भक्ता का भक्तिपूर्ण उल्लेख किया है।

इस ग्रंथ में जो महत्त्वपूर्ण बात कही जा सकती है यह है कि गुजरात के पानी कवि जसा गापात नरहरि और बूटा इन चारों का एक ही गुरु ब्रह्मानन्द का बताया गया है।

अथा नरहर बुटा गोपाला

एथो ब्रह्मानन्द के बाला। —म बा पृ० ८।

इस प्रकार कवि ने कर्वाँ के सग जसा का प्रितान का प्रयत्न भी किया है। उदाहरणार्थ—

—यो नम को भग कबु न भता सरमगे यो काल न लागे सता।

ए सुमग कबीर अथाजी कने गजमद्र के मस्त के मोती बन।

बन्ना का भाति मन्दात्म्यमराम ने भी अथा के बहुरूपों का अनन्त प्रयोग किया है। यथा नरा कना-कहा पर ता भाव भाषा एव गना में अपूर्व साम्य मिलता है। यथा —

अथा— 'धन हर धोखो नव हरे।

महात्म्यमराम— धन सँ धाथा धर दीया।

अन्ना— गकटनो भार जयम श्वान तारे ।'

महात्म्यमराम— आपमा भार आरनकु वया तारे,
वस्तु विस्वासे पडे जल खारे ।'

अनवर (स० १८८८-१९७२)

य विसनगर क पट्टे हुए सूफी सत थे । इनके पूवज अरबस्तान के मूल निवासी थे जो इस्लाम धर्म क प्रचाराय भारतवर्ष चले जाये । मुमल माना की वस्ती गुजरात म जैसे जैसे बनी, उनका जागमन भी पाटन म हुआ । विमनगर म इनके पूवजा को जागीरें भेंट की गया तथा काजी का खिताब भी लिया गया । वही अनवर मियाँ का जन्म हुआ । इनके पिता का नाम अजामिया अनुमियाँ था । धर्म के प्रति अनवर की आसक्ति बचपन म ही थी । ईश्वर के प्रति महज आकर्षण होत ही समार जमार लियायी मन लगा । व प्रारम्भ म ही या ता मत्सग के आन य अथवा एकांत खोजा करते । यहाँ तक कि उन्होंने अपनी युवावस्था भा जगला और वदरमाना म भटक भटक कर गुजार दी ।

अनवर वस्तुतः जानी एक मर्मा मत्त थे । एक ओर जहाँ व युवा य दूमरी ओर भारतीय दर्शन के गहन अध्येता भी थे । उन्होंने अपने काय म इन दोनो विचार धाराआ का अपूर्व गम-बय किया था । अन्ना का भक्ति अनवर ने भा अपना रचनाआ म स्वयं का जानी क क अमिन्त्र किया है—

सतन का सेवक हो जानो नद बह का खोपू १

और

बहेता जानो मुनो मेरे शाना अगम पथ म पाया २ ।

अनवर रचित भजन पत्र गन्ना और गत्रय *गन्ना गत्रय ३* ; इनके भजना म जहाँ भारतीय अध्यात्म का अन्वेष *गत्रय ३* गत्रय म *गत्रय ३* प्रमत्त का विस्तार है । भजना म *गत्रय ३* *गत्रय ३* *गत्रय ३*

१ अनवर काव्य पृ० ३ पद २ ।

२ वही पृ ५ पद ४ ।

३ आत्म अमर रहूँगा रे बाल म मही म न की ।

—अनवर का *गत्रय ३* = *गत्रय ३*

ध्यान (आत्म प्रतीति) ^१ गुरु महिमा ^२ अजपाजप ^३ नाम स्मरण ^४ जादि का बोध करात हुए आत्मानन्द एव प्रेम रस म सराबोर हान की बात कहा है। पन्ना म विहाग तथा होरी के पन् सव ग्रथ बह जा सकत हैं जिनम कवि न समोग तथा वियोग की सहज अनुभूति करायी है। अन्ना की जकडिया म प्रेम की जा मस्ती है वहा अनवर के पन्ना म है।

उदाहरणार्थ—

- १ बालम मोको रे तुम सग लगन लगी ।^५
- २ बालम मोको अब ना छुओ, मोरी सुरख धुनर मुस्काय
सीने पे मोरे ना मारो पीचकारी जगीया को दाग लग जाय ।^६
- ३ 'सखीरी मोको र पिया बिना कल म पर
मदर अघेरा मोरी सेज भी सूनी, बिन पिया जियरा डरे ।^७

अन्ना की भाँति अनवर के पन्ने म ऐन और गन गाने का प्रयोग क्रमग विगुद्ध आत्मा तथा भ्रमणाजन्य शरीर के अर्थ म हुआ है। अरवा क इन दोना अक्षर म भेद मात्र एक जिन्दी का है। गन का नुक्ता दूर करन पर ऐन की प्रतीति अपने आप होन लगती है।^८ ऐन गन जिस प्रकार समान अक्षर हैं किन्तु एव नुना मात्र दोना म भेद उत्पन्न कर दता है ठीक उमा प्रकार देह म आत्मा का निवास है किन्तु अह का आवरण उस दब

- १ 'साधु अजब बना एक तारा होजी
जाका अलख बजावन हारा भेरे सती ।

— अनवर काव्य' पृ० २८ भजन ३ ।

- २ जानी गुह गुण गावे रे, गुन का महिमा कहा न जावे जी ।

— वही पृ० २१ भजन १८ ।

- ३ अनवर काव्य पृ० ६२, भजन ४७ ।

- ४ वही पृ० ७३ भजन ५३ ।

- ५ वही पृ० १७७, पद ६ ।

- ६ वही पृ० १८४ पद १६ ।

- ७ वही पृ० १७८ पद १० ।

- ८ गेन का तुषा दूर कर ऐन ही तुम्हरो जान ।^९

— अनवर काव्य पृ० १६४ ।

सता है। जब तक वह का विनाश नहीं होगा तब तक आत्मा की प्रतापि असभव है।^१

अनवर की कुल २६ गरत्रिया गुजराता म रचिन हैं जिनम प्रेम तथा पानवाण का चर्चा है। गजना की भापा उदू है जिनम उदू गायरा का-सा ही मस्ती तथा बरान की एक रूपता है। उणाहरणाथ—

हमे भी मौसमे सरमामे गस्त होता है,
मनम के कूचे मे हरबार हमने छाई ठण्ड।
जो देखा मस्त हमे ठण्ड ने सर बाजार,
गराबे इस्क की मस्ती से खुद तजाई ठंड।^२

इम युग क जय सन्ता म भक्त कवि बहान खोजीराम दास मूलजी भगत खुमानवाँ चातकाम भीमसाहब भाण्णस वातकाम राधाभगत कयाण्णस जगजीवन जगजीवनदाम तथा माणिकदाम आदि का नाम निमा जा गकता है। कहान दान टरण क ममकानान थ जिहोंने कुछ हिना बुनिया का रचना का ह। एमा प्रमिद्ध है कि मिद्धपुर क कातिकी मेन म एक कबिता का रचना पर दानदरवा म इनका वाण विवाण हुआ था।^३ भगत खोजीराम पूर्वाश्रम म वागहा क मुखिया थ जा भाग साहब के सदुपणा म नति माग की आर अभिमुख हुए।^४ दाम (म १८०) उपनाम प्रतात हाना है। एम नाम स कवि न हिना म पान मान तथा 'वर्णा विनति तथा कुछ पना का रचना की है।^५ मूलजी भगत प्रातम दाम क ममकालीन अमरली क पानमार्गी सत थ चिनक कुछ हिदी पना का सग्रह भजनिक काव्य-सग्रह म हुआ है।^६ खुमानबाई रायधण क पाम

१ 'आमी नुक्ता खुदी का ऐन की कर दे गर

जब यह नुक्ता मिण गया वही ऐन का एन।

—अनवर काव्य पृ० १८५ पर २६।

२ अनवर काव्य पृ० २५५ गजल २५।

३ देखिए—'मिधब-पु विनोद' भाग २ पृ० ८६५।

४ छोनी भक्त गुरु भाण का भये मजन में लीन
भक्ति मारग कठिन है धड़े सन परबीन। —खोजीराम।

५ देखिए—'नवीन काव्य-दोहन' पृ० १७१-८५।

६ हरे कसे सेनु मे होरी छोटे मुस पर केमर धोरी।
खोर भिजे भारी धोली रे भिजे, मेरी भवरग सारी नेरी।

—भजनिक काव्य सग्रह पृ० ११७

सातरणी गाँव की निवासी था जिहान १२ वष की आयु में वराग्य एव कौमाय व्रत धारण किया था। इहान खुमानदाम नाम से रचनाएँ लिखी हैं।^१ चातकदास जाति के वश्य तथा भौराष्ट्र निवासी थे। ऐसा प्रसिद्ध है कि एकबार यात्रा में प्यास लगन पर इहान पाना मागा किन्तु किसी ने नहा दिया। तभी से इनके मन में वराग्य जाग उठा। इनके द्वारा रचित कुछ हिंदी कुडलियाँ उपलब्ध होती हैं।^२ भीम साहब रविभाण सम्प्रदाय के सत्त थे। त्राकम साहब इनके गुरु थे। परिचित पद संग्रह में इनके कतिपय हिन्दी पद उपलब्ध होते हैं।^३ भादुदास कसा रामदाम के गिप्य थे। पद की अंतिम पंक्ति में इहानि अपन नाम के साथ प्रायः अपन गुरु का नाम भी जाड़ा है।^४ याग साधना इनके पदा का प्रमुख विषय है।^५ बातकदास एडर गहर के एक चारण सत्त थे जिहान पिता के उपदेशों से गृह समाप्त का परित्याग कर वराग्य धारण किया। इनके द्वारा रचित कुछ हिंदी कुडलियाँ एव पद उपलब्ध होते हैं।^६ राघो भगत भाण साहब के गिप्य थे पूर्वार्ध में जो वाल्मीकि की भाँति एक तुन्द्रे थे किन्तु भाण साहब के मत्सङ्ग से ये सज्जन बन गये।^७ कल्याणदास (सं० १८८३) डाकार निवासी थे। हिंदी में इनके द्वारा रचित छन्द भास्कर एव रमचन्द्र नामक दो ग्रन्था तथा कुछ पुस्तकें पदा का उत्तम मिश्रण है।^८ जगजीवन प्रीतमनाम के पुरोगामी (१८ वीं गती) थे जो मून चरानर के निवासी थे। इनके द्वारा रचित ज्ञानगीता जानमून एव नरबाव आदि ग्रन्थों का उत्तम

१ देखिए—गु हि सा का पृ० ४१।

२ देखिए—फा गु स म प पृ० ३३१।

३ सज्जन गूय में त्रिकुटी घून में अलण्ड शोति उजियारी।

भीम साहब प्रीकम के चरणे बेर-बेर यलियारी।

—प प सं० पृ० २६३।

४ रामदाम चरणे भले भादुदाम में हु साल नवीरा।

५ देखिए—परिचित पद संग्रह पृ० २५६-६३।

६ देखिए—फा गु स म प पृ० ३३३।

७ राघो सपत्त चोर की मिलिया सदगुण भाण।

गण मिगई सत्तन किया असछ पुरप निछाण ॥

८ गुजरात की हिंदा सवा पृ० २५७।

मिलता है।^१ एक अन्य जगज्जीवनदास सूरत के निवासी थे जो निम्ननाम के प्रमुख गिण्या में से एक थे। इन्होंने विभिन्न सदा में याजित जगज्जीवन विलास नामक हिन्दी ग्रन्थ की रचना की है।^२ माणिकदास की जीवन सम्बन्धी सामग्री अनुपलब्ध है। माजे विद्याभवन अहमदाबाद में इनके द्वारा रचित आत्म विज्ञान आत्म वाच कवित्त प्रबंध राम रसायण सत्यग प्रवाह और सतोप मुरारू की कुछ हस्तप्रतियाँ उपलब्ध हाता हैं। कवित्त प्रबंध इनकी प्रमुख रचना है। मुसलमान मता में हुसन्तवाँ भूलन फकीर गम्मनाग बाबा मन्निक् बाबा गुनगन सत दाना माहेव आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं जिनकी हिन्दी रचनाओं के कुछ नमूने कल्याण के सतवाणी अस्सू में मिलते हैं।^३

सन् १९०० के बाद भी गुजरात में हिन्दी सदी सता की एक लम्बी परम्परा महात्मा गाँधी से लेकर राम अवधूत तक उपलब्ध होती है। इनमें मागर, श्री मन्सिहाचाय उपेन्द्राचाय हरासिंह अजुन भगत समथ राम (राम सनेही) मत्तारगाह चिश्ती शकर महाराज स्वरूपदास तथा राम अवधूत आदि प्रमुख सात कवि हैं जिनका परिचय अत्याधुनिक होने के कारण प्रस्तुत निबंध में देना उचित नहीं समझा गया। फिर भी इनकी साहित्यिक प्रतिभा एवं इनके द्वारा रचित हिन्दी कृतियों का उत्तम्व हमने यथा स्थान अवश्य किया है। आधुनिक युग के इन सन्ताने सन्नानि की बनेन परिधि में आत्म प्रतीति कमवाए एवं जागरण का सन्ने दिया है भौतिक जीवन में आयात्मिक प्रान्ति पदा की है। गुजरात के सन् साहित्य में आधुनिक हान हुए भी इनका योगदान अविस्मरणीय है।

१ देखिए—मध्यकालीन गुजराती साहित्य' पृ० १९२।

२ दुसभ नर तन पाप के हरि से न किहोँ प्रीत ॥

जगज्जीवन पदनाथेगे, खसी उमरिया बीत ॥'

—'जगज्जीवन विलास (सद्गुरु महिमा लख)

३ कल्याण सतवाणी अस्सू खप २६ सन् १९०१ पृ० ४४८-४९।



चतुर्थ परिच्छेद

गुजरात के सत-कवियों की दार्शनिक विचारधारा



चतुथ परिच्छेद गुजरात के सन्त कविग्रो की दार्शनिक विचारधारा

पृष्ठभूमि—

गुजरात के हिंदी मवी मता के जीवन एव कृतित्व का अध्ययन करने के उपरांत उनके दार्शनिक विचारों का आर हमारी दृष्टि सृज ही आकर्षित होती है। गुजरात के सत्ता की साधना पद्धति जहाँ एक आर उपनिषद् और वेदांत के अंतर्गत स प्रभावित है वहीं दूसरी आर यह सूरफिया की प्रेम भावना तथा वैष्णवों का प्रेमलक्षणभक्ति स समवित है। साथ ही इनका विचारधारा के भूत म याग सारूप्य तथा गीता के कमवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। वस्तुतः वे सभी दार्शनिकपद्धतियाँ तथा प्रणालिकाएँ जिन्होंने उत्तरी भारत की समग्र सत्त परम्परा का प्रभावित किया है गुजरात की सत्त साधना के भूत म दिखायी देती है। जत प्रस्तुत परिच्छेद के अंतर्गत सर्व प्रथम हम उन प्रमुख दार्शनिकपद्धतियों का संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करना उचित समझत है जिन्होंने गुजरात के सत्ता का सदातिक तथा साधनात्मक दाना विचारधाराका को प्रभावित किया है —

- १ अंतर्गत वंशत ।
- २ विनिष्ठांत मय ।
- ३ सूरफा-भाषना ।
- ४ सारूप्य याग तथा गीता का प्रभाव ।

१ अंतर्गत वंशत

वेदान्त दर्शन भारतीय अध्यात्म शास्त्र का चरम विभाग है।^१ अतः अंतर्गत अंतर्वाद के सबसे प्रतिश्रापक आचार्य गोस्पद तथा आचार्य शंकर जिन जिन्होंने निर्गुणनिमित्त मय प्रतिपादित किया—

- १ अजातवात् ।
- २ मायावात् (अंतर्वाद)

१ हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास पृ० ५३० ।

आचार्य गौडपाद और उनका अज्ञातवाद—आचार्य गौडपाद मन्मथ पहन दार्शनिक धर्म जिन्होंने वेदान्त की व्यवस्थित व्याख्या प्रस्तुत की। गकराचार्य ने त्रिम मायावाद का प्रस्थापना की उनका मूल गौडपाद के अज्ञातवाद में दूना जा सकता है। आचार्य गौडपाद ने भाद्रक्यापनिषद् पर जा काटिकाएँ लिखा उनका गण अन्तर्धानी विचार जगत में एक नया माड आया जिनमें उपनिषद् के तत्त्वज्ञान का ज्ञान के रूप में समन्वय किया गया है। भाद्रक्य उपनिषद् पर लिखी हुई दो मो पन्हु कारिकाओं में वेदान्त दर्शन की जा व्याख्या का गयी है यही गौडपाद का अज्ञातवाद कहा जाता है।

आचार्य गौडपाद का समय आठवाँ शताब्दी आसपास माना जाता है तथा गकराचार्य के गुरु गारिका के गुरु के रूप में उनका नाम लिया जाता है।^१ डा० त्रिगुणायन ने पन्हु गकराचार्य का गुरु कहा है।^२ कुछ विद्वानों की धारणा है कि वे बौद्ध विद्वान धर्म तथा वेदान्त का स्पष्टीकरण उन्होंने बौद्धदर्शन के आधार पर ही किया था^३ किन्तु वे वस्तुतः श्रुति प्रामाण्य वाग आचार्य धर्म जा सभवतः बौद्ध दर्शन से प्रभावित धर्म।^४

आचार्य गौडपाद का मन्मथ कारिकाएँ चार प्रकरणों में विभाजित हैं —

- | | |
|---------------|-----------------------|
| १ आगम प्रकरण। | २ वतस्थ प्रकरण। |
| अन्त प्रकरण। | ४ अज्ञातज्ञान प्रकरण। |

आगम प्रकरण में उन्होंने ब्रह्मचर हिरण्यगर्भ एवं ईश्वर तथा जाग्रत स्वप्न मुक्ति अवस्थाओं में विवर्षण तुरीय का कल्पना की है त्रिम आकार का चतुर्थ पाद कह कर अभिहित किया है। उनका अनुसार तुरीय ब्रह्म अन्तरूप प्रमाण्य और सबव्यापी रूप है।^५ धर्म अन्त तत्त्व के लिए उन्होंने आत्मा ब्रह्म और आकाश आदि गणों का प्रयोग किया है। उनका अनुसार कार्य भी धम्नु कर्मा उपपन्न नहा हानो। आत्म तत्त्व के अनिर्गम अर्थ

१ Key Gujarati Poetry Page 3

२ हि नि का दा पृ० १२६।

३ A History of Indian Philosophy Vol 1 Page 423

४ हि नि का दा, पृ० १३६।

५ अन्त सबभावो देव तुरीयो विष्णु स्मृत —मां का १-१०-१-१६।

पारमार्थिक सत्य नहा है। प्रत्यक्ष प्रपंच का कारण माया है। उहान मायावादा की स्थापना तीन मूत्रभूत सिद्धान्तों पर की है—

- १ जात्मा जात्मा क द्वारा हा आत्मा का कल्पना करता है।^१
- २ जन्त तस्व म भेत् पदा करन वाला गति माया है।
- ३ मन ही द्वतभाव का कारण है।^२

गोपपाद न म माया का अनात्ति कहा है।^३ किंतु अनात्ति का यह ब्रह्म की बराबरी से नहा है बकि उसकी प्रभावरूपता से है। व माया का भावरूप मानते है और उससे उद्भूत प्रपंच का अचित्य कहत हैं। उनक अनुसार जगत का उद्भय और विकास माया कल्पना है। वतथ्य प्रकरण म उद्भयन इमी द्वत द्वद विनिष्ट जगत क व्यावहारिक रूप की माया का है। माया के सिद्धान्त को उहान अनान क दृष्टान्त से पृष्ट करन का चष्टा की है। जिस प्रकार एक मिरे से जनता हुई यष्टि का घुमाया जाय तो अलानचक्र अथवा अग्निलोक का भ्रम होन लगता है उमा प्रकार मन ही समार की कल्पना का कारण है। मन क कारण समार का सत्ता है और उमका निराध हान पर समार की सत्ता का नाप हा जाता है। कही कपी पर मन का उहान जात्मा का पयाप्रयाचा भा माना है। फलन मन ही प्रपंच की जाधार गिना क वस्तुन अन्त क अनिगित्त जा भी बुद्ध है मव अमन् तथा स्वप्नवन् है। पारमार्थिक प्रायगािक अथवा प्रातिभाषिक जित्ता भी अवस्था म ब्रह्म से भिन्न कित्त का कोन अस्तित्व नही है। जागृत मृष्टि भी स्वप्न मृष्टि का भानि नश्वर एव जमन् है। स्वप्न म अथवा अद्रजान म हम जित्त प्रकार लाया का जम नत और मरने दक्षत है ठीक वमा ही अवस्था म प्रसारमान जगत का है जित्तका मात कपित्त सवृत्ति हा हाना है। काय कारण म युक्त मन या समार की भ्रान्ति पदा करता है। फिर उव समार का उद्भय हा नया गाना ना विनाग का प्रश्न ना नहा उरता।

यह चिद्वचन ब्रह्म अत्रमा है अमर है। न यत् मुक्ति का अर्था करता है और न कभा वद्ध या मुक्त ना हाना है। आत्मा ब्रह्मरूप है जा आकाश का नरूप अमर है। उमका न काइ उत्पत्ति है और न काइ जाति है। जगन कवन मन का व्यापार है। प्रपंच का उत्पत्ति तय प्रतानि

१ कल्पयति आत्मान् आत्मानम् आत्मा —मां का २-१।

२ मनोहृत्य इदं द्वतम् —मां का ३-३१।

अनादिमायया मुक्तो यद जाय प्रबुध्यते —मां का १-१६।

अप्रतीति विषयक धारणाएँ भातिपूर्ण हैं। मन का निराव हान हा इन मव भ्रातिया का विलय हा जाता है।

गौडपाट वस्तुन अवच्छेत्वादी आचाय थ अत उहनि ब्रह्म की अगण्य मत्ता म विन्वाम किया है। अवच्छेत्वात्त्रिया क अनुमार जीव जीव ब्रह्म का अन्त टीव इमी प्रकार है जिम प्रकार वायु घन क अन्तर ना है और बाहर भी है किन्तु तत्त्वत दोना एक हैं घन का बाह्य आकार ही इम व्यावहारिक भूत का कारण है। जाव और ब्रह्म का अन्तर भा अविद्या क कारण हा प्रतिभासित होना है। कथा-ब्रह्म पर गौडपाट ने प्रति विम्बवाट का भी समयन किया है। 'अकर न दाना क अनुयाया थ।'^१

गौडपाट का अज्ञातवाट जहाँ बौद्धा क 'सूयवाट' स प्रभावित था, वही वह ध्यान याग का भी ममयक था। विगपन वह प्रणववाट 'गल्लवाट' और व्याकरण दान म अनुप्राणित था।^२

प्रणव मात्र का व्याख्या—प्रणव मात्र योग साधना का विषय है। 'गल्ल ब्रह्म की मह साधना ऋग्वेद'^३ स कवी आया है। यागसूत्र म तस्य वाचक (प्रणव) त्रिवक्त्र ब्रह्म का 'गल्ल'रूपता प्रकट का गया है।^४ कटोप निपद म इम 'गल्ल' ब्रह्म की व्याख्या आम् अर्थान् अन्तर ब्रह्म के रूप म की गयी है।^५ माण्डूक्योपनिपद म स्तो ओंकार की महिमा का बार-बार बगन मितता है।^६ तत्रवात्त्रिया न इत नाद ब्रह्म के रूप म अभिन्ति किया ह। उनका नाट ब्रह्म इतान्त विलक्षण है। तात्रिका द्वारा प्रतिपा त्तित यन् इतान्त विरक्षणवाट गारवनाया साधना पदनि म होना हुआ मन्ता तक पचा है।

आचाय गौडपाट न जागरण स्वप्न तथा सुषुप्ति क माय-माय प्रणव मात्र (आकार) की व्याख्या भा प्रस्तुत की है। आम् 'गल्ल' म तान ध्वनियों हैं जिनका मन्वेष क्रमग आत्मा क तीन पन् म है विन्व तत्रम एव प्राज्ञ। जिस प्रकार विन्व तत्रम् म मिन जाता है और तत्रम प्राप् म

१ हि नि का हा पृ० १४२।

२ वही पृ० १४२।

३ ऋग्वेद १-१६४-१।

४ योगसूत्र १-२७।

५ कटोपनिपद १-२-१६।

६ माण्डूक्योपनिपद २।

तथा प्राज्ञ तुरीय आत्मा में लीन हो जाता है। टीक उमी प्रकार ये ताना ध्वनिया (अ उ म्) ध्वनिहीन ओम् (अमात्रा) में लय हो जाती हैं। जत ओम् तथा तुरीय आत्मा वस्तुतः अभिन्न हैं। मन की एकाग्रता जब ओम् पर केन्द्रित हो जाता है उम समय किसी प्रकार का भय अथवा गाब नपा रह पाता।^१ जाम् ब्रह्म का ही स्वरूप है जिसमें ज्ञानि मध्य और जत ताना की परिणति है। अन आकार का नाता ब्रह्म का स्वतः जान नता है।^२ आचार्य गौतमपाद न क्मी ओम् का अनन्त माना कहकर ब्रह्म की नास्वत गति का बोध कराया है।^३

अज्ञानवाद का प्रभाव—गुजराती काव्य साहित्य में अज्ञानवाद का निरूपण सब प्रथम अथा न किया जिनक तत्त्वज्ञान की समस्त रचना "मी मिद्धात का मुख्य पात्रिका पर हुई है। जया द्वारा निरूपित अज्ञानवाद का यह प्रवाह हम गाणान्तास बून्ध्या नादानाम कल्याणान्तास (अथा प्रणानिका क सत) आनि स नकर सतराम तक म प्रभावित जाता हुआ दाप पन्ता है। अथावृत्त मतप्रिया ब्रह्मलीला तथा एकाध रमणा म गौतम के क्मा अज्ञानवाद का विगन चर्चा की गयी है। मनराम कृत्त गुफ बायनी म भा मन का ली समस्त भना तथा भ्रातियों का कारण बताया गया है। सभप म इन रचनाया पर अज्ञानवाद का जा प्रभाव है वह क्म प्रकार है —

१ ब्रह्म क अनिरिक्त काई दूमरा तत्त्व नपा है।

२ विन्व क नाम रूपाणि का प्रतानि मन का मृष्टि है अर्थात् मृष्टि मन का क्तिमु खता का एमा क्तिपत परिणाम है जो मन के अमनाभूत हान हो तय का प्राप्त हो जाता है। मगुण एव निगुण का भन भा ल्या भ्रानि का परिणाम है।^४

१ युजात प्रणव चेत प्रणवा ब्रह्म निनयम् ।
प्रणवे नित्ययुतस्य न भय विद्यत क्वचित् ॥ —मां का १-२५ ।

२ मां का १-२७ ।

३ अमात्रोऽनन्तमात्रस्य द्वैतस्यापगतं त्रिव ।
ओंकारो विदिता येन म मुनिततरो जन ॥ —मां का १-२६ ।

४ भागो पादो ओर नाही आप बिसस्या आपना'
— ब्रह्मलीला घोषरां छंद ८४ ।

५ गुन निरगुन अथा नहि इर भेव पायो भव ध्यान तजो ।
जो मन मस्या ता ब्रह्म सब का, जो मन मायो तो जीव सबे ॥
—सतप्रिया ४ -४४ ।

- ३ काव्य और कारण का भेद भी भ्रमात्मक है। त्रिम बीज में भ्रकुर ही न फूटा हा उमक पल्लव छाल तथा वृक्ष का वल्पना करना अनानता का सातक है।^१ अर्थात् यह ब्रह्म एमा है जिसक विषय में दृष्ट दृष्टा और दग्गन का चचा व्यथ है।^२
- ४ माया अज्ञाना है अन अज्ञातवाद्या द्वारा स्वीकृत माया क अज्ञा नाम का इन सत्ता न उसा रूप में ग्रहण कर लिया है।^३
- ५ प्रणव के रूप में गद ब्रह्म की साधना भी अज्ञातवाद स प्रभावित है।^४

श्री शंकराचार्य तथा उनका अद्वैतवाद—गुरु का अद्वैतवाद जिस मायावाद भी कहा गया है, वस्तुतः गौडपाद के अज्ञातवाद स कुछ भिन्न प्रतीत हाना है। गुरु क अनुसार ब्रह्म ही दृश्य जगत का अधिष्ठान ह तथा यह दृश्य जगत माया का परिणाम ह किन्तु ब्रह्म केवल विवर्त है। यह जगत में परिणमित नहीं होता अपितु परिणमित हुआ सा प्रतिभासित होता है। उहाने वदात मून पर अपने भाष्य में जगत स्वप्न है इसका स्रणन करन हूण जगत की सत्ता का स्वाकार किया है।^१ जगत को इस सत्ता का उहाने व्यावहारिक हा माना है। सत् वही है जो त्रिकानाबाधित है जा अल्पनातिक है वही असत् है। स्र असत् का अर्थ अवास्तविक नहीं बल्कि अर्थात् परिवर्तनागत और व्यावहारिक सत्ता है। असत् जो न है और न

१ 'ज्यों ही भ्रकुर उम्या नहीं तो पत्र पेड़ कहाँ छाल,

सत् मतामत बाहरा। तापे सय एक सात।

—एक सत रघणी १-२४।

२ दृष्ट, दृष्टा दग्गन नहीं त्यों ही चक्रे छाल,

सय सबेय भी कहने को, ऐसा सा एक सात।' —धृती, १-२६।

३ आप ज्यों क र्यों निरजन, सवभाव फलो अज्ञा।

ज्यों सुबक देण के सोहू धेतम, त्यों दुष्टोपरेण पाई रजा।'

—'ब्रह्मलोला घोखरा १-३।

४ ओम् नमो आदि निरजन राया जहाँ नहि काल कम अरु माया,
जहाँ नहि शब्द उच्चार न अता आपे आप रहे डर भता।

—'अला, ब्रह्मलोला घोखरा १।

५ 'ब्रह्मसूत्र भाष्य' २-१-११।

दृष्टिगत होता है उस ब्रह्मापुत्र गणशृङ्ग गववनगरी आकाशपुण्य जाति ।
 किन्तु मिथ्या जो है तो नहीं लेकिन लिखा नेता है उस—जगत ।
 फलत जगत यावहाग्वि सत्ता है पारमायिक सत्ता नहीं है । यही कारण
 है कि गकर न जगत को मिथ्या कहा ।

गकर न भी गौडपाद की भाँति आत्मा आत्मान जानाति के मिद्वान
 को स्वाकार किया है । उहानि आत्मा को अन्ततत्त्व माना है । गकर
 वेदांत म इमी आत्मतत्त्व को ब्रह्म कहा गया है । उहानि उपनिषद् के
 निगुण ब्रह्म की पारमायिक सत्ता की प्रतिष्ठा की है । यद्यपि कहा-कहा हम
 उनम सगुण ब्रह्म का वखान भी मिल जाता है । ब्रह्म का निरूपण उहानि
 दा विधिया म किया है—

१ स्वरूप लक्षण ।^१ २ तटस्थ लक्षण ।^२

ब्रह्म की नानरूपता अन्तता और मच्चिदानदरूपता जाति विरोधनाए
 ब्रह्म के स्वरूप लक्षण स सम्बन्धित हैं जबकि जगत की उत्पत्ति स्थिति और
 तम ब्रह्म के तटस्थ लक्षण स सम्बन्धित । स्वरूप लक्षण का मन्व व निगुण
 ब्रह्म स है जबकि तटस्थ लक्षण प्राय ब्रह्म के सगुण रूप स जाना जाता है ।
 गकर न माया का निर्विण ब्रह्म स सविण जगत और जीव की उत्पत्ति का
 कारण माना है । परवर्ती विचार जगत म स्माणि गकर का मायावात्
 अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ । गकर स पून मायावात् का प्रतिष्ठा यद्यपि
 ऋग्वेद म गकर बौद्ध युग तक दृष्टिगत हाना है किन्तु उसकी मायता रिमा
 गाम्भीय सिद्धांत क रूप म गयी ।^३ मायावात् का जा बीज वस्तुतः
 गौडपाद क अज्ञानवाद न रापा उसका वृत्त इम गकर के मायावात् म
 दाख पन्ता है । आचार्य गङ्गुल न माया का ब्रह्म का स्वरूप लक्षण कहा
 है । माया गत्त का प्रयाग प्राप्त और अव्यक्त क निण भी किया गया है ।
 एम अव्यक्त का उन्नि बाज गति कहा है जा माया विविष्ट हाकर

१ सत्य ज्ञानमनत ब्रह्म —तत्ति० उपनि० २ १-१ ।

२ यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते ।

सत जानानी जायन्ति ।

यत्प्रयत्नमिसविगति

तद्विजितामस्य । तद ब्रह्म ति । —तेत्तिरीय ३-१ ।

महामुपनिषद् में है।^१ प्राण और माया जब तक ब्रह्म में डीन रहते हैं तब तब उनमें अपना काइ क्रियाशक्ति नहीं रहती किन्तु विकासवस्था में ब्रह्म अधिष्ठान बन जाता है और माया क्रियाशील होकर नामरूप का विस्तार करती है। माया के इस विवक्षित रूप को आभास कारण अविद्या अथवा अज्ञान कहा गया है। माया प्रयामुमी है जिसके तीनों स्वरूप जागृत स्वप्न और सुषुप्ति के समान ही हैं। गकर न अविद्या के दो रूप माने हैं—

१ व्यष्टि अविद्या । २ समष्टि अविद्या ।

समष्टि माया ब्रह्म के साथ माय अवशिष्ट रहती है जबकि व्यष्टि अविद्या से प्रपञ्च का अधिष्ठान करने वाली माया का बोध होता है। गकर की माया मन का भ्रांतिभास नहीं अपितु वह त्रिगुणात्मिकता है अतः भावरूपा है।^२ गौतमान् और गकर के माया सम्बन्धी विचारों में यही एक मौलिक अंतर है कि गौतमान् माया को विषयी प्रधान मानते थे जबकि गकर न उसे विषय प्रधान माना है। माया की कारणभूत सत्ता को स्वीकार करते हुए उन्होंने माया को न सत् ही कहा और न असत् ही बल्कि उसे अनिवचनीय तत्त्व कहा है। माया अनिवचनीय होने हुए भी ब्रह्म की तुलना में मिथ्या है।

गङ्कुर न ब्रह्म का जगत् का उपादान एवं निमित्त दोनों कारण बनाया है। अधिष्ठान रूप से वह निमित्त कारण है किन्तु माया से अध्यस्त रूप उपादान कारण है। क्योंकि गङ्कुर न विवतवाद् की कल्पना का विमम उन्होंने बताया कि विमा वास्तविक वस्तु में विमा अथवा अवास्तविक वस्तु का भ्रांतिपूर्ण आभास ही अध्ययन है। अज्ञान के कारण ही गुरु चक्षुष्य अपना विगुदना में च्युत होकर अपना जीव के रूप में परिणत हुआ है तथा समार के बंध का अनुभव करता है। जान में ही इस बंध का निवृत्ति होती है। अध्ययन में ही समार है और जान द्वारा अध्ययन निवृत्ति पर मान सम्पन्न होता है।^३ अध्ययन का दूसरा नाम अविद्या भी है। गङ्कुर का यह विवतवाद अध्ययनवाद अध्ययनवाद् अज्ञानवाद् आदि नामों से अभिन्न किया जाता है।^४

१ ब्रह्मसूत्र गङ्करभाष्य १-४-३ ।

२ हि नि का दा पृ १४६ ।

३ हिन्दो साहित्य का घृत इतिहास भाग १, पृ० ४२२ ।

४ हि नि का दा पृ० १४७ ।

मायावाद का प्रभाव—गुजराती मता में जया का विचारप्रवाह वस्तुतः गौडपाद के अज्ञानवाद तथा गङ्गुल के मायावाद दोनों से प्रभावित है। अद्वैतवाद का विचारधारा में जया का गति आकाश के विद्युत् की तरह है। उसका पक्ष अद्भुत है। गङ्गुल के मायावाद के चारों ओर जाभामबाद प्रतिविम्बबाद अचञ्चलबाद तथा दृष्टिमृष्टिबाद का प्रभाव जया का माया मन्व भी विचार सरणि पर स्पष्टतः देखा जा सकता है। मायावाद का यह प्रवाह गुजरात के ज्ञानशास्त्र मता में दादू से लेकर अन्धा धारा निरात ज्ञानम भाणुमान्द रविमान्द माजा तथा अनक परवर्ती मता में दृष्टिगत जाता है। गुजरात का यह ज्ञानधारा गङ्गुल के मायावाद से जितना अधिक प्रभावित है कि जग विषय का स्पष्ट एवं राक्षक बनाने के लिए गुरु गिण्ठ सत्यान्त के रूप में हस्तामनक जम स्वतन्त्र चिन्तनपूर्ण ग्रन्थों का रचना भी का गया है। सशप में गङ्गुल के मायावाद का जो प्रभाव गुजरात के सता पर पड़ा है वह इस प्रकार है —

१. त्रिगुण ब्रह्म का प्रतिपादन ।
२. आत्मा परमात्मा का एकता तथा अखण्डता ।
३. ब्रह्म ही मृष्टि विशाल का मूल स्यात् है ।
४. माया मिथ्या तथा त्रिगुणात्मिका है ।
५. ज्ञान अमृत माधुर्य के समान है जगत् जिना मुक्ति नाना सा सकता ।

उपरोक्त ज्ञान सभा प्रभाव का प्रतीति हम गुजराती मता की ब्रह्म ज्ञान जगत एवं माया विषयक चर्चा में ज्ञानगत करण ।

२. रामानुजाचार्य के त्रिगुणवाद तथा प्रभाव—

श्री रामानुजाचार्य वस्तुतः सधारावादी आचार्य थे जिनका भक्ति के क्षेत्र में सत्कारप्रियता प्रवृत्ति और बधा उपामना पर भारत में हुए भक्ति का प्राण प्रति । का जगत् जगत् के जगत् में व श्रुति प्रमाण्यान्ता हात जगत् का परिणामबाद के पापक गत । उन्होंने गङ्गुल के मायावाद का खण्डन कर विनिष्ठा न का प्रतिपादन किया । ब्रह्म का उत्पान विद् अविद् और त्रिगुण ज्ञान विद् का नास्तिक जगत् और अविद् का भाग्य जगत् का पयाय बताया । सगुण ब्रह्म का जगत् उपनिषद् समर्थित कहा तथा उस मजाताप एवं विज्ञानाय नाना में गुण माना । जगत् विद् और अविद् का सम्बन्ध

उन्होंने विगप्य विगपण क रूप म जाना है। जयान् इत्वर स्वय विगप है तथा चिद् और अचिद् विगपण। इत्वर हा म जगत का अभिन्न निमित्तापात्तन कारण है। वह जाना क विगपण म्का मृजत करता है आर जाना म ही उमका महार कर डानता है। प्रनय कान म जाव और जगत मूर्तरूप म परिगत हा जान हैं। म्मा अवस्था म मू म चिद् अचिद् ब्रह्म कारण ब्रह्म कहनाता है। यहा काय-कारण परिणामवात् का मून है।

विगिष्ठात्त म जगत मय रूप है। जीव अविद्या म विमाहित हाकर बय जाना है। उमम मुक्ति प्राप्त करना ही जीव का परम लक्ष्य है। यह मुक्ति भक्ति क माध्यम म ही प्राप्त का जा सकता है।^१ डा० बडख्यान न मता क आत्मा परमात्मा एव जल्पनाथ सम्बन्धा विचारा का निरूपण करत समय तान प्रकार की सांगनिक विचारधाराआ क अनुमार वर्गीकरण किया है जोर म प्रकार कवीर गानू भीया मनुक आदि को अद्वती नानक का भगभग तथा गिवन्थान और प्राणनाथ आदि को विगिष्ठात्त ती ठहराया है।^२ अत प्राणनाथ क सांगनिक विचारा म जावात्मा तथा परमात्मा का मय घ अर्गाणि का है। वे मानत है कि जीवात्मा का अतत निवान परमात्मा म है फिर भा क जावात्मा का पूण ब्रह्म नहा मानत। प्राणनाथ क अनमार परमात्मा अगा है जोर जावात्मा अगा।^३ इहान नान्तर जगत म म्मन दृग जात्म दृष्टि गारा जगण्ड परमधाम म निवान करत वान नित्य विमय परमात्मा क परम मितन र विध्यान्तर का अनुभूति प्राप्त करत म्म ममार म जम उन वान जतत जाना का तान कानियां स्वाकार की है।

- १ उत्तम कानि क जाव ब्रह्म परादण ज्ञान क कारण ब्रह्म मृष्टि कह जात है तथा मात्रिक ग्तर ब्रह्म माधना करत दृग विध्य धाम का प्राप्त करत है।
- २ मध्यम कानि क जाव राजमा वृत्ति म जायत यापन करत वान नाना मागों का विविध पथा का अनुसरण कर मुक्ति का कामता करत वान इत्वर मृष्टि क जान हैं।

१ रामानुजाचार्य विगिष्ठात्तिक भक्ति दगन'

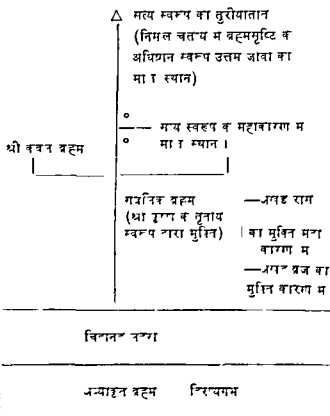
—डा० सरनामतिह गर्मा, पृ० ६।

२ हि का नि स, पृ० १६६-२००।

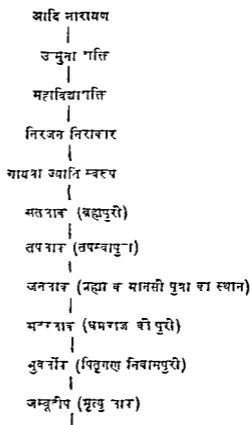
जय कहूँ इतर वान इमक मयदातीय माहयात
ब्रह्म मृष्टि ब्रह्म एव अग, य सदा अनद अतिरघ।

- ५ तीसर प्रकार क जाव जपमनात् क हान न जा जाव मृष्टि कट जात है । य ताममीवृत्ति स अभिभूत नोकर भूत प्रेता का उपासना द्वारा क्षणिक मुख म जीवन का भ्रमिन कर जावा गमन क चक्कर म बध रहत हैं । जाव मृष्टि के भी तीन उपभेद—उत्तम मध्यम और कनिष्ठ सूचित किय गय हैं ।

ब्रह्मनाम का अधिकारी ब्रह्मभ्रगधारी जीव हा हा सकता है । दूमरा काटि क जावा का ब्रह्मनाम क बिना मो र नहा हाना जत जावामा का सब प्रथम ब्रह्मनाम के लिए आरमनाम हाना परमावश्यक है । इनक द्वारा प्रतिपादित जगदब्रह्म क सत्य स्वरूप को समझान क लिए हम इस प्रकार का एक रखा चिन् लेख सरत हैं—



उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म पुण्य का प्रमाणित्व का प्रकार खीची जा सकता है—



जम्बूदीप से भा नीच मात नाका (जननाक तिननाक मृतनाक तनाकनाक रमातनाक महातनाक पानात नाक) की कल्पना का गया है। इस प्रकार धर्म अर्थ म पर उत्तम पुण्य का इतनीत मच्चिदान्त पुत्र नाकार नित्य नित्य विप्रत स्वरूप नीना व धाम म युक्त पूर्णात्पूर्ण परम्हम माङ्गल्य है जिनकी प्राप्ति का मुख्य साधन जननाक परा प्रम वश्याभक्ति है। इन स्वकीयार्थन परद्रहम की उपायना म न्ना जाति निय वन व भाषा आदि का भन्नाक नरी है किन्तु मानवमात्र का अधिकार है। स्वामा प्राणनाथ द्वारा रचित तारतम्य म इन्ही धाम परमधाम ब्रजमन्त्र तथा राममन्त्र की धर्मा की गई है जिनपर नागर्य गाथा और वनभावाव व सुदान्तवाद का प्रभाव ना स्पष्ट दिशावा म्ना है।

३ सूफी साधना और उसका प्रभाव

सूफा-साधना वस्तुतः भावजगत की साधना है। मनुष्य अनास्थि युग से साधना करता आया है और ज्ञान के प्रकाश में जात्मा तथा परमात्मा के सम्पर्क का अनेक भावा और प्रतीका से जाडता है। मूर्च्छि के विकास के साधना-साधक वह यह अनुभव करता जाया है कि मन का अपना बुद्धि श्रेष्ठ है श्रेष्ठ है और उससे भा श्रेष्ठ है उसका निष्काम भावना उससे विषय से भा श्रेष्ठ है वराम्य। विषय के द्वारा मनुष्य जहाँ जन्म बुरे का पन्थान करता है वराम्य के द्वारा वह बुरे का नाशन में समथ हाता है। निर्विकार ब्रह्मरूप का पहचानने वाला कवलय पद का प्राप्त हाता है और उस प्राप्त करने का एम साधना का नाम ज्ञान माग है किन्तु ज्ञान माग पाड की धार है जिस पर सभा नहीं घन पात। साधना-वृद्धि पर चयन वान बडे-बडे साधका का साधना जहङ्कार एक दम्भ के एउ हनके में स्वयं में खणित हा बका है। अत एम दम्भ से साधना की रक्षा करने का एकमात्र उपाय है— प्रेम। सूफा-साधना में प्रेम का मिति पर साधना का एमा भजन रचा हुआ जिमकी राज मनुष्य युग-युग में करता आ गया था। दम्भ के परिवर्ण में दम्भनाम घम के अनाचारा का मिटान के लिए हा तरान में सबप्रथम सूफामत का जाविर्भाव हुआ था। भावना के एन साधका न ज्ञान का अपना प्रेम का वसा बजाया और परमात्मा का प्रेम स्वरूप मानकर अपना साधना का धूना रमाया जिममें एउ निजाजी में एक एकका तब पदचन कामाज माग था। सूफा साधक (साधक) परममत्ता में अपने अस्तित्व का ज्ञान करने के हेतु साधना के जिम पथ माग पर अवसर जाता है उसके तार साधन (मुकामात) =—^१

१ तगाबत जयान् उरु श्रवा के त्रिवि निपथ का मध्यक पावन या बमकाण् ।

तगाबत जयान् वास्य द्विया कलापा त पर तारर कवन हृदय का तुडता तगा परम तला का ध्यान ।

तगाबत जयान् भक्ति या उपासना के प्रभाव में साधक का परम माय का मध्यक ज्ञान एक एमके फलस्वरूप साधक से तत्त्वदृष्टि सम्पन्न जाना ।

१ जायसा के परधनी हिन्दी सूफी कवि और साधक

पंचम परिच्छेद

गुजरात के सतो की हिंदी वाणी साहित्यिक मूल्यांकन



पञ्चम् परिच्छेद

गुजरात के खन्नों की हिन्दी-वाणी साहित्यिक मूल्यांकन

साहित्य गद्य का व्युत्पत्ति पर विचार करते समय हम मान गद्य और अधक समुचित सम्पादन पर हा विचार नहीं करते अपितु इसका माथ मानवहित क सम्पादन की बात पहन मोचन हैं।^१ साहित्य वस्तुतः नाक मगन की साधना है जिसका उद्देश्य मानव जावन क दानवत्व का नाग और देवत्व का विवाग करना है। देवत्व की कल्पना का आकषण हमारे जीवन म भरना साहित्य का ही काम है। सत्ता देवत्व की उपनिधि अपन म करक मानव जीवन देवत्व स ओर मबस महान बनता जा रता है।^२ सत्ता का समस्त साहित्य सती लाक मगल की कामना म रचा गया। साहित्य सृजन म सनका नश्य आत्मानद ता था हा। उसके परिवग म सामाजिक चतना भी थी। इसलिए सत्ता क काव्य म हम जहाँ एक आर अध्यात्म का गुष्क चर्चा मिलती है वहाँ दूसरा ओर उसम मानव जावन क लिए सरस अमर सत्ता भा है। सत्ता का साहित्य सक्षेप म एक ऐमा सत्साहित्य है जिसम मानव क युग-युग के सस्कारो का सचित निधि है साधना एव विश्वास के बन पर जिसम जावन के अमर सत्य-खण्ण का सचय है। डा गाविन्द त्रिगुणायत न इमीलिए कहा है कि सत्ता की रचनाए महज काव्य की विभूति है।^३ डा भगीरथ मिश्र न साहित्य उचान क जिन प्रेरक तत्त्वा (सत्य मानवता निमन चरित मौदय भव्य कल्पना भावुक यम्य और नाकानुभव की अभिव्यक्ति) का समी ता काव्य शास्त्र के अतगत की है।^४ व सभा तत्त्व सत काव्य क प्रेरक बल हैं। अब हम काव्य क विविध मानस्य का आधार पर गुजरात की हिन्दी सतवाणी का अध्ययन करेंग।

१ काव्य के रूप डा० गुलाबराय । पृ २-३ ।

२ कला साहित्य और समीक्षा डा० भगीरथ मिश्र पृ० ६ ।

३ हि नि का दा पृ० ६३६ ।

४ काव्यशास्त्र पृ० ३३२-३४२ ।

वर्ण्य विषय—

दक्षिण एव उत्तर भारत के सता की भाँति गुजरात के सता की वाणी म भा आत्म प्रतीति का उत्कृष्ट अभिलाषा एव ब्रह्म ज्ञान का अम्य भूय है। ज्ञान की घटा को देखकर इनका मन मयूर नाच उठता है।^१ ज्ञाना का रूप ही इनका रूप है।^२ अतः इन सता की वाणी विमा पण्डित अथवा कवि का वाणी न होकर ज्ञानी की वाणी है।^३ संक्षेप म हम कह सकत हैं कि इनका वाणी कवि परम्परानुमोदित न होकर स्वसंबन्ध स्वानुभूतिमूक भुक्तभोगी आत्मा की पुकार है जिसम गुप्क गाम्भिर्य ज्ञान की खिलनी उडायी गयी है —

जूठ पाँडित जूठे नास्त्र, सब जूठ कू जूठ सुनाया रे।^१

— अनुभवानन्द ।

इनकी वाणी म वर्णित विषय का हम मुख्यत दो भागो म विभक्त कर सकते हैं —

१ आध्यात्मिक—(१) मृजनात्मक । २ ध्वमात्मक ।

— सामाजिक—(१) राजनीतिक व्यवस्था । (२) धार्मिक व्यवस्था ।

(३) वर्ण भेद । (४) नारी भावना । (५) आर्थिक जीवन ।

(६) मनोरंजन एव आनन्द प्रमाण के माधन ।

आध्यात्मिक विषय

१ मृजनात्मक—अध्यात्मवाद की चर्चा ही इन सता का प्रमुख विषय है जिसकी विस्तृत व्याख्या हम प्रस्तुत निबंध के चतुर्थ परिच्छेद म कर चुके हैं। आध्यात्मिक निरूपण म गुजरात के मन्ना की भावधारा उत्तरभारत के सता की भावधारा से अलग ज्ञान रूप भी कुछ विनिष्ट है। गुजरात की ममग्र सन्तवाणी अमाश्रयायिक है। गुजरात म फने हुए विभिन्न मत सम्प्रदाय एक दूसरे से अलग ज्ञान रूप भी भूत म एक नए विचार सरणी पर अत्यन्तवित हैं—एक ओर जम्बू ब्रह्म की अभिव्यक्ति । इगणित इनम माश्रयायिक साहित्य कम मिनता है और अलग साहित्य की

१ ज्ञान घटा चढ़ आयी अज्ञानक ज्ञान घटा चढ़ आयी —अष्टो ।

२ ज्ञानी को रूप, सो रूप हमारा —अनुभवानन्द ।

३ ज्ञानी ने कविमाँ न गणोण

— (अर्थात् ज्ञानी को कवि के रूप में मत गिनो) —अष्टो ।

प्रचुरता है। यहाँ तब कि कर्त्तन साधनामूलक गद्य और गायन सम्प्रदाया का पौराणिक रूप ही गुजरात में प्रचलित है। इन सम्प्रदाया में संपन्न जिन सत्ता में काव्य रचनाएँ की हैं वे अधिकांश में भक्तिमूलक ही हैं। इनमें न तो गणन मंडन की प्रवृत्ति ही है और न सगुण निगुण का भेद ही प्रतीत होता है। राम और कृष्ण के भेद से भाय पर है। इनके मनमें जो राम है वही कृष्ण है और जो कृष्ण है वही राम है। नाम साधना का हीन विषय महत्त्व दिया है। जहाँ अध्यात्म के क्षेत्र में इन सत्ता का भावधारक न तो कर्त्तन साधनामूलक ही है और न तत्कल्पा है बल्कि भावरूपा है और विषय समभौतावादा है।

उत्तरभारत का भक्ति साधना की गति निगुण से सगुण का आर है जबकि गुजरात की भक्ति साधना का रूप सगुण से निगुण का जोर बनता हुआ प्रतीत होता है। कबीर के बाद भक्ति के क्षेत्र में जो क्रांति का लहर पड़ा हुई वह हम मूर और तुलसी के काव्य में दिखायी देती है। मूर और तुलसी मगुणापामक भक्त कवि थे जिन्होंने कबीर का निगुण और निराकार साधना के विपरीत सगुण और साकार साधना की प्रतिष्ठा की। उत्तरभारत का यह सम्पूर्ण युग भक्ति युग के नाम से अभिहित किया जाता है जिसके पूर्वाद्ध में कबीर और जायसी हैं तथा उत्तराद्ध में मूर और तुलसी। गुजरात की परम्परा इसमें बिल्कुल विपरीत है। यहाँ का भक्ति परम्परा के पूवाद्ध में भालण नरसिंह और मीरा हैं जिनके द्वारा कृष्णभक्ति परम्परा का विकास हुआ जिसका परिणति हम दयाराम के काव्य में दिखायी देता है। उत्तराद्ध में अन्ता नरसिंह गोपात्र बूढ़िया मनोहर और वस्ताराम हैं जिन्होंने औपनिषदिक ब्रह्म को अपन ऽङ्ग पर अभिव्यक्त किया। अब हम गुजराती सत्ता द्वारा चर्चित विविध विषयों का चर्चा करण —

ब्रह्मलोला वणन—ब्रह्म जीव माया तथा जगत की चर्चा हम पढ़ने कर रहे हैं। गुजरात के पानमार्गी सत्ता ने अपने इस आध्यात्मिक विषय का अधिक सरस एवं प्रभावपूर्ण बनाने के लिए सगुण भक्ता की भाँति राम तथा कृष्ण की लीलाओं का बखान किया है किन्तु उनके य आत्मबन्धन सदब निगुण एवं निराकार के प्रतीक बनकर ही आय हैं। पुष्टि मार्गीय भक्तों ने जिन प्रकार कृष्ण की लीलाओं का बखान किया है

गुजरात के चानमार्गी सता न ठीक उसी प्रकार प्रकृति और पुरुष का राम लाना का बलन किया है।^१ तनरूपा मन्दिर में भक्तिरूपा राधा और मुक्तिरूपा यगोना के साथ ब्रह्म न जा केन खना है उसका अभिप्रेक्षित वन सता न अत्यन्त भाविक ढङ्ग से की है।^२ राम और कृष्ण के आत्मरत्नों को उद्धान रहस्य के इमा रगमच पर उतारा है। अन्वाकृत ब्रह्मनाला प्रातमनामकृत ब्रह्मलीला, कृष्णदामकृत रघुवगमण तथा यदुनन्दन आदि इसी प्रकार की रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में सता की आध्यात्मिक उदान का पना ता चलता हा है, कपना एवं भावव्यजना का अपूर्व चमत्कृति भा साथ साथ हाता है।

सत चरित—गुजरात के सत कविया में जहाँ एक ओर ब्रह्मचरा का भूय है वहाँ दूसरी ओर व सता का महिमा का गान करत हुए भा नयी अधात। नाभादासकृत भक्तमान के आधार पर लिखी गई भाजाकृत सगिस भक्त कथा अन्वाकृत मतप्रिया मुकुटकृत कबीर चरित' एवं गारण चरित महात्ममगम कृत भक्त महिमावली प्रीतमनासकृत भक्त नामावली तथा प्राणनाथ के शिष्या द्वारा लिखा गयी वातक कथाएँ भी प्रकार की रचनाएँ हैं। गुजरात के सता द्वारा लिखी गयी चरित गाथाओं में सता का महिमा मुक्तकठ से गायी गयी है। इनकी यगगाथा में दिये गुजरात तथा उत्तरभारत आदि सभी देशों के सता का समावेश हुआ है। इसमें यह प्रनात होना है कि इनकी भावना पूणत असाम्प्रदायिक व्यापक तथा सर्वतोप्राह्य थी। महत् चरित्रों का अवतारणा में गुजरात के सतों की कतम पीढ़ नहीं रहा।

पौराणिक कथा—मत्रहवी गता में जहाँ उत्तरभारत की मगुणधारा भागवत् की ओर विपय रूप से उन्मुख हो रहा था वहाँ गुजरात की आन्वयन परम्परा का समुन्नत रूप हम प्रमानद के काव्य में लिखाइत रना था। इधर गुजरात के तदुगुगीन सन्ता न भी अपन कथ्य विषय के अतगन कुछ

१ 'एसो रमन कस्मो नित्य रासा प्रकृति पुर्य को विविध विलासा।'

—अन्वा 'ब्रह्मलीला ४।

२ श्री विदायन कमल आकारा, कृष्ण राधिका अलङ्कार विहारा
ताको तेज विविध विस्तारा सब तन मंदिर छेतनहारा।

—प्रीतम ब्रह्मलीला २३-२४।

पौराणिक-कथाओं का स्थान दिया। ममधरामकृत ध्रुव चरित श्वा साहयकृत कृष्ण-भागर विहारीनामकृत कृष्ण बाल विना आदि ग्रन्थों में इमा प्रकार की पौराणिक कथाओं का समाविष्ट किया गया है। गुजराती में इन सन्तों द्वारा रचित पौराणिक आख्याना का एक नम्बो परम्परा माडग में नवर छोटम तक मिलता है।

गुरु महारम्य—कबीर का भक्ति अध्या न भी गुरु का गाविण तथा गाविण को गुरु कहकर सम्बोधित किया है। इस आधार पर गुजरात में प्रायः सभी सन्तों ने गुरु का जीव-मुक्त अवधूत परमहंस परमात्मा सत्गुरु आदि संज्ञाओं से अभिहित किया है। सन्तान गुरु-महारम्य का वर्णन पुस्तक पत्रों में साथ-साथ स्वतंत्र ग्रन्थों में भी किया है। इस प्रकार के स्वतंत्र ग्रन्थों में वस्ताकृत गुरुगीता सतरामकृत गुरु वाचना रत्नमाहकृत गुरुमन्त्ररम्य भारार साहयकृत गुरुमहिमा विहारीनामकृत गुरु-स्तुति कुवरनामकृत गुरु महिमा आदि उल्लेखनाय ग्रन्थ हैं।

ध्वसात्मक वष्य विषय

अन्धा भोजा घोर वायू साहय प्रभृति सन्त यद्यपि कबीर की भी तरह फक्कड़ प्रकृति के थे फिर भी इनकी जिन्दी वाणिज्या में बड़ा डर फक्कार नहा जसी कबीर में है। जिन सन्तों की गुजराती रचनाओं में इनके चित्तित्व का उग्र स्वरूप अवश्य दृशित होता है। बाह्य कम वाण्य एक साथ जाडम्बर के प्रति उनकी वाणी ध्वसात्मक रत्ना है। अन्धा के छप्पा भाजा के चावला और घोर का काफियाँ लणार से छूट हुए तीर की तरह सीधे समाज के ममस्यन पर चार करती हैं। प्रीतम छाटम और मनोहर के पत्रों में बाह्याचारा का खण्डन तथा सयम शीत और सत्साचार द्वारा आत्म प्रतीति का ममयन किया गया है। कुवरदाम रचित हम सानेव और स्वाचार पत्रिका जमी रचनाओं में बाह्याडम्बरा से बचकर वराम्य का पूरा पानन करत हुए धन स्त्री अन् कामादि मायाजय वस्तुओं से दूर रहने पर बल दिया गया है। अर्थात् मन का शुद्ध किय बिना घर छाटकर साधु बनना पवन का राकना गुफा में रहना मस्ता में फिरना नख और जटा बटाना गिर नीचे रखकर नटकना मुष्णन कराना कटी और माला पन्नकर तिनके और छापा नयाना आदि सब व्यय हैं। अन्धा के गण्य में—

‘मन रिभावन वद विद्या सब मन रिभावन चौदह विद्यारी ।
मन रिभावम पाट पटम्बर मन रिभावन महल अटारी ॥
मन रिभावन ताप तपे सब मन रिभावन होय ब्रह्मचारी ।
मनकु भेट मनातीत पाये सो तो अखो केहे गुह्याल यारी ॥

—सतप्रिया १२ ।

मनोहरदास न एस ‘भाड भवयाजा की खुनकर खिली
उडाई है —

मल कलिपुग में भाड भवया,
परम हस वनी बठत भया कुरिसत नरकु कहत कनया ।—मल०
ब्रह्मविद्या की बात न जानत भुम भननन दुम ठननन बजया । मल
तोते जिमि पनी बाग की पाई
कीवी कीवी कीवी कीवी कीवी की करया ।—मल०
दूना कठी गलेमह डारके पामर नर के धनही हरया । मल०
मृग जिमि राग रसिक जन आगे

मादर दानी तुम दर दानी तुम दर दर गर्वया ।
सच्चिदानंद ब्रह्म से ललटीके धनगन धनगन छ नचया ।’ मल०

सद्य म इन्होंने ब्रत तप जप मवा पूजा अचना धम कम
आदि क वाह्याचार्य की कटु आलोचना की है। इन सत्ता का उद्देश्य
वस्तुतः अकमप्य जावन म जान का प्रकाश फलाना था।

सामाजिक वण्य विषय

यह सत्य है कि सन्तों के काव्य का उद्देश्य आत्म प्रतीति ईश्वर
प्राप्ति अथवा माक्ष माधना है किन्तु समाज क एक अभिन्न अंग हान क नाते
इनका काय स्वात सुखाय हाकर भी लाक हिताय है। अत यह लोक
जीवन तथा जन माधारण स परे नहा। इस रूप म गुजरात की सतवाणी
पर भी तद् युगीन सामाजिक-जीवन का प्रतिबिम्ब पडना स्वाभाविक था।
बजार की तरह अन्धा का ब्यक्तित्व एक उच्चकोटि क तत्त्व चिन्तक के साथ
साथ समाज चिन्तक क रूप म भा मव मुखर है। इन्होंने छप्पा तथा पत्ता म
समाज क दम्भ पातण्ड तथा रुद्रिया का विरोध कर नतिव एव सहज
जीवन का सङ्ग लिया है। तरवालान समाज का प्रतिबिम्ब इनकी वाणी
म जान अनजाने भन्व उठा है। इहें अपन कथन की पुष्टि म दृष्टान्ता
को दू देने क लिए अत्यन्त भयना नहीं पठा है अपितु सोव-जीवन के अनुभूत
एव प्रत्यक्ष उदाहरण का ही इन्होंने प्रस्तुत किया है। लौकिक जावन क

राम रंग से विरक्त एम गता शरा प्रम्नु इत दृष्टान्ता म ह्य तदयुगीन मामाजिव धामिव तथा आधिव व्यवस्था के स्तान कर गवन हैं । अर्वाचीन मता की वाणी राष्ट्रीय एव मास्त्रुतिव चेतना का स्कार्द है ।

१ राजनीतिक स्थवस्था—अत्या का वान राजनीतिक अव्यवस्था एव अधाधु धा का समय था । उत समय गुजरात पर मुगला का सामन था । त्रिलना का सूवत्तार प्राय अहमदाबाद म नियुक्त हाना । जहाँगीर गाहजहाँ और जोरङ्गजय क्रमम एम पर पर नियुक्त हो चुक थ । सवन् १६७७-७८ के आम पाम गुजरात के सूवत्तार गाहजहाँ न जहाँगीर के विरुद्ध त्रिनाह किया था । सवन् १७०० म जब जोरङ्गजय गुजरात का सूवत्तार बना ता उमक मन म भी अपन भात्या के विरुद्ध वगावन करन की भावना प्रबन हा उठा । त्रिलना की मल्लनत का भागन का सातमा गुजरात के स्तन सूत्रारो को वचन बनाती रही । गुजरात पर इन राजनीतिक अवस्था का गहग प्रभाव पना । प्रजा का आतरिक एव बाह्य जावन दूषित बनता गया । पायी एव नक मुमनमान गामका का युग जाता रहा । जनता का विश्वास उन्नडता गया और गामक एव गामन के प्रति जा श्रद्धा गुजराती जनता म पहन थी वह अब न रही । जनता को अब जस किमी गामक के रहन का विनाय ह्य गाक नहा था ।^१

भयभीत जनता की अपना विश्वास त्रिनाकर जोगी जना और तात्रिक कमकाणा की दुहाइ दन लग ये । इन प्रकार के तात्रिका पाड फूक कर मात्र जेन बाल आभाओ कथा-श्रवण कर पट भरन वान पाग पण्डिता की सख्या त्रिन प्रतिदिन वन्ती जा रही था । अत्या न वन सभा को आडे हाथा लिया है ।

२ धार्मिक स्थवस्था—मध्य युग का समस्त गुजराती साहित्य और समाज धम की धरता पर पना और पूना था । अब अत्या ने अपनी वाणा म धम के नाम पर समाज का दूषित करन वान वन हर धोवा वव हर

१ इस नगरी म ना मुखे सोगा नित मागे और नित होष रोणा ।

जिम नगरी का राजा नडगा सर्वे लोक चले आप रगा ।

—अष्टो मजन ६ ।

२ माला न पेह न टीका घनाऊ, गरले न जाऊँ मे कीऊ किसीका ।

आपा न भेटु थापा न थापु, मैं रुदमाता हू मेरी लुगीका ।

—सतप्रिया ८७ ।

जैसे दभी गुप्ता^१ कम म पलायन करन वाल सयामिया कथा भागवन मुनाकर आजीविका प्राप्त करने वाल पुगण पथिया^२ एव धम की आत्त म विनासिता का डाग रचाने वाले धर्माधिकारिया^३ को अपन घरम व वार्त पर खूब ताला है सत्य की बमौटी पर इह पूरी तरह बगा है और भूठ का पना हटा कर ज्ञान का प्रकाश फलाया है ।

३ वण भेद—वण भेद की प्रथा यद्यपि नरसिंह मेहता के काल मे हा चला आ रही थी किन्तु अन्धा के काल म यह अत्यन्त दृढ़ हो चुकी थी ।^४ वर्णाश्रम व्यवस्था क भी छुटपुट दृश्य दिखाई दे जात व । देह और चाम का लेकर मनुष्य और मनुष्य के बीच एक गहरी भेदक रेखा विचती चली जा रही थी ।^५ योगा का मानस अत्यन्त सकुचित हाता जा रहा था । आंतरिक एव बाह्य जीवन स ग्रस्त गुजरात की भोली भाली जनता ग्रहो की दगाआ म विश्वास करन लगी थी ।^६ एसलिए कम वाणिया की पाँचा अगुनियाँ थी म थी । व जसा रिधान बताने भाली प्रजा उमी का अनुसरण कर बटती । अन्धान इम प्रकार की सामाजिक वण व्यवस्था एव रूनिया क प्रति घार बिनाह किया और ऊँच-नीच जाति पानि भेदभाव की सकाए दावाग का दहा कर ध्यापन मानववाद का मन्त्र दिया —

ऊँच वण नेडे नहीं नीच वण नोहें दूर ।

उयों नर लम्बा और टोंगना कोई छुवत नहीं सूर ॥^७

मामाजिर जीवन क नतिक स्तर का ऊँचा उठान क लिए इन माना न कुमग वुप्रया एव रूनिया की घार भक्तना की तथा सत्मङ्ग सत्त

१ गुध घई बठो हूँसे करी । —अला ।

२ पूलेगमा नाम वणव घबें, गु पयु घेर घेर खातो बयें । —अला ।

३ ध्यास अने धयानी एफज पेर ।' —अला ।

४ जात्य ऊँचो हरिना मिले अनुभव ऊँच हरि भाये
जौ लोह में मुख देदिए अछा कचन मे न दिखाए ।'

— अक्षयरस पृ० ७१ १ ।

५ 'बर्णाश्रम जिन देखिया, मो बयें देखे राम ।

अला हरि कसे मिले जिन देख्या देह घाम ॥

वही पृ० ७० २ ।

६ अ छप्पा २०२ ।

७ अक्षयरस पृ० २०६ २ ।

गमहृदि एव अहिमा वा पाठ पद्याया । आकाश वा भानि गत्मान् स्व ॥
 वातानीन एव अभङ्ग है ।^१ इति मानव जातन का मया गमन पर
 न जान क विण मत्सग की बाग राग हिमायन की है —

होत राजी बहुत विषय सपटाई क
 बधि टेढ़ी पाध पगे घोती सो किनेरीदार
 भग पर ओढ़ी सेत दुपट्टी रगाइ के ।
 बोले भीठी बात कहे कहोत गीहानी
 सत्सग म न आवे क्यु सोक म सजाई क ।^२ —हरासिद्ध ।

४ नारी भावना—गता न जपन वष्य विषय क अतगत ममाज म
 नारा क उचित स्वरूप एव पत्र का भा चचा का है । तब नारा चचित
 नारी क प्राय ग रूप है —

१ कामिनी रूप । २ पतिव्रता रूप ।

कामिनी रूप—कचन जीर कामिनी का घाग निन्ता मत्र परम्परा म
 अत्य त प्राचीन काल म हाती आ रता है । इम परम्परा का संगणन प्राय
 मिद्धा क समय म दखा जाना है । मिद्धा म प्रारम्भ नाकर जन तथा नाथ
 कविया क साहित्य म परिपापित यत्र परम्परा उत्तरभारत तथा गुजरात क
 गता म समान रूप स दिखाया गता है । गोरखनाथ न नाग क कामिनी
 रूप की निन्ता की है ।^३ कबीर म नारा निन्ता का उग्र स्वरूप दृष्टिगत
 हाता है ।^४ कचने नारी क भाग प्रवान स्वरूप का कया आवाचना की
 है । सु दरदास के अनुसार नागी का गारा एव भयानक सघन जगन क
 समान है जहा भानि भानि क भयानक एव घातक नाव निवास करत है ।^५
 ध्यान देन याम्य बात यह है कि नागी क गुण नाया की चचा रता सत

१ ज्यों नम की भग कबु न घता

सत्सगे यो काल न लागे लता । —महात्म्यमराम ।

२ ज्ञानकटारी—६ ।

३ गोरखबानी पृ० ७ ५८ ।

४ सतबानी सप्रह पृ० १५७ ।

५ कामिनी की देह मानो कहिये सघन बन
 उहाँ कोऊ जाइ सु तो भूलि के बसतु है ।
 कुजर है गति कटि केहरि को भय जाम
 बेनी काली नागनीऊ फन को धरतु है ॥ —सु दरदास ।

कवयित्रिया म कहीं भी लिखायी नहीं गी। कवार की भाँति अम्बा और प्रातम ने भी स्पष्ट गान म यह कहा है कि परमद्वर के पथ म अविद्या रूप नारी एक भय है।

‘परमेश्वर के पथ म नारी डर घोपास

कहे प्रीतम अघ बीच से उडावे आकास ॥’ —प्रीतम।^१

नारी का भौतिक प्रेम ताना कान म मनुष्य क लिए स्वरूप है जबकि यह उम सुख की खान ममभता है।^२ नारी क रम नाग मामन मान्य एव जावपण म वचन के लिए कहलि अपना मातिया म वेतावनी अङ्ग अथवा नारी निदा का अङ्ग आदि की विविष्ट याजना भी की है।

पतिव्रता रूप—प्राय मभी मता न जर्ण एक आर नारी क भागमय एव वामनाजय स्वरूप का आवाचना का है वहाँ दूसरी ओर उमक कत्याग वारी स्वरूप का प्रगमा भी का है। कवार न अपना माधना की तुनना पतिव्रता क आत्माँ म का है। नारी क रम मनी रूप का उतान न आरभाव क साय देगा है —

साधू मोख न मागई जो मागे सो माइ

सती न पीस पीसना जो पीसे सो राइ ॥

गुजरात क मता म दादू अगा प्रीतम छोटम रविसान्व नृसिंहाचार्य प्रभृति मता न ममाज म पतिव्रता नारी क आत्माँ की प्रतिष्ठा प्रगमा एव वरना का है। पतिव्रता नारा क मयम गान एव मत्वाचार पर चवन का कहान मत्व हिमायत की है। उदाहरण—

माधो विरह व्रजनार को छोड चलो परिवार,

कहे प्रीतम पियाकु मिलि गावत गुणससार।’

—प्रीतमदास।

×

×

×

‘साव सती और निज भक्त दोनों की एक टेक।

तन मन कु पहेंतु दिया अब को करे विवेक ॥’ — अगा।

गुजरात क मता म नारा क आत्माँ क प्रति उनका उच्च भावना का एक वाग्ग गति पूजा का प्रभाव भा माना जा सकता है। गुजरात क नारी जावन में गति-उपागना का विगप मन्त्व है। गति-माधक न गान

१ प्री वा पृ० १३५-३२।

२ नृसिंह वाली विसाम, भाग २ पृ० २२२।

पर भा गुजरात के कुछ मन्त्रा न कवि का आराधना में अनक उन्नत-कवि न
गुजरात का रचना का है। नृसिंहाचार्य के विचार समाजिक मान्यता के
अधिक निराल प्रभाव है। समाजिक मान्यता के प्रतिभा में नारा
मन्त्र का रचना करने हुए यह स्पष्ट कहा है कि समाजिक मान्यता का
रचना में प्रमुख कर देगी है।

उन मन्त्रा न समाज द्वारा नारी पर हानि का जल्पाचार्य का रचना
का भ्रमक प्रयत्न किया। उस उन्नत नाराधना का मन्त्रा न अभिहित भा
किया।

५ आर्थिक जीवन—समाज का आर्थिक समाज का चित्रण गुजरात
की मन्त्रा न मिलाता है। उनका रचनाओं में प्रयुक्त समाज प्रभावों में यह
प्रभाव है कि मध्ययुग में गुजरात का आर्थिक समाज व्यवस्थित रहा
होगा। गुजरात में उस समय पर जयवा हीराचार्य समाज का बुना
जोर कर्म के बसाया का प्रचलन विषय रूप से था।^१ अन्त में अपने एक
छप्पा^२ में समाजिक समाज का प्रयोग किया है जिसमें यह प्रतीत होता है कि
दमास्वम का कीमती वस्त्र भा यहाँ आयात होता था। वस्त्रा नारी
वस्तुओं का दुकानों पर खूब आकर्षक समाज में समाज का प्रयत्न किया जाता
था।^३ विदगा के साथ जनमाग में खूब व्यापार होता था क्योंकि अन्त
न समाज चलाने वाला का अनक नित्य किया *।^४ सूरत और सभात
उस समय के प्रमुख व्यापार थे। मन्त्रा का व्यापार उद्योग और समाज
दाना रूप में चलता था।^५ समाज का धंधा भा उस समय खूब जारी पर
था। धन के सम्बन्ध में समाज का विश्वास प्रायः एक समय पर कम था।
स्वयं अन्त के सम्बन्ध में प्रसिद्ध जनप्रति है कि अन्त का धन वस्त्र तक
अन्त की समाजदारी पर एक कर बठा थी। चाजा में मन्त्रा न (मिनावट)
भा होता था जमाकि अन्त न समाज मन्त्रा न पाना का मिलान की बात
कहा है —

१ अ छ ८३१७।

२ वहा १७५।

३ अ छ २०६।

४ वही १३६-१४८-२४४।

५ वही ८२।

६ अन्त नोय समाज छूटा पले। अ छ।

आप कोई और उपासन और ज्यु
नील का नीर मसीमध्य सान।^१

मनो म काम करान क लिए मजदूरो का गोज पर रखा जाता था।^२
जखा न बगार नोन बाल मजदूरा का भी उल्लेख किया है।^३ पगुपानन
यही का विगिष्ट व्यापार था। उल्लेख जानवरा क गन म नक्कता हुआ
उडा (उट्टंग) बाँध लिया जाता था।^४ अधिक परगान करन बान जानवरा
का अक्षर म बाँधकर छाड दिया जाता था।

६ मनोरजन एव आमोद प्रमोद क साधन—मुगन वान वाम्नु
नृत्य मगत वार चित्रकता का स्वर्ण युग था। गुजरात क जन दरामरा
और मुस्लिम गामका तारा बनायी गया जुम्मा मस्जिद म गुजरात का वाम्नु
कता के एक म एक ऊँचे नमून दख जा सकत है। बच्छ एव भुज क
मन्तारावा न का य कता क साथ-साथ मगत एव नृत्य कता का विगिष्ट प्रथम
लिया। गुजरात का चित्रकता भी अपन लक्ष का अनूठा है। गुजरात का
मन्दवाणा म जित विगिष्ट कताआ का उल्लेख हुआ है य है —

- १ नाच्य-कला।
- २ नृत्य-कला अथवा रास।
- ३ चित्र कला।
- ४ वास्तु कला।
- ५ सगीत-कला।

मनात्त गवगीवाइ और अला का वाणा म नाटक ६ भाड जीर
नवा^१ १ का अनेक वार उल्लेख हुआ है। एमव जवावा उनका
वाणी म गम ७ चित्रकारी आदि क भी अनूठ बगन मिनन ८। भीत पर
चित्रकारी करन का उल्लेख जया न ब्रह्मनीना म किया है।^९ गुजरात क

१ ततप्रिया १८।

२ अ छ १६३।

३ वही १६२-१६३-१६५।

४ वही २१३।

५ सदा मवरा नाटक भाषा ५-१।

६ मल कल्पियुग मे भाड भवया। —मनहर पद।

७ ऐमो रमन बह्यो मित्य रासा —ब्रह्मलोला ४-१।

८ असे भीत रबी चित्रगासा माना रूप सते चो विगाला।

—ब्रह्मलोला ४-१।

गोवा में अथ भी यह परम्परा जीवित है। आमात्र प्रमोद के अथ मापना में चामसना का गत (पुस्तिका नृत्य) चन्द्रा का नाच आनिगवाजा का उत्तम विषय रूपण मितना है। मगधान अफाम मुफा गाजा और तम्बाकू के मवन का उत्तम भा मत्र तत्र मितना है।^१ इनके सग उल्लिखित कुछ स्वादिष्ट मिठाइया के नाम इस प्रकार हैं—

पौआ पढा खतामा मुगन्न कचौरा पूगी कच्चा ख्याति।^२
वपभूषा एव आभूषणा के विविष्ट नाम इस प्रकार मितन हैं—

किनारादार घाना माया पयाला कच्चा रत्नमाना चुन्नीना दुपट्टा
दमर वगपून टीनटो यामिना रामला (रथा) पञ्ची नपूर वाकला
आगना टापी पाघडा टाडा कपारा घुघरा का छला ख्याति।^३

इनकी वाणा में सूचित सगत के विभिन्न वाद्य यंत्रा के नाम इस प्रकार हैं —

भाम्क पलावज करताल मृग डफ मर मृचरङ्ग अथवा मुन्नग,
ददामा अथवा दमामा निमाण मन्दार्द खजरा माग्य वामुगी नागा
नावत उपनगम आति।^४

निष्कप यह कि सत्ता का काव्य विषय का दृष्टि में आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना का काव्य है। सत्ता की मृजनात्मक गति न आत्म जान के साथ साथ मानव मूल्यों का भी रक्षा की है। इनके काव्य में समाज का वह दर्शन है जो हम प्राय इतिहास के पृथो में दूतन पर नहा मितना। समाज की सड़ी-गली मायताओ एवं रूढ़ियों को मिटाकर रहानि जिसे यापक मानवतावाद का संदेश दिया उमा का अभियक्ति ख्यान अपन काव्य के अन्तगत का था। इनके काव्य में मवत्र गावत जावन का मन्त्र है।

प्रतीक विधान

अपन रूप गुण काय या विगपताओ के मात्स्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या काय किमा अप्रस्तुत वस्तु भाव विचार क्रिया कलाप दंग जाति सम्मृति आति का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया

१ म छ ११६ २५२।

२ गवरी कीतन मात्ता कीतन ५६१।

३ वही

४ देखिए— गवरी कीतनमात्ता तथा मोरा की पदावली।

जाता है तब वह प्रताक बनाना है। प्रताक-याजना क अंतगत दा वार्ते विंगण रूप म मन्त्रपूजा माना गयी हैं—

१ विभिन्न अनुभूतिया या मबन्नाआ क बाब चुनाव वरन का प्रक्रिया का पान ।

२ इन अनुभूतियों का प्रभावित करन बाबा साकनिक वम्नु का चयन ।

यद्यपि प्रताका क मायम म प्राय मूहम एव विंगिट अनुभूतिया का महज शाल बनान का प्रयत्न किया जाता है जमा कि कवार आदि का आध्यात्मिक अनुभूति की प्रताक-याजना म निवाया जाता है तथापि अनुभूत जीवन तथा परिचित एव नात निदान्ता क निरूपण म भा प्रताका का याजना हूप स्पर्शिता एव समस्कारिकता क अनु का जाती है । गृह्यवांग कविया न जहाँ अव्यक्त का एक वरन म विभिन्न प्रताका का महाराग लिया है वह व्यक्त का अधिक प्रभावपूण बनान क निर ताकजावन क सामाय प्रताका की सयाजना भा का है । परिचित धरनु मरन मामिक एव स्पष्ट प्रताका क माध्यम म नान अपना बागा का लोक भाग्य बनान का प्रयत्न किया है । गुजरात का हिंसा मत बाणी म प्राय दा प्रकार क प्रताका की सयाजना हूप है —

१ पारिभाषिक प्रताक । २ भावात्मक प्रताक ।

१ पारिभाषिक प्रताक

पारिभाषिक प्रताका क अंतगत कुछ एम साकनिक मध्यामूलक एव रूपवात्मक प्रताक है जा परम्परागत है किन्तु कुछ एम भी है जा मता का पारिभाषिक पारिवर्तित म अपना विंगिट मन्त्र रखत हैं और जिन् हिंसा का उनका नवात दन बना जा मवता है । उदाहरण क विंग एन गन अकल-बना अगनिगा मान-बना अंतररम गाविण रम अक्षररम आदि इमा प्रकार क पारिभाषिक प्रताक हैं जिनका प्रयाग गुजरात का मतबागा म अपन दृढ़ पर चम्पन हुआ है । एम पारिभाषिक प्रतीका की स्पष्टता परिगिष्ट क अंतगत का गया है । रूपवात्मक प्रताका म माग रूपका का सयाजना म क मन्त्र मिष्ट रखत है । पान

कटारी,^१ जान घटा^२ भजन भडाका^३ तन तनूरा^४ जान हुका^५ बुद्ध एसे ही सागरपत्र^६ जिनम इनका कपनागति एव चमरकार वृत्ति का परिचय मिलता है।

२ भावात्मक प्रतीक

पारिभाषिक प्रतीका की अपेक्षा गुजरात का हिन्दी सन दागी म भावात्मक प्रतीका की प्रचुरता है। य प्रताक क्याकि उमम चिर परिचित^१ अत अत्यंत मार्मिक बन पर है। एम भावात्मक प्रताक प्राय तान प्रकार क हैं—

- १ रहस्य मूलक भावात्मक प्रताक।
- २ प्रकृति मूलक भावात्मक प्रतीक।
- ३ जीवन व्यवहार मूलक भावात्मक प्रताक।

रहस्यमूलक भावात्मक प्रतीक—अखा की जकड़िया म एम रम्य मूलक भावात्मक प्रतीका का भरमार है। इमा प्रकार रविमाहृज मानमदान छोटम अनवर प्रभृति सता न एस अनक प्रममूलक एव राम्पय प्रतीको को ग्रहण कर नीरम आध्यात्मिक भावना का मरम बनाया है। रीति युगीन कविमा न जिस दाम्पत्य जावन का वरण किया है उमम वामना ही उद्दीप्त हाती है किंतु सन्तो म जिस दाम्पत्य भावना की अभिव्यक्ति टुल है वह नितात पुनीत रसमयी एव अनौक्य है।

अखा न तो स्पष्ट ग ग म यह कहा है कि प्रेम का नाग जब काट नेता है तो ससार क कटु अनुभव भा माठ हा जान हैं। वम उमक नूर क साथ निकाह करन की आवश्यकता है। उम माग म पनाड निवार् सब बकार है। जिसे मूळ नगी पिया उमा स दूर है और जिमन उम दिन के दीन म गवा है वह जरूर निहाल गो गया।^७

१ देखिए—हरिप्रहृकृत जान कटारी १३।

२ अक्षयरस पृ

३ प्रा का मा भाग २४ पृ० १६७-३।

४ छोटमवाणी भाग १ पृ० १४४।

५ परिचित पद सग्रह पृ २५३, पद १८।

६ अखाकृत भूलणा ८०।

पत्र निखकर पड़ित की पदवी धारण करने वाला उम थाभ के पून' का तरह
 ३ जिमम कभी फल लगता ही नहीं।^१ वस्तुतः गुजरात की निगुण
 वाणी का वाक्यत्व ऐसे ही प्रेम रूपका म निखर उठा है। इनके गम्पत्य
 प्रभाव माधुय भाव के सुन्दर नमूने ह। उदाहरण के लिए—

‘अबहु न निक्से प्राण कठोर । टेक
 दरसन बिना बहुत दिन बीते सुन्दर प्रीतम मोर ॥१॥
 चारि पहर चारों जुग बीत रन गवाई मोर ॥२॥
 अयधि गयी अजहु नहि आये, फतहु रहे चित चोर ॥३॥
 कबहु नन निरख नहि देखे मारग चितवत चोर ॥४॥
 बाहु ऐसे आतुर धिरहिणि जसे चद चकोर ॥५॥^२

गुजरात के सतों द्वारा रहस्यवाद की अभिव्यक्ति इसी प्रकार के प्रेम
 रूपका द्वारा हुई है। इन प्रेम प्रताका म आत्मा की परमात्मा से मिलने
 की छत्रपटाहट एव तीव्र भाव यजता है किंतु हम तनमनाहट म प्रिय मिलन
 का अगाध विश्वास भी है। इनकी सम्पूर्ण माधना का महल विश्वास की
 नाव पर ही खड़ा हुआ है। प्रेम के कठिन माग पर चलकर इन्होंने वस्तु
 प्रतीति करनी है।^३ ब्रह्म के प्रति इनका अगाध विश्वास जाग
 उठा है—

साधा साजन मेरा रे ! तुज आवत गया अघेरा रे । सावा०
 जद आया मुज साला रे । पाया प्रेम का प्याला रे ।
 तब नौलण्ड भया उजाला रे साधा साजन मेरा रे ।^४

जिम्न पूतम का चित्त एक बार देख लिया वह दूज तीज की क्या
 गिनन लगा ?^५ उस चिन्ती की चकाचौंध म इनकी आत्मा हरि का

१ मण्या मण्या पड़ित हुआ मया बाँझ का फूल
 फूल धपु फल ना धपु, एही मण्या माँ भूल ।’ —निरांत ।

२ आधम मजनावली ।

३ सुई नाका तें साँकडा, अस्ता ! हरि का द्वार
 पण ताके मन मदान है, जिनु पाया वस्त विधार ।

—साखी सहेज गक्ति बी अग २६ ।

४ अद्याकत जकटी, ६ ।

५ अस्तारुत भूलणा ११ ।

हेमन्त-हस्त स्वयं हेमन्त हा जाती है। अथा पर भा कवीर की भक्ति
नाद की साली का रग चद्र बुवा है।

‘हरिकु हेरता रे सलो में रे हेराणी।

सरितासोन असो रे, सिधु बुवा हुसर पाणी।

ज्यु घनसार पयन को पावत ताकी सुरत समाणी

ऐसो मगन भयो मन मेरो कोई बुभे गुण्यम ग्यानी।

ज्यु अघेरो अक देखता गई निज देह बिलानो,

प्राप्त वस्तु अला कहे ऐसो सगत भई हे प्राणी।’

मिलन का मार्मिक अनुभूति गुजरात क सूफी कविया म भा दशा जा
सकती है। इनकी मर्माभूति का एक उदाहरण दविए—

‘बालम भोको अब न छुओ मोरी सुरछ चुनर मुस्काय।

सीने पे मारे ना मारो पिचकारी अगिया को दाग लग जाय।

—अनवर।^२

सूफिया की इस प्रकार की गली का प्रभाव गुजरात क विगुद्ध
चानवादी सत्ता पर भी पडा है। अथा की जकडिया पर इसी गना का
प्रभाव है। घूरत भात सनूना और मरा ढोलन ढलकर आया^३ म ठीक
न्मी प्रकार की भाव प्रवणता है जसा अनवर तथा अन्य सूफा सत्ता म परि
रक्षित हाती है।

प्रकृतिमूलक भावात्मक प्रतीक—सन्तो की चष्टा बहिमुखी न होकर
प्रतमुखी विशप रही है, अत उनके काव्य मे विगुद्ध प्रकृति चित्रण नही उतर
पाता। इन्होंने प्रकृति क माध्यम से अतमुखी भावना को अभिव्यक्त किया
है। गुजरात क सत्तो की हिन्दी बाणी म एस कतिपय उदाहरण मिलेंगे
जिनम प्रकृतिमूलक भावात्मक प्रतीको की सयाजना आध्यात्मिक निरूपण म
का गई है। यहाँ पर एस प्रकृतिमूलक कुछ प्रतीका को उद्धृत करना समी
चीन होगा —

१ गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रन्थ डा० अम्बानाशकर नागर पृ १३२।

२ अनवर काव्य पृ० १८४।

३ मेरा ढोलन ढलकर आया रे

हैं दूधे घोडूगी पाया रे मेरा ढोलन ढलकर आया रे।

— अजाकृत जकडी १०।

वर्षा व्रगण

- (१) बरषत अनुभव उमग्यो सावन ॥
जल चल होय रह्यो सब हरिया सागे खेत सोहावन ॥
—नाथमवान ।^१
- (२) 'ज्ञान घटा घट आयी अचानक,
ज्ञान घटा घट आयी ।' —अला ।

वसन्त व्रगण

- (१) आयो हे फागुन मास खेलो खेल आतम आपमे हो ।
नाहि दुरयो आतम के आगे, मत भटको बन कु ज ॥
× × ×
अथ आतम बिन जानो देखी गाओ धुआस्य
घारी मास वसन्त अखी कहे आगम आपको पार ।—अला ।^२
- (२) फागुन के बिन चार होरी खेल मना रे
बिन करतास पखावज बाज, अणहद की भणकार रे ।
बिन मुर राग छत्तीसों गाव रोम रोम रग कार रे ।
सील सतोप की केसर घोली प्रम प्रीत पिचकार रे ।
—मीराबाई ।^३
- (३) 'मैं खेजू' न्याम सग फाग,
पाग आज बड़ पायो । —वस्ता ।

हेमन्त

हेम हकार गरयो ताघन थे जब प्रकट्णा ते सत ।
रत्य पतटी प्रकोर ओर सब भ्यला हे सद्गुण सत ॥
मन-ववन उडत मुख-कारी सीतल मन्द मुग-घ ।
नन कमल विकसे विद्यविषय के, भागा मरम मे घष ॥'—अला ।^४

शरद

हम भी मोसमे सरमामें गस्त होता है
सनम के कूचे में हरबार हमने छाई ठंड
जो देखा भस्त हमें ठंड ने सरे बाजार
गराबे इन्क की मस्ती से छुद सजाई ठंड । —अनवर ।^५

१ विष्णुपद ५ ।

२ अक्षयरस' पृ० १० ।

३ मीराबाई की पदावली पृ० २४५ ।

४ अक्षयरस पृ० ११ ।

५ अनवर काव्य' पृ० २५४ ।

इम प्रकार हम जगत हैं कि जन मता न प्रेम के प्रभाव की, आध्यात्मिक श्रुतियां आदि का प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। साथ ही नीति और उपाय की चर्चा भी बना रहा प्रकृति के विविध प्रकारों के मन्त्र का है।

जीवन व्यवहार मूलक भावार्थक प्रतीक—गुजरान के अनुभव विद्वान् मर्मों कविया द्वारा चुन गये अधिकांश प्रतीक एम हैं जो जीवन व्यवहार के हैं। कारण न जिन तरह चार चरखा चक्की हट जाति अनेक प्रतीक दैनिक जीवन में चुने हैं उमा तरह गुजरान के मन्त्रों में भी घरेलू जीवन में सम्बद्ध अत्यंत निकट के प्रतीकों का प्रयोग किया है। चरखा बगना दबल गन्दा रास मम्भ हुक्का मन्मी तरकारी तराजू खतका (कुरता) आदि जमा प्रकार के प्रतीक हैं। इनमें से कुछ दृश्य हैं —

शरीर के प्रति

- १ तन हुक्को घट घट स्वामी बोलती जो
प्रथम चलम चलुराई साफ करी जो
कूड कपट तमाकु भाहे भरी जो।

—बापू साहब गायकवाड़।

- २ तन बगले का किया कठमगाजी,
साई तो कारीगर धारा है। —रविसाहब।
- ३ काया गरबो रे सतगुरुजी घडियो। —रविसाहब।
- ४ तरा तन तबुरा बडा
तु बा हाड चाम से मडा। —छोत्रम।
- ५ छलको खूब बनायो मेरे सतगुरु
छलको खूब बनायो। —अनवर।
- ६ तरकारी बन्दार की रही घर दी च्यार
एसो काया सब अडा मन राखे तु प्यार। —अखा।

मन के प्रति

- १ प्रबुज सी अगना अति आछो मन मधूप पाय विरामा।
भाव भगति भरोसो सोनारा, मूधर की ठोर भई है ज्यु माया।
—अखा सतप्रिया १५।
- २ यह मन कागद की गुडो उडि चली आकाश।
दादू भीगे प्रम जल तब आए रहे हम पास ॥

—दादू सतबानी सप्त पृ ६४।

नश्वर जीवन क प्रति

- १ 'जावत है सब लोक यहाँ ये आवत नाह जन कोई करी
राय राना से बडे भट पडित कोर न दे पत्थो पतरी ।
—अला सतप्रिया' ३७ ।
- २ जसी धन की बादुरी घरी पलक की छाँहि ।
इत चढ़ उत उतरे अखा ऐसा काय ॥
—अक्षयरस, पृ० २५१-८ ।

क्षणिक जीवन क प्रति

- १ ओस की नीर यह तन धन जोबन,
ज्यु धन म बिजली मुसकानी । —अखा, सतप्रिया १५ ।
- २ क्या जुल्फोंदा ताव समारे, घास फूम उड जावेगा ।
जोबन चढ रोज का चटका देखत ही डुरि जावेगा ।
—मनोहर ।^१

घृणित वृत्त के प्रति

फटे से मन बसन बिन बन
एसो फय जसो ऊजर-खजर । —अखा सतप्रिया' ६१ ।

आत्म प्रतीति

- १ चटकीसु इत उतम, जसे दांडी तोल
आत्म अनुभव बिन अखा, ऐमे जीव घदोल । —अखा ।^२
- २ 'आत्म अनुभव बिन अखा नहीं ठरन की जाग,
सांडसो ज्यु लोहार की क्षण पाणी क्षण आग । —अखा ।^३

सांगत परिभाषिक रहस्यमूलक प्रवृत्तिमूलक एव जावन व्यवहार मूलक प्रताका का याचना गुजरात मता का मौनिक विगपता है। इन प्रतीका म जहाँ ज्ञानमार्गी विचार मरणि मव परम्परा का निर्वाह है वहाँ हृदय का उमिया का प्रताकात्मक अभिव्यक्ति भी है जिनम आध्यात्मिकता क माय-माय काव्यात्मकता भा प्रचुर मात्रा म विद्यमान है। साहित्यिक दृष्टि म मनवाणा का यह घन निचय हा मन्त्वपूग है ।

१ म प पृ० ६२ ।

२ गुजरात के हिंदी गौरव ग्रंथ पृ० १२६-८२ ।

३ वही पृ० १२६-८३ ।

भाषा

यह सच है कि मत्ता न जितना मन्त्र अनुभूति का को दिया है उतना कर्तामक सौन्दर्य का नया फिर भाषा का यथा अथ कर्तामि नया कि इनकी अभिव्यक्ति किसी मान में कमजोर साबित हुई है। मत्ता की अनुभूति जहाँ ताकजावन के माहचय में पनपा है वहाँ उनकी अभिव्यक्ति का स्वरूप ताकजावणी के अधिक निकट है। भाषा का प्रधानधारा रूप का प्रारम्भ नया था अपितु सरिता के जन के समान जो मन को उफुल्ल कर मक का एक एगी भाषा की आवश्यकता थी।^१ प्रस्ताव और ध्वनि पिगलगात्र का एक अध्ययन किया था और कवार तथा नामन्त्र किम त्ति व्याकरण पढ़े थे ?

‘कव ध्रुव प्रह्लाद पोंगल पड़े, कव व्याकरण नामा कबीर ।
मत्तो पल गये अला सब सतन के पीर ॥^२

कबीर की भाँति अला न भी भाषा के सम्बन्ध में कहा है कि — भाषारूपी हथियार से क्या हाता है ? मूर्खीर ता वह है जो रण में पराक्रम दिवाकर विजय प्राप्त करे।^३ गुजरात के इन मत्तों ने अपने मन का प्रचार प्रायः कर्णव आचार्यों के विरुद्ध मस्कृत भाषा में न करके लाकभाषा में करना अधिक उपयुक्त समझा।^४ अपनी वाणी को बोधगम्य एवं ताक भाष्य बनाने के लिए इन्होंने मन्त्र मरल भाषा का ही प्रयोग किया है तथा वाकरण के शिष्ट रूपों की कभी परवाह नही की। हिन्दी के राष्ट्रव्यापक आन्दोलन में गुजरात के ऐम मूक सेविया ने हिन्दी का घरघर अन्व जगाया।^५ भाषा की दृष्टि से इन्होंने विविध प्रयोग किए हैं। इनमें से कुछ दृष्ट्य हैं —

ब्रजभाषा

कहत अखी बेती कहूँ जीव कवध की बात ।
कोटि कल्प सो जो जियत तोहूँ त्रिय न अघात ॥

— अला ।

१ ससकीरत है कूप जल भाषा बहता नीर — कबीर ।

२ अक्षयसर पृ २ ६-५ ।

३ भाषा ने शु बसगे मूर जे रणमा जीते ते शूर । — अला ।

४ मस्कृत बोले ते शु थयु काई प्राकृतमां थी नासी गय । — अला ।

५ बसती में रेना, मागी के खाना घरोघर अलख जगाना मेरे लाल ।

‘गरीबनिवाज मे गरीब तेरो,
प्रणतपाल दयाल गुरु देवा, राखो चरन-शरन को चैरो ।
झार पड़्यो रहूँ में दगन पाऊ, जूठ ही पाऊ रहूँ निनेरो ।’

—मोरार साहब ।

‘मो सम कौन अधम अज्ञानी,
हम हम के बस प्रभु नहि हेरो भयो देह अभिमानी ।’

—निमघ ।^१

घडी वाली

‘एक दिन भारत यह सब सरताज था
जिस जमाने मे यहाँ पर राज था ।’—मुरार ।^२
‘तेरी अबल से धूलके बीदार गमाया,
दुनिया मे बडा बनके सता धूल कमाया । —मनोहर स्वामी ।^३
‘अले सो आप विचार देखा, मुजको जोब अबल कहाँ था ?
मुरत सो साईं सहेज सहेज पुँज कीनी जाणपणा दीया आप माहा ।
जोसम ईसम मि तेरडा है इस्मे मरा क्या लागे ?
एन इगारत इतनी है जो मुनते मीने जात लागे ।

—अछा ।^४

ये दुनियाँ के लोग कीड़े मकोड़े,
गेहूँ शहद पर बीटते पोड़े । डूबते बहुत निकसते थोड़े ।

—सयद ग़ाह हागिम ।

फारसी

‘एकादरे मुतलक तुई बादार जहानी,
बानी तो हमेरा तनुरानी जनी बानी ।
आलम हम नाबूद जता बूद नु मायद
हर मुरदेरा तो मेकुनी जो रह बफानी । —मनोहर स्वामी ।^५

१ निमघ के पद अ म मा, पृ० १४३ ।

२ मजनसागर पृ० ६१८ ।

३ अ वा म प पृ० ४१२ ।

४ ‘अभारत भूतना ५५ ।

५ ‘अ वा म प, पृ० ४१३ ।

उद्ध

फिर दोबारा इन्क का दिल पर असर पदा हुआ
याग मे तरे मुहब्बत का शजर पदा हुआ ।

—रमभान १।^१

नहीं का जय नहीं है बक्त दो घोसा कि जां निकले
दम आखिर है इस दम तो तितमगर मुह से ही निकल ।

—वहीद १।^२

राजस्थानी

सदगुरु साहेब सई कयनि प्रम ज्योति प्रकाशी ।... टेक
अखण्ड जाप आयो आतमरो कटी काल रो फांसी ॥

—भाण साहब १।^३

प्रभुजी ये कहां गया नेहडा लगाय ॥टेक ॥

छोड्या म्हां विश्वास सगाती प्रमरी बाती जलाय ॥ —मीराबाई १।^४

पढ पढ़ने क्या सोच बाधे गाम नहीं तो खीम कसो ?

राहा उपरछला होये करम सा का, सो मान लेखी ।

—अखा १।^५

पजावी

‘फूलाहुदी सेज बिछावता कलीए कलियु मारुदा
सोही जमीन पर लोटन लाग्या ककर कोण बहारुदा ।

—रविसाहब १।^६

हो काना किन गूची जुल्फा कारियां । —मीराबाई १।^६

क्या जुल्फोदा ताव समारे । —मनोहर १।^७

हैं हेरत गई हेराई भनब गति तेरियां ।

त मनसा वाचा काय गली गूय मेरिया । —अखा १।

१ मजनसागर पृ० ६४६ ।

२ वही पृ० ७०७ ।

३ र भा मो वा , पृ० ५ ।

४ अछाकत भूलगा १०६ ।

५ वही पृ० २२ ।

६ मीराबाई की पदावली पृ० १४६ ।

७ मनहर पद पृ० ६२ ।

सिंधी

‘हानु असा जो लाल रे तोहूँ सब मालूम रे
मभे खमा मभे बरा मला मभे लागी बहिर ।’ —दादू ।
मू घणी मू हितई औरी डेखारे इलम ।
हत्य घोरेदे न लहा, न डीसाँ नेणे खसम ॥’ —प्राणनाथ ।

बच्छी

‘स्वारय ता सौ को करे परमारय करे न बोय
हयो छडे ममाठ म, कुवाडो छडे न बोय ।’—मेकनदादा ।
‘नीचयें नीच कसा कुल हीना, जात बरन खपे चतुराई ।’
—असा ।

मराठी

‘मूल ह्यानीं मिठ बध बाधो हो जोई ना काल कलाई ।
गुं बवने उठियाना हृद बधाई, जे धीना चखल नाहीं ।’
—चक्रधर ।

जुजतो ये अंगिज दे बिकुनद बदेचे चारे ।’ —मनोहरदास ।

गुजराती

‘हृद बेहद अनहद गति आवा कम विनानी काया ।
कम धम नी अमणा भागी एक सालन सें लेहे साया ।
अथला हुता सौ सबला कीया छडिया केर लसाया ।
—भोजा ।

पीठजी तमे गरदनी श्रुत र सीपाध्या ।
हरिं मारा आंगणामा विरह वन बाध्या ॥
ए धन क्षण-क्षण रूपसियो मूखे ।
हरिं तम तम माहूँ तनहूँ मूख ॥
हो न्याम, पिठ पिठ करो रे पुकाहूँ ॥१॥

—प्राणनाथ (पटश्रुत-वचन)

‘अदावन की मुदर शोभा, कसो बहु सजनी रे सोल,
मुदर फुस्यो आमी भास, निरमली रजनी र सोल ।
मुदर फुले सरद रत शोभा, सोहामली रे सोल,
फुले सोल कसा सपुरण, ससो तणी र सोल ।

× × ×

कुले धीर समीर यमुना गुदर मोहामणी र सोल
कुले गुबर दिन की भोम भगमग कधन कली र खान ।

—गवरीबाई ।

गूजरा

गुजरात के सत्ता न ब्रजभाषा सती वाचा के अनिर्गित एक समा विनिष्ट गली म भी रचनाएँ की हैं, जा सही वाची और उदू के बाच का कडी है जिस हिन्दवी रेखा दग्गिना तथा गूजरा नामा स अभिहित किया गया है । मुसलमानी सतनत का सरपरम्नी म गुजरात के अनक गहरा म जरेवा फारमी और उदू के मदसे कायम हुग तथा गुजरान सूफी पार और औलियाआ का प्रमुख कद्र बना रहा । परिणाम स्वरूप हिजरा ६०० स गुजरात म सूफी सत्ता की वाणी उपनय जान गी । एस सत्ता म गह अलीजी गामधना बहाउद्दीन वाभन सत गव गदू मोहम्मद जमीन खूब मुहम्मद चिदती बली खानम आदि प्रमुख है । इनके द्वारा प्रयुक्त भाषा परम्परा ही गूजरी के नाम स पहचानी जाता है जिसका अनुसरण सफी प्रभाव वाल परवर्ती सत्ता न भी किया है ।^१ यहाँ गूजरी के कुछ उदाहरण दृश्य हैं —

पांचो बक्त नमाज गुजारे दायम पदू कुरान
खावो हलाक बोतो मुउ सांचा राखो दुरस्त ईमान ।

—बाजी महमूद दरियायी ।

जिहाँ घर भूलत हाथी हजारों लाल थे साथी,
उ होंको खा गई माटी तु खुशकय नींद क्यों सोया ।

—खालत ।

कहीं सो मजनु हो बरतावे कहीं सो लला हो दिखावे
कहीं सो खुसरो गह कहावे कहीं सो गीरी होकर आवे ।

—गह अलीजी गामधनी ।

गुजराती सतो द्वारा प्रयुक्त विविध भाषाआ एव भाषा गलियों का परिचय प्राप्त कर चुकने के पश्चात् अब हम उन कवियों की हिन्दी वाणी की सामान्य प्रकृति का व्याकरण एव भाषा गार की दृष्टि से अध्ययन करेंगे ।

१ देखिए—अक्षयरास (भूमिका) आ कुवरचन्द्रप्रकाश सिंह पृ० ७८ ।

विशिष्ट शब्द प्रयोग

भाषा की दृष्टि में गुजरात का समस्त मतवाणी का परीक्षण करने पर हम यह प्रतीत होता है कि मस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग उमम बहुत कम हुआ है तद्भव दण्ड एव विन्गी गणों की भरमार है।

उदाहरणार्थ—

तद्भव शब्द	तद्भव	तत्सम
	करमना ^१	कर्मणा
	रत्न रदा रत्न ^२	हृदय
	पुरजन ^३	पुनज-म
	परनालिका ^४	प्रणालिका
	रात्य ^५	रात्रि
	पार ^६	प्रहर
	मग ^७	मरण
	देह ^८	विरह
	दृष्ट ^९	दृष्टि
	स्वमिया ^{१०}	क्षमा
	मुन, ^{११}	भूय

१ मनसा वाचा करमना हरि न भजे जिया जाय ।'

—अष्टा 'सतप्रिया १० ।

२ र मन राम रदे न पहचायो तु । —अष्टा सतप्रिया १५ ।

३ 'पिंड पर सो मोह पायो, पुरजन ताते भयो ।'

—अष्टा, बहलीला ५-५ ।

४ अक्षा ये परनालिका पार नर तक्षण पावे ।'

—अष्टाद्वय कंडलिया ५ ।

५ चदकला ज्यु देह है सुरा तपे एक रात्य ।

—अष्टा, 'अक्षयरस पृ० २५१-१० ।

६ नाम नगारो गडगडे, अनहद आटे पोर । —प्रोतमदास ।

७ 'नाम सुधारस बीजिए, जम मरण भय जाय । वही ।

८ साधो देह धननार को, छोड चलो परिवार ।' वही ।

९ वहे प्रोतम एक आतमा ज्ञान दृष्ट करि जोय । —प्रो वा पृ० १११ ।

१० स्वमिया चरण हाथ सह सेवू । —दासी जीवण ।

११ सत गब्द की सगन धुमारी, मुन गिखर सुरता मेरी ।'—रविसाहब ।

	सद्भव	तत्सम
	परचा १	परिचय
	मामा २	मगम
	सुमरन ३	स्मरण
	निराना ४	निर्वाण
	कारज ५	काय
	तत ६	तत्त्व
	जम ७	यम
	बभा ८	बध्या
	नेह ९	स्नेह
	आतम १० आनमा ११	आत्मा
	रत १२	ऋतु
	गोठडी १३	गाथी
देशज शब्द	छाना १४	कुप बठन क अय म ।
	कजिया १५	भगडे क अय म ।

- १ परिब्रह्म क परचे खेनु कर टेल सत सबूरी । —रविसाहब ।
- २ 'जनम मरण का सासाँ मिटिया अमर जुगोजुग जीया । —रविसाहब ।
- ३ गात सुभाव सुमरन सेवा गुणम पुरना पान । —मोरार साहब ।
- ४ अगम अगोवर अदभुत लीला नेतिनेति निगम निराना रे ।
- ५ 'मृग अस्नावत आ जुग जाणो पाते कारज सोजे । —गवरीबाई ।
- ६ तत कर टोपी सत कर छापु मनकु मु डन करले रे जोगी ।
—गवरीबाई ।
- ७ जम का अजब तमासा वे तन की कसी आगावे । —मनोहर ।
- ८ सुपने पुत्र मुवा वक्षा का रोइ रोइ अतर तपना । —छोटम ।
- ९ ऋतुराज बसतहि आयो निज ताप से नेह बढायो । —वही ।
- १० आतम छोड चला जब हसा कोन सरूप सो वहाँ समाया ।
—मोरार ।
- ११ 'सोह साचे आतमा हो मेरे प्यारे सतविद आनद रूप । —छोटम ।
- १२ सुंदर कुले सरद रत गोमा सोहामणी रे लोल । —गवरीबाई ।
- १३ गोठडी मारे गोविंद साये प्रीत प्रभुजी से लागी रे । वही ।
- १४ सो कथो छाना होइगा जो रे कहेगा राम ।
—दाइ बानी भाग-१ पृ० १७ ।
- १५ कुण ज्यादा कुण कम्म, कमी करना नहि कजियाँ ।
—दीनदरवेश सतकाव्य पृ० ४३७ ।

नाम १	मनिहारन अथवा बहारिन ।
उपा (उधइ) २	दामक ।
दगार ३	उमर जमीन ।

विदेशी शब्द

तत्सम तद्भव एवं सज्ञ गन्तव्य अनिर्दिष्ट गुजराती मता द्वारा विदेशी गन्तव्य का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया गया है। विदेशी गन्तव्य में प्रधानता अथवा तुर्की एवं फारसी गन्तव्य का है। अथवा मनोहर, निरात और अजुन में इस प्रकार के शब्दों का अपना रचनाओं में छूट से प्रयोग किया है।

अथवा की कुछ रचनाओं में अथवा फारसी गन्तव्य का प्रचुर प्रयोग देखकर यह सन्देह नान लगता है कि ये अथवाकृत हैं या नहीं। उदाहरणार्थ 'सनप्रिया तथा भूलणा एवं जवन्त पन्ना का भाषा में पर्याप्त अन्तर है। इस सन्देह का समाधान एक अनुमान के आधार पर ही संभव है। वह यह कि जहाँ अथवा न अज्ञानवाक्य के आधार पर ब्रह्म विषयक रचनाएँ मिली हैं वहीं पर उहाँन विषयानुसूक्त मात्रपरम्परानुमानित भाषा का प्रयोग किया है और जहाँ उहाँने रूपायाना रम में मात्रन दानन मीता आदि के प्रति प्रमोदनाम व्यक्त किया है वहीं रूपायाना की भाँति उनका भाषा में शब्द आंगिक मातृक एवं नूर स्वीकृत हमस आदि गन्तव्य महज ही आ गये हैं। उदाहरण के लिए —

- १ नन नभर का गर १२ । १
- २ शिरतार आय बबूल पन्ना । २
- गरीअत का हैइ है हीरा का । ३

१ 'बास जाल टोमर नहीं ना बिछरत वियोग ।

—अथवा सहेज शक्ति की अङ्ग २३ ।

२ गु उधाइ श्रान काए भलीआगर होत तस ।

—अथवाकृत कुण्डलिया ३ ।

३ 'ऊग स्यां तो बबहु न आवे इगारे बीज आप बाता । —रविताप्य ।

४ अथपरस' पृ० ५६-५ ।

५ वही पृ० ५६-५ ।

६ वही पृ० ५८-१५ ।

४ खल्ल है रे लुदाई मान ।^१

५ यकसान के मन्त्र में एक मपना था ।^२

इसी प्रकार जाहिर, आरिफ गाफिर, भय्य कुत्तरन इवियन
वनरा क्याम बारीज तारीफ हैवान इनवान गारन मजहद गान
दाम मुष्पा अग वहम हकीकन शक भागूक आगक आतग भाक,
नूरत करामत, दरियाद आव, गावन्, पबन् फकीर मन्तार तकद जिमम,
इमम मलामत आरि एमे गन् हैं जिनम पानी मन्ता की सूफा विचारधारा
की प्रतीति होती है ।

विशिष्ट कारक रूप

गुजरात की हिन्दी सतवाणी में कुछ विशिष्ट कारक प्रयोग हमारा
ध्यान सहज रूपेण आकर्षित करने है । एम प्रयोग गुजराती भाषा की प्रकृति
के अनुरूप प्रतीत होने हैं । उदाहरणार्थ—

१ अय उपाय कारन नहि उरे ।^३ (हृद्य म)

२ अपन बले उडत ज्यु पत्नी ।^४ (वन पत्र)

३ नाचत गावन थे राम न राभज ।^५ (गान म)

४ 'पाप पूय थे हम यारा ।^६ (से)

विशिष्ट अव्यय रूप

कारका की भाँति विशिष्ट अव्यय रूप भी गुजराती की भाषा प्रकृति
के अनुरूप गढ़े गये प्रतीक होते हैं । एम प्रयोग सतवाणी में द्ध म गकरा
वा भाँति घुल मिल गये हैं । उदाहरणार्थ—

गुजराती

त्यारे

ज्यारे

अन

त्या लगा

हिन्दी

तब,^७

जब^८

न

तब लगी

१ अक्षयरस ५८-१५ ।

२ वही पृ० ५६-१८ ।

३ सतप्रिया पृ० १६७-४३-२ ।

४ अखाकत पद पृ० ४०-४ ।

५ सतप्रिया १०३-१०४ ।

६ निरान्त काव्य ।

७ उर अतर मे आप स्ववस्तु दिग नहीं भाषा तबे '—अहलीला १ ।

८ अय नहि उच्चार करिबे स्वस्वरूप होहीं जबे । वही ।

९ दो ने दस ता फू रहे ने मुगत हुआ हे मन ।

विशिष्ट क्रिया रूप

गुजरात की हिन्दी सतवाणी में जहाँ विविष्ट वाक्य एवं अर्थ रूप मिलते हैं वहाँ क्षत्राय वानी अथवा भाषा की प्रकृति पर गढ़े गये विविष्ट क्रिया रूप भी उपलब्ध होते हैं। उदाहरण के लिए, ऐसे कतिपय क्रिया रूप प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

१ अभस्या ^१	अम्याम किया।
२ अनुभय्या ^२	अनुभव किया।

शब्द-विकार अथवा ध्वनि परिवर्तन

१ अल्पप्राण का महाप्राण—	जम—मयाना सकू	मीहाना ^३ गकु ^४
२ महाप्राण का अल्प प्राण—	जस—समावग प्रहर	समास ^५ पार, ^६
३ आकारान्त—	जस—जतर अतर	जता, ^७ अता ^८
४ ओकारान्त—	खुटा भुवन	खोदा ^९ भोवन, ^{१०}
५ उकारान्त—	तीना	तीनु ^{११}

१ 'ब्रह्मसीला ।

२ अछाकत छप्पा ।

३ हरिसिंह कत ज्ञान कटारी ।

४ निरांत काव्य ।

५ सतप्रिया ।

६ प्रीतमदासनी ।

७ ब्रह्मसीला ।

८ ब्रह्मसीला ।

९ 'अब कैसे तारे सबको खोदा अला कहे भजन की जाय न जायो ।

१० 'स्वग भोवन का भोग'—अ सा श्री अग १५ ।

११ सहज भोग करि मुन तीनु जाया ।'—ब्रह्मसीला २ ।

	हमको	हमकु, १
	मवका	मवक, २
६ अतहित—	महारा	माग ३
	अहवार	हवार ४
७ अग्रागम—	स्यान	अग्यान ५
८ श्यजन लोप—	ल्ह	ली ६
	नगी	ना ७
	बाहर	बार, वारा ८
९ स्वर लोप—	दृष्टि	दृष्ट
	विग्द	वह ९
	मरण	मण, ११

१० नवीन शब्द प्रयोग—

मोहागन क आधार पर गानागन

चल दोहागन रानी नारी ।

सबका कह वे अनाय विचारी ।

—अल्लाकृत जकडी ७ ।

१ अगर चदन की चिता जलाऊ हमकु गेल बताजा । —मीराबाई ।

२ साई का मिलने का तो सबकु लगे प्यारा ।

—बापू साहेब प्रा का मा भाग ७ पृ० ६ ।

३ ये तनके कोई मत रहो सारा रे । —अल्लाकृत जकडी १ ।

४ हम हवार गरयो ता धन त । —अल्ला ।

५ हर मेरे हसा चालो निज देगा क्या अमर पुरुष अस्याना रे ।

—मीरार ।

६ समया तए ली वाली —सतराम ।

७ मे मानु नी रे मे मदन परिहार । —रविताहब ।

८ लूणकी पुतली गिर गयी जलमा ब्यु कर निकस बारा ।

—रविताहब ।

९ बेहे प्रीतम एक आतमा ज्ञान दृष्ट करि जोय ।

—प्री वा पृ० १११ ।

१० 'साचो अहे व्रजनार को छोड चली परिवार । —प्री वा पृ० २२१ ।

११ राम मुधारत पीजिए जम मण भय जाय । —प्री वा पृ० ६४० ।

मुहावरे और कहावतें

भापा को धरतू एव मुहावरदार बनान क त्रिण गुजरात क त्रिणी मवी मन्ता न अपना भापा म कुछ म् प्रयाग भी किय हैं। माध्यम वृत प्रबाध बतीमी तथा अत्वा क छप्पा गुजराती कहावता की खान हैं। उन मन्ता का हिन्दी-बाणी भा एम अनक मुहावर और कहावता म मुमजित है। यहाँ पर इनक द्वारा प्रयुक्त कुछ मुहावर तथा कहावतें दृष्टय है —

- १ क्या कोई कहवे ? समुझे कसा ?
हय कगन का दपण जसा ।^१ —अत्ता ।
- २ गू गे की गत गू गा जान
समज समज मुस्काई । —रघिसाहब ।
- ३ 'अधा अवानक नन पापो ।^२ —अत्ता ।
- ४ 'कहा भयो दूध जसी छाद्य की गोरी ।^३ —अत्ता ।
- ५ हस कत्ता गुरुवे सोनारा
'पारा रह दूध पानी का पानी ।' —अत्ता ।
- ६ आपकु अधिक जानी, और की तु हासी करे :
काही की मरत सुत साप को जगाइ क । —हरिसिंह ।^४
- ७ जसा दाणा गू मे बोया,
तसा फिरने टोचे सोहया । —अत्ता ।^५
- ८ 'आपकी सबई बात ओर की न भावे देखी
आपकु अधिक मानी मूद्य मुरदाइ के ।' —हरिसिंह ।^६
- ९ त्रिविक्रम हापी प घटक, कीडी का मगना सोकया ।
—त्रिविक्रमानंद ।^७
- १० 'बाये यमूल के बीज ताकु अब फल कहाँ स पाव रे ।
—गवरीबाई ।^८

१ अत्रसिद्ध अक्षयवाणी पृ० २०१ ।

२ ब्रह्मसीता घो ८-१ ।

३ सतप्रिया ५६ ।

४ ज्ञानकटारी १७ ।

५ अत्ताकत जकडी २५ ।

६ 'ज्ञानकटारी १८ ।

७ त्रिविक्रमानंद पद-२६६ ।

८ गवरी कीतनमासा पृ० १५३, पद ३५७ ।

निष्कर्ष

गुजराती सत्ता के भाषा सम्बन्धी उपयुक्त विवरण में यह स्पष्ट हो जाता है कि इन अहिन्दी भाषा सत्ता में यद्यपि विविध भाषाओं (पंजाबी, सिन्धी, कच्छी, मराठी, राजस्थानी) का प्रयोग किया है तथापि उनका अभिव्यक्ति का माध्यम मुख्यतया गुजराती से प्रभावित ब्रज एवं क्षत्रीय भाषा का मिश्रित रूप है। गुजराती सत्ता की भाषा वस्तुतः सत टक्कान का सपुष्प की हिन्दी का ही गुजरात में प्रचलित एक विविध रूप है। जिस प्रकार कवार का भाषा में पूर्वोपन गान्धी का भाषा में राजस्थानापन और नानक की भाषा में पंजाबीपन दृष्टिगत होता है उसी प्रकार अन्ना प्रताप, धारो आदि गुजराती सत्ता की भाषा में गुजरातीपन उनकी भाषा की निजा विशेषता है। इन सत्ता की भाषा के सम्बन्ध में विचार करने समय एक बात यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि हिन्दी ने तो इन सत्ता की मातृभाषा ही और न इन्होंने उसका विधिवत् अध्ययन ही किया था। उमका ज्ञानाजन उन्हीं सत्संग दगापन एवं मतवाणी के श्रवण कीर्तन के माध्यम में किया था। अतः जो लोग इनकी वाणी का अध्ययन ब्रजभाषा अथवा सत्ता भाषा के याकरण की दृष्टि से करना चाहें उन्हें वारक वचन क्रियाएँ गान्धी प्रयाग वत्तनी आदि की बगुमार भूत दिखायी देंगी किन्तु जसाकि पहले ही कहा जा चुका है कि सत्ता ने कभी याकरण के बचन को स्वीकार नहीं किया है उन्हीं सत्ता जन साधारण के अनुकूल वाचस्पय भाषा में आध्यात्मिक एवं सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति की है और उसके लिए जहाँ उन्हें प्रस्तुत भाषा जक्षम एवं अपर्याप्त प्रतीत हुई है वहाँ उन्होंने अपनी अनुभूति के अनुकूल नये गान्धी प्रयागो प्रतीका मुहावरों कहावतों आदि की सृष्टि करके भाषा के क्षेत्र में अपनी मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। इस दृष्टि से सतवाणी की ये भूल उनकी भाषागत विविधता का प्रतीक होता है।

अलंकार

आचार्य भामह सबसे पहले अलंकारवादी थे जिन्होंने अलंकार को वाच्य भाषा का आधारक तत्त्व बताया।^१ दण्डिन^२ और धामन,^३

१ रूपकादिरलंकारस्तस्याप्यवहोदित ।

न कातमपि निभूय विभाति वानिताननम् ॥ का ल १-१४ ।

२ काव्यादर्श, २-१ ।

३ रस मीमांसा पृ० २६५ ।

प्रभृति आचार्यों ने ता निम्नांत रूप से यह प्रतिपादित कर दिया कि अनकार सौंदर्यमात्र का कहते हैं। इस प्रकार काय गोभा व जा भी निष्पादक हुए थे व सभी अनङ्कार गदक वाचक बन गये। हिन्दी के रीतियुगीन तथा आधुनिक आचार्यों में कगवत्स चिंतामणि गोप रसिक सुमति भिवारीराम रामचन्द्र गुवन और डा० नगद्र आदि न काय में सौंदर्य, रमणायता एवं उच्च कल्पना के सजन क लिए अलङ्कारो का महत्त्व स्वीकार किया है। अलङ्कारों से अथ में प्रेयणीयता प्रभविष्णुता और स्पष्टता का सम्पादन होना अवश्य है किन्तु काव्य में अनङ्कारो का जोचित्य वही तक है, जहाँ तक वे साधनरूप में ही प्रयुक्त हुए हैं। वे साध्य न बन जाय। वस्तुतः अलङ्कारों की योजना काव्य के लिए ही, काय अनङ्कारो के लिए न ही जाय।

रीतिवादी कवियों की भाँति सतों में अलङ्कारों का दुराग्रह कदापि नहीं रखा। उनकी दानी में जहाँ कहा अलङ्कार देख पड़ते हैं, वे प्रयामजय न हाकर अनायाम योजना के परिणाम हैं। सतों की भाषा में अलङ्कारों की योजना नितात स्वाभाविक ढङ्ग से हुई है। बिष्णुन कवच कुण्डनधारी कण की तरह जिसका चमत्कार अपन आप त्मक उठा है।

गुजरात की समग्र सतवाणी में प्रायः दो प्रकार के अलङ्कारों का विशेष महत्त्व है—

१ गूढ आध्यात्मिक सिद्धांतों का सरल स्पष्ट आकषक एवं वाचगम्य बनाने के लिए दृष्टान्त उदाहरण एवं रूपकों की योजना।

२ सध्या भाषा पारिभाषिक शब्दावली एवं पूर्ववर्ती सतपरम्परा के पापण में विरोधमूलक तथा अन्य अलङ्कारों की योजना।

उपयुक्त कथन के आधार पर अब हम गुजरात की हिन्दी सतवाणी में कुछ प्रमुख अलङ्कारों के उदाहरण प्रस्तुत करेंगे—

१ रूपक

रूपक साहित्यिक अर्थ है एकता अथवा अभेद का प्रतीति। अर्थात् रूपक साहित्यगर्भ अभेद प्रधान आरोपमूलक अर्थानङ्कार है जिसमें अति साम्य के कारण प्रस्तुत में अप्रस्तुत का आरोप करके अभेद सिद्धाया जाता है। रूपक का प्रमुख दो विधेयताएँ हैं—

१ हिन्दी साहित्य की १० ६६७।

१ उपमय की उपमान में एकत्वता ।

२ गुणा का समानता ।

रूपक के प्रायः तीन भेद किए जाते हैं— (१) साग रूपक । (२) निरग रूपक । (३) परम्परित रूपक । प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का साग आराप साग रूपक अथवा का आराप निरग रूपक और एक आराप में अथ आराप का कारण परम्परित कहनाता है ।

गुजरात के ज्ञानमार्गी सत्यों में रूपका के माध्यम में ग्रह्य जाते मानाए जाते जगत विषयक अनुभूति का समात्मक अभिव्यक्ति की है । भावना के आवरण में उद्धान जिन रूपका की याचना की है उनमें मन्त्र मूर्तिकता, विविधता एवं यापकता का निर्वाह हुआ है । उदाहरणार्थ—

अस्थि मांस मालो कियो ताम पछी प्राण ।

बाल अहेडी सिर भमे प्रीतम चेत अजाण ॥ —प्रीतमदास ।

ज्ञान दीप वराग शशी जोय अरक सप्त भास

उदय अस्त साधन सकल भक्ति भणी रविनाम । —रविसाहब ।

प्राण सरोवर सुरति जड ब्रह्म भीमि तरमाहि ।

रस पीवे पूते फलें दादू सूते नाहि ॥ —दादू ।

त्रिम प्रकार कवार ^१ मनुवदाम ^२ सुन्दरदास ^३ यारी साहब ^४

वुनामाहब ^५ चरनदास ^६ आदि उत्तरभारत के सत्यों द्वारा प्रघाततया चार्लर चरखा कुभार हाट हस हाती मद्यता आदि के सुन्दर सागरूपको की याचना हुई है ठीक उसी प्रकार गुजरात के ज्ञानमार्गी सत्यों में अथा धारा, छोटम निरात रविसाहब मनोहर बरन और हरिसिंह आदि ने घटा पर दवन फौज कामधनु कटारी भग जस सुन्दर एवं मौनिक सागरूपका की अप्रतारणा की है । अमानुषी वृत्तियाँ के दमन में एसे रूपका की याचना वन सत्यों का त्रिगिष्ट दन है । उदाहरण के लिए सत्यों द्वारा योजित कुछ रूपक दक्षिण—

१ कबीर आ हजारीप्रसाद द्विवेदी पृ ६२ ।

२ सतवानो सग्रह भाग २ पृ० १०० ।

३ वही पृ० १७ ।

४ वही भाग १ पृ० २० ।

५ वही भाग २ पृ० १७० ।

६ वही भाग ३ पृ १८५ ।

‘पीओ कोई ज्ञानघूट के भग, लगे तब गणपति से रग ।
तन कर कुंडो मन कर सोना, शुद्ध बुद्धि जल गग ।
ओह सोह का रगड लगावे, प्रेम प्रीत प्रसङ्ग ।
काली मिरची ममता पीओ विषय-वातना सङ्ग ।
सार असार साफी भ छातो, आतम तत्त्व अमग ।
कक लहर ये गुरु दयाकी, चढे न डूजो रङ्ग । करक ।’
सुल्फा गाँजा भग जाति एम पय पणाय है जो सामाजिक दृष्टि से

हय समझ जात ह । सतान भग रथा ज्ञान का तरंग अथवा
अथवा ज्ञान गाजे की कता क एस रूपक खडे किय जा सामाजिक
उत्पन्न परिचायक ता थ हा कल्पना की दृष्टि स भी ये मौलिक बन पते हैं
कटारी तथा फौज घटा आदि के रूपक भी इनी कोटि के हैं, जिनम सतान
आत्म प्रतीति स्वसंख्य ज्ञान तथा आत्मबुद्धि का बाध कराया है—

‘करो भडाका भजन का, मनसा वाचा मुख मोड,
क्षमा लडा कु लेंचकर फोज कुफर की तोड,
फोजकुफर की तोड, चुट से तबु डेरा
मोह राजा को मार देख जमरा का चेरा,
धरम दया की डाल पकड कर गड भडाका
बहे धीर धर ध्यान भजन का करो भडाका ।

—धीरा ।^१

ज्ञानघटा छड़ि जाई अज्ञानक ज्ञानघटा छड़ि आई,
अनुभवजल बरखा यडी बुद्धन कम की कीच रैलाई ।
बादुर मोर शङ्क सतन के ताकी शूद मिटाई,
बहुदिग चित्त चमकत आपनपों दामिन सी दमकाई ।

—अला ।^२

‘शुद्धि विचार सो पोलाद की कटारी करी
गुद गुु लुहार पास सौजिए घडाइ के
घडो भले घाट माडु, अग्नि मंहि ताती करी,
प्रम रूप पानी बाकु दीजिए चढ़ाइ के ।

—हरिसिंह ।^४

१ परिचित पद सप्रह, पृ० ७४, पद २ ।

२ प्रा का मा भाग २४ पृ० १६७-३ ।

३ ‘अभ्यपरस पृ० ६८, पद ११ ।

४ ज्ञान कटारी — १३ ।

इस प्रकार क माग रूपका क अनिर्दिष्ट इन मन्ता क शम्पत्य परक प्रेम रूपका म अभिव्यक्ति विगप हृत्प-प्राणी एव चाट्याग बन पनी है। एम प्रेम रूपका का सम्बन्ध उनकी रहस्यानुभूति म है। इन रूपका म मन्ता का घनाभूत पीडा है और है मित्रन का सुमारा। अवा^१ प्रातम^२ रविसाहब^३ और गवरादाई^४ की वाणी म एम रूपका का प्रचुरता है।

२ दृष्टा त तथा उदाहरण

जहाँ दोनों मामांय या दाना विगप वाक्य म विम्ब प्रतिविम्ब भाव होता है, वहा पर दृष्टात अनङ्कार होता है। तथा ज्या जम आर्त् वाचन गत् नग जाने म उदाहरण अनङ्कार माना जाता है।^५

गुजरात का सन्तवाणी म दृष्टात तथा उदाहरण अनङ्कार का प्रचुरता है। इसका एक कारण यह भी है कि एह अपनी दुःसहृत्तम शानिक अनुभूतिया को लोकभोग्य स्पष्ट एव रोचक बनान क निए विविध दृष्टाना की याजना करना पडा है। जीवन क विविध पहलुजा म इहाने विविध दृष्टाना का चयन किया है। इन दृष्टाना म व्यापार गाम्य और गुण माम्य तो मिलता ही है उपमान उपमय तथा साधारण धम का विव प्रतिविम्ब भाव भी भनकता है। इम प्रकार की अनकार-योजना म मन्ता का मूहम दृष्टि तथा उनकी गूट व्यजना शक्ति का परिचय मिलता है। यहाँ दृष्टात तथा उदाहरण अनङ्कारा के कतिपय उदाहरण दृष्टव्य हैं —

दृष्टा त

आसामुखी अभागिया जो घर भूले गजराज
दधीचि पे जाचक भया अखा दख देयराज ॥ —अखा।^६
अखा आतुरत मिल राम रतन भडार
जहा विभीष लच्छना तहाँ कम घनसार ॥ —अखा।^७

१ अखाकृत मजन ५, ३० जकडी ७ द १० १२ से १४।

२ प्रीतमकृत साखी प्रथम अह अग ७ से ९।

३ र मा मो वा पृ० ३१, पद ३०।

४ गवरी कीतन माला पृ २१२ पद ४४७।

५ काव्य शास्त्र डा० भगीरथ मिश्र पृ० १९२।

६ अ सा लपट अग-१२।

७ वही आतुरता अग-८।

३ उपमा अलङ्कार

उपमा की श्रष्टता और मन्त्र का प्रतिपादन सञ्चन आचार्या न प्रायः गभीर न किमा है। राज गगर क अनुमार उपमा सम्पूर्ण अलङ्कार म गिरोभूषण क समान वाच्य का सम्पत्ति है और कविवग की माता क समान है।^१ रमयक न इमा प्रकार अलङ्कारमवस्त्र म उपमा का सम्पूर्ण अलङ्कारा का बीजरूप कहा है।^२ उपमा अलङ्कार वहाँ जाना है जहाँ पर किसी वस्तु की गुण सम्बन्धा विपत्ता स्पष्ट करन क लिए दूसरा परिचित वस्तु से जिनम ये विपत्ताएँ अधिक प्रत्यक्ष ह उसकी समता कनी जाना है।^३ गुजरात क मता द्वारा याजित उपमाएँ अत्यन्त मनोहरा एव रमणीय बन पडी है। उनका हिन्दी वाणी से कुछ उपमाएँ दृष्टव्य हैं—

जाने बिना नर आप भुलायो फिरत ज्यों बल बगायो ।

—मनोहर ।^४

मृग जिमि राग रसिक जन आगें

नादर दानी तुम दर दानी तुम दर दर गवया । —मनोहर ।^५

जोवन जात देर नहिं लागत ज्यो मोती को पानी । —मनोहर ।^६

मुरली नागमनद ज्यु तारन बिच चद,

भाचत ह मद मद सुदर सोहाइ

एजन से चपल नयन लजत हे कीटि चन

निरखत मन भयो छन गोभा मुखदाइ । —गवरीबाई ।

चदकला ज्यु देह है पुरा तप एक रात्य

चोदत परवा सग है अखा समझले बात । —अला ।^७

ब्रजुज सी अगना अति आछी मन रूप पाये विरामा

भाव भगति भरोसों सोनारा मूधर की ठोर भइ हे भामा ।

—अला ।^८

१ 'अलङ्कारगिररत्न सवस्व का य सम्पदाम् ।

उपमा कविवगस्य मातवतिमतिभम ।

२ अलङ्कार सवस्व पृ० २६ ।

३ 'काव्यशास्त्र डा० भगोरथ मिथ पृ० १६७ ।

४ अ वा म प पृ ४०६ पद ५८१ ।

५ अ वा म पद पृ० ४१५ ।

६ वहा पृ० ४ ८ ।

७ गवरी कीतनमाला पृ० १०१ पद २२५ ।

८ अक्षपरस पृ० २५२-१० ।

९ सनप्रिया १५ ।

५ विभावना

सम्भृत अनङ्कारवाच्यों ने विभावना कारणांतर की कल्पना किये जान पर माना है। आचार्य मम्मट क अनुमार क्रिया (हंतुरूप क बिना कह ही जहाँ फन प्रकट हा जाय अथवा जहा हंतुरूप क्रिया का बिना कयन किय ही उसक फन का प्रकाश किया जाय वहा विभावना समथनी चाणिए।^१

ब्रह्माभिव्यक्ति म म ता न जहाँ सघाभाषा का प्रयाग किया है वहाँ उनकी वाणी म विभावना अनङ्कार की अवतारणा सहज ही हा गया है। उतने जहा बिना प्राणा क साम नन बिना पर्व क चवन बिना जन क वरमन बिना मूय क प्रकाश फनाने बिना सीपी क मोती पदा हान का वगन किया है वहाँ पर विभावना अलङ्कार विद्यमान है।^२ गुजरात क मत्ता का अगमवाणी सघाभाषा और ब्रह्म क विवचन म म विभावना अनङ्कार क उदाहरण प्रधुर मात्रा म मिलत है। प्रस्तुत अनङ्कार क प्रयाग म न सता न जा गना अपनायी है वह प्राय उपनिपत्ता का गली है। म अनङ्कार समाजन म मत्ता का बुद्धि वभव एव वाक चातुप परिनिनत हाना है। गुजरात का हिन्दी मन्तवाणी से कुछक उदाहरण प्रस्तुत हैं —

जाकु नम नहीं सब नन देखे धन नहीं सब धोल सो धोले ।
कान नहीं मय करन हो वाके नासा नहीं सब वास सो ओले ।
ब्रह्म की ओ तु आप सहराये कोम धरी कही ब्रह्म कु लोले ।
अला भेय खेनाग साई । मुद्य का फेर कपोल कपोले ।

—अथा।^३

'आनदहेली उभराणी सता । आनदहेली उभराणी ।
चंद्र-मूरज तो वा घर नहीं नहि पवन नहि पाणी ।
अष्ट कुल पवत उस घर नहीं नहीं वेद नहीं वाणी ।

—माहुदाम ।

१ देखिए— काव्य निर्णय पृ० ३३३ ।—स० डा० सत्येन्द्र ।

२ देखिए— हिंदी सत साहित्य

—डा० त्रिकीनीनारायण दीक्षित, पृ० १३० ।

३ सतप्रिया—७८ ।

४ परिवर्तित पद सप्त पृ० २६०, पद ७ ।

'दिलो देखो रे या घट को खल जाम दीप जल चिन बाती
निर्हा अनहद नाद बजे अपार राट चरम प्रणय तार ।

छोटम ।^१

'पर्व बिना चलता चोंच बिना झुगना पाख बिना उड़ जाई
बिना सुरत की नुरत हमारी अजल न पहाँचे रयाई ।
आठे पहोर अद्धर रहे आसन कवहु न उतरे भांनो
ज्ञानी ध्यानी विज्ञाना यह गय ऐसी प्रकय कहानी ।

—रविसाहब ।^२

५ अनुप्रास

छन्द याजना का निर्वाह एव सगीतात्मकता का समावेश अपना रचनाआम भरने के लिए इन सत्ता न जत्यानुप्रास का याजना तो प्रायः सबत्र की हा है किन्तु कही कही छन्दानुप्रास वृत्यानुप्रास लाटानुप्रास जाति का समावेश भा उनकी रचनाआम अनायास हा गया है । मत्तो की यह अनुप्रास योजना निरर्थक एव धमत्कारिक न होकर महज एव साधक है ।

उदाहरण—

शब्द गुलाल लास भयो बादुर गगन गरद चहु ओरो
नीतम नाद निगान बजत है रगरेल नहीं धोरी । —छोटम ।

चचल चपल चोर गति तेरी

कपट कुटिलता करत घनेरी । —प्रीतमदास ।^३

गवरी गळ गोपाल की, घरण चारो रूहाय

बाकी देढ़ी जो चले तो करे गोपाल सहाम । —गवरीबाई ।^४

मया मेरो मनवो भयो रे धरागो

भारी लेह तो लगन मा लागो । —मोरार साहब ।^५

देखे सब अजन माने रजन रजन मन को वाहे ते कहायो ।

तार्थे भयो नहि भव को भजन नाम पुरजन मान कहायो ।

—अला ।^६

१ छोटमनो वारणी प्रथ १ पृ० १४७ पद २८४ ।

२ र भा मो वा पृ० ३५ ।

३ रेखेणी पद—२५१ ।

४ गवरी कीर्तनमाला पृ० १७६ ।

५ र भा मो वा पृ ७८ पद—३७ ।

६ सनप्रिया १०० ।

‘अबल कला खेलत नर जानी,

चलत बलन अबनी पर जाकी, ध्रुव तारे पर रखत नितानी ।

—अष्टा ।^१

६ अयोक्ति

जहाँ अप्रस्तुत (उपमान) के वर्णन द्वारा प्रस्तुत (उपमेय) का बोध कराया जाय वहाँ अयोक्ति अलङ्कार माना जाता है। इसके अन्तर्गत जिनके विषय में कहना होता है उसके विषय में स्पष्ट न बन कर दूसरे के द्वारा कहलाया जाता है। सताने अपने काव्य में अयोक्ति के माध्यम से ही जीवन के विविध पहलुओं का व्याख्या का है। कबीर साहब अयोक्तियों के प्रयोग में हिंदी के श्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं।^२ सूफ़ी कवियों ने तान्त्री के माध्यम से उम्र प्रियतम का साक्षात्कार कराया है जिसके अन्तर्गत मारी नीला चल रही है जिसके दीदार के लिए मारा प्रकृति नाच रहा है। अयोक्ति की याचना उठाने प्रवचनगत तथा मुक्तवचनगत दोनों रूपों में की है।^३ दादू मुदरदास तथा मलूकानाम की अयोक्तियाँ भी उल्लेखनीय हैं।

गुजरात की मतवाली में अयोक्ति एक प्रमुख जनकार प्रतीत होता है। यहाँ पर सतों की कुछ अयोक्तियाँ दृष्ट्य हैं —

‘अमर बलिया में लिपटायो,

जल बिच छीप छीप बिच मोती। स्वाति जाके मुक्ता में समायो।

वृक्ष धूमि में बीज वृक्ष में, वृक्ष जाके बीज में छुपायो।

चकमक में भाग महदी में लाली तेल कैसे तिल में सिरजायो।

—माधवदास ।

अवभुत रसना कोई जन रसिया बाधु अंग एक इयास रे इवसिया। टेक एक सुरत नर मादा मोती, उछरे अपत की रमि रहे ज्योती।

—अष्टा ।^४

१ आश्रम मजनावली।

२ ‘सतनाम्य आ परशुराम चतुर्वेदी, पृ० ७०।

देखिए— हिंदी काव्य में अयोक्ति, भा० सत्तारचंद्र पृ० ११२।

४ अल्लाना पद १०५।

‘प्रम मुन क अगर म पत्नी है निज सार
 विजर सगाया पाँच का, पट बघन क काज
 पट बघन के काज अहरता आप ममा^१
 रहे सो परमा^२द अविगत विरला पाई ॥ —परमानंद ।
 ‘सलियाँ बलियाँ सहज कु स्वय भोगन का भोग
 प्रीतम भुज छाँडत नहीं राखत सहज सयोग । —प्रीतमदास ।^३

७ भ्रान्तिमान

जहाँ पर प्रस्तुत का लखन म माहश्य क कारण जप्रस्तुत का भ्रम
 हा जाय वहाँ पर भ्रान्तिमान अथवा भ्रम अलवार हाता है । मता का यह
 एव नाकप्रिय अलवार है । इहाने प्राय मायाजय भ्रान्तिया एव रहस्य
 क उद्घाटन म इम प्रकार की योजना का है । उदाहरणाय—

मिरघ के पास कस्तूरी है
 सो जाय पत्थर को सू घता है । —अखा ।^२
 हूँ हेरत गर् हेराइ अजब गति तेरियाँ
 तु मनसा वाचा काय गली शूय मेरिया । —अखा ।^३

८ निदशना

गुजराती सता की वाली म जनी उपमा उदाहरण तथा दृष्टात
 जतवारा का योजना हुई है वहा उनकी वाली क जतगत हम वहा वहा
 निदशना का प्रतीति भी होनी है । उदाहरणाय—

‘प्रम गली है ऐसी रे सिर साटे पग बेसी रे ।

× × ×

प्रम खेत है ऐसा रे सो सिर जात अदेवा रे । —अखा ।^४

९ यमक

आषाय भामह के मतानुसार मुनन म समान प्रतात होन वाते पर
 अथ म भिन्न वर्णों की पुनरुक्ति वा आवृत्ति यमक है ।^५ गुजरात का

१ प्रीतमकृत साखी ग्रंथ — क्रिया अङ्क १५ ।

२ अखाकृत भूषणा — ७५ ।

३ अखाकृत भजन — ३१ ।

४ अखाकृत जकड़ी १४ ।

५ तुल्य श्रुतीनां भिन्नानामभिधेय परस्परम् ।

वर्णाना य पुनर्वादा यमक तस्मिन्निवृत्ते ॥ —भामह ।

हिंदी मन्तवाणा म यमक अलंकार क उदाहरण तन्मन्त्र मिल जान है ।
उदाहरणाय—

गिखार मूत्र कों डार के र गिखा सूत्र पुनि धार ।

X Y X

कनक कामनी छांडक र कनक कामनी पास ।—मनोहर ।

१० श्लेष

मता गग प्रयुक्त कुछ गग एम भा ३ जिनम एकाधिक अथ प्रतीति
ज्ञाना है । माधारणत गगन अपन नाम का उल्लेख करन क साथ-साथ
उमा म श्लिष्ट प्रयाग भी किय हैं । उत्तरभारत क सता म कबार १
मुन्दरनाम २ मन्कनाम ३ मन्नावाड ४ आदि का कविता म रूप के
मुन्दर प्रयाग हुए हैं । गुजरात का मन्तवाणा स यहाँ पर एकाधिक उदाहरण
दृश्य हैं—

अब नरसिंह समान भया, अब अब को उजरायो ।

—नरसिंह गर्मा ।

कृष्ण के बचन मानि इदक कों उठाव रे,
ध्यान सच्चिदानंद ब्रह्म की लगाव रे ।

—मनोहर (सच्चिदानंद)

११ सम

अपन कथन की स्पष्टता एवं प्रतिपादन म सतों न जहाँ दा याग्य
पत्नीयों का मगनि अथवा काय कागण का एक रूपता लिखा है वहाँ इस
प्रकार का अलंकार-याजना दृष्टिगत जाना ३ । यथा—

‘निदक पुरप अह काग का एक मुमावे छाल’

हरिगुन हरिया वृक्ष तजि ताकत नघा साल ।—अच्छा १

साध सती और निज भक्त दोनु की एक देख ।

तन मन कु पहलु दिया अब को करे पियक ॥—अच्छा ।

१ सतवाणी सग्रह भाग १ पृ० १२ ।

२ मुन्दर प्रयावली पृ० ६४१ ।

३ सतवाणी सग्रह भाग १ पृ० ६६ ।

४ चहो भाग १ पृ० १६० ।

५ ‘अ सा निदक घग’ ५ ।

‘प्रम गुन के अंगर मे पत्नी है निज मार
 पिजर लगाया पाँच का, पट बधन के काज
 पट बधन के काज अहंरता आप ममार्,
 कहे सो परमान द अविगत बिरला पाइ ॥ —परमानंद ।
 सलियाँ बालियाँ सहत कु स्वग भोवन का भोग
 प्रीतम भुज छाँडत नहीं राखन सहज सवाग । —प्रीतमदाम ।^१

७ भ्रान्तिमान

जहाँ पर प्रस्तुत का देगन में मादश्य के कारण जप्रस्तुत का भ्रम हो जाय वहाँ पर भ्रान्तिमान अथवा भ्रम अलकार होता है । मता का यह एक लावप्रिय अलकार है । इन्होंने प्राम मापाजय भ्रान्तिया एव त्य्य के उद्घाटन में इस प्रकार की योजना का है । उदाहरणाय—

मिरघ के पास कस्तूरी है
 सो जाय परथर को सू घता है । —अछा ।^२
 हूँ हेरत गँ हेराइ अजब गति तेरियाँ
 तु मनसा बाचा काय गली सूय मेरियाँ । —अछा ।^३

८ निदर्शना

गुजराती साता की बाणी में जहाँ उपमा उदाहरण तथा दृशाल जकारा की याजना हुई है वहाँ उनकी बाणी के अंतगत हम कहा कहा निदर्शना का प्रतीति भा होता है । उदाहरणाय—

‘प्रम गली है ऐसी रे सिर साट पग देसी रे ।

× × ×

प्रम खेल है ऐसा रे सो सिर जात अदेमा रे । —अछा ।^४

९ यमक

आचार्य भामह के मतानुसार सुनन में समान प्रतीति होने वाले पर अथ में भिन्न बर्णों की पुनर्वाक्ति वा आवृत्ति यमक है ।^५ गुजरात का

१ प्रीतमकृत साखी प्रथ — क्रिया अङ्क १५ ।

२ अछाकृत भूलणा — ७५ ।

३ ‘अछाकृत मजन — ३१ ।

४ अछाकृत जकडी १४ ।

५ तुल्य अतीनां भिन्नानामभिधेय परस्परम् ।

वर्णानां य पुनर्वादा यमक तद्विगद्यते ॥ —भामह ।

१२ लोकोक्ति

सत्ता की वाणी में कहा-वही लोक प्रचलित कहावता का प्रयोग भी हुआ है। इस प्रकार के कुछ उदाहरण हमें सत्ता का भाषा मन्त्र की चर्चा के अंतर्गत प्रस्तुत किए हैं। फिर भी प्रस्तुत अलंकार की पुष्टि में यही हम सत्ता द्वारा याजित मुठके लोकोक्तिपूर्ण पंक्तियाँ उद्धृत करना ममाचान समझते हैं। यही हम बात का स्मरण रखना चाहिए कि कवय लोकोक्ति मात्र के कथन में अलंकार न होगा। प्रयोग बनाकर अंत में लोकोक्ति पर ध्यान देने से प्रस्तुत अलंकार का योजना होगा।

चाहूँ राखे मन ज्ञान की तो परदा दोन फारय ।

कहे अछा दो बसु रहूँ ध्यान एक तरवारय ॥ —अस्सा ।^१

एसे जाने बिन अस्सा रुदे न सातल होय ।

ओसु प्यास न भाजही अचो ज्वा हरि तोय —अस्सा ।^२

‘नारी को अपराध नहीं पुरुष पातकी होय

कहूँ प्रातम एक हाथ सु ताता पडे न कोय । —प्रातमदास ।^३

‘खोटामणी चलके अती खरगिर चदन भार

अधा आग आरसी, मरकट कोटे हार । —दीन दरवेण ।

१३ वीप्सा

सत्ता ने यहाँ स्वानुभूति के उल्लेख में रिमभिम स्तम्भुत निरमन आदि शब्दों की एक से अधिक बार पुनरुक्ति कर अपना जानदमया दगा का वर्णन किया है। वहाँ वीप्सा अलंकार की योजना हुई है। कबीर तथा मारी साहब आदि सत्ता में इस प्रकार की उत्फुल्लतावस्था का अनिरेक मिलता है। गुजरात के सत्ता में असा अनुभवानंद (नाथ भगवान) भाण साहब गवरीवाई तथा निमलदास आदि की कानी में इस प्रकार की अभिव्यक्ति के सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। यथा —

सहृदिश चित्त चमकत आपनयोँ दामिन सो दमकाई ।

घोर घोर मरजत धन धेहरा सतगुरु सन बताई । —अस्सा ।^४

१ असा गुलतान अङ्ग ६ ।

२ यही ज्ञानदास अङ्ग -१८ ।

३ प्रीतमकत साखी प्रथम नारी नि दा को अङ्ग -६ ।

४ अक्षररस, पृ० ६८, पद ११ ।

‘गगन गरजिया धवरो सुण्या भेषज बारे भासी,
चमक दामनी चमकत लागी, देख्या एक उदासी ।
गब तथा घडियालां वाने दूत गया दल नासी
भोलपणा मां भालर वागी उदव भया अविनापी ।

—भाण साहब ।^१

‘गरजत अनहदनाद अखडित वीजुरी भवुकत भामर ।
अभर भरी लागी है ताते सरिहे अज्ञान की घादर ॥’
चिहू दिस चिर ध्यापक नजरावत हरि हरि धरती पादर ॥

—अनुभवानंद ।

१५ अतिशयोक्ति

सता न यद्यपि कही भी लोकसीमा का अतिक्रमण करना उचित नहीं समझा तथापि उनकी भावावेगमयी अवस्था व परिणाम स्वरूप हम कहा-कही उनकी रचनाओं में अतिशयोक्तिपूर्ण वगुण दिखाई दे जाते हैं। गुजरात की सतवाणी में प्रायः सम्य-धातिशयोक्ति व उदाररण विगप रूप स मिनत ह । उदाहरणाय—

बो सख जोजन घद रहे बूरी पोपण प्रफुलित होये ।
चकोर चाहत छंद किरण की जीवन ने नहीं जोये ।’

—भोरार साहब ।^२

हमे भी भोसमे सरमामे गस्त होता है,
सनम क कूचे मे हरबार हमने खाई ठण्ड ।
जो देखा मस्त हमे ठण्ड ने सरे बाजार
गराचे इव की मस्ती से खुद सजाई ठण्ड । —अनवर ।^३
बिरही दाभी बेहूशी गया समुद्र तीर
बहे प्रीतम सागर जला ऐसा बिरह नरीर ॥ —प्रीतमदास ।^४

अप्य अलंकार

उपयुक्त अलंकार व अनिरिक्त गुजराती सता की हिन्दी बाणी में बहुध चमत्कार मूलक अलंकारों का प्रयोग भी यत्र-तत्र दृष्टिगत होता है ।

- १ र भा मो वा पृ० ५ पद १ ।
- २ र भा मो वा पृ० ७२, पद २६ ।
- ३ अनवर काव्य पृ० २५४ ।
- ४ ‘प्रीतमकृत साग्री प्राय, बिरह अग-६ ।

१२ लोकोक्ति

सत्ता का वाणी में कहा-कहीं लोक प्रचलित कहावता का प्रयोग भी हुआ है। इन प्रकार के कुछ उदाहरण हमने मत्ता की भाषा-मन्वषी चर्चा के अन्तर्गत प्रस्तुत किये हैं। फिर भी प्रस्तुत जनवार की पुष्टि में यहाँ हम सत्ता द्वारा योजित कुछेक लोकोक्तिपूर्ण पंक्तियाँ उद्धृत करना समाधान समझते हैं। यहाँ हम बात का स्मरण करना चाहें कि कबल लाकाति मात्र के बचन में जनवार न होगा। प्रयोग बताकर जन में लोकान्त पर घटित करने से प्रस्तुत जनवार का याचना होगा।

चाहूँ राखे मन ज्ञान की तो परदा दोन फारय ।

कहे अछा दो ब्यु रहे ध्यान एक तरवारय ॥ — अक्षा ।^१

एस जाने बिन अक्षा रुद न मोतल हाय ।

ओनु प्यास न भाजही जचो अछा हरि तोय — अक्षा ।^२

नारी को अपराध नहि पुरुष पातकी होय

कहूँ प्रीतम एक हाथ मु तातो पडे न कोय । — प्रातमदास ।^३

'सोटा मणी चलके अतो, खरगिर चदन भार

अछा आगे आरतो, मरकट कोटे हार । — दोन दरवेश ।

१३ वीप्सा

सत्ता न जहाँ स्वानुभूति के उल्लाम में निम्नभिन्न मनभुन निरमन आदि मत्ता का एक से अधिक बार पुनरुक्ति कर अपनी आनंदमयी दशा का वर्णन किया है वहाँ वीप्सा अलंकार की याचना हुई है। जनवार तथा यारी साहब आदि मत्ता में हम प्रकार की उत्फुल्लारास्था का अतिरेक मिलता है। गुजरात के सत्ता में अक्षा अनुभवानंद (नाथ भवान) भाण साहब गवराबाई तथा निमज्जदाम आदि की बानी में इस प्रकार की अभिव्यक्ति के मृत्तर उदाहरण मिलते हैं। यथा —

चहुँदिग चित चमकत आपनयो दामिन सो दमबाई ।

घोर घोर गरजत घन घेहरा सतगुह सन बतार्ई । — अक्षा ।^४

१ अक्षा गुलतान अङ्क ६ ।

२ वही ज्ञानदग्ध अङ्क - १८ ।

३ प्रीतमकत साधी प्रथम 'नारी नि दा को अङ्क - ६ ।

४ अक्षरस १० ६८, पद ११ ।

गगन गरजिया श्रवणे सुण्या मघत्र बार मासा,
 जमक दामनी चमकत लागी, देहया एउ उगासा ।
 गब तणा घडियालां धागे दूत गया दस नामी
 भीलपणा मां भालर वागी उदव भया अत्रिनाशा ।

—भाद भाद्र । १

‘गरजत अनहदनाद मल्लडित वीजुरी न्नुदन भायर ।
 अभर भरी लागी हे ताते सरिह अतान का घादर ॥’
 चिहु दिस चिर व्यापक नजरावत हरि हरि धरणी कादर ॥

—शुभभाद्र ।

यह प्रवृत्ति प्रमुख सत कवियों का न हाकर प्रायः उत्तरवर्ती मामास्य कथा के सन्ना का प्रतीक होता है। बहुत मभव है य तत्कालीन नाकालिक एव साहित्य परम्परा का भी परिणाम था। गुजरात के अधिकांश मतकाल्य का रचना प्रायः उम समय हुए जिम समय लिता म रीतिवान बनमान था। अतः गुजरात के कतिपय सत कविकारमूलक उत्ति-वचिन्त्य का जोर भा आकर्षित हुए हों मम आचय नता। छन्द छन्द का माय-माय म्दान न कवन अनुप्रासा वरन् चित्र काव्या तक का याजना कर डाना। म प्रवृत्ति का न तो सत काव्य के साथ का मन बढना है और न प्रमुख मता न म अपनाया हा है। इस उत्तम का अभिप्राय कवन मता ही है कि सता न अपन समय म प्रचलित काव्यगत प्रवृत्तिया पर भा यकिचित ध्यान लिया था। गुजरात के उत्तर मध्यकालिन मता म नम् द्वारा गचित कमन-वध चोपड वध नाग-वध धनुष वध चामरवध जाति मी प्रवृत्ति के परिणाम हैं।^१

छ द

गुजराती साहित्य म छन्द के विविध प्रयोग बारहवा मता म कर आज तक अनवरत जान रह हैं। जन कवियों का ममस्त काव्य छन्दबद्ध है। यद्यपि छन्द के अतिरिक्त सङ्गानबद्ध विविध मता (तर्जो) एव दणिया म निबद्ध रचनाए भा मिलती हैं। वस्तुन नरनी पूव का ममस्त साहित्य दणिया का जोर छन्दबद्धता का विगप जाग्रता है। मक पञ्चान् गुजराती साहित्य म दणिया का प्रचार धार धारे बढता गया है और छन्द का प्रयोग मन्द होता गया है। इस मम्बव म था दा के कगवलाल ध्रुव का कथन सत्य हा है कि प्राकृत स परम्परागत छन्द का निधि अभिवृद्ध हाकर गुजराती को मिला। म रूप म दूहा चौपाई मारता सरमा छप्पय आदि अपभ्रंश का मवम वनी दन है। छन्द विधय का रुचि मभवत दयाराम के कान म पुन विकसित हाता हुई दृष्टिगत हाता है। दयाराम कृत पिगन मार दलपतरामकृत दनपत पिगन आदि मक स्पष्ट उदाहरण है। एक वात विगप उत्तरमनाय य है कि हिन्दी का रानि साहित्य जोर गुजरात का मध्ययुगान सत-साहित्य प्रायः एक ही युग म रचा गया। कगवलाल के कवि प्रिया मिक प्रिया जोर रामबिन्वा का तीरत्रिवता गुजरात म धर धर दबी जाना है। सौराष्ट्र के राव्यामिन कवि कच्छ भुज का

१ देखिए—'नपुराणो पृ० २५०-२५०।

पिगल पाठाना (ग्रजभाषा पाठाना) में अध्ययन करते थे। इस रूप में गुजरात की सन्तवाणी पर उम समय का प्रचलित छन्दबद्ध गीतों का अपना प्रभाव पड़ता स्वाभाविक था।

गुजरात के प्रायः सभी मन्तों ने दणिया के साथ-साथ गृह्य-चौपाल मारठा कड़िया ग्रन्थों से सवया भूषणा के विभिन्न विविध छन्दों का प्रयोग किया है। छन्द-प्रयोग का दृष्टि में हिन्दी तथा गुजराती साहित्य में प्रायः यह एक त्रुटि अन्तर है कि हिन्दी कविता की प्रवृत्ति वर्णिक वृत्तों का अपना मात्रिक छन्दों का आरंभ विनाप ही जबकि समय गुजराती काव्य में यह प्रवृत्ति वर्णिक वृत्तों की आरंभ विनाप रूप से निर्वाह देता है। मन्तों ने जिन प्रकार भाषा के अंतर्गत व्याकरण का कोई बंधन स्वीकार नहीं किया ठीक उसी प्रकार पिगलगात्र के नियमों का भी इन्होंने स्वयं अपना वृत्तों में प्रयोग किया है। इन्होंने तो परम्परा एक सरलता के अनुरूप जा भी उचित नया उम स्वच्छता से अपना लिया। कहा-कहा पर उद्धान छन्द प्रयोक्तृओं का अपना भी उदाहरण है किन्तु उसमें निम्न मन्तों का नकारात्मक ध्वनि उनके सामान्य वृत्त परिचय का छातक है। उनका यद्यपि मंगल जगण का मन्त्र जान गहा होगा, तथापि इनका अभिगच्छ प्रधानतया मात्रिक छन्दों का और प्रतीत होता है। इनके द्वारा मात्रिक छन्द मयाजन का एक कारण यह भी था कि इस प्रकार के एक विविध राग गगिनिया में अच्छी तरह विद्यमान जा सकने के जबकि वर्णिक वृत्तों में प्रायः यह कठिन है। मणि एक तान के अनुरूप उद्धाने जिन छन्दों की याचना का है वे अधिकांश में मात्रिक छन्दों हैं। मुन्तराग की भाँति कुछ मन्तों ने छन्द जान का अपूर्व परिचय भी दिया है। नभू हरीमिह और धामनृमिहाबाय के बानियाँ में वर्णिक वृत्तों के विविध प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार के प्रवृत्ति प्रायः दयाराम के साथ की है।

छन्दों का दृष्टि में गुजरात की हिन्दी सन्तवाणी का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि मन्तों ने जिन छन्दों का याचना की है उन पिगल आदि के नियमों में पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। कहीं मात्रागण गणनी हैं तो कहीं चढ़ जाता है कहा गण बन्त हैं तो कहा यदि भग का दाप प्रतीत होता है। मन्तों का काव्य गय हान के कारण समय-समय पर परिवर्तन भी होता रहा है। अतः छन्द-याचना में सन्तों की अपनावृत्ति तथा मंगल चढ़ना के कारण यह कहना कठिन हो जाता है कि किसी पंक्ति अथवा

पूर पत्र की परीक्षा किन नगणा का दृष्टि ममम गवक का जाय । फिर
भा सत्ता के मामाग्य न गणा की प्रताति करान वात पत्ता तथा प्रयुक्त छत्ता
के कथ उताहरण यन्ती दृष्टय ३ —

दाहा

जिमके प्रथम तथा तृतीय चरण में नर-नर मायाग एवं त्रिना
समा चतुर्थ चरण में ग्यारह ग्यारह मायाग हा नम सत्ता कथन ३ । त्रिपम
चरणों के जादि में जगण (१ ।) नहा हाता चाहिण ।

मता का माधिया प्राय 'दाहा अथवा त्रिना छत्ता में याजित ३ ।
जिम प्रकार माया मता का प्रमुख कान्य प्रकार है दाहा उनका प्रिय
छत्ता है । जाकार में छाटा तथा सरत हान के कारण मता न नम अपन
उपयुक्ता ममभा है । गुजरात का हिन्दी मन्त गणा में प्रस्तुत सत्ता नर के
कतिपय उताहरण इत्यव्य है —

सर्वतीत सब जा विवे सब समेत सब पूय
म स्वरूप स्फुरत भयो सोहि ज्ञान नहि नूय । —अथा ।^१

तीन काल दुखरूप है यह नारी को नेह
मूढ मती ताको कह सदा मुञ्ज को गेह ।

—श्री मन्महिहवाय ।^२

जब हिरदा में हरि बसे तृष्णा टले विराट
प्रोतम कूची ज्ञान की उघडे अगम कपाट । —प्रोतमदास ।^३

'बड़ा सरोवर देखके बगला आव धाय
तत्त्व ज्ञान मोती बिना हस न तोरे जाय ॥ —छोटम ।^४

भौरा लेते फूज रस रसिया लेत बास
भाली सींचे आसकर भौरां छडा उदास ।

—मोहम्मद अमीन ।^५

किन्तु कही-कहा मायाभा का घट बट भा दखा जाता है । यथा—

इक चंद्र तमकु हरे तारा नहीं जनेक

इक तिह जो बन चम सो जाहिर सब देन । —छोटम ।

१ सतप्रिया—२६ ।

२ मन्महिहवाणी विलास भाग २ पृ० ११२ ।

३ प्रोतमकृत साखी तृष्णा अंग—२३ ।

४ छोटमकृत साखी, मन्जन अंग—२६ ।

५ मोहम्मद अमीनकृत युमुफ जुलेखा ।

उपयुक्त ग्राह्य के प्रथम एवं द्वितीय चरण में १३-११ मात्राओं का अपन्ना ११-११ मात्राएँ हैं। साथ ही तुक्का त-क्रम का निवाह भा दृष्टिगत नहीं होता। कुछ अन्य उदाहरण भी प्रस्तुत हैं—

पवन पानी का पूतला क्या क्या तामे डग
 अछा ताबु खोज ले जिस गवो के रंग । —गखा ।
 सुमरन सोई न बीसरे रहे रूप म मन
 फहे प्रीतम शुद्ध स्नह सु करे सुमरन निशदिन । —प्रीतमदास ।
 'पूरण पूरण के प्रेम से पूरण पूरण की छोल
 बस्ताबिसभर स्वय भरा एक ही भाकमभोल । —बस्ता ।

चीपाई

जिमम मोलह मात्राएँ न अन्त में जगण अथवा तगण न न ।
 नमरन क वाट गमकन हा, विपमकन क वाट विपमकन नो उम चापाद
 छान कन हैं ।

ग्राह्य छान की भाँति मन्ना न चीपाई की योजना भा का है । नमम
 नना नो मात्राएँ ठाक बठनी हैं और कना कम नपाया न जाती है ।
 उदाहरणार्थ—

॥ ५ ५ ५ ५ । । ५ ५ = १६

शुद्ध—तुम ही दाता दोन दयाला,
 तुमहि भयकर काल कराला । —प्रीतमदाम ।^१

अशुद्ध—'प्रकृति पुरुष मिलि शण्ड उपायोजी
 अबुमाही इण्ड तरायो जी ।
 आम जमी अदभुत रचायोजी
 छाल तलो परदण करायोजी । —रविसाह्य ।^२

शुद्ध—'गुरु गोविन्द वा एक स्वरूपा, नाम रूप गुण भेद अनूपा ।
 गुरु अविचल पूरण पद घामा गुरु स्वामी गुरु जग विश्रामा ।

—रविसाह्य ।^३

-
- १ प्रीतमदास कृत ग्रहसौला ।
 - २ रविसाह्यकृत भाणगीता ।
 - ३ रविसाह्यकृत गुरु महात्म्य ।

कुण्डलिया

क्रमग दाहा जीर राता छत्त क मन ग कनिया छत्त बनता है। कुनिया म कुल छ पत्त हान ३ और प्रयक पत्त म चौबाम चौबाम मात्राए हाती है। गेत्त का पूवदन कडनिया का प्रथम पात्त तथा गत्त का उत्तरत्तन कुडनिया का द्वितीय पात्त माना जाता है। उमक नाथ राता क चार पात्त हान हैं। कुनिया छत्त का विगपता यत्त है कि इमक आत्ति और अ न का पत्त एक सा होना है।

गुजरात का मतवाणा म कुनिया अति प्रचलित छत्त है। गान दरवग की कुडलियाँ ता अति प्रसिद्ध है हा जथा धीग गत्तम, नुमित्तचाय अरजुन आदि सना न भी सुत्तर कडनिया का रचना का है। मता की कतिपय कुडलियाँ यहाँ उद्धृत की जाता हैं—

हिंदू कहें सो हम बडे मुसलमान कहें हम्म
एक भूग दो भ्राड है कुण ज्यादा कुण कम्म ।
कुण ज्यादा कुण कम्म कमी करना नहि कजिया
एक भगत हो राम, दूजा रहिमान सो रजिया
कहै दीन दरवेश, बोय सरिता मिल सिधू
सबका भाहब एक एक मुसलिम एक हिंदू । —दीन दरवेश ।^१

पान हले नहि हुकम बिन हुकम प्रीत अह रीत
हुकमी बदा जुग समी हुकम हार अह जीत ।
हुकम हार अह जीत हुकम से पवनहि पानी
हुकमे नेय महेग हुकमसे इद्र-इद्राणी ।
तेतीस कोटि हलमल हले खे खे खद गनि भान
दास धीर हरि हुकम से हुकम बिन हले नहि पान । —धीरा ।^२

अल्ला अरजुन एक है मन मक्के मत जाव
राम रोटीया पाबिया खुगी होय तह छाब ।
खुगी होय तह छाब जगत मे एक जुवारी
पौमता पडीपी देर खलक हुई खुवारी ।
देख ज्ञान मे देख अदल है दानु पत्ला
मन मक्के मत जाव अरजुन है एकज अल्ला ।

—अरजुन भगत ।^३

१ सतकाव्य पृ० ४ ७ ।

२ प्रा का मा प्रथ २४ पृ० १६७-१ ।

३ अरजुन वाणी पृ० १३८ ।

असाकृत कुन्तियाँ मान पाए की हैं जिनम प्राय प्रथम पाद की अन्त म पुनरावृत्ति हानी है। उदाहरणाय—

ब्रह्म कवच पहने बिना काल सताडे की बच्चो ।
बच्चो न गिव ब्रह्माय उडायण नवप्रह तारा
नेय गणेग, दिनेग यक्ष किन्नर, नर सारा ।
इन्द्र चद्र, नरेन्द्र, टौर दिवी क केत
वीर दण दिगपाल, जाहेर पेगम्बर जसे ।
जे धरी आयो काया सो सब माया सग रच्यो
ब्रह्म कवच पहने बिना काल सताडे की बच्चो ॥—अक्षा १^१

कुन्त मता का कुन्तियाँ छ पाए की न हाकर मात्र चार पाद की भा
निष्ठा गया हैं। उदाहरण क निम्न—

सरस्वती भात निज ममते पूरण पद निरघाए,
जनम मरण छोडाय क प्रेम कियो परकाश ।
प्रेम कियो परकाश निवट ब्रह्म कहानी
परमानन्द अविनाश जाणे सो सत पुराणी ।—परमानन्द १^२
प्रेम सुन के अंगर मे पछा है निज सार
पौजर सगाया पांच का छट बधन के काज ।
छट बधन के काज, अहंकरता आप समाई
कह मो परमानन्द अविगत बिरला पाई ।—परमानन्द १^३

छापय

कुन्तिया छ पाए की भाति मम भा छ पाए गान ३ जिनके आदि
म राना क चार पाए जीव अन्त म उलाना क पूर्व-अन्त बीर उत्तर-अन्त
गान हैं —

गुजरात क मता न छ पा नाम म प्राय ११ प्रकार का रचनाए का
। एक बाल्य प्रकार है और दूसरा छन्द प्रकार । जथा क छपा पाएपा
अवश्य है किन्तु अन्त छापय की यात्रना नही है । अनुभव विरु तया
चित्त विचार आदि म छापय की यात्रना का गई है, किन्तु वह छपा

१ 'असाकृत कुन्तियाँ १६ ।

२ भारतवाणी विलास भद्रनाथना पृ० १७२-२ ।

३ वरी पृ० १७५-७१ ।

नाम से अभिहित नहीं किया जाता। रविमाहृत् के कुछ हिन्दी कवि म प्रम्नून छन्द को याचना दिये—

राम नाम निज सार, राम गुण अखण्ड उजागर,
रामनाम निज टेक, राम मुख ही के मागर
राम गरीब निवाज राम सब दुख के भजन
राम परम कपाल राम सब दुख के भजन
शून्य सनेही राम भज तज माया अविद्या फोज को
रविदास एक नाम से मान तु अखण्डित भोज को।

× × ×

नाम बिना ज्यु ज्ञान श्रुत बिना असन असूचा
वाचा बिना जीम देह नाम बिना गोमन ब्रूचा
बास बिना ज्यु पुण्य, ज्यु मिसरी बिन खीरा
बिना चढ़ा कमान समुख लग न तीरा
ज्ञान दीपक चराग गणि ज्या अक सम जानिए
रविदास नाम सहित मक्तिमणि प्रमाणिए। —रविमाहृत् ।^१

हरिगीतिवा

राम प्रत्येक चरण में कुल २८ मात्राएँ आती हैं। अतः म त्रिषु-गुण हान हैं तथा मोनह बारह पर मति हानी है।

गुजरात की हिन्दी सन्तवाणा में यह एक प्रिय छन्द रहा है। अन्त में ब्रह्मरीता का रचना इसी छन्द में की है। उदाहरणार्थ—

'नाहीं मिध्या नाहीं साबो = १६ मात्राएँ
रूप एसो जोबका। = १२ मात्राएँ
जनम मरण और धमन सगळ = १६ मात्राएँ
चलयो जाइ सदब का। = १२ मात्राएँ

—अष्टावृत ब्रह्मरीता ६-१।

मवया

गुजराती सता ने प्रायः सुमुखि एवं दुर्मित आदि मवया छन्द का याचना विनाय रूपण की है। अष्टावृत सतप्रिया तथा हरिमहद्वत गानकटारा से म प्रकार के एकाधिक उदाहरण दृष्टव्य है—

सुमुखि छन्द

। ५ ।। ५ ।। ५ ।। ५ ।।

बहा भय कचन कद सु अग रग सुगध गोमा अति ओपे ।
बहा भय तान तुरग तुरी चढे, ध्रुजे धरा जाके नेव कोपे ।
धनद सो धन करन सो दानी, तो बहा काम सयों हरि तोपे ।
एते गुन औगुन भये सोनारा, जो गुहजान न पायो गुरवे ।

—जखा ।^१

दुमिन छन्द (सगणाष्टक)

(।। ५ ।। ५ ।। ५ ।। ५ ।। ५ ।। ५ ।। ५ ।।)

अगुद { 'सुख होय सदा दुख दूर तेरो सत्सङ्ग मे जा मेरो मान बह्यो ।
तु तो मूल गयो एहि भाति सब, ब्रह्मज्ञान पदारथ कु न गह्यो ।

गुद { छट भोगनि काज उपाव अनेक, करो सठ सङ्गत आप बह्यो ।
हरिसङ्ग के शुद्ध विचार रिना अत मूढ़ ब्यु मालिक मोहि रह्यो ॥

—हरीसिंह ।^२

धनाशरी कवित्त

ऋम दक्ताम वग्न हात है । अतिम वग्न गुर नाता है । मानह्वे
ज ग पर जीय पाठ क अत म यनि शानी है । ऋमका दूसरा नाम मनहरण
भा ३ । गुजराती म ता म मनाहर (मन्विद्यानर) न ऋम छद का विगप
उपमाग किया ३ । उदाहरणाय—

'कोई कहे ज्ञानी जो सकल व्ययहार जान,
कोई कहै सब शास्त्र जान सोई ज्ञानी है ।
कोई कहे ज्ञानी काल भुन अह भाषी जान,
कोई कहे ज्ञानी करामत हू की खानी है ।
कोई कहै ज्ञानी ज्यों सकल जग माने सोई
बोसत विविध एस मिथ्यामति ठानी है ।
ब्रह्म की लहै अमेद जमे बोल चारों येद
मनोहर सोई सत्य ज्ञानी की निगानी है ।

—मनहर पद ११ ।

१ 'सतप्रिया ११ ।

२ हरिमिहकत ज्ञानबटारो ।

करत गुमान एक देह अमिमान एसो
 आप आप माहि आपे फूलयो ही फिरत है ।
 नाहि आप वपु तीन तेरे में तन स्वरूप,
 बुद्ध गीता गुर याक्य गाव जो भरत है ।
 साररु असार ही को करत विचार आप
 देहकु हू मानो मूढ़ कायकु भरत है ।
 जाने हरि सत्सङ्ग गुदगम भयो तब
 चोर्यासी का फदहू मे कभू न परत ह ।^१

—हरिसिंहकृत ज्ञानकटाग

घर घर गुरु होइ बठत विचारहीन
 ध्यानहि धरत जो सा बग सम जानिए ।
 सेवक चरन म परन निज गुण गनी
 मोहजार डारत है गुरु निज बानिए ।
 प्रपच रहित सब बात बहे ऊपर की
 अतर करन कही कसे पहचानिए ।
 नरसिंह बिन सब भ्रम को बड़ावत है
 कसियुग माही यह कौतुक बखानिए । —नृसिंहाचार्य ।^१

रस—

श्रुतिया एवं पुराणों में अनन्त आत्मा को आनन्द रूप और रस रूप कहा है ।^२ साहित्याचार्यों ने काव्य के अन्तर्गत अनिवचनाय काव्यात् भूति को ब्रह्मानन्द के सादृश्य पर ब्रह्मानन्द महोत्तर कहकर अभिन्न किया है । रस रूप में यदि ब्रह्मानन्द ही सच्चा अथवा वास्तविक रस है तो साहित्य का प्राण भी वही है ।^३ सत्तों के काव्य का प्रयोजन यही आत्मानन्द या त्रिमम भक्तिरस का परिपाक अपन समुन्नत रूप में हुआ है । सस्कृत के आचार्यों ने त्रिम नवरमा की प्रतिष्ठा की, उनमें भक्ति को रसरूप^४ में नयी माना गया । रस ने प्रियान और विवनाय ने वात्मल्य रस की कल्पना अवश्य का क्विन्तु आग जनकर इन दोनों का पयवसान रतिभाव के अंतर्गत कर लिया गया । भरतमुनि ने भक्ति-रस का किंचित् उल्लेख किया है किन्तु उसका विषय

१ नृसिंह वाणी विकास पृ २१८ ।

२ रसो व स ।

३ डा० गोविन्द त्रिगुणाधर हि नि का श पृ ६४५ ।

महत्त्व न समझकर उमका पयवसान गान्तरम क अन्तगत कर दिया गया। आचाय जगनाय न भी आत्मा की रस रूपता को स्वीकार किया, किंतु भक्ति का रस तक पहुँचान म व भी भिन्नवत रह। भक्तिरम की स्थापना वन्मुत साहित्यिक क्षेत्र म न हाकर धार्मिक क्षेत्र म हुई। गौडीय वण्णवा न एम अलग रम ही नहा बल्कि सबश्रष्ट रम क रूप म स्वीकार किया।^१

भक्तिरस

मना का काय गाम्नीय पद्धति पर नवरमा का युक्तियुक्त निरूपण करना नयी था बल्कि वता एम गानाग्यार ५ जिनका काम भक्ति क मागर म हृदकी नगाकर आत्मानंद का मोती प्राप्त करना था अनन्त क पय पर चन पडन वात एम बटोही थ जिनके आँसुआ स पय भीना हाता और मुरा स आममान गूज उठना आचारिमक नी म नान हात वात एम दाही थ जा पय का बाधाआ का दख भुवन बाल नग थ एम सूरमा थ जा दूक दूक हा जाना पमद करत।^२ मना की यानिया म एमा भक्ति रम का अभिधान राम रसायन,^३ हरिरम^४ जत्तररम^५ इमरित,^६ आदि क रूप म हुआ है। टा० गाविण^७ त्रिगुणायत न भक्ति रम की गाम्नीय व्याख्या इम प्रकार का है—

भक्ति रम का स्थायी भाव परमात्मा विषयक अनीकिन रानिभाव कहा जावगा। परमात्मा दनता महापुरुष आदि आनन्दन क रूप म वर्णित मिलेंगे। पान बराग्य मत्तमगति आदि उद्दीपन की सीमा म आवेंगे। भक्तिभाव मूनक अरुोमाचादि अनुभाव हाग। अमप औरमुकय आवग चपनता उमा चिना दय एव म्मृति आदि व्यभिचारी भाव कह जायेंगे।^{१०}

१ काय्य प्रकाश व्याख्याकार आचाय विश्वेश्वर पृ० ११८।

२ 'पु रण न छाडे सूरमा, दूक दूक तन होय।

—अष्टा, अ अक्षयवाणी पृ० २४४।

३ 'राम रसायन जन जिनहि पियो ह। —अला।

४ बबोर हरिरस यों पिया बाकी रही न थाकि। —क प्रथ पृ० २८।

५ देविण—वस्तो कृत मगल्ल मे अंतर रस।

६ मोरी दासी राम की, इमरित बलिहारो।

—मोरी पदावली, पृ० २४६।

७ हि नि का बा, पृ० ६४५।

आचाय परगुणम चतुर्वेत्ता न भक्ति रस और मगुर रस म का भ
न मानन हुए उमक का पश म्बानार किय है—^१

१ सयोग पश । २ वियाग पश ।

१ सयोग पक्ष

गुजरात की सत्त वाला म सयोग जीर वियाग पश पश क समान
दगन हात है । कवार का भक्ति प्रेम की खुमारी रन मता पर भा पूरा
अमर कर जाती है ।^२ इनका आनम्बन राम भा है और कृष्ण भी जा
सगुण भी है जीर निगुण भा जीर जा मगुण निगुण स पर उम अनिवचनाय
नाक का वासी भी है जहाँ बारह महान वमत है । प्रम का निभर जहाँ
मदव बहा करता है जीर जहा परब्रह्म का आनन्द राम निरतर हा रहा
है ।^३ अनत ज्योति पुज जहा भनकन है और अनहद का बाजा बजना
रहता है ।^४ एस अगम्य और अगावर नाक का वामी आला म रम गया
है जहाँ और कोई नजर आता हा नश ।^५ वस त सी घयभागा ऋतु म प्रिय
मिलन क आनद म रनका मन सिहर उठता है और आत्मा कसर कुकुम
गुवान का हाली प्रिय क साथ खेलन का मचल उठनी है ।^६ प्रिय मिलन क
आनन्द का छिपाना कठिन है रज्जा का जावरण उम पुचकावता का डक
हुए है ।^७ मानिनी का रूप भा प्रिय का दयत ही विगलिन हा उठना है ।^८
मानह शृङ्गार मजवर अभिमार क निण बह सुहागन प्रम गला म निकल

१ सतकाव्य, पृ० ५४ ।

२ यह रस चाखत चढी खुमारी रे । —प्रिविक्रमानन्द ।

३ ऐसी रमत चलो नित्य रासा । —अखो ।

४ अनहद बाजा वागिया भनक भलवया नूर । —रविताहब ।

५ नना जागल रमी रह्या और न आव दृष्ट । —रविताहब ।

६ अशपरस भजन ५ ।

७ सन एक की तु रमनारी । कहा तु आप सजाव रे ।

कचन कहा कयीरो सजा । तुझे एकपना न आव रे ।

हलकी बात न कीज । —अखो जकडो २३ ।

८ साजन सग सदा मुखजारी । मुल किराय क्या बठी रे । वही ।

पनी है,^१ और सेज पर अचानक प्रिय को पाते ही रम की धारा स स्निग्ध से उठी है।^२ इस आध्यात्मिक रस क मूल्य को कौन आव मका है कौन प्रकट कर मका है? मिठाइ खान वान मूगे व्यक्ति की तरह वह मन ही मन प्रमन ता होता है लेकिन अभियक्त नहीं कर पाता। गगन का दोहन कर दूध पीन वाना की बात ही कृछ और है।

२ विद्याग पक्ष

विरह इनक लिए प्रेम की कमीठी है। यह वह मानी है जो प्रेम रूपी वृक्ष का सग मीचता रहता है।^३ विरह इनके लिए पीन का जीन भी है और 'पीव भी वही है।^४ यह विरह एसा है जा जागन पर तरसाता है और माने पर सपना बन कर जाता है।^५ इम रूप म गुजरात के सता न विरह का बहुत ऊँचे स्तर स दखा है। यज की विरन्गिणी गापिकाए इनक विरह का आदग हैं।^६ कवीर का फक्कडता और मीराँ का विह्वलता दाना क दगन हम इनकी विरहानुभूति म होत हैं। आध्यात्मिक रति क उगास हान वान अनुभाव रामाचक एव हृत्यग्राहा ह—

‘त्वचा मास सब जल गीया रविवास कीया राख
वालम जावो बुलायने, नव वल्लव होय आख।

- १ सब सणगार सजे धोलन का। नख सिख भारी बहु मोलन का।
नहीं अधिकारी मुण धोलन का। जिस घर 'हाम प्रापे चली आव।
—अछा जकडी ३०।
- २ मोहे पिमु सेज पर मिलिया रे तबकी बहात में रसीया रे।
उमपी सो रस उजलीया रे क्या जाने सोका काला रे।
—जकडी २६।
- ३ विरह बिना हरि ना मिले कीज कोटि उपाय
मानी सींचे वृक्ष कु श्रुत बिण फल ना घाय।
—यस्तो अग विरहो जनकी सा १६।
- ४ विरहा पीउका जीव ह विरहा पीउ नहि दोष।
—अछा विरहो अग सा ४।
- ५ अतो वही सा ६।'
- ६ साधो घेह खजनार को। —प्रोतमदास।

और भी,

सखी री मोको रे पिया बिन कल ना परे
मदर अघेरा मोरी सेज भी मूनी ।
बिन पिया जियरा डरे । ..सखी री०
खान पान मोको कुद्य न भावे
निसादिन जियरा डरे बिरहु गन मोरे तन म उठत है
अखियु नीर भरे ।^१ सखी री०

प्रिय परनेग चना गया जोर अकना बिरहिली गमन पर मित्र पक्क
कर रा रही है । प्रिय दान गिना मारा दिन गुजर जाता है और काल का
सीधी तनवार मिर पर नटवती ही रहना है ।^२ एक मन का पाना का
कौन समझ सकता है ?^३ न वह प्रिय तक पहुच पाती है और न काइ
उमका सदाग प्रिय तक न जान का ही तयार हैं ।^४ जायसा का नादिका
की भाति आखा स आमुआ की जगह रक्त का दूध टपकन लगता है जोर
आखें लाल हा जाती हैं । बिरह रूपी तन तन मपी दीपक म जल रहा है
और प्राण रूपी बाती प्रिय मिलन का प्रती रा म सारी-मारी रात जन्ता
रानी है । उसका असमयता बिरह का ज्वाला का और भा प्रज्वलित कर
ती है ।

१ अनवर काय' पृ० १७८ ।

२ बिरहन भर एकली राहा सीर बठी रोय ।
दिन जाय दोदार बिन सिर पर करबत सोय ॥

—अखी बिरही अग १८ ।

३ मेर मन कछु और ह लोगो के मन और,
पियु धियोगे कामिनो बसे कौन स ठौर

—वस्तो अग बिरहीजन को ८ ।

४ पहुच न गकु पीपु पे मेज न गकु कोय
रखीदास दिन रातडो खरी वभाशरण होय ।

—रविसाहब र भा स वा पृ० २४६ ।

५ लोचन से लोटु चव बिन देखे मेहबूब । वही पृ० २०३ ।

६ बिरह तेल तन कीडिया प्राण बनावु बात
कहे प्रीतम पति कु मिलन जारत हु दिन रात ।

—प्रीतमदास प्री वा, पृ० १२०-७ ।

मेरे प्रीतम चले परदेग जीवन मे कसे जीवु
आव न जावे कोई खबर न लावे कोवन को कहावु सदाग ?'

शा त रस

भरत मुनि तथा मम्मट आदि ससृष्टनाचार्यों ने गान्त रस को नवम् रस क रूप म स्वीकार कर निर्वेद' का उमका स्थायी भाव बताया है ।^१ भिन्नारीगम क मतानुसार मन म वराग्य आन स जयवा तत्त्वज्ञान प्राप्त हान पर गान्त रस उत्पन्न होता है । अतएव जब मय जीवा के प्रति समान भाव उत्पन्न हा किसी के प्रति राग द्वेष का भाव न हा तब 'गान्त रस' की निष्पत्ति मानी जाती है । इसके सचारा भाव हूप विपात् स्मृति धृति और निर्वेदादि है जलवन है—अनित्य समार की जमारना का ज्ञान परमात्मा वा चित्तन नरक' क महान दुखा का चित्तन भ्रभु के गुग्गा का कीतन ईश्वर ध्याग । उद्दीपन के रूप म बुगपा मरण, याधि पुण्य श्रेय, सत्सङ्ग एकांत वन इत्यादि तथा अनुभाव रामाच विलाप योग माधन ईश्वर भक्ति ससार भीरता आदि कहे जात हैं ।^२

सता की वाणा वस्तुतः भक्ति रस तथा गान्त रस का कविता है जिसम एव ओग अणय रस की सुमारी है तो दूसरी आग निर्वेदमूनक अपूव गान्ति है । गान्त रस क व सभी लक्षण जो आचार्यों न गिनाए हैं गुजरात का मतवाणा म भा मिलत है । उनके स्फुट पदा म कहा ससार की अमारता का चित्र है ता कही वराग्यमूनक अनुभूति है कहा ईश्वर का गुणगान है तो कही अनहत् का भनका है । इम प्रकार के सभी पदा म सन्तो न निर्वेद अपवा मम् भाव स सामागिक बंधना का ताडकर गत्सङ्ग हरि-वातन नाम म्मरण आदि क माध्यम स श्रुत दान का चर्चा का है । उगाहरण के लिए गुजरात का हिन्दी मतवाणी म कुछ पद दृष्टय हैं—

ससार की असारता

दम का भरोसा मत कर भार् माधन परदा साइ
साधन करवा साइ मे यारी यत्या ।
पाय पसव की छबर न जाने करे बाल की आसा
सिर पर जमरा भइप रह्या है न छोडे जगत वामा ।

१ देखिए—काव्य प्रकाश ३५ स ४७ ।

२ देखिए—काव्य निणय सपादक डा सत्ये पृ० ६४ ।

हस्ति घोडा भोर भाल खजाना कोई तरे काम नहि आवे,
 अचेत हाकर कपु बटा है पीछे तु पछतावे ।
 सदगुरुजी के गरनन जाई गाइ चरने गीन नमार्
 आधीन हाकर निसदिन रहना जम की आस मिटा
 जो आय सो जाने की है भाई को रहने की स्थिर नहीं
 धीर सतगुरु बतावत स तो जाखर रहणी भलाई ॥ —धीरा ।

वराग्यमूलक अनुभूति

भहारी नेह तो लगन मा लागी मया मेरो मनबो भयो रे वरागी ।
 ससार बहेवार मे सरवे विसारिया बडा ससारियो त्यागी रे ।
 —मोरार ।

‘अलख स प्रीत लगाव पियारे तोहे यहाँ स एक दिन जावना है ।
 यही पुर पट्टन लगे रग लान यहा बेर ही बेर नहीं आवना है ।
 कुछ नेक सौदा कीजे यार मेरा परवर की नाम मुख गावना है ।
 साई समय बहे सोच दाना तु पथी मुसाफिर पावना है ।
 —समयदाम ।

ईश्वर कीतन

जाकु रङ्ग न लाग्यो रामको सो नर पामर मूढ़ गमार रे ।
 ताकु नहि ठरन का ठार र काया जसी कोटडा र ।
 कुमति काजल माय आप ने खोजे आपकी र
 उलटा फिर फिर जाय ।
 —छोटम ।

मेरे मन मेरे मन हरिनाम लागे मोठो ।
 गुरु प्रताप सत की सगत प्रम भक्ति से दीठो ।
 निस वासर हरि नामहि रटतां कठ्यो करम की चीठो
 हरिनाम ओषधि रसना कटोरी प्रम प्रीत से पीतो ।
 ध्रु प्रह्लाद सगर राग पीनो नुगरा जात भुरीतो ।
 गवरी कह प्रभु नटवर नागर तुम बिन सब जुग फीको ।

आम ध्यान

—गवरीबाई ।

बरखत अनुभव उमग्यो सावन
 नलयत होय रह्यो सब हरिया लागे खेत साहावन ॥

भजन सुभक्ष भयो जीवन को मिलत रुचे अन्न पावन ॥
 जर वर भव दय म प्राणी सो लागे तपत बुभावन ॥
 अनुभव अमृत पान करतहि होय रहे सब पावन ।
 ब्रह्म विना कछु और स्फुर नहि, सोलत अक्षर बावन ।
 विजुरीं विचार प्रसासे घन घन गरज विमल गुन गावन ॥
 याकुं छोड़त कई युग बीते सो पायो मन भावन ॥

—अनुभवानन्द ।

अद्भुत रस

जिनके आम्बवादन स आश्चर्य प्रकट हूँ साहित्याचार्यों न उम अद्भुत रस कहा है । इसका स्थायी भाग है—विस्मय । जानम्बन है—अलौकिक दृश्य आश्चर्य जनक वस्तु अथवा वाय । उद्दीपन-गुण कातन, तथा अनुभाव हैं—रामाच स्वभ स्वर भग प्रस्वद, जनिमप देखना सध्रम आदि ।

मत्ता की सधाभापा म प्राय अद्भुत रस की अवतारगा हुई है । ब्रह्मनाता व निरूपण तथा सहज साधन व उमप म भी हम अद्भुतरस का याजना मिनती है । ब्रह्म व विराट्पगन म गुजरानी मत्ता न हम अनक अद्भुत एव अलौकिक दृश्या की याजना की है जिनस उह अद्भुत रस का याजना म पूण सफरता मिला है । उदाहरणार्थ—

अलौकिक स्थिति

सतो बात धड़ी महापद की
 सभ सपान कछु नहीं लागत, ऐस स्थिति बेहद की । सतो
 दृढातीत द्रत सो भासे कहा कहु बोबिद को
 आप अशब्द वाच्य नहीं सोलत अजबकला महानिध की ।
 ग्राहक ग्रहण ग्राह्य नहि तामे वाण्य सुनी जहाँ धृत्य की
 रूप अरूपी आप अला है बूझ बड़ी ए गरय की ।—अजा ।

अलौकिक वाय

कोई बेहदा र कहत न आय मोर् ।
 देने याकुं वाधा नहि वाधा देवत नाही
 गूमे की गति गू गा जाने समझ ममझ मुस्काई
 गूरे का पति गूरा जाने कायर क कत नाही । —रवि साहब ।

विराट स्वरूप दशन

आत्मा प्रगल्भो आनंद रूप ।

आनंद मात्र यद्यु नासिका, सिर मुख नन्वसिख चिरूप ।
 प्रीया करण नन अति सुंदर हृदे हस्त कटि पद अनूप ।
 सुंदरता कछु कही न जावत अद्वतीय अगम अरूप ॥
 श्रुति को सार विचार करत ही प्राटयो जस हितूप
 अनुभवान द मगन मनसा भई निरस्त दिव्य स्वरूप ॥

— अनुभवानंद ।

एकी समे ब्रह्मांड तेरा सीस धूपन तेरे पाँच-पचीस ।
 चंद-सूय दीऊ तेरे नन सारदा सो ह तेर बन ।
 तेरे उदर मे सागर सात सप्त पातार लौं चरन विहयात ।
 सगुन रूप को ऐसी विस्तार निगुन को कौन पावे पार ॥
 तेरो सक्ल्प म अनंत घराट ऊचा अदभुन तेरा घाट ॥

— अनुभवानंद ।

वीररस

सत्ता न जहाँ मन और वामनाआ के दमन म अंतमन्वी साधना
 विषयक प्रयासा म सिपाही फौज सना आदि के विविध रूपक गूढे किय
 हैं वहा हम उनकी रचनाआ म वीररस के दशन हात हैं । इम प्रकार के
 रमन्गन म रवि साहब का एक पद दृश्य है —

मैं सिपाही सदगुरु साहेब का लहू तोप बहनर पहेरी
 गील सतोप का बस्तर पेहलू सऊ गमगेर सतगुरु केरी
 सात साहेर का घूट भराऊ मारू काल दुश्मन बेरी
 मिह बकरी भेडा चराऊ राजा रक का एक गेरी ।
 पाँच पचीस कोई जान न पावे ब्रह्म महल मे जोऊ हेरी ।
 सत गद की लगन छुमारी सुन शिखर मुरता मेरी ।
 परिब्रह्म के परचे खेतु कलू टेल सत सबूरी
 आदु राज ने आदु दुहाई होई छाप पादगाही केरी
 कहे रविदास सदगुरु के आगे मागु मौज चाकरी तेरी ।

— रविसाहब ।^१

हास्यरस

गुजराती सतवाणी में हास्यरस की अवतारणा प्रमुख रूप से अथाक ज़प्पा, घीरा की काफिया और भाजा के चाबला में हुई है। परम्परागत जजर रुढ़ियाक प्रति यग्य करने हुए इन सतान जिन पत्नी की रचना की उनमें हास्यरस के सामान्य नक्षणा की प्रतीति हाती है। अथान वराम्य एव सत्यक अनुमधान में अपने औजारा का भन ही रूप में फक दिया हो, किन्तु आन्त में मजबूर ठोक बजाने वाग्या जीर तराग देने वाली बलम को जा वाली मिल्नी वह तो अथाक औजारास भी अधिक चान्पार थी। हमा हमा कर चाट करना अथाको खूब जाता है। पत्ता ही नहीं चलता कि चोप वहाँ लगी है। बमक का अनुभव ता वाग्य में होता है। भाल की नाक में लिखने वाग्य वागडमन घीरा का ता वात ही कुछ और है। भाजा के चाबला चाबुब का तरह पीठ का ही नहीं मार तन बदन को स्याह कर दत है। सतान की दिन्नी वाणी में उनकी गुजराती वाली की अपणा यद्यपि हास्य की अवतारणा बहुत कम हुआ है फिर भी हम प्रकारक विरत पन् उनकी ठास अभिव्यजना गति के परिचायक हैं। हम रूप में मनोहर तथा वापू नाहय गायकवाडक कुछ पन् दृष्टय हैं—

भल कलिपुग में भाड मवया

परम हस बनी बठत भया, कुत्सित नर कु फहत बनया।

ग्रह्य विद्या की बात में जानत भुम भननन ठुम टननन बजया।

तोते जिमि पढ़ी काग की यार्

कीवी कावी कीवी कीवी कीवी की बरया।

—मनोहर।

निमांज पठनां तो बोले विसमिल्ला रे

भाई रे निमांज पढ़ता तो बोले विसमिल्ला।

तोस रोज रपता और मच्छिर्पो कु चल्ता

और बकर का काटता है गल्ला।

साहेब का जीव बंद मार क्यों तैं डारा

ए बदी चाने दीजस म टल्ला रे।

—वापू नाहय गायकवाड।

वीभत्त रस

सत्ता न जहाँ नारा व भौतिक मीन्य व प्रति धृगा तथा मनुष्य-ह व प्रति जुगुप्सा का भाव व्यक्त किया है वहाँ प्राय वाभत्त रस का अवतारणा हुई है। सत मु दरदाम न नागी निग जन्म म जगह जगह रम प्रकार व भावा की याजना का है जहाँ नारा व मीमन दह और रम मीन्य व प्रति जावपण का अपक्षा धृगा का भाव हा पना हाता है। गुजरान व सत्ता न भी मनुष्य दह की नवरता की जोर इङ्गिन करत हुए इस प्रकार का जुगुप्सा भावना व्यक्त का है। उदाहरणाय—

जो तु मानत है करि मेरा

तामे कौन पदारथ तेरा जो।

रस वीरज का देह बनाया पचभूत का डेरा।

हाड पिजर चाम लपेटा मल भरिया बहुतेरा

नवे द्वार से निकसत सारा हे दुर्वास घनेरा।

—छोटम।

दूटया तन गात भमत भटयो नहीं फूट फजीत पुरानी मो पजर

जजर अङ्ग भुक्त्यो तन नीचे जसहि वृद्ध भया चले कजर।

फटे से मन दसन बिन बन ऐसो फये जसे ऊजर खजर।

—अवा।

निष्कष

उपयुक्त उदाहरणा स यह प्रतीत हाता है कि सत्ता व वाय म विभिन्न रसा का याजना हुई है। हास्य एव वाभत्त रस की भाति इनकी रचनाआ म भयानक रीत तथा कल्या रम अवतारणा भा हुई है। बापू माहव प्रभृति सत्ता न कल्या रम का याजना के लिए विभिन्न राजिया लिख है। कान व करान गाल का वणन करन हुए इन सत्ता न भयानक रसा का याजना भा त्तस्तत का है। रस प्रकार रम दलत हैं कि रनक रहस्यवाणी रूपका म सयाग तथा वियाग मूनक भक्तिरम की निष्पत्ति हुई है। अय रमा म गान्त तथा अद्भुत रस उतलनाय हैं जबकि हास्य वीर भयानक आदि गीण होकर आय हैं। सत्ता की रस याजना व विषय म यह स्पष्ट कर दना आवश्यक प्रतीत हाता है कि रहोने कपाकि मुक्तक पत् ही प्रधानतया लिख अत उनम रम निष्पत्ति खाजना यथ है। भाव विभाव मचारी भावा का पूण योजना ता प्रवय काव्या म हा सभव है। अत इनके मुक्तक पना म रम व छाटे ही दम जा सकत हैं। विविध रसा की याजना

होन हुए भी शास्त्रीय पद्धति पर उनमें रमो का पूरा परिपाक प्रायः नहीं हो सका है।

सगीत—

सगीत और काव्य का सम्बन्ध जया-याथिन है। दोनों गतिशील कलाएँ हैं तथा दोनों ही कर्णोद्दिश्य के माध्यम से आनन्दानुभूति कराती हैं। सगीत में जहाँ भावा की सूक्ष्म एवं निराकार अभिव्यक्ति हाती है वहाँ काव्य में उमी का मानार आयाजन होता है। एक का मजक नाम शिल्पा है जबकि दूसरे का नाम शिल्पी। किन्तु नाद एवं गान की समन्वयात्मक रचना जहाँ होती है काव्य का श्रेष्ठतम अंग भी वहाँ जन्म नेता है। इस रूप में काव्य और सगीत का पारस्परिक सम्बन्ध जाटन हुए अनेक पाश्चात्य मनापियान आनन्ददायक विचारों से युक्त सगीत का काव्य की सजा से अभिहित किया।^१ भारतीय आचार्यों ने यद्यपि सगीत के परिवेश में काव्य की परिभाषा नहीं की तथापि काव्य में सगीत तत्त्व के महत्त्व का प्रकारांतर में स्वीकार किया था।^२

सगीत सतबाणी का आधार तत्त्व है। अनगण गानों और अव्यवस्थित छन्दों में कहा गई सतरागी भाषा लोपा का प्रभावित करती है। उसका एकमात्र कारण है—उमम निहित सगात। गुजरात का गद्य मतबाणा छन्दबद्ध हान के साथ-साथ प्रायः सगीतबद्ध भी है। उसकी याजना विभिन्न राग रागिनियाएँ एक ताओ में हुई हैं। मता को यद्यपि सगीत का शास्त्रीय ज्ञान नहीं था तथापि लाकड़ों से गूँजे उत्पन्न वाली विभिन्न राग धुनाएँ प्रचलित राग रागिनिया की पकड़ पट्ट अवश्य थी। पना में ध्रुव, टक

१ (a) Music when combined with a pleasureable idea, is poetry music without the idea is simply music the idea without the music is prose from its very definitness

—Edgar Allanpoe An Anthology of Critical Statements

P 69

(b) A musical thought is one spoken by a mind that has penetrated into the inmost heart of the thing, detected the inmost mystery of it T Carlyle

—An Anthology of Critical Statements Page 61

२ काव्य और सगीत का पारस्परिक सम्बन्ध

एक विभिन्न रागा के निर्माण में तब तक मूकक के विभिन्न तान स्वर एवं तय आदि का सामान्य ज्ञान अवश्य था। हृदय का रागात्मक निष्कपण अभिव्यक्ति का माध्यम सत्ता न जिन काव्य का गृजन किया उमम आन्तरिक सगीतात्मकता के गुण ता विद्यमान थे हा, संगीत के प्रति उनका महज आकषण बाह्य संगीत का याचना में भा कुछ अंग तक महायक ही सका था। मीराबाई गवराबाई जनुभवान्त तथा वस्ता जाति सन्ना के मासिक पत्र इस कथन के प्रमाण है।

गुजरात की सत्तवाणा में जिन प्रमुख रागा के निर्माण मिलते हैं वे इस प्रकार हैं—वसत मल्लार कदार धमार सारंग भरव विभान विलावल गौरी कल्याण वानडा (काहरा) आमावरी प्रभात माभरा मारू जजवता विहाग सार होरी भरव समाज रामवती टांग दब गगाधर ठुमरी पूर्वी माहिणी सकत काफी भवान्त तथा सारठा आदि।

राग रागिनिया का भौति निम्नलिखित ताल में गुजराता संगीत का विशेष प्रिय रह है जिनका उल्लेख उनके पदा में मिलता है—

होच (छ मात्रा) रूपक (सात मात्रा) दावरा (छ मात्रा) बहरवा (आठ मात्रा) भूपताल (दस मात्रा) एक ताल (बारह मात्रा) और तीन ताल (सोलह मात्रा)।

सत्त क्याकि मनमौजी एवं फक्कड प्रवृत्ति के थे अतः उन्होंने संगीत एवं काव्य के नियमों का यथावत् पालन कही भी नहीं किया। परम्परा का तात्पर्य गान में उन्हें विनाश आनन्द आता था।^१ यथा उम अलौकिक जगत के वासा थे जहाँ जनहृत् का राजा निरन्तर वजना रहता है और जहाँ क्षत्ताभा राग मुगद्ग दन है। वस्तुतः इन्होंने तो काव्य का किसी विधा में सम्बन्ध था और न ये रागा के शास्त्रीय बंधन का ही स्वीकार करने थे। संगीत इनका वाणा का जन्मजात बरदान था। वनम एक ऐसी प्रतिभा थी जिसके वाग्गन्तका स्वानुभव पूरा वाणा विभिन्न राग रागिनिया में फूट पना था।

गुजरात के सत्तो के काव्य में निहित संगीत का प्रकार का है—
(१) आन्तरिक। (२) बाह्य। संगीत की यह आन्तरिक योजना (क) गत

१ 'साम्भ्र को राग सकारे गाव सो साधू मोरे मन भाव।

चयन । (ख) अरगुराण । (ग) पन् वियास । (घ) गान्ते की पारस्परिक मन्त्री । (ङ) अनुप्रास याजना तथा चरणात्तम टेक अथवा ध्रुव की पुनरावृत्ति में देखा जा सकती है । इसी प्रकार में बाह्य योजना राग तान ताल या धुन के निर्देश के रूप में देखी जा सकती है । यद्यपि यह स्पष्ट करना अनिवाय प्रतीत होता है कि किसी पद अथवा गीति पद में राग अथवा ताल के निर्देश को देखकर किसी रचना को संगीतात्मक मान बैठना बड़ी भूल है । पदों पर गायक के रूप में दिये गये निर्देश केवल इतना सूचित करते हैं कि अमुक पद यदि अमुक तान में निबद्ध करके अमुक राग में गाया जायगा तो विगण प्रभावात्पादिक सिद्ध होगा । उदाहरणार्थ—

राग बसन्त—

‘आली जबकों फाग मेरो मन सहरात

ना तो जोबन मेरा इउहि जात ।—अल्ता ।^१

राग मल्हार—

बरछत अनुभव उमगयो सावन ॥

जत धल होय रह्यो सब हरिया, लागे छेत सोहावन ॥

—अनुभवानन्द ।

‘ज्ञान घटा चढ़ि जाई अज्ञानक ज्ञान घटा चढ़ि आई ।

अनुभव जल बरछा बडी बुद्धन कम की कीच रेलाई ॥—अल्ता ।

राग बिहाग—

मेरो राम नायक धणभागे मेरो

चौदह भुवन की रची बादली वो

माया भार सदाणो ।’ मेरो —गवरीबाई ।^२

राग सोरठ—

मया मेरो मनवो भयी रे बरागी

मारी सेह तो लगन मां लागी । —मोरार साहब ।

‘सामलिया तोर सरन आवे की लाज,

मैं अत्रगुनकारी ना गुन मागर मेरा गुनाह बरगो बतराज ।

—गवरीबाई ।^३

१ गु व सो हस्त प्रति १२१८ ।

२ गवरी कीतन मान्ना’ पृ० २१२ ।

३ वही पृ० २६६ ।

राग सवर—

गाजत गेव गगन मे नगारा बाजत गेव गगन मे ।

—छोटम ।^१

राग पुरवी—

‘प्रभु मोक्क एक बेर दरसन दइये प्रभु०

तुम कारन मे भइ रे दिवानो

उपहास जगत की सहिये । —गवरीवाई ।^२

सतों की छन्द याजना के जतगत हम यह स्पष्ट कर चुके हैं कि मङ्गीन की मुलभता के हेतु मता न मात्रिक छन्दों की ही विगण रूपग अपनाया था । इस रूप में समीत के चार माना घटक के साथ चरगाकुन रोला सबया रचिरा नानावती प्रलावता और गीति छ माथा घटक के साथ हीर महीदीप और ताटव पाच और दस मात्रा के साथ भूलगा दापक आदि सात माना के साथ हरिगीति अघोर छन्द तथा गजन के रमल और हजज आदि छन्दों का संगति सहज ही बिठायी जा सकती है ।

जसा कि हम ऊपर कह गये हैं कि संगीत सतजाणा का आधार तत्व है । उहान पद नालित्य एव छन्द छन्दों की अपेक्षा स्वर एव ताल के आधार पर अपनी बाणी का बितान ताना था । संगीत में भी उहान गाल्सीय संगीत की अपेक्षा सुगम गोक संगीत की अवतारणा ही विगणत की थी । इस क्षेत्र में मारठा राग में लाग बुन तथा हाच-मान में निबद्ध गरवा गरवी गुजरात के सत कवियों की शिन्नी को विगिष्ट दन है । ●

१ छोटम बाणी ग्रन्थ १ पृ० १७३, पद २८१ ।

२ गवरी कौतन मासा पृ २५६ पद ५५७ ।

षष्ठ परिच्छेद

गुजरात के सतो द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट काव्य प्रकार



षष्ठ परिच्छेद

गुजरात के सन्तो द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट काव्य-प्रकार

गुजराती सन्तवाणी व साहित्यिक मौख्य का मूल्यांकन करने ममथ पिल्लन परिच्छेद म हन सन्ता द्वारा प्रयुक्त प्रमुख छन्द का परिचय दिया जा चुका है छन्द का ही तरह काव्य रूपा व भा विविष्ट प्रयोग कहान किये है । माखी सबद (पन्) रमनी इत्यादि प्रचलित प्रमुख काव्य प्रकारा व माथ-माथ इन गुजराती सन्ता न बारभामा कका ममनवा छप्पा तथा गुजराती विविष्टय सूचक गरबी गरबा काल आभ्यान जका हीनी आदि विभिन्न काव्य प्रकारो का प्रयोग किया है । इन काव्य प्रकारा म प्रबन्ध एवं मुक्तक दोना गणिया ममाविष्ट हैं । प्रबन्ध रचनाआ म आभ्यान अथवा चरित काव्य ममनवी गाता आदि विविष्ट उल्लसनाय हैं जिनम उनके रचयिताआ ने प्राय पूर्ववर्ती सन्ता व चरित तथा पौराणिक कथाआ का बणन किया है । गाता तथा ममनवा आदि म कवन पन् का वाच करारा गया है । सन्ता की मुक्तक रचनाआ म बारभामी गरबी-गरबा कका धोन आरता जकनी नावनी गजल छप्पा साखी रमनी पन् इत्यादि प्रमुख हैं । प्रस्तुत परिच्छेद म हम सन्ता द्वारा प्रयुक्त प्रमुख काव्य प्रकारा का परिचय देंगे ।

प्रबन्ध रचनाएँ—

१ आभ्यान अथवा चरित काव्य

आभ्यान गुजराती साहित्य का एक विविष्ट काव्य प्रकार है । आभ्यान का विविष्टता उमका प्रबन्ध पटुता म है । यह काव्य रूप स्तना अधिक लाजप्रिय रहा है कि मध्यकालीन गुजराती साहित्य का एक पूरा युग तपन् आभ्यान युग व नाम स अभिहित किया जाता है । आभ्यान सम्राट प्रमान्त का नाम गुजरात व आभ्यानकारा म सब प्रतिद्ध है ।

गुजरात व सन्ता न वस्तुत आभ्यान जोर चरित काव्य व वाच कोई विभक्त रखा नहा खाचा है । इन सन्ता म चरित काव्य विषय का परम्परा

मात्र से लेकर छोटम तक मिलती है। इनका प्रमुख विषय सता की चरित गाथा है। धामा-मम्प्रदाय के अनेक सता की वीरक गाथाएँ भी यही काटि की ह। उनकी हिन्दी रचनाओं में गोरक्ष चरित, कवार चरित तथा ध्रुव चरित जति प्रमुख हैं। गुजरात के सता में माडण, मुकुन्द गूगरी भाजा छोटम, महात्ममराम समथराम आदि ने हिन्दी गुजराती में श्रेष्ठ चरित काव्या की रचना की है।

२ मसनवी

यह सूफियों की एक विंगिट देन है। इस गान का व्यवहार प्रायः बड़े काव्य के लिए किया जाता है। आकार में वृहद् होने के कारण कविया का पूरा स्वतंत्रता का अवसर मिलता है। मसनवी के मन्बन्ध में जामी का मत है कि मसनवियाँ काव्य में जाह्यान प्रेम प्रबन्ध वीर काव्य तथा कथा परब हाती हैं। मसनवियाँ में कविया का श्ली तथा तुक के सम्बन्ध में स्वतंत्रता हाती है।^१ मसनवियाँ प्रायः पाँच बहरों में लिखी जाती हैं— हजज रमन, सारी खफोफ मुतकारिब। किन्तु फारसी की मसनवियाँ में जिन छन्दों का प्रयोग हुआ है उनका उपयोग हिन्दी के प्रमाख्याना में प्रतीत नहीं होता। भाषा की दृष्टि से उत्तरीभारत के प्रमाख्याना प्रायः अवधा भाषा में हैं जबकि दक्षिण और गुजरात के प्रमाख्याना का भाषा दक्षिणी अथवा गुजरी है जिन पर अरबी फारसी का गहरा प्रभाव है। गुजरात के सूफी सतों ने अपन ऋद्ध की जनक मसनवियाँ लिखी हैं, जिनमें मुहम्मद अमान रचित युमुफ जुनया तथा खून मोहम्मद रचित खूब-तरङ्ग विंगिट उत्तखनाय है।

गजन और बमान का भक्ति मसनवी में एक ही काफिय और रत्ना (तुक्कान) की व्यवस्था नहीं होता। हम हरे पर के दाना मिमर एक काफिय के हान हैं किन्तु आग आन वान परा में वह काफिया नहीं रत्ना। इस सुविधा के कारण घटना वगण का बन्ध मरचना रहता है। गुजरात का मसनवियाँ धार्मिक विषयों का चर्च भी लिखी गया है जिनमें तत्कालीन सामाजिक जीवन का सुन्दर चित्रण हुआ है।

३ कडवा तथा ऊयला

कडवा मस्तून के कडवक का प्राकृत रूप है जिनका अर्थ विभिन्न

१ मध्ययुगीन प्रमाख्याना ३१० पृथाम सुन्दर पाण्डेय पृ० ५३ से उद्धृत।

प्राकृत छन्द का मिश्र रचना व रूप म किया जाता है।^१ आचार्य हजारा प्रसाद द्विवेदी न कडवक का जपभ्रम काव्य का प्रमुख काव्य प्रकार मानन हुए यह कहा है कि पञ्चटिका या जगित्त छन्द की गर्भ पत्नियाँ निवृत्त कवि घत्ता या ध्रुवक देता है। कई पञ्चटिका जगित्त या एम गी किमा छोटे छन्द का दवर प्रत म घत्ता या ध्रुवन यह कडवक है।^२ वस्तुन कव्वा आर्यान काव्य का एक अभिप्र अङ्ग है। था क ह ध्रवन कडवा को अग्नेजी कव्वा जयवा मग क ममकथ वताया है। सत्ता न अपना प्रव ध रचनाजा म तथा स्वत न रूपण कडवावद्ध रचनाए का हैं। अमाकृत अग्नेगीता और प्रीनमकृत एकाङ्ग-स्वध आदि इना कादि का रचनाए हैं।

ऊयली कडवा का ही एक विनिष्ठ अङ्ग है।^३ कवक अतगन कव्वा गयी वस्तु का सार तथा आग की घटना का सवन रहता है। सत्ता न इम प्रकार की स्वत व रचनाए भा का हैं। उदाहरण्वाथ—

राम गरीब निगाज बिरद सभारिए
पतित उजारन राम अब न बिसारिए ।

ऊयली

बिसारिए नहीं बिरद अपनी महा पाप से हम भरे
निगम की मुन साख भवणे गरण तोर अनुसर ।
अनुसर प्रभु गरण तोर त्याग क कारण नहीं
मन दोडे सो हाथ नावे पव बाण मारे महीं ।
साख साधु नाम गीता गरण आध तारिए
पतित पावन बिरद तेरो, क्यु न दास उजारिए । —दास ।

५ गोष्ठी(सवाद)

इमका जथ बहुवा उस वातालाप स किया जाता है जो ज्ञानवदन के हेतु किया हा।^४ मराठी म तो अब भी सामान्य वातचीत के अय म

१ देखिए—Anals of Bhandarkar oriental Research Institute
—B O R J Vol 17 Page 49

२ देखिए— हिंदी साहित्य का आदिकाल पृ० १०१ ।

३ देखिए— साहित्य विवेचन श्री के ह ध्रुव भाग २ पृ० ३१६ ।

४ आ परशुराम चतुर्वेदी सतकार्य पृ० ३७ ।

गाथी गान का प्रयाग हाता है। गाथी अथवा गुण्डि निखने की परम्परा नाथपथी जागिया क काल स चली आ रही है। एसा गाथियों के अथ नाम बाध अथवा सवाण भी मिलत है।^१ गुजराता सता की प्रश्नोत्तर मानिका' हस्तामलक गुरु गिव्य-सवाण और रविभाण प्रश्नात्तरी आदि रमी प्रकार की रचनाए हैं।

५ गीता

जसा कि हम पहन कह चुक हैं कि मन्ता की दार्शनिक विचार धारा पर गीता का स्पष्ट प्रभाव पडा है। यहा नही बन गुजराता मन्ता न इम नाम स अनक गीताएँ भी रची हैं। यथा अष्वाकृत अश्वेगाता गोपान्तासकृत गापालगीता प्रीतमदासकृत सरसगीता रविमाहकृत भागगीता वस्ताकृत गुण्गीता कृष्णान्तकृत जानगीता आदि रमी प्रकार की रचनाए हैं जा प्रज्वात्मक गीता म लिखी गया हैं। य गीताएँ प्राय दो प्रकार की हैं— (१) सवाणरमक—यथा भागगीता जानगीता (२) कडवाकड—यथा अश्वगीता—राति रिवाजा एव ग्राह्याचारा म पमी हुई जनता का सच्च कवन पण का बाध कराना हा बनवा प्रमुख विषय है। गुण-मनुति गुणमहात्म्य आदि अ य विषया पर भी कतिपय गीताएँ रचा गया हैं। वस्तुत गुजरात क मन्ता की प्रव ध रचनाआ म गीता एक विशिष्ट काव्य प्रकार है।

मुक्तक रचनाएँ—

१ माखी

मन काव्य का मवाधिक नावप्रिय काव्य प्रकार माखी रण है। माखा वा दाहा का आश्रय म मलाक कहा गया है।^२ इमका कारण सभवत सम्कृत क रनाक की भांति जावार म यधु तथा उहु प्रचरित जाना है। माखी गहा का पर्यायवाचा नण यत्रपि मतकाव्य म यण दाहा क त्रिण रण्या हा गया है। दाण क अनिरिक्त माखा का याजना चौपाण मारण तथा छुपप आदि छुण म भा मिलता है। अत माखा छण न हाकर मन्ता का विशिष्ट काव्य प्रकार है जितना अथ प्राय उन काव्य विधान म निया जा

१ गोरख मलेण गुण्डि महादेव गोरख गुण्डि मछोण गोरख बोध, लक्ष्मणबोध हनुमानबोध मुहम्मद बाध मुसतानबोध, भूपालबोध आदि।

२ आदि प्रथ म कबोर क २६२ सलोक' मप्रहीत हैं।

सबका है जिसमें किसी मन्त न अपन माथान अनुभव व बल पर प्राप्त किए हुए ज्ञान का प्रतिष्ठा का है।^१ वस्तुतः इहान स्वानुभव व द्वारा जीवन में जिन सत्या की उपनिषद् का उन्हा का साखिया में अभिन्यक्त किया है। इस रूप में साखी मन्ता व स्वानुभव की मजूपा है। कवार न साखी का महत्ता बताते हुए कहा भी है—

साखी आँखों ग्यान की समुक्ति देवु मन माहि
बिन साखी सत्तार का भगरा छून्त माहि।^२

कवीर की साखिया का भाँति गुजरात व मन्ता न भा विभिन्न अज्ञा में साखिया का रचना का है। प्रीनम का साखा ग्रन्थ इस दृष्टि से एक विज्ञान ग्रन्थ है जो २४ अज्ञा में विभाजित है तथा जिसमें कुल ६२८ साखिया हैं। असा तथा छात्रम न विभिन्न अज्ञा में उन्चकाटि की साखिया का रचना की है।^३ जवा का समस्त साखियाँ १०७ अगा में विभाजित हैं तथा जिनका संख्या १५० व आसपास बठनी है। ८४ अगा में विभक्त वन्ता का २६४१ साखियाँ भा जल्पत महत्त्वपूर्ण है। महात्म्यमरामकृत गन्त बाण सुधासिधु इसी प्रकार की साखिया में लिखी गयी एक वृहद् रचना है। गुजरात व अय हिन्दी सेवी मन्तो न भा बाधप्रन् साखिया का रचना का है।

२ रमनी

कवार बीजक में रमना गन्त का प्रयोग स्तुति वणन^४ उपन्शप्रन् पद्य,^५ तथा लाकापकार^६ व उद्देश्य का नेकर हुआ है इससे यह भी प्रतीत होता है कि कवार से पूर्व भा इस काव्य प्रकार का प्रचलन सबदी तथा साखिया की भाँति था।^७ इस गन्त की युत्पत्ति क सम्बन्ध में भी विद्वाना में मतभेद नहीं। सत विचारणाम न इस रामणा गन्त का रूपांतर कहते हुए इसका विषय जीवात्मा का मस्मरणात्क क्राडाआ का सविस्तार वणन

१ हि नि का दा—डा गोवि द त्रिगुगायत पृ० ३७६।

२ कवीर बीजक पृ० १२४।

३ देखिए—अभयस पृ० १७३-३७६।

४ कवीर-बीजक पृ २।

५ वही पृ १७।

६ वही पृ १२८।

७ नामादासकृत भक्तमाल—अध्याय ६१।

वताया है।^१ जाचाय परगुगम चतुर्वेणी क अनुमार यह रामायण का अपभ्रष्ट रूप है।^२ डा० त्रिगुणायत न इसका सम्यक् लोकगीत स जाडत हुए कहा है कि—मरी ममक म आत्मात्मिक गीता क त्रिए रमनी गत् राम के जाधार पर गत् लिया गया हागा।^३ इसका मूल सभवत गोरखनाथ की प्राण सकना म खोजा जा सकता है। गोरखनाथ की इस वृत्ति म मात्र चौपाइयाँ हैं। कबीर न दाह चौपाई म इसकी रचना की है। गुजरात के सता न इसे रमनी रमणी रेवेणी आदि विभिन्न नामो से अभिहित किया है। अखा की एकलक्ष रमणा सब प्रसिद्ध है। गुजरात के अय रेवेणीकारा म हम देवी उपासक दयानन्द अथा प्रणालिका क सत नालदास तथा प्रीतम जादि क नाम प्रमुख रूप स गिता सकत हैं। दयानन्द रचित रेवेणी की भाषा गुजराती मिश्रित हिन्दी है जिसम प्रत्येक आठ पक्तिया क पश्चात् एक साखी है। नान्दासद्वत जान रेवेणी म पान का रूपक बाँधा गया है। प्रान्तद्वत रेवेणी चौपाई छन्द म याजित है। इन सबका विषय ब्रह्म की मव्यापकता एव उसकी अखण्ड सत्ता की अभिव्यक्ति है। उदाहरणार्थ—

जगत कहो ! जगदीश कहो ! माया कहो कोई काल,
 पूरण ब्रह्म गाइये हो द्रव नहीं कोई काल।
 सत प्रेता द्वापर कलि बाल्ह पारे चाल
 सदा मते विज्ञान के राम रमत एक साल।

—अखा।

३ पद

कबीर आदि सता न आध्यात्मविषयक पदा का सत्ता की सत्ता से अभिहित किया है, किन्तु गुजराती सता ने इस नाम स प्राय पदा का रचना अल्प प्रमाण म ही की है। उन्हे पदा का व्यापक अर्थ म प्रमाण किया है। सता द्वारा रचित भूलगा पदा, विष्णुपदा, होरा पदा सावणी धमार आदि विषय मूर्त्तित अथवा छन्द की दृष्टि स भल हा एक दूमरे म भिन्न प्रतीत हात हा, किन्तु मूलत य पदा ही हैं। सता न छप्पा चावमा, बापा आदि विभिन्न नाम भी इसी दृष्टि म सूचित किय हैं। मन्तों द्वारा रचित स्वतंत्र

१ कबीर साहब का बीजक पृ० २८६ ६०।

२ कबीर साहित्य की परत पृ० १६३ ६४।

३ हि नि का दा पृ० ६७६।

पत्नी में नीति उपपन्न, वराग्य के साथ-साथ योग, भक्ति तथा रम्य की काव्यात्मक अभिव्यक्ति हुई है। गुजरात का हिन्दी साहित्य में अथा वसन्ता धीरा भोजा मनोहर रवि, प्रीतम, मारार छाटम तथा अनवर आदि मन्ता के पत्र अत्यन्त हृदय स्पर्शी एवं मार्मिक बन पड़े हैं।

४ वारहमासी

वारहमासी वारहमासी अथवा वारह मासा ऋतु-वाच्य का ही एक प्रकार है। इसके अन्तर्गत वारह महीना की समस्त ऋतुओं का वर्णन किया जाता है। ऋतुओं का वर्णन प्रायः विरहिणी नायिका द्वारा कराया जाता है अतः विप्रलम्भ शृङ्गार का निष्पत्ति का हाना स्वाभाविक है। ऋतु-वर्णन के साथ-साथ नायिका की विरहावस्था का चित्र भी निरूपित होता है और अतः अधिक मास के अन्तर्गत नायक के साथ सयोग लिखाकर इमका सुखात्मक अन्त किया जाता है। विनयचन्द्रसूरिकृत नमिनाथ चतुष्पातिका (सं० १३०) सम्भवतः सर्वप्रथम जन वारहमासी काव्य है। तत्पश्चात् जनतर कविया ने इस सूत्र पर परिपुष्ट किया है मन्ता ने वारहमासी का वाच्य ज्ञानवाद के रूप में परकी है। गुजरात में प्रीतम के ज्ञानमान के प्रसिद्ध हैं। हिन्दी में दास जगन्नाथ निमलदास और कचनपुरी आदि मन्ता कविया द्वारा रचित ज्ञानमान उपन्यास हात है। ज्ञानमान के आधार पर ही ज्ञान तिथि तथा वार की रचना भी की है। आधुनिक सत तक यह परम्परा स्पष्ट दास पड़ती है। रम अवधूत के ज्ञानमास अग्नेजा महाना के आधार पर भी लिखे गये हैं। आधुनिकता का पुत्र लिए हुए एम ज्ञानमान अत्यन्त भाव प्रवण एवं बोधप्रद बन पड़े हैं।^१

वारहमासा वर्णन की प्रवृत्ति उत्तरी भारत के मन्ता में भी सूत्र दिखाई देता है। आश्विन म जजुनदेव ने चतुर्मास फागुन तक के नाम लेकर उनमें किये जाने वाले कामों के विषय में विविध उपपत्ति लिये हैं। सत सुन्दरदास ने एक विरहिणी नायिका का विरह चतुर्मास में आरम्भ किया है। गुणान एवं भावामाहव के वारहमासा आपात में प्रारम्भ होते हैं। इनमें मिद्धाता का निरूपण है। सत तुलसा के वारहमासा श्रावण मास में आरम्भ होता है। सत शिवदास के वारहमासा सम्भवतः सबसे बड़ा है जिसमें ममारी जात्रा की देना गुरु उपपत्ति तथा काया के भातर वारह कमला का

१ ज्ञानदेव अवधूतो पृ० ८५।

बणन मिलता है।^१ गुजरात क सता क ज्ञानमाम भी प्राय चत स गुरु हाकर फाल्गुन म पूरा हान हैं।

इम दृष्टि स दास के ज्ञानमाम चत स गुरु हात हैं जिमम 'गुरु बानी की महिमा और चित्त की ज्ञानता पर प्रकाश डाला गया है। दास क ज्ञानमाम की एक विगपता यह है कि बीच बीच म ऊचना द्वारा पूव वचन का निष्कर्ष तथा उपदेश भी दिया गया है।

‘चित्त रे चेत अज्ञानी, श्रवणे सुन गुरु की बानी
छन छन काया छीज अपना साधन स्मरण कीज
दिन जावे सो न आवे अवसर धीते फिर पछतावे
भूठा घर परिवारा तामे कहा भूले गवारा।

ऊयलो

गमार तामें कहा भूले घण प्रभु के घर रहे
दास कहे कुछ चैन प्राणो गुरु वचन हिरद प्रहे।

× × ×

फाल्गुन प्रगट ही आया गुरु कय उपदेश सुनाया
बारे मास बढाना तामे अक्षर चार समाना।
भाव भक्ति हेत कीजे मनुष्य जन्म सफल कर लीजे
मन वांछित पावे, जो कार्य गरण राम की जावे।

ऊयलो

जावे जो कोई गरण गुरु की, दास सो उधरे सही
मनसा वाला कमणा करि वेद समति यू कही।—दास।

‘चत्र येहि चित्ता मुझे रहे दिवस और रन

सत्यासत्य विवेक बिन हो कसे मुक्त घन ?

चन उनको है कहीं जो वेद के प्रतिभूल हैं

पाप में तत्पर सदा और पुण्य से निमूल हैं।

जिनको न पति से प्रीत है उनको नरक के मूल हैं

स्वामी से जिनको प्रेम हो सया प उनको फूल हैं।—जगन्नाथ।

५ गरबी गरवा

गरबी की परम्परा अति प्राचीन है जिमका मूल हम गुजरात देशिया में मिनता है। आ रावन क अनुमार पना म ग गरबी राजिन हुद जबकि

१ सतकाव्य आ परशुराम चतुर्वेदी पृ० ३६।

बढ़वा म से गरवा । नरसिंह महता के प आज भा रमा गरवा की भौनि चक्राकार गति म गाय जात है । एम प्रकार की परम्परा हम दयाराम तक दृष्टिगत हाती है । इह गरवा गरवा भिन्न भिन्न नामा म क जभिन्ति किया गया इसका कोई ठास आधार नही मिनता । फिर भा मत्रवा गता म भाणुदाम न गरवा नाम स जत्रिवाग पना की रचना का है ।^१ दयाराम की गरवियाँ गुजरात भर म प्रमिद्ध एव लाकप्रिय हैं । एमन पूव प्रीतम राजे रणछो धीरा आनि मत्त कविया का गरवियाँ उपनय हाती हैं । धीरा की गरवियाँ विभिन्न भाषा ता का परिचय भी कराती हैं ।

गरवी आकार मे सक्षित तथा नित हान क कारण गातितत्वा म पूण हाती है जबकि गरवा आकार म विम्बुन एव वगन प्रधानता क कारण कयागात के अधिक निकट है । एन दोना क वाच दूमरा अन्तर विषय परक भा है । भाणुदास की गरवियो म यागमाया तथा भवानी का स्तुति है । रणछोडजी दीवान जोर बल्लभ के गरवा म त्वा का गति साधा है जबकि दयाराम की गरविया का विषय राधा और ऋष्ण का प्रम मिनन है । गरवा नवरात्रि म देवी की उपासना के निण अब भी गुजरात भर म गाय जान हैं । नभदीप' स गरवा का व्युत्पत्ति एम रूप में सहज ा माना जा मक्ता है ।^२ गुजरात की स्त्रियाँ आज भी सुन्दर वस्त्रा एव आभूषणा म मज्जित हाकर नवरात्रि क दिन म गभ म दीपक रबे हए छिन्मय मिट्टी क घट (गभनीप) को मिर पर धारण कर बड चाव म गरज गाता हैं । श्री नरसिंहगव त्रिवटिया न एक अन्तर और भी बताया है कि गरवा पुरप गात है जबकि गरवी स्त्रियाँ गाता हैं किन्तु गुजरात म सवथ एमा नया है । मीराष्ट्र एव उत्तर गुजरात म पुरप गरवी गात ह और स्त्रियाँ गरवा गाता हैं । दयाराम स्वत तानपुरे का ध्वनि पर गरवा मुनाया करत थ । था अनन्तराय रावन क अनुमार एक स्थान पर बत्कर गाय जान बाने विगिष्ट गात प्रकार क रूप म गरवा का सयाजना हूइ ागा ।^३ स १५ म गरवी की निम्ननितित विषयताए है—

१ मध्यकालीन गुजराती साहित्य पृ ५४ ।

२ नाना छिन् घटोदरस्थित महादीपप्रभास्वरम्
ज्ञान यस्यतु चक्षरादि करणशरा बहि स्पन्दते ।

दक्षिणामूर्ति स्त्रोत (म सा प्र पृ० २४७ से उद्धत)

३ मध्यकालीन गुजराती साहित्य पृ० ५५ ।

- १ प्रगीत वाध्यानुकूल सक्षिप्तता ।
- २ गत्यात्मक मरिचक योजना ।
- ३ एक ही भाव का आलेखन ।
- ४ सगीतात्मकता ।

इस रूप में हम गन्दा को वणनात्मक काव्य तथा गन्दी को गति काव्य में स्थान दे सकते हैं । सत्ता की कतिपय गरवियाँ यहाँ दृश्य हैं—

ब्रह्मदेव की सुन्दर गोमा, कसी कहूँ सजनी रे लोल,
 सुन्दर फूलों आसो मास निरमली रजनी रे लोल ।
 सुन्दर फूले सरद रत गोमा सोहामणी रे लोल,
 फूले लोल कला सपूरण, ससो तणी रे लोल ।
 फूले चपा भोगरा मालती चमेली कली रे लोल
 फूले तरु पल्लव विसाल मठारु भार फूली रे लोल ।
 फूले घोर सभी रे यमुना, सुन्दर सोहामणी रे लोल
 फूले सुन्दर व्रज की भोम, जगमग कचन कली रे लोल ।'

—गवरीवाई ।^१

'हिन्दुस्तानी कहै बनया (जी), पकड ठुस्ता माटु गी ।
 तेरे बाबा से जा कहियो, जसोदा से नहि हाटु गी ।
 नित उठ मेर घर आवे, एक दिन सो घुमाडु गी ।—२

—धीरा ।^२

काया गरबो रे सडगुहजी घडियो
 धीरा लई प्रणसोने साठे जडियो,
 धयोस धीसज रे छीली मांही मारी
 नवे प्रकारे रे गरबो लोघो धारी ।'—रविताहव ।^३

६ कफा

कफा अथवा कक्कर की संयोजना सर्वप्रथम जन साधुओं द्वारा की गयी प्रतीत होती है । तर्हरी गता क प्रमुख काव्य स्वरूपा में इसका उल्लेख किया जाना है । आगे चलकर यही जनतर कवियाँ में सत्ता का अत्यन्त द्विय

१ 'गवरी जीतन माला पृ० १०१ ।

२ 'धीराश्रुत परचूरण कविता पृ० ११-२५ ।

३ र भा मो वा पृ० १६-१० ।

काव्य प्रकार बन गया। गुजरात का गायक वा कोई गमा गन प्रचा हा जिनन कक्षा की संयोजना न की हा। 'मातृका' और कफ नाम म शिक्षा जान वाली सुभाषितावनिया म हम मामा-यन चउप्पर् जीर गहा क दगन हान है। सतो द्वाग रचित कफो म प्राय पान चचा ही प्रमुख विषय है। गुजराती साहित्य म धीरो प्रीनम तथा जीरगणाम आदि क पान कक्षा अत्यन्त बोधप्रद हैं। कुंवर क गिष्य नारणदासद्वृत मिद्वान्त बावना तिरपन अ नरा म विभाजित इसी प्रकार की कृति है 'मम कवहरा क क स म घ न च छ ज झ आदि अक्षरों को उकर मात्र मात्र मुगन पत्तियाँ लिखा गयी हैं। प्रत्येक अक्षर के अंत म तान-तीन दाह हैं। कक्षा नाम स उनकी एक स्वतंत्र रचना कवन चानात्य अहमदाबाद स प्रकाशित भजन सागर भाग-१ म मिलती है। उसी म स नता का रूप दृश्य है—

नाना निरभे गुहपद देखया और सकल परपचहि पेहया।

गुह केवल कदणामय करता पहहु गरण अगणित अघ हरता।

— भजन सागर पृ० १७६।

नृसिंहाचार्य क चानकक्षा भी अत्यन्त बोधप्रद हैं जा दूडलिया छत्र म रचित हैं। यथा—

कक्षका तोकु क्या कहे जगत भलो सब कीन
काम कियो सो अति बुरो कियो सबनकु दोन
कियो सबनक दोन पुनि छिन छिन मे ताव
भलो कोहु न कहै दहे त्यो त्योहि सताव
बमे तुभे नरसिंह हसी मन आवत मोको
भलो जगत सब कीन, कहे क्या कक्षा तोको।

—नृसिंहवाणी विलास पृ० २३०-३१।

७ धोल अथवा भगन गीत

अपभ्रंश युग क जन काय म रास क साथ संयोजित तथा रमक वा स्वतंत्ररूपण निरख गय भगन गीता का धवन नाम स अभिहित किया गया है। मध्यकापाल जनतर कविया म यह काय-स्वरूप अत्यन्त लोकप्रिय हाता हुआ दलपतराम तक दिवाइ दना है। धवन प्राय धार्मिक अवसरों पर गाया जाता है। गुजरात क सप्त-कविया न प्रचलित धार्मिक स्तोत्रों का उकर एम अनक भगन-गाता का रचना की है जिनम अध्यात्म दगन को भजन मिलता है। सन्ता क कविपय धवल गान यहाँ दृश्य हैं—

'हरजु की रक्षावधन आई

बनक बाल मे मोदिक मेवा बहन सुभद्रा लाई । ह०

देत आगिप दपति मेवा निरखत ही रिज नार,

हय गज रथ भडार मान बहु देते ही अपार । ह०

अति आनद उमग मनमोहन छले बहन घर द्वार,

दासन क प्रभु सब दुख भजन जे जे प्राण आधार ।'^१

'बघाई बाजत घर घर आज ।

अपन जन के रक्षा कारन प्रगट भये महाराज ॥१॥

आनद रूप सदा भरपूरण सेतु तिरन को भाऊ ।

अरुल अरुप रूप धरि फिर फिर बाधे धम की पाज ॥

जम नहिं तो जम दिवाधत करत जनन के बाज ।

अनुभवानद भजत ताहां भासत साथ लिए सब साज ॥३॥'

—अनुभवानद ।

८ आरती

गुजराती मत्ता न आरती पाव हावगडा जादि की रचना भी विविध प्रकार में की है । ग्रह की आरती करने के लिए पांच तत्त्वा का स्वन है जिसमें दबता विराजमान है । वह प्रेम प्यारा काया नगर में बसा है जहां ओह साह का अजपा जाप हो रहा है । जिस वन में प्रेम रस भर रहा है । वह बिना मूल की है और पीन वाता भ्रमर भा पयदान के रूप में दबल में उमनी आरती उतार रही है ।^२ घट घट में जा सीं बमना है उमी की आरती इन मत्तो न उतारी है । मत्ता की अतमुखी भाषना का स्पष्ट चित्र हम उनका द्वारा रचित इन आरतियों में प्रतीत होता है ।

उदाहरणार्थ—

१ नवीन काव्य बोहन, पृ० १८३ ।

२ पांच तत्त्व से घड़ियाँ रे देवल देलोजी दित मे देया रे परग अचल कर मुजरा रे साधु सूरत नूरते कर सया रे ।

काया नगर मे प्रेम पियारा देल-डेव दित भाया रे,

ओहम् मोहम् दोनु जाप अजपा गुहामे दरसाया रे ।

बिना मूल की बोल एक बोई, पीमूय । प्रभरस पीवा रे

बिना पाल का भाया भमरसा बटा सधारस पाता रे ।

उमुन आरतो बरे भवानोदास सत् चित सृष्ट मिलाया रे ।

—प प स० पृ० २५८-५९ ।

आरती कीजे अतर माही, मैं तो घट घट देखा सांही । टेक०
 पांच तत्त्व की बनी है आरती, कपट बूढ़ है सब मांही,
 गव की घी घ्रम की अग्नि चैता दो तुत ही देखो सांही ।
 अपने ब्रह्मा विष्णु गिय आरती उतारे भ्रलमल ज्योत सवाई
 समझे वाकी तो सब होवे ना समझे वाकी नवाई ।
 पाच पचीस सखी नाचन लागी शूय शिखर के मांही
 आप मां आप सोह समाए पुहजीए सान बताई ।
 वासना वासा वापु भगत घोरा जाग जगत हरि नाहीं
 जो शोधो तो मोलत नहीं, पण खेले सतो मांही ।

—बापुसाहेब ।^१

पहली आरती मन मुघ कीजे पाते कारज सकल ही सीभे
 ऐसी आरती कर मन भाई अनहद नाद मे सुरत लगाई ।
 दूसरी आरती सरसग कीजे ग्यान गोष्ट कर प्र मरस पीजे
 ऐसी आरती कर मन भाई अनहद नाद म सुरत लगाई ॥
 तीसरी आरती ध्यान माहे लागी, अगम अगोचर आतम जागा
 ऐसी आरती कर मन भाई, अनहद नाद मे सुरत लगाई ॥

—गवरीबाई ।

६ लावणी

मराठी सत साहित्य में लावणी को एक प्रमुख काव्य प्रकार माना गया है ।^२ लावणी में त्रयण अथवा लावण्य की ध्वनि स्पष्ट निकलती है अतः शृङ्गार अथवा माधुर्य इसका मुख्य भाव है । लावणी का उद्भव महाराष्ट्र में बताया जाता है तथा इसलिए इसे ह्याल अथवा मराठी गायन का पर्याय भी माना जाता है ।^३

प्रत्येक लावणी में कम से कम चार चरण हात हैं तथा दो पक्तियों का एक होता है । एक की पक्तियाँ में जितनी मात्राएँ हाती हैं प्रायः उतनी ही मात्राएँ चार चरणों में हाती हैं । कभी-कभी ऐसा भी हाता है कि पाँचवें चरण की तुलना एक दूसरी पक्ति के साथ बिना दी जाती है । एक

१ प्राचीन काव्यमाला भाग ७ बापुसाहेब कृत कविता पृ० ६१ ।

२ हि म स दे पृ० २३१ ।

३ वही पृ० २३१ ।

तथा मिलन क बीच कभी कभी दो जय छान भी आ जाते हैं। लोक गीत की श्रणी म आन के कारण हिन्दू मुसलमान दोनों ही इस काव्यस्वरूप के रक्षयिता पाये जाते हैं। इसकी भाषा सरल एवं अरबी फारसी के शब्दों से युक्त होती है।

गुजरात के सन्तो ने इस लावणी श्याल लावणी अथवा श्याल के नाम से अभिहित किया है। गुजरात के सन्तो की लावनियाँ नीति वराम्य भक्ति तथा याग साधना आदि विविध विषयों को लेकर रची गई हैं। अमरदास की लावणी म मन की व्याख्या है जबकि गणपतराम वृत्त लावनियों म याग साधना की चर्चा की गयी है। गुजरात के अन्य लावणीकारों में निरात छोटम तथा नृसिंहाचार्य आदि सन्तों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन्तों की कुछ लावनियाँ यहाँ दृश्य हैं—

‘पानी का बह्याड बनाया भाड पान पृथ्वी पानी
 चदा सूरज नवलल तारा चौद लोक चारु पाना
 पानी बह्या पानी विष्णु पानी सदा गीब की बाया
 देव दनुज मरनार पग पशु जग सौ पानी से अपजाया,
 सातु साहेर है पानी का पानी बारा मेघ भरया
 रग छत्रोस मया पानी का कोई से भेद न जात सह्या
 जो जो कहिए सो सब पानी पानी की सृष्टि सारी
 अजब कत्ता कोई है करता की देखो अपने दिल धारी।

—श्री छोटमहत्त परचरण कविता पृ० ३५४।

‘पानी गुरु पानी का खेला, पानी बघा बाया है
 पानी साहेब पानी सेवक पानी सागर नाया है
 पानी कपडा पानी सडका, पानी बाग बगोचा है
 पानी घोहला पानी भेला पानी ऊँचा-नीचा है
 अशु आदे बह्याड चराधर सब पानी की ये भाया,
 जे करतारे पानी कीना इनसे कोई नहीं बाह्या
 जन छोम जुगदीग मजगो सो जनकी है बलोहारी
 अजब कत्ता कोई है करता की देखो अपने दिल धारी।

—श्री छोटमहत्त परचरण कविता पृ० ३५५।

अब चलो गुरुघर धार, विषय सब त्यागी,
 चल गयी जुवानो क्या प्यार रखी दुर्मागी १
 सारी उमर गुजारा घर घर भिक्षा मागी
 अजहू न तजत अनान न हात बिरागी २
 क्या मोहर्नाद में सोय उठी जब जागी
 यह दुषद विषय को आग दीजिए दागी ३
 नरसिंह प्रभुपद ग्रहे सुजन सोहागी
 जहाँ अलड सुकी लहर सदा रहे लागी ४

—श्रीमन्मृत्सिहाचार्य मृत्सिहवाणी विलास, पृ० १५२ ५३ ।

१० होरी

धमल गीता की भाँति गुजरात के सतत न हारी फाग अथवा बमन
 व नाम से एसी अनक रचनाएँ लिखी हैं जिनमें सतत की आध्यात्मिक विरह
 मिलन की अनुभूति व दगन हात हैं। इत पत्ता में सन्तो की उच्चकाटि का
 प्रेम ध्यजना एव रहस्यानुभूति तो है ही साहित्यिक सौन्दर्य की दृष्टि से भी
 इनका विशिष्ट महत्त्व है। मारी व अनक पदा में इस प्रकार की साहित्यिक
 अभिव्यक्ति हुई है।^१ कबीर के पत्ता में भी कहा-कहा इस प्रकार की योजना
 हुई है किन्तु उनमें दार्शनिकता वाञ्छित है।^२ फागुन का आन हुए देखकर
 अखा का आत्मा पिचकारा भर अपन प्रिय से होना खलता चाहती है।^३
 कुछ पत्ता में फागुन के मदा सबदा पूरे रहन का भी वर्णन मिलता है। एम
 पदों में ब्रह्मानन्द की तीव्र खुमारी है—

१ फागुन के दिन चार होरी खेल मना रे। —मीराबाई ।

२ रितु फागुन नियरानी कोइ पिया से मित्तवे
 पिया को रूप कहाँ लग बगू, रुपहि माँहि समानी ।
 जो रग रगे सकल छवि छाके, तन मन सभी भुलानी
 यों मत जाने यहि रे फाग है यह कुछ अकह-कहानी
 कहें कबीर सुनो भाई साधो यह गत बिरले जानी ।

—कबीर वाणी पृ० २८७, पद ६८ ।

३ आती ! अबको फाग ! मेरी मन सह्रात !

नहि तो जोबन मेरो पूहि जात ॥

सकल ऋतु में धाय बसत ।

सबको सार में पाया एकांत ॥ —अप्रसिद्ध अज्ञपवाणी पृ० १६८ ।

‘दृष्टादृष्ट मध्ये ही मनोहर खेलत हरि फाग ।
हो हो होरि कहो चिद गश्ति उडत गवद पराग ॥
सदा भला फुल्या रहे अनुभेचित चिद्रूप वितान ॥ १

सतों के फाग वणुन म कही वृष्ण क भाष प्रज का हाती का निम्पण है ।^२ तो कही वसंत म उमत्त आमाम्पा नायिका जगल क वाच डरा चाहती है ।^३ विरहिणी आत्मा मनगुरु क मान का जाप जप रहा है जिसस अनानारूपी तिमिर मित्रता जा रहा है । मवत्र रूप का प्रकाश हो उग है और तन का जहर मित्र गया है । रोमा घना म स्वामी के मित्रन स मुरत मुहागन हो गया है ।^४ वणुन सस्वारा का पिचकारा स म्पूत्र सतों की यह रगरती दवत ही बनता है ।^५

११ छप्पा

यह भी छत्र न हाकर गुजरात क सतों द्वारा प्रयुक्त एक विविध काव्य प्रकार है । ‘अनुभव चिद्रु म अवा न जिम छत्र का उत्रय किया है वह निरचय ही छप्पा अथवा छप्पय है किन्तु अवा क लोकप्रिय छप्पा कुछ और ही है जिह अवा न कही भा छप्पा नाम स अभिहित नहा किया है । अत यह कहना भुञ्जित है कि यह नामकरण अवा द्वारा किया गया है अथवा इमक बाद छप्पा गत्र का प्रयोग स्वत चल पडा । इमका रचना प्राय चौपाई क छ चरणा म की गयी है । गायत्र यही चौपाद पटपनी आग चलकर छप्पे छपना छपा अथवा छप्पा आति विभिन्न नामा स अभिहित हान लगी हा । लेकिन अवा न सा इम प्रकार की पटपना का व घन नी मवत्र स्वीकार नहीं किया है । अध्ययन म जात हाता है कि य छप्पा

१ अक्षयसरस पृ० ११ ।

२ प्रोकम साहय प्रा का वि भाग १ पृ० १६६ ।

३ वही पद ४ पृ० २०० ।

वसंत रत आवी रे मन मेरा आवी रे

मन मेरा आवो करले जगल बीघ डरा ।

४ वही पृ० २०० ।

५ रामचस खेलत निरध फाग सरन मागर को नाही ताग ।

बहेत अवा भयो रगरोल सदा नीरतर है जकोल ॥

—गु व सो हे प्र १२१८ ।

निश्चय ही सामाजिक जीवन तथा अखा व विचार जगत के स्पष्ट चित्र हैं। उनकी अभिव्यक्ति भाजा के चाववा की तरह अत्यन्त तीव्र है। इम परम्परा का अनुसरण गुजरात क कुछ उत्तरवालीन सतो म भी मिलता है। निरात द्वारा रचित ऐस छप्पा^१ अभिव्यक्ति म कटु होन ही दुःख नही।

१२ जकडी

जकडी प्राय जिक्र का ही अपभ्रंश रूप है जिसका अर्थ ध्यान अथवा स्मरण आदि क रूप म किया जाता है। उठत-बठत मान-जागते खाने-पीने गोक रूप बीमारी तदुस्तती दावत पयटन सर आदि जीवन क तमाम छोटे माट क्रिया कलापा म ईश्वर का स्मरण हा जिक्र है जिसका प्रमुख हेतु ब्रह्म के साथ आत्मा के शुद्ध सम्बन्ध की याद प्रतिक्षण ताजा करना है। जिक्र के भी दो भेद किये जात है—(१) जिक्र जली (प्रत्यक्ष स्मरण) (२) जिक्र खफी (अप्रत्यक्ष स्मरण)। एसी मान्यता है कि जला संघ की साधना है जबकि खफी हृदय की एकान्त भावना है। जली स्तवन है जबकि खफी योग है।^२ गुजराती भाषा का जकडवु गण बाधन के अर्थ म प्रयुक्त होता है। इस प्रकार जकडी म इसकी सगति बिठाई जा सकती है। अर्थात् जिसम सतो न अपन मस्तिष्क म घूमत हुए विचारो को पकड कर बाधन का जो प्रयत्न किया है वही जकडी है। जकडी को इम रूप म हम विचार बाधन भी कह सकते हैं।

सूफी कवियो म जिक्र का विशेष महत्त्व है। गुजरात क ज्ञानी कवियो म अखा और माडग की हिन्दी जकडियाँ उपन्यक्त होती हैं। इनके कुछ उदाहरण यहाँ दृश्य हैं—

मेरा डोलन दलकर आया रे।

हैं दूधे घोडू गी पाया रे। मेरा डोलन दलकर आया रे।

हैं भाप सरीखी बीती रे। बोऊ जग मे हु जीती रे।

हैं एकमेक कर सीती रे। मेरा डोलन दलकर आया रे।

×

×

×

१ देखिए—हस्त प्रति ८७-६-५ डा० ल पु नदियाद।

२ देखिए—गुजराती साहित्य पर अरबी फारसी की अंतर

घूघरी मोतिन की छाड़ रे । जब साँइ मित्या भुज धाड़ रे ।
तव उमया अछा जग माही रे । मेरा ढोलन ढलकर आया रे ।

—अछा ।

‘ऊँचे महेल कहल से कचन फूलु सेज विद्याना है
ताजा माल नवाला हाजर, मन माने तव खाना है ।
हस्ती घोडा माल खजाना, मुलक मुलक पर घाना है
कहे माडण सुन दोस्त हमारे, धिर ना रहेना जाना है ।

× × ×

प्रम खेत का बना यगीचा नाम घणी का ना घोया,
कहे मांडण सुन दोस्त हमारे, क्या जागा फिर क्या सोया ।’

—मांडण ।

१३ गजल

यह मृगन शरती गजल है जिसका अर्थ प्रेमयुक्त भाषा होता है ।
पी व वृष्णनाथ भवेरी ने गजल के विषय में कहा है कि ‘प्यार’,
मौल्य मन का यथा उमत्तता का वर्णन करने वाले गजल
वियोगजनित दुःख का वर्णन प्रेम का स्तन, मागूक के साथ
तान्त्रम्य हा जान की चिन्ता गाल के ऊपर का तिन रागटा की प्रणाम
मागूक से मिनन का तीव्र आकांक्षा तथा स्मन साथ ही मुल घन का अभाव
वेचनी जातरण अत करण को दग्ध कर देन घाना बिन्वास तु सातनाद
स्तन अगति एव शरण के वृत्त हा जान का वर्णन इनके अलावा उमम
अर्थ बुद्ध नग हाता चाहिए । इस तरह आंगिक जीर मागूक के वियाग
की यातना मागूक की आंगिक की भार से नापरयाहा आंगिक की मिनन
याचना तथा विनक्ति आदि का निरूपण हाता चाहिए ।^१ एगके अलावा
मद्यमयी आनद यन्त मौल्य गुनाय तथा अर्थ पूना न भर हुए वाग म
गात गानी ह्म कायन अथवा युनयुन आदि की गोभा का वर्णन भी गजन का
वर्णन विषय माना जाता है । आडम्बरपूण मन्ता तथा फकीरों की कागम्नाना
स्मभ और पागण्डा का भडापाड वर्णन के लिए भी गजन का सहारा लिया
जाता है ।

गजन वर्णन पारसी साहित्य की स्तन है । उन्नी कविषा के प्रभाव
से गुजरात के जन कविषा तब न गजला का रचना की है ।

१ गुजराती गजलो (प्रस्तावना) पृ० ६ ७ ।

श्री रामनारायण पाठक के मतानुसार गुजराती में गजल के प्रति सब प्रथम आकृष्ट होने वाले मस्त कवि बालागकर थे ।^१

गुजरात के सूफी सत्ता की वाणी में 'गजल' एक विनिष्ट काव्यरूप है । प्रसिद्ध सूफी गजलकारों में अनवर सागर तथा सत्तारशाह चिंता जाति के नाम प्रमुख हैं । सूफी सत्ता के अलावा छोटम तथा नृमिहाजाय द्वारा रचित गजलों भी मिलती हैं । इन गजलों में सत्ता न प्रेम का तन्मयता मान की खुमारी के साथ साथ राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम की अभिव्यक्ति भी की है ।
उदाहरणार्थ—

इश्क के सदमों से हम रो रो के चिल्लाते रहे
ले गया दिलवर तो दिल हम हाथ फलाते रहे ।

आह सब अफसोस अब, हमको नहीं शरामो चन
दद हिजरत में दिवाना बनके घटकाते रहे ।

दे दिया हमने तो दिल तुमको न चाहा तुमन यार
उध्र भर लोगों की अब हम ठोकरें खाते रहे । —अनवर ।^२

हिच्च ने तेर सतम अब हमे लाचार किये
तपने दिल ने अजब तरह के बीमार किये ।

अब मसीहा से हमारा नहीं होने का इलाज
इश्क के मज नें बस हमको गिरपतार किये ।

—अनवर ।^३

परदेशियों की देग प नियत बदल गई
आबाद देग देख के तबिपत मचल गई ।

कपनी जो आई सारी कमाई निगल गई
लक्ष्मी हमारे देश से यकर निकल गई ।

एक वस्तु हमारा भी था जाहोजलाल का
खुगहाल सेठ था और खुगहाल दास था ।

भारत की खेतों द्वय की अग्नि से जल गई
लक्ष्मी हमारे देग से पुकर निकल गई । —सत्तारशाह चिन्ती ।^४

फारसी और उर्दू के कारण गुजरात के अनवर सत्ता न गजल के साथ साथ मरसिया कमीना रेहना आदि विविध काव्य स्वरूपों में अपनी रचनाएँ लिखी हैं ।

१ देखिए— बृहत पिंगल ।

२ अनवर काव्य पृ० २६६ गजल ४६ ।

३ वही पृ० २४८, गजल २८ ।

४ सत्तार भजनामृत पृ० २०५ गजल २५ ।

सप्तम परिच्छेद
उ प स हा र



सप्तम् परिच्छेद

उपसंहार

गुजरात क मता की हिन्दी वाणा का अध्ययन कर चुकने क पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि गुजरात के अचन म पापित यह भावधारा भारत व्यापी सत परम्परा की हा एक अभिन क्ता है जिमन उत्तर तथा दक्षिण के दो सामा क्षत्रा को स्पग करने हुए एकरत का साधना म नान का दीप जलाया । उत्तर तथा दक्षिण भारत क सतमत का व मभा विगपताए जो हम क्वार जोर नामदेव जादि म मितता हैं गुजरात का नानमार्गी धारा के अतगत अखा धीरा भाजा और भीनम प्रभृति सता म महज हा विद्यमान हैं । गुजराती सता न प्रत्य न अनुभव स मत्वावपण सदगुर महत्व प्रतिपादन नामस्मरण तथा बाह्याडम्बर की यथता का उपत्ता उम समय पुन दिया जबकि उत्तर तथा दक्षिण की भक्ति भावना समय क प्रभाव स नान नान धूमित हानी जा रहा था । सत्रहवी गती का उत्तराग भारत जबकि निगुण का छोट सगुण का ओर अभिमुख हा रहा था जोर जिमक परिवग म रीतिकानीन रङ्गीनी स्पष्ट त्तिवाई द रही था उस समय नान वराग्य एव भक्ति स समवित गुजरात की यह मययुगीन त्रिधारा आ्यात्मवा का जमर सदा द रही था ।

उत्तर भारत क कवि खण्ण मण्डन म नग रह जबकि गुजरात क ऊध्वगामी कवि आध्यात्मिक उडान क लिए निरन्तर प्रयत्नगान रह । उत्तर की सत साधना प्राय सामाजिक और वयत्तिक ममन्याजा म उनभा रहा जबकि गुजराती सता की साधना सामाजिक चनता क वाच जा यात्मिकता का सचार करने म निरत रहा । यही कारण है कि गुजराती सात्त्विक व न्निहास म भक्ति एव जाधुनिककाल क वाच राति कान जमा का स्पष्ट प्रवृत्ति त्तिवाई नहा दता ।

नान का बहु ापक जिस क्वार न जनाया था जोर जायसा नानक रदास तथा मारी क स्नह स जा एव वार उत्तरापय म पूणतया जानाकिन न उग था वहा जिम ममय रातिकान म नान नान धाए हान नगा उत समय पुन गुजरात क नाना सता न उम जपन स्नह स साचकर प्रवृत्ति

किया था। इनका भी नहीं भावनाक के इन अनवरत मत्ता न साधना के उच्च निम्न पर पहुँच कर जहाँ एक जोर गुजरात का आध्यात्मिक एवं साम्प्रतिक चेतना का जीवित रखा है वहाँ दूसरा जोर इन्होंने अपना हृदय स्पर्शा प्राणा द्वारा साहित्य तथा मंगल के प्रति भा अगाध प्रेम का परिचय भी दिया है।

सतवाणी का मूल्यांकन करके हुए प्रसंगिक सत साहित्य के सम्बन्ध में प्रचलित भ्रात धारणा का उत्तर एवं निराकरण भा आवश्यक प्रतीत होगा है। अभी कुछ समय पहले तक विज्ञान का एक बग ऐसा था जो सत साहित्य का साहित्य के अंतर्गत स्थान के लिए तयार नहीं था। मिथव धु धावू श्याम सुन्दरदास आचार्य रामचन्द्र गुबन पीताम्बर दत्त बन्धुवा जम महानुभावा के अध्मयन एवं अनुगानन के परिणाम स्वरूप इस भ्रात धारणा का एक सीमा तक निराकार हुआ कि तु आज भा विज्ञान का एक बग ऐसा है जो सत-कवियों की रचनाओं का काय के अंतर्गत स्थान न दर्श गारु अथवा नीति ग्रन्था के अंतर्गत हा उठ रखने का पक्षपाती है। उगहरणार्थ— आचार्य मीताराम चतुर्वेदी का यह बयन इस सन्दर्भ में उद्धृत किया जा सकता है—समूचा सतवाणी न तो साहित्य है न तो काय है। वह पूणत गकाकी ठठ पारिभाषिक गणा से लगे हुई अस्पष्ट उक्तियाँ का समूह है। सत कवियाँ की समस्त रचनाएँ गारु अथवा नीति ग्रन्था के अंतर्गत ता जा सकती हैं काय के अंतर्गत नहीं। सत की वाग्ना में प्रसंगिक उपमा रूपक, दृष्टान्त आ जान स जयवा सूक्ति का चमत्कार आ जान मात्र स हा वह साहित्य की कोटि में नहीं आ सकता। उसी कायत्व या साहित्य का स्थापना के लिए मूत आनम्बन का हाता आवश्यक है। यह आनम्बन तत्त्व सम्पूर्ण सत साहित्य में स्वभावतः अनुपस्थित है और इसलिए उसमें कही भा न तो कायान्त हा प्राप्त हाता है और न रम का तमयता हा जा सकता है।^१

आचार्य चतुर्वेदीजी के म बयन के अंतर्गत सतवाणी पर मामांयन के धारण किय गये हैं—(१) दार्शनिकता। (२) पूव आनम्बन का अभाव। चतुर्वेदीजी के म आशय विलुन निराधार हा एमा बात न्हा। किन्तु मरु माय ही-म यह न्ही भूना चाहिए कि भारतीय साहित्य का म एष

१ सत— हिंदी साहित्य का इतिहास सप्तक—भा सातार में चतुर्वेदी रजत जयती ग्रन्थ राष्ट्रमाया समिति वर्षा १० ०५२।

मूलभूत विवेकता है कि उसे दान से पूरातया विच्छिन्न नहा किया जा सकता। यह बात अवश्य है कि साहित्य में दानिकता एक समुचित एवं सतुलित अनुपात में रहे। जहाँ यह काव्य के ऊपर हावा हो जाती है वहाँ निश्चय ही कविता न रहे वर दानिक तथ्या की छन्दोबद्ध अभिव्यक्ति मात्र प्रतीत होती है। सत काव्य का कुछ अंग दानिकता से बोधिन अवश्य है किन्तु समूची सतवाणी के सम्बन्ध में इस प्रकार का आशेष करना उचित प्रतीत नहीं होता। कबीर रदास दादू सुन्दरदाम आदि सता की वाणी का कुछ अंग निश्चय ही उत्कृष्ट काव्य की कोटि में रसा जान योग्य है। इस न केवल सत साहित्य के प्रगसकाने अपितु सहृदय कवि एवं विवचको न भी स्वीकार किया है। सता का यह रागात्मक साहित्य जो सिद्धांतपरक नीति विषयक अथवा उपदेशपूर्ण नहीं है निश्चय ही साहित्य के अतगत स्थान पाने योग्य है।

निगुण सतवाणी पर दूसरा आक्षेप यह किया जाता है कि उसमें मूलत आलम्बन का अभाव है। महात्मा सरदास न भी निरालम्ब मन चक्रिन् धाव तातें सूर सगुण पद गाव की ओर सकेत किया है। किन्तु सता की वाणी निरी आलम्बन विहीन है यह भी कस कहा जा सकता है? प्रेम मार्गी सता न लौकिक आर्यानों को लेकर अपनी अभिव्यक्ति के लिए उचित आलम्बन को जुग निया था और क्या के अतगत प्रतीको एवं रूपको के माध्यम से उहान निगुण साधना का पय प्रगस्त किया था। इन सता का आचार्य चतुर्वेदीजा भी साहित्य की काटि से बहिष्कृत नहीं कर पाये हैं।^१ कबीर आदि पानमार्गी सतो तथा सगुण भक्ता की भाव योजना में अन्तर कबल इतना है कि एक अनुभूति साकार एवं ससीम है जबकि दूसरी निराकार एवं असाम। ब्रह्म (अमृत) को आलम्बन मानकर व्यक्त का गयी ऐसी अनुभूतिया भक्ति अद्भुत एवं गान्त रसा की अवतारणा में काव्यात्मक सिद्ध हुई हैं।^२ उनमें शृङ्गार है और वह भी समग्र रागात्मक वृत्तिया को

१ देखिए— रजत जयती प्रथ पृ० ३२७

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्षा।

२ अक्षत कला खेलत नर ज्ञानी,

जसेहि भाष हिरे किये दसों दिन ध्रुव तारे पर रहत निगानी ॥

—अष्टा।

साधो, यह तन ठाठ तबुरे का ऐंघत तार मरोरत लुंटी,

निकसत राग हजुरे का। —कबीर।

भक्तभार देन वाला किन्तु वामना स पूणत निर्लिप्त ।^१ क्वार दाडू असा आदि सन्ता की वाणी विद्यापति तथा जयन्व आदि स इमी जगह अलग हट जाता है । वस्तुतः माहित्य का यदि हम नाकमगतकारी अनुभूति कल्पना अभिव्यजना और चिंतन का मन्दिर कह तो इन मन्ता की वाणी निश्चय ही साहित्य क मन्दिर म अचना का मामग्री है ।

इस विवेचन का यह अभिप्राय क्वापि नहा समझा जाना चाहिए कि छोटे-बड़ सन्ता की समस्त उपन्यस वाणी सत्माहित्य की रक्षा म स्थान पान योग्य है । हमारा निवृत्तन कवल इतना ही है कि सत्त माहित्य की परीक्षा एक मात्र उपादयता अथवा नाकहित की भावना क आधार पर हा न की जाकर एस निरूप पर की जानी चाहिए जिम पर उसक दापा क साथ साथ उसक गुणा का भी मूल्याकन हा सक । इस दृष्टि स हिन्दी म क्वार दाडू मुन्टरास तथा गुजरात म अथा प्रातम वस्ता मनाहर छोटम, रवि साहब आदि सन्ता की वाणा क कुछ घन अवश्य उत्कृष्ट साहित्य का काटि म स्थान पान योग्य निद्व हाग ।

प्रस्तुत गवेषणा के द्वारा गुजरात क एम अनक हिन्दी-मवा मन्ता तथा उनकी वानिया का प्रकाग म जान का प्रयत्न किया गया है जिनका गणना कबीर नामदेव, मुन्टरास जस उच्चकोटि क मन्ता तथा उनकी वाना के साथ की जा सकती है । हारासत समयसत माडण अगा, प्राणनाथ घौरा, भाजा प्रीतम भाणसाहब, रविमाहब स्वाम साहब मारार निरात मनाहरस्वामी गवरीवाई वस्ता विन्वम्भर दवा साहब, कुबर छान्म तथा अनवर आदि मन्ता क नाम इस दृष्टि म विनाप उल्लेखनाय हैं । इन सभी सन्ता म अथा का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रखर है जिमकी वाणी न अज्ञान की तिमिराच्छन्त घाटिया म ज्ञान का प्रकाग फनाया और कमकाडा क चक्कर

१ बुलहिन, गावहु मगलाचार ।

मेरे घर आये हो राजा राम भरतार ॥ —कबीर ।

अजहु न निरसे प्राण कठोर

घारि पहर चार हु जुग बीते, रन गवाई भोर ।

बाडू ऐसे आनुर विरहनि बितषत छद चहोर । —दाडू ।

साइ दिन दरद कर होय ।

दिन नहिं घन रात नहिं निदिया, कासे कहुं दु ए होय ॥ —कबीर ।

म भ्रमित सम्पूर्ण मानवजाति को अनुभव क आधार पर आत्मा का खोजन का सन्देश दिया अथा वस्तुतः गुजरात का कदार है। यज्ञ का भूमिका पर अस्ता ने कवीर की भाँति अपन विचार जगन का जिम भाव प्रवणता क साथ 'नोकग्राह्य एव साङ्गाम्य' बनाया वह गुजरात क मध्ययुगान प्राय सभा कविया का प्रभावित कर गता है। १७ वा गीती का पूरा युगवृद्ध अथा का इस ज्वनत भावधारा स परिपुष्ट है।

उत्तर क मध्यकालान मता का धार्मिक चेतना प्राय हिन्दू मुस्लिम दो भिन्न जातिया के सघर्षों म उद्भूत हुई और 'एकवरवा' की प्रतिष्ठा म गामिन भी हो गई किन्तु गुजरात म तो इन दो जातिया क साथ-साथ इमा' पारसी और यहूती जातियों का भी सुगम सयोग हुआ जिनक सम्मिलन स न मात्र हिन्दू मुस्लिम एकता की बात ही क्ता गयी अपितु 'मम भी ऊँचे उठ कर सवधम-समवय का उद्घाष सवप्रथम स्वामी प्राणनाथ न किया। वस्तुतः स्वामी प्राणनाथ न जिस पथ का प्रगस्त किया आधुनिक युग म उसी पर चलकर स्वामी विवकानन्द और गांधी जसा विभूतिया न सवधम-समवय एव वसुधव कुटुम्बकम् का सन्देश समस्त विश्व का दिया था।

गुजरात के सूफी सत्ता का देन भी अपूर्व है। इहान सुमुफ जुनखा और खूब तरङ्ग जसा मसनविया की रचना कर निश्चय ही हिन्दी क श्रेष्ठ मसनवा साहित्य म अभिवृद्धि का है। गूजरी की परम्परा को जावित रखन म इन सत्ता का साधना अपना निजा महत्त्व रखता है। वस्तुतः दक्षिण की दक्खिना और गुजरात की गूजरा म भाव तथा भाषा का अपूर्व साम्य भा 'म वात का सूचक है कि खड़ी बोली हिन्दी क आदानन का य क्षत्राय क्त्तिया जा अब तक जनात रही भारत व्याप आदानन की हा विगिष्ट एव अभिन्न क्त्तियाँ हैं। इह जाहक देयन स यह स्पष्ट हा जायगा कि भारत का साम्प्रतिक एव धार्मिक एकता का कायम रखन म इन भाषा शृङ्खलाओं का यागदान कितना महत्त्वपूर्ण रहा है।

सांगान गुजरात क हिन्दी सची सत्ता की देन इस प्रकार है—

१ भाषाकाय । २ साहित्यिक । ३ सांस्कृतिक ।

१ भाषाकाय उपलब्धि

प्रस्तुत अभिनिबन्ध म गुजरात स सम्पन्नित एम प्राय दासी सत्ता का हिन्दी वागा का अनुगादन किया गया है जिहान अपना प्राणिक भाषा क साध-साय क्त्तियाँ क प्रति महज ममता प्रगित का है। प्रतिभा सम्पन्न

मता ने हिंदी में उच्चकोटि के ग्रन्थों की रचना की है। १५ वीं शती से लेकर आज तक उनकी यह साधना निरंतर गूट होती गई है। हिंदी के प्रति इन सतों की साधना प्रायः दो प्रकार की है—

१ प्रचारात्मक । २ सृजनात्मक ।

१ प्रचारात्मक साधना

लाक बल्याण की व्यापक भावना से अभिभूत गुजरात के सन्ताने हिंदा को अपनी वाणी का माध्यम बनाया। भाषा के विधी व्याकरणिक स्वरूप की आवश्यकता इन्हें कभी अनुभूत नहीं हुई। अपनी वाणी के अंतर्गत इन्होंने हिंदी का वह स्वरूप अपनाया जो 'यवहार जगत की भाषा में प्रचलित था। हिंदी भाषा के प्रयोग में प्रादेशिकता का पुट इनकी निजी विशेषता है। भाषा की मूल प्रकृति व्रजभाषा अथवा खड़ी बोली के अधिक निकट प्रतीत होता है किंतु उसमें गुजराती राजस्थानी मराठी, पंजाबी, सिंधी और बच्छी प्रयाग भी मिलते हैं। जिस प्रकार कबीर की भाषा में कवन गूट हा नहीं अतः भाषाओं के कारण चिह्न और क्रियापद मिलते हैं उसी प्रकार गुजरात के सन्तों की भाषा भी वह पंचमन खिचड़ी है, जिसमें व्रजभाषा के आधार पर विविध प्रयोग किये गये हैं। इस प्रकार के विविध कारण एक क्रिया रूपा से समन्वित व्रजभाषा के अनुरूप हिंदी के विविध प्रयोग हिंदी को उनकी अपूर्व दत्त हैं। गुजराती हिंदी राजस्थानी हिंदी, सिंधी हिंदी और बच्छी हिंदी विविध भाषाकीय उपनद्धियाँ हैं। इनमें वरुणों के आगम, लाप और विषय पाये जाते हैं। भाषाविज्ञान की दृष्टि में जिनका अध्ययन महत्वपूर्ण है। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए सन्तों की इस विविधरूपा भाषा के अंतर्गत एकरूपता खोजा जा सकती है। हिंदी के इस व्यापक आन्दोलन में गुजरात के सन्ताने जो अलग जगाया वह मूल हान हुए भी महत्वपूर्ण है। हिंदी के प्रसार प्रमाण एवं विकास में इनकी मूल-साधना अपूर्व है।

२ सृजनात्मक साधना

गुजरात के सन्त कवियों की शताधिक हिंदी कृतियाँ में स बुद्ध ता अवश्य ही सन्त साहित्य की अक्षय निधि गिनी जायें। भाषा की दृष्टि में उच्चकोटि की रचनाओं में असाधारण मनमिया और ब्रह्मगीता रविगाहवहन 'बोध चिन्तामणि और 'राम गुजार चिन्तामणि श्रीनमहन ब्रह्मगीता तथा सांगी-ग्रन्थ, अनुभवानन्द रचित विरगुण वसाहत माया-ग्रन्थ,

रङ्गीनासकृत रङ्गाल सतसद दवामाह्वृत कृष्णमागर राममागर तथा हरिमागर कृष्णनाम रचिन रघुवामणि यदुनन तथा नानमाना नृसिहाचायकृत नृसिहवाणा विलास समयरामकृत ध्रुवचरित आदि प्रमुख कृतिया हैं ।

अर्वाचीन युग के गुजराती सत्ता न गद्य साहित्य भी निम्ना है जिसका अधिकांश हिन्दी में उपलब्ध होता है । इस प्रकार के गद्य रचनाकारों में केवतपुरी नभू सरसूदाम दवीनास (रामानन्दा माधू) उपेन्द्राचाय दयानन्द सरस्वती महात्मा गांधी और घामी सम्प्रदाय के अनेक सत्ता न हिन्दी में गद्य रचनाएँ कर हिन्दी भाषा एवं गद्य साहित्य का अनेक सेवा की है । इस प्रकार की रचनाएँ सम्प्रदाय के प्रचार प्रसार एवं सिद्धांत निरूपण के हेतु रची गयीं प्रतात हानी हैं । इस रूप में इनका साहित्यिक मूल्य भन हा कम हा कि तु हिन्दी गद्य के उद्भव एवं विकास में इस प्रकार की रचनाओं का ऐतिहासिक महत्व है ।

२ साहित्यिक उपलब्धि

लोकमगल विधायक सत्तो का साहित्य वस्तुतः एसा सत्साहित्य है जिसमें मानव के युग युग के मस्कारा का सचित्र निधि है । साधना एवं विश्वास के बल पर जिसमें जीवन के अमर मत्य लक्षणा का सचय है और जिसमें युग के जजर प्राचीरा का ढहा कर मुक्त वातावरण में विहरन का नवाम्भय है ।

दक्षिण एवं उत्तरभारत के सत्ता की भांति गुजरात के सत्तो का वाणा में भी आत्म प्रतीति की उत्कट अभिनाया एवं ब्रह्मज्ञान की अन्वय भूय है । ज्ञान की घटाओं में इनका मनमयूर उमत्त हा उठता है । नानी का रूप ही इनका रूप है । इस रूप में उनकी वाणी न ता किमी पण्डित का गाल्ल मम्मत् तक रूपा वाणा है और न किसी काव का कलात्मक अभिव्यक्ति बल्कि इनका वाणी स्वानुभूतिमूलक भुक्तभोगी आत्मा की एसी पुकार है जिसमें गुप्त्र गाल्ल ज्ञान की खिलनी उडायी गयी है । गुजरात के सत्ता की यह एक निजी विगपता है कि इन्होंने एकनिष्ठ और एकात्मिक भाव से न ता निगुण का हा साधना है और न मगुण के प्रति विरोध ही प्रगट किया है । अत इह निगुण कहन का अपेक्षा ज्ञानमार्गी कहना अधिक श्रमस्वर है । इनकी साहित्यिक देन इस प्रकार है—

- १ विषयगत एवं शलागत उपलक्षियाँ ।
- २ प्रतीक एवं रूपक योजना ।
- ३ त्रिगिष्ट काव्य प्रकार ।
- ४ छन्द-वर्गिष्ठय ।
- ५ सङ्घात तत्त्व ।

विषयगत एवं शलागत उपलक्षियाँ

गुजरात के ज्ञानमार्गी सत्ता का विषय न तो मगुग निगुण का लब्धन मण्ण ही था और न हिन्दू मुस्लिम व अतरायों का पाप्ना ही बल्कि ज्ञान के प्रकार में उस आत्म का खोजन का प्रयाम है जो सांपाजिक रूटिया एवं धार्मिक बंधनों के बाध जाबद्ध था। असा वस्ता धीरा प्रानम लोटम आनि सभी आध्यात्मिक उडान के कवि थ जिन्होंने आवाय गौपान व अजातवान् शकर के मायावान् और म्फिया के रहम्यवान् का पूरा तरह में आत्ममात किया था। वेदान का पचाकर असा न जिस अज्ञानवाद की भावमूनक व्याख्या की बही उह युग के बडे स बडे तत्व चिंतना में प्रस्थापित कर र्ना है। गुजरात के ऐस तत्वगवेपका न किमी अटपटा गली का प्रयोग न कर परम्परागत प्रबध एवं मुक्तक दाना गलिया में ब्रह्मविषयक चर्चा की है। सत काय में एम प्रकार की बडवाबद्ध प्रबध गनी निनी का उनकी महत्त्वपूर्ण ऐन है।

ब्रह्म जीव और जगन की चर्चा के उपरात गुजरात के हिन्दी सभी मता न पौराणिक कथाओं के आधार पर विगपत भागवन् के आधार पर अनक नवीन रचनाए का हैं। इनका कारण गुजरात का समृद्ध आख्यान परम्परा का प्रभाव भी माना जा सकता है। गुजराती में इन मता द्वारा रचित पौराणिक आख्याना का एक उम्बी परम्परा भाडण में सबर छात्रम तक लिखायी र्ती है।

पौराणिक कथाओं के माध-भाषय गुरू तथा सन महिमा का गान करत हुए भी नहा अपान। मुकुन्त गूगनाहन कबीर चरित और गोग्ग चरित महात्म्यमगमवृत भक्त महिमावली प्रातमदानवृत 'भक्त नामावली आनि रचनाओं में मात्र गुजरात के मता की योगाया ही नहा अपितु उनमें दक्षिण उत्तरभारत और बङ्गाल के मता का भा समावन हुआ है। गुजरात के मता द्वारा निगी गया ऐसी चरित गाथाओं में सकृचिन्त शंभवान् अपवा

सीमाबद्धता का वहाँ भी स्वरूप नहीं किया गया। गुफ का इहान वस्तु ऊच स्तर से देखा है और इमनिण उम जीव-मुक्त अनयून परमहम परमात्मा सत्वगुण जाति मनाजी से अभिहित किया है।

प्रतीक एवं रूपक योजना

गुजरात के सता की हिन्दी वाणी वराम्यजनित गुल्बवाणा न हाकर जीवन का उल्लासपूण अभिव्यक्ति है। ब्रह्म जीव और जगन क निरूपण म इनकी वाणा सवत्र कल्पना भावना एवं आबित्य क मवनप्रवग से सयाजिन है। अपना वाणा का स्पष्ट भावमूनक एवं ताक भाग्य बनान क लिए इहान जिन प्रताका की सयाजना की है व प्राय दो प्रकार क है—

१ पारिभाषित प्रतीक । २ भावात्मक प्रतीक ।

पारिभाषित प्रतीक—इस प्रकार क प्रतीका म कुछ एम साकतिक एवं रूपकात्मक प्रतीक हैं जा सत परम्परानुमानित हैं किन्तु कुछ एम भा हैं जिन्हें इन गुजराता सता की विविष्ट दन कह सकत हैं। उदाहरण क लिए साकतिक प्रतीको म एन गन अगलिया याग मूलक प्रतीका म मीनकला मीनमाग ददुर माग गगन गुफा आदि एस विविष्ट प्रतीक है जिनका प्रयाग इन सता न अपन ऋज पर किया है। इस प्रकार क प्रतीका क साथ २ इहान कवीर का भाँति कुछ नवान ग द भा गढ़े हैं जस साहागन क आधार पर दाहागन ।

रूपकात्मक प्रतीका म यद्यपि सवाभाषा का प्रयोग कम मिलता है फिर भा साग रूपका की सयाजना म य सत मिद्धहम्न है। जान कटारी जानघटा भजन भटाका तन-तम्बूरा और 'जान हुका कुछ एम ही माग रूपक हैं जिनम इनकी कल्पना गति एवं चमत्कार वृत्ति का पूरा परिचय मिलता है।

भावात्मक प्रतीक—गुजरात का सतवाणा म भावात्मक प्रतीका का याजना सवम अधिक ऋ है। एस प्रतीका का प्राप्त करन क लिए इन सता का अयत्र भक्तना नहीं पना है अपितु नोक जावन म चुन गये य सभा धरतू एवं मामाय प्रतीक से जा सहज हा हृदय को स्पग कर लेते हैं। गुजरात क सता द्वारा याजित एम भावमूनक प्रतीक प्राय तीन प्रकार क है—

- १ रहस्यमूनक भावात्मक प्रतीक ।
- २ प्राकृतिमूनक भावात्मक प्रतीक ।
- ३ लोक व्यवहारमूनक साम्यत्य प्रतीक ।

विशिष्ट काव्य प्रकार

गाथा पद और रमना मता व प्रचलित काव्य प्रकार रहें हैं। हिन्दी मंत्रा गुजराती सत्ता न अपना रचनाआ म मध्ययुगान गुजराती साहित्य व प्रचलित काव्यरूपा का प्रयाग किया है। एस काव्य प्रकारा म बारमापी (बारहमासा) गरवा गरवा कक्का घाल आरता आम्बान अयवा चरित काव्य कडवा (कडवक) ऊयला जकडी लावना गजन मसनवी हारी गात्री गाता और छप्पा का नाम विंगप रूप स किया जा सकता है। इन काव्यरूपा म स बारहमासा, कक्करा गजन मसनवी आदि सुविदित हैं जबकि गरवा-नरना धान उयना जकना लावनी आदि का इन सत्ता की विंगप न कहा जा सकता है।

छन्द विशिष्ट्य

गुजराती साहित्य म छन्द दानी तथा गण रागिनिया व विविध प्रयोग बारम्बा गता म नकर जाज तक जनवरत हान रह हैं। नरमी पूव का समस्त गुजराती साहित्य रगिया का अपना छन्दबद्धता का विंगप आप्रही रना है। नमक वाग गन गन दगिया का प्रचार बन्ता गया है और छन्दा का प्रयोग मन्त गता गया है। छन्द बविष्य व प्रति पुन जाकपण न्याराम व समय म प्रनात हान नगना है। इस सम्बन्ध म काम बात यह है कि गुजरात का मध्ययुगान साहित्य प्राय एम समय रचा गया जिम समय हिन्दी का रातिकान विकसित ना रना था। दूमर बल्द मुज का पिगल पाठाना म उम समय कविया का छन्द नाम्ना का विंगप जान लिया जाता था। गुजरात व मना न पिगल का परिपाटी व आधार पर यद्यपि काव्य रचना नहीं का था फिर भा ननका वाणा म महज भावन नाना चौपाय कुडनिया विष्णुपन छप्पय भूतगा ताटक कविन मवया वमन तिनका निम्बिणा, मनहर नद रिजय पृथवा आदि छन्दों का प्रयाग हुआ है।

सङ्गीत तत्त्व

सङ्गीत व ध्रम म गुजरात व मना का यन्ि कार् मवम बडा नन है ता व है गुजरात व घरा म गू जन धाना नाकधुन की गरड जिम नाने दगा रागिना व नाम म अभिहित किया है। इस रूप म मना का साहित्य लावगीत व अधिक निकर है और नाम्नाय सङ्गीत व बंधना म मुन विविध दगिया म रचा गया है। इस प्रकार की पप रगिया सङ्गीत का अमर

निधि है जिह गुजरात क सता न मज्ज हा लाक वाणा म उतार गिया है । निरात मनोहर, नभू एव वस्ता आदि का तो मञ्जीत का विगिष्ट जान भी या । गवरीबाई क पत्नी मीराबाई क पत्नी का तरह विभिन्न राम गगिनिया म सयाजित हैं । नायभवान के विष्णुपत्नी तथा अन्ना क घमार म दृष्टि म विनेष उल्लखनाय हैं । भरव केदार विभाम त्रिनावन कल्याण महार मानकौम सारग आमावरी काहरा प्रभाम गौडी साभेरी मारू और विहाग क साथ साथ मारठ का राम बद्धता गुजरात की हिन्दी मत्त-वाणा की निजा विनेषता है । रागो म मोरठराग राम विनावन तथा ताना म हीच तान म निबद्ध गरबी गरवा हिन्दी का उनकी महत्त्वपूर्ण म है ।

सांस्कृतिक दन

सतों की सांस्कृतिक दन का मूल्यांकन करते हुए डा अम्बानगर नागर ने उचित ही कहा है कि भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विपत्ता उमक मून म स्थित समन्वय की भावना है । इस समन्वय स्थापन का बहुत कुछ श्रेय मध्यकालीन सता को है । इन मन्तान दन क एक छोर स दूमर छोर तक पहुँचकर जान भक्ति और प्रेम का अन्त जगाया था और जाति तथा धर्म क भेदभाव का मिटाकर उहने एकद्वरवाद और विराट मानव धर्म का स्थापना की था । य राग किमी एक प्रांत क न हाकर समस्त भारत क थ ।^१ व्ही सभ म यह भी कहा जा सकता है कि भौगोलिक सीमाओं का म्नेन कभी स्वीकार नहीं किया । य तो मन्वति के जगम तीय थ जिनका काम था विविधता म एकता का स्थापन ।

गुजरात की समग्र मत्तवाणा इस प्रदेश की सांस्कृतिक चेतना का ही परिणाम है । एतका पृथुभूमि क निर्माण म गवधम गार्कमत जनमत और वपणव धर्म का पराक्ष प्रभाव है । गुजरात म वध्णव धर्म और जन मत के अनुपायिया का सत्या प्राय अधिक रही है । जनमत की अहिंसा और सत्य का भावना तथा आस्थामयी दलनभीय तत्वीनता ध्यवमाय प्रेम गुजरात जनता क लिए क्वाचिन सबसे अधिक अनुकूल मिड हूम किन्तु १५ वा गता क पन्चात् धर्म क नाम पर वत्त हुए अनाचारों का दमन कर मन्वार् की राह पर चलना सिखाया एता सता न । य अपन युग क सबसे समय सांस्कृतिक नता थ । मन्वति क शत्रु म एतका उपनधिर्मा म्म प्रकार हैं—

१ डा० अम्बानगर नागर गु हि ग पृ० २३ ।

- १ मानव धर्म का प्रतिष्ठा तथा मान का व्यापक प्रसार ।
- २ धर्म तथा मान का स्पष्ट एवं समुचित चर्चा ।
- ३ परम्परागत भाषिताओं के प्रति विद्रोह का भावना अथवा सामाजिक चेतना ।
- ४ मौलिक जीवन में आध्यात्मिक क्रांति ।
- ५ राष्ट्रीय जागरण ।
- ६ अमान्यतायुक्तता ।

भाषा साहित्य एवं मस्तिष्क की दृष्टि से गुजरात के मता का जैन का सम्पक विहावनाकर कर चुकने के पश्चात् हम जैन लिपिक पर पृथक् हैं कि गुजरात का सत्त-परम्परा उत्तर भारत का ही एक कडा है तथा गुजरात मता की लिपी वाणी के माध्यम से व्यक्त एतन् एवं पार्थीक सत्या का अभिव्यक्ति अविन भावनाय मत्त काव्य की अक्षय निधि है । सारागत गुजरात के मता की यह दान मात्र भाषा के क्षेत्र में ही मन्त्वपूर्ण नहीं बल्कि विचारों में विनाप समझीनावादा ज्ञान में विनाप वस्तुतः सस्कृति के क्षेत्र में व्यापक तथा साहित्य के क्षेत्र में नवानुवाच्यरूपा प्रतीका एवं कल्पनाओं से परिपूर्ण है ।



परिशिष्ट



- १ गुजराती सतों द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली ।
- २ गुजरात के हिन्दी-सेवी सतों की नामावली ।
- ३ गुजरात के सत-कवियों द्वारा लिखित हिन्दी ग्रन्थ ।
- ४ सदम ग्रन्थ-सूची ।

गुजराती सतो द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली

अर्णलिगी

गुजरात का सत वाणा म अर्णलिगी गण बार बार मिलना है। यह मूल त्रिग गण म अर्ण पूर्वग क याग स बना है। त्रिग अर्थात् हनु और त्रिगी अर्थात् द्वारा माध्य का अनुमान होना है। अतः त्रिग द्वारा जिसका अनुमान न हो सक एमा तर्कनीत तत्त्व ब्रह्म अर्णलिगी कहनाता है। तत्रानाक म भावना अर्थात् पण को त्रिग कहा गया है। गवागम म त्रिग साधना की प्रतिष्ठा है। अर्थात् न अर्णलिगी का अर्थात् सर्वातीत एव निरधार बताया है।^१ रविसाहब न इसे अभेद एव अर्थात् कहा है।^२ बृहत् काय दोहनकार ने अर्णलिगी का अर्थ विन्हेही अर्थात् मुक्त नगाया है।^३ वस्तुतः अर्णलिगी वह है जा अर्थात् एव त्रिग दाना स परे है।^४

अनहद

सोम-अमीम से परे जो निस्मीम है^५ उमी का सता न हत्-बहत् स पर अनहद की सत्ता स अभिहित किया है।^६ याग साधना म अनहद

१ एही अर्थात् अर्णलिगी अनुभव जाग्रत विद्रा टाली

सांभी सोनारा पच पचन को, सर्वातीत निरधारो।

—अ वा म प पृ० २५३

२ रविदास अभेद अर्थात् है अर्णलिगी पद नीरवाण।

—रविसाहबकृत भागगीता—१।

३ देखिए— बृ का दो भाग १ पृ० ८६७।

४ अर्थात् मेलना अर्थात् त्रिग त्रिग मेलना दोष

अर्थात् त्रिग ते पारा अर्थात् तहां तो दोष न होय।

—अ सा प्रत्यक्ष अग ६।

५ हद चले सो मनवा बेहद चले सो साय।

हद बेहद दोऊ तजे ताश्चर मता अगाथ ॥

—बहोर पृ० ३५३-२३०।

६ ए चिद एतु का एतु है सदाई

जहां आपापर न मिले अर्थात् बेहद हद न कहाई।

—प्रस्ता अ म प, पृ० २७८।

के साथ प्रायः 'अनाहनचक्र तथा अनाहन नाद' का भी उल्लेख मिलता है। मन्त्रों न सामान्यतः इन दोनों गणों के लिए भी अनाहन का ही प्रयोग किया है।^१ कुण्डलिना जब उद्बुद्ध होकर ऊपर की ओर उठती है तो उसमें स्फाट हाना है जिन नाद कहते हैं। नाद में प्रकाश हाना है और प्रकाश ही व्यनरूप महाबिन्दु है। यह जो नाद और बिन्दु है वह अमल में अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त अनाहन नाद या अनाहन नाद का व्यष्टि में व्यक्तरूप है।^२ वस्तुतः ब्रह्मरूप में निरन्तर उठने वाले स्फाटक समात का अनाहन नाद कहा जाता है।^३ इसमें योगी मन्त्रों के अन्तर्गत की ओर ध्यान केंद्रित करता है।^४ डा० रामकुमार वर्मा ने इसका गुह्य रूप अनाहन बताया है।^५

एन' और गन

डा० हरिवल्लभ भाषाणा ने इस प्रकार के गणों की व्युत्पत्ति युग्मरूप में मानते हुए यह द्विस्त गणों में स्थान दिया है।^६ अर्धवत् 'अर्धवत् तथा चत्वाकी की भाँति गुजरात के वज्रवाक्य मन्त्र में प्रायः ये गण मन्त्रों में मुन जाते हैं। एन गन का गन हाथीना घाटा। यही एन गन' का प्रयोग मन्त्रों में अथवा अथवा प्रयोग होता है। उद्बुद्ध वागमाला में भी इस प्रकार के गणों का प्रयोग मिलता है जिनमें अन्तर के वत् एन नुक्त का है। नुक्ता उदाहरण पर गाना में वस्तुतः कोई अन्तर सिद्धायी नहीं देता। गुजरात के मन्त्रों में इन गणों का अपनी पारिभाषिक गणवत्नी में विनिष्ट स्थान देते हुए मन्त्रों में इस प्रकार समझाया है कि एन गन त्रिभुज प्रकाश समान अर्ध है किन्तु एन नुक्ता मात्र दाना में भेद उत्पन्न करता है ठाक उमा प्रकार मन्त्रों में आत्मा का निवास है किन्तु अर्ध का आवरण उमा तक जाता है। अतः जब तक यह का विनाश नहीं होगा आत्म प्रकृति

१ अनाहन वाज्र मन्त्र भक्तमते अलक्ष्मी नूर। —गवरीबाई।

२ बघोर-आचार्य हजारीप्रसाद त्रिवेदी पृ० ४६।

बघोर का रहस्यवाद-डा० रामकुमार वर्मा पृ० १६०।

४ भक्तमते उद्योति तो स्पष्ट भक्तमते

अनाहन नाद वाज्र मन्त्र रत्नमाला।

—घोरा प्रा का मा अथ २४ पृ० २०६-११।

५ बघोर का रहस्यवाद — डा० रामकुमार वर्मा, पृ० १६०।

६ द्वैष्टि— भाषाणावर डा० हरिवल्लभ भाषाणा पृ० ४६।

असभव है ।^१ अला ने अपने डग पर इन गानों की व्याख्या का है । उगने आत्मा को ऐन तथा अह का 'गन कहा है ।^२ ऐन के मूमन पर त्रिगुणाभाम उमी प्रकार विलान हा जाता है जिस प्रकार आराग म म बाग्न और जागन पर स्वप्न वृत्तिया विलीन हा जाती हैं ।^३ इम जान लन पर मन स्वत ऐन हो जाता है —

जान जिया येहि जान मान मन ऐन है
सदगुरु प्रीछया नहीं तब लगी गहेन है ।^४

अला ने ऐन का प्रयाग अत्यन्त व्यापक अथ म किया है । अमवाणी म यह गान आजा और प्रतिज्ञा के अर्थों म भी ध्वनित है ।
उदाहरणाय —

रामभक्त साधा अखा पालत गुरु के बन ।
धरनी बोल परे नहीं गुरु की मानत ऐन ।^५

अजपा जाप

यह प्राय उम प्रकार की उपासना पद्धति अथवा स्थिति है जिसम सभी प्रकार के बाह्य साधना के प्रयोग छाड दिए जाने हैं और एक अत क्रिया मात्र चलता रहता है ।^६ गोरखनाथ के अनुसार मन को एकाग्र करना तथा श्वास का नियंत्रित करना अजपाजाप की अपूर्व विधि है ।^७ इसम मन का गूँथ म निहित करवे आह के स्थान पर साह का ध्यान किया जाता है । वसी मोह से गान्ज्याति प्रकट होती है और अन्तर एव

१ देखिए— अनवर काव्य पृ० १६४ ।

२ सतो गेन गया ऐन सूझया म सो तु नहीं दूजा ।

३ 'पु गेवी बादर होय अम्बर मे उपजी वृत्ति विलावे
त्रिगुणाभास इसी विधि बूझे सो नर जाय न आवे ।

—'अलाकृत भजन २१ ।

४ अलाकृत भजन—३२ ।

५ अनयरम पृ० २५८ ।

६ देखिए—हि का नि स पृ० ४१५ ।

७ वही पृ० २८६-८७ ।

बाहर प्रकाश हो जाता है।^१ इस प्रकार तप साधक का वाह्यक्रिया है अन्नपात्राप आभ्यन्तरिक और अनन्त सुमिग्न का वह स्थिति है जिमक द्वारा साधक अपनी आत्मा क मूकतम अंग म प्रवर्ण करता है और मभी स्थितिया का पार कर कारगतात हो जाता है।^२ तबू क अनुमार यह एक एमा स्मरण है जमाकि एक हिन्दू रमणा अपन पति का नाम नहा ततो फिर भा उमक लिए तन मन अर्पण करने का तयार रत्ना है।^३ अथा न स्म जप तप ताय पूजा ध्यान धारणा, पाप पुण्य तथा जन्म मरण की आणकाओं स पर धताया है।^४ गुजरात का सन्त साधना म नाम स्मरण का महत्त्व सर्वाधिक है। कदार न जिम प्रकार ध्यान का कद्रबिन्दु 'राम' का रत्ना है गुजरात क सत्ता न भी ठाक इसा प्रकार राम क नाम का दामन पकडा है। तहोंने वस्तुत नाम स स्तह करक हा परमपद का प्राप्ति का है।

नहदा नाम से लगाऊँ नाम से लगाऊँ परमपद पाऊँ ।

—गवरीबाई।^५

मक्षप म कदार का भक्ति गुजरात क सन्तान भा इस याग की जटिन साधना स मुक्ति प्राप्त करन क लिए सब मुलम साधना-पद्धति क रूप म अभिहित किया है। उनका महज ज्ञाप भा यहा है।

निरजन

यह एक गुरु अत्यन्त प्राचीनकाल स प्रयुक्त हाना या रहा है।

१ कबीर—'एक अध्ययन—डा० सरनामसिंह गर्मा पृ० ५७० ।

२ वही वही पृ० ५७० ।

३ मुन्दरि कबहु कथ का मुखतो नाम न लेइ ।

अपने पिय क कारणे दाहू तनमन देइ ॥

—दाहू कानी (वे प्रे), भाग १ पृ० २८१ ।

४ जन्म मरण सब गवा भागी, जब मेरी मुरता मुझमें लागी ।

ना कहे पूजा न तोष नहावु ना में ध्यानी क ध्यान समाह ।

ना में ज्ञानी के ज्ञान विचार, ना मे चतुर क मुख अजाना ।

ना मे पंडित जान मुजाना । ना मोहे पाप पुण्य ना धारें ।

ना में जीनु ना में हरें । जन्म-मरण ।—अष्टाष्टत भजन १४ ।

५ गवरी कीर्तनमासा पृ० २५ पद ४६ ।

मुण्डकोपनिषद्^१ और भागवत्^२ में मन्मका प्रयोग क्रमशः ब्रह्मवेत्ता तथा पवित्र व अथ म हुआ है। हठयाग प्रदापिका^३ में इस गन्त को सफ़्त उमनी जादि का पर्याय एव माया रहित शुद्ध-बुद्ध मुक्त ब्रह्म का वाचक बताया है। सिद्धा न इसका अर्थ 'तूय व माह्वय से लिया है जबकि नाथ यागियो न इस गन्त को योगिक ब्रह्म व अर्थ म अभिहित किया है। कानानर म 'निरजन' गन्त का घोर परिवर्तन अनान तथा माया व प्रतिरूप म किया जान लगा।^४ गुजराता सन्तो की कानियों म इस गन्त का प्रयोग योगिक ब्रह्म आत्मतत्त्व आदि अर्थो म भिन्नता है। उदाहरणार्थ—

योगिक-ब्रह्म के अर्थ म—

मुन सरोवर मोन मन नीर निरजन देव । — दादू ।^५

शब्द-ब्रह्म के अर्थ मे—

ॐ नमो जादि निरजन राया
जहाँ नहि काल कम अह माया । — अखा ।^६

आत्म तत्त्व के अर्थ म—

अलख निरजन साई हमारा ।
जो सबदा सकल मे व्यापक सबका साक्षी सबसे पारा ।

—मनोहरदास ।

मीनमाग

सन्तान इस विहगममाग अथवा वदुरमाग भी कहा है। अखान मीनमाग अथवा मीनकता को महादगा वन्त है।^७ विहगम की प्रतीति अखान एव जगह म प्रवार कराई है —

१ मुण्डकोपनिषद् -३ ।

२ श्रीमदभागवत १-५-१२ ।

३ हि का नि दा पृ० ७२० ।

४ कबीर, आचाय हजारीप्रसाद द्विवेदी पृ० ५४ ।

५ दादू बानी भाग १ पृ० ५२ ।

६ अलाकत ब्रह्मसीता, १ ।

७ मीनकता सो महादगा जान को एक मेव

जिनकु हवन का डर अला सो करे डोमर की सेव ।

जे पद दूर निकट नहीं कता सो पद जनहि विचारा ।
सो नर विहगम गये मुनिचल वे पद अछा हमारा ।

—मजन २६ ।

समरम

राम हरिराम रामरमायन महाराम गाविन्दराम अक्षयगम तथा ब्रह्मानन्द आदि विभिन्न नामा भ अभिहित किया है । वस्तुतः अम्बा का जो अग्रयण रम है वही धीरा का गाविन्दराम हैं और वस्तु का अन्तर रम भा वही है । इन सभी का प्रयाग ब्रह्मानन्द अथवा ब्रह्मकुमारी क अग्रयण ही हुआ है । गुजरात क मन्तों द्वारा प्रयुक्त इस प्रकार क विणिष्ट गद निम्नरुत उनक पारिभाषिक कोष म अभिवृद्धि करत है । अम्बा न अपन एक पद म इस प्रकार के एकाधिक गणना का प्रतीति एव साय करायी है ।^१ समरम गण का प्रयाग नाय यागिया न भा किया है । उनक अनुमाग यागी किम्बा का अग्रयण दृष्टि स नहीं दाक्षता न वह साकार है और न और निराकार, वह भू और अग्ने नहीं जानता । वह विनिमुक्त है । कवन गिव है । समार का जन्म व्यवस्था म अपन लिए सामानता डूँढता है । वह अपन का सत्य अग्रयण न वह कर आकाश क समान जान का अमृत समरम कह कर अभिहित करता है ।^२ वनों म ब्रह्म को 'रमा क स' कहा गया है । 'सामरम क

१ राम रसायन जन जिनहो पियो है

ताक नन भये न भये और,

जबहीं प्यालो मानु जान दियो है

राम रसायन जन जिनहीं पियो है ।

×

×

×

भिन्न भिन्न भाव रह्यो तोरी भीतर सो सब महाराम नीर दियो है ।

पीयो है पियुष पच्यो कदांसा महाअनुभव प्रकाश दियो है ।

×

×

×

उतरत माहीं ताक ब्रह्म कुमारी,

१ बाहु बबहु न काल प्रह्यो है ।

—१ वा पृ० २६७ ।

२ अद्भुत रूपमञ्जलिहि क्य वदामि नित्य अनिरयमञ्जलि हि क्य वदामि ।

सत्यमसत्यमञ्जलि क्य वदामि ज्ञानामृत समरस गगनोपमोत्तम् ।

—कपिलगीता ।

—गोरक्षनाथ और उनका पुत्र, पृ० १४१ से उद्धृत ।

साथ भी समरस की मगति विठायी जा सकती है।^१ वस्तुतः मामरस का जो नगा है वही समरस की कुमारी है और 'रामरगायन का पान भी वही है। यह सहज का वाचक भा है।^२ अन्वा न इस एकरस तथा अभिन क अय म भा प्रयुक्त किया है।^३ एसा मरस ज्ञान दुमति को दूर करन वाता होता है।^४

शून्य

आचार्य द्विवेदीजी ने रस रत्न की भारतीय साहित्य भाषना का अत्यधिक मनोरञ्जक रत्न कहा है।^५ बौद्ध महायान मम्प्रदाय क दार्शनिका की दा गान्वाए हैं। एक मानती है कि मसार म सब कुछ शून्य है और दूसरी मानती है कि जगत क सभा पदाय वाहरा तौर पर अमन् हान पर भी चिन् क निकट सत् हैं। इनम पहला गान्वा को शून्यवाद कहत हैं। और दूसरी को विज्ञानवाद। नागाजु न न शून्य की व्याख्या करत हुए उस शून्य, अशून्य स भी परे कहा है।^६ इस प्रकार यह अनिवचनाय तत्त्व है। नायपथी सबसे ऊपरी सहस्रार चक्र को शून्य चक्र कहते हैं तथा रस रूप म उहनि रसे कवन कहा है। सहजयानी भा इसा कवलावस्था का बार बार शून्यपत् स अभिहित करत हैं। कबीर न भी सत्ज शून्य का एक साथ प्रयाग किया है किन्तु वह योगिया की सहजावस्था स भिन्न है। उहनि ता ममस्त का आस्वादन इसा सहजशून्य म किया था।^७ हठयाग क अतगत ब्रह्मरघ्न का द्विज जा () बिन्दु रूप होता है एसा स कुण्डलिनी का संयोग

१ कबीर-आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी पृ ४८।

२ हि नि का दा पृ० ७१८।

३ पर म पत पक्ष म पर है है समरस, नहीं आना

भिन्न पर्यो कौन कही कहां ते ? ज्यु नम म दीप समाना।

—अल्लोकत भजन ६।

४ समरस ज्ञान सहज घर साधे दुरमकु द्वारा।

—महात्पराम की बानी।

५ कबीर पृ० ७१।

६ शून्यमिति न वक्तव्य अशून्यमिति वा भवेत्।

उमय नोमय नव प्रज्ञातयय तु कथ्यते।—नागाजु न।

७ कबीर का रहस्यवाद—डा० रामकुमार वर्मा पृ० १६४।

गना है। जमा स्थान पर ब्रह्म का निवास है। यागा जन जमी जत्र का नाम प्राप्त करना चान्त है। जम शिष्ट क ह दग्वाज है जिम कृत्तनिती क जनिरिक्त का नहा गान मकना ।^१ मना म गूय का प्रयाग प्राय निम्न निश्चित अर्थों म हुआ है—

१ परमाथ तत्र क रूप में—

सहज मुनि सब ठोर है मय घर मयहा मार्ति ।

—दादूबाना भा २ पृ० ५१ ।

२ गज ब्रह्म क अथ म—

मुण सनहो रामभज तज माया अविद्या फोज को । —रविसाहब ।

३ समय और स्थान क अथ म—

गूय गिखर पर घर है हमारा अगइ धाम की नाना है यारी ।

—सालनाम ।

४ ब्रह्मरूप के अथ में—

मु म सरोवर मोन मन नीर निरजन देर ।

—दादूबानो भाग २ पृ० ५१ ।

परिशिष्ट-१

गुजरात के हिंदी सेवी सन्तो की नामावली

१ अला	२ अजुन भगत	अनवर मियाँ	४ अनुभवान
(नाथ भवान)	१ अवर मन	६ अमरामलाम	७ अमरलाम
८ अमीचद	९ अमीधर महाराज	१० अलख बुनाखी	११ आत्मलाम
१२ आत्मलाम स्वामा	१३ आनद तयन	१४ ईश्वरलाम	१५ इश्वरलाम
१६ अमर वागत	१७ उपलगाचाय	१८ उका भगत	१९ ऊकारश्वरा
माता	२० जाधवदाम	२१ कक	२२ करीमगाह
२३ कल्याण	२४ कल्याणलाम	२५ कमान	२६ कहान
२७ कादरगाह	२८ कुबरदान	२९ कवनपुरी	३० कवन तनी
३१ कगवहृति	३२ कृष्णलाम (कन्नर पथी)	कृष्णलाम (दवा साहब क गिष्य)	
३३ खानम	३४ खीम साहब	खुमानवाइ	३५ खूव मुहम्मद
चि ता	३६ खाजीराम भगत	३७ गणपतराम	३८ गरावलाम
३९ गवरीवाइ	४० गुनगन	४१ गुलावपुरी	४२ गापाललाम
४३ गापाललामजा (प्रणामी)	४४ गावि	४५ गौरीगकर	
४६ गग साहेब	४७ गगाराम	४८ चक्रधर	४९ चातकलाम
५० ड्राम	५१ छोटालान	५२ जगजानन	५३ जगजीवनलाम
५४ जगन्नाथलाम	५५ ज्ञानवादी	५६ जातामुनि नारायण	
५७ जावा भगत	५८ जीवग	५९ जावललाम (नानलाम क गिष्य)	
जावललाम (नामी जावग)	६० जटावाइ	६१ जतीराम	
६२ नूतग फकार	६३ तुगरपुरा	६४ डामा भगत	६५ तिनकदाम
६६ तुनापुरी स्वल्पिया (नानापुरा)	६७ तुननाराम भट्ट	६८ तजमिग	
६९ त्रिविक्रमानलाम	७० त्रिक्रम मानव	७१ थाभग	७२ दयानलाम
मरम्बना	७३ त्रयानलाम स्वामा	७४ दरियाखी	७५ दादू
७६ दाना	७७ दाम	७८ दाम मलिक	७९ दान दरवग
८० दीन साहब	८१ तुनभ	८२ दवकृष्ण	८३ दवचन्द्रजा
८४ दवात	८५ दवासाहब	८६ दवालाम	८७ दवी तुनजा
८८ दवीमिह	८९ धीरा	९० धान	
९१ नथुगम	९२ नथुना	९३ नरमि	९४ नरमि मन्ता
९५ नरमिहलाम	९६ नरमिहलाम	९७ नागायण	९८ निभय

- १०२ नारणदास १०३ निमनदाम बाबा १०४ निगत १०५ नुरन
 १०६ नृसिंहाचार्य १०७ नेहान १०८ प्यार्लान १०९ प्राणनाथ
 ११० परमानंद स्वामी १११ प्रीतमदाम ११२ पीनाम्बर ११३ पापा
 भगत ११४ प्रभुलाम ११५ फक्रुद्दीन ११६ फख्त माहव ११७ फगत
 मानव ११८ वापूसाहव गायकवाड ११९ दावा नजी १२० दानकृतम
 १२१ बाबा फाजल १२२ दानम चमार १२३ विहागनास (वगजा)
 १२४ वृटिया १२५ ब्रह्मगिरि १२६ भगवानजी महागज १२७ भवात
 गर १२८ भक्त धोता १२९ भाग साहव १३० भाणजी माहनजा
 १३१ भानुदास १३२ भीम साहव १३३ भोजा भगत १३४ मनाहरनाम
 (मच्चिदानंद) १३५ मयूखनाम १३६ मनिक् टावा १३७ महारमा
 गाँधी १३८ महात्मराम १३९ महमून् दरियाया १४० मगलदाम
 चतुभुज १४१ मछागम १४२ माणिकनाम १४३ माधवदाम
 १४४ माडण १४५ मीरासाई १४६ मुकुन्त गूगना १४७ मुकुन्दनाम
 (नवरग स्वामी) १४८ मुरादमीर १४९ मुनजा भगत १५० मूनजा
 गजा १५१ मकननाम १५२ माभाराम १५३ मागर साहव
 १५४ माहकर्मिह वाराण १५५ माहननाम १५६ माहम्मन् अमीन
 १५७ मौजुदीन १५८ रघुवीर १५९ रना भगत १६० रणदा
 १६१ रणदोन लीवान १६२ रमजान नजी १६३ रमना राम
 १६४ रवि साहव १६५ राधा भगत १६६ राधावा १६७ रग अशुत
 १६८ रगीननाम १६९ रगाननाम १७० लक्ष्मणनाम १७१ नचागम
 (राधा भगत) १७२ नल्लूजी मन्नागज १७३ नाननाम १७४ नाननाम
 १७५ नाननाम १७६ नान मानव १७७ बन्धुगम १७८ बन्ना
 विन्धमर १७९ बहा १८० बाणनाम १८१ बिराम १८२ बना
 १८३ गकर महाराज १८४ गाम १८५ गान अनागम धना
 १८६ गान हागिम १८७ गिवान १८८ गान बहाउद्दान धामन
 १८९ ममधराम १९० ममधदाम १९१ मरयूनाम १९२ स्वरुपनाम
 १९३ मागर १९४ मुजान १९५ मवागम १९६ मत पाण्डा
 १९७ मतराम महागज १९८ मत नूनाम १९९ मत गान गान
 मत हुमनगा २०० मयन् मुहम्मन् जौनपरा २०१ गम्मन् गान
 २०२ गान फवार २०३ हरनाम २०४ हरगिम २०५ हरारान
 २०६ हागनाम २०७ हाया २०८ राममाग २०९

परिशिष्ट-३

गुजरात के सत्त कवियो द्वारा लिखित हिन्दी ग्रंथ

१ जमगाता (हि गु०) अथा । अनुन-वाणी (हि० गु०) अनुन भगन । अनवर काव्य (हि गु०) अनवर मिया । ४ अवधूता जानर (हि गु०) रग अवधूत । ५ आत्मलक्ष चित्तामणि रविमाह्व । ६ आत्म विचार माणिक्याम । ७ आत्म बाध माणिक्याम । ८ आत्मविनाम जाभ्याम । ९ एकरुप रमनी अथा । १० कवा चरित मुकुट गूगता । ११ कवित्त प्रबन्ध माणिक्याम । १२ कम्पा मिनति दाम । १३ काफर बाध कल्याण्याम । १४ काफर बाध जातामुनि नारायण । १५ कवजुम गरीफ प्राणनाथ । १६ कृष्ण बाध विनाम विहाग्याम । १७ कृष्णमागर देवामाह्व । १८ खूब तरण खूब मुम्मट चिस्ता । १९ गवरा कीतन माता गवराबा । २० गुण जागम इमर बागट । २१ गुण भागवत रूमर बारोट । २२ गरण पराग ईमर बागट । गुफगाता वस्ता विश्वम्भर । २४ गुर बावनी मतगम महाराज । २५ गुरु मन्त्रिमा मागर साह्व । २६ गुरु महात्म्य रवि माह्व । २७ गुरु गिष्य सवाट मुकट्याम । २८ गुरु स्तुति चित्ताम्याम । २९ गाना रत्नस्य मुकट्याम । ३० मारक्ष चरित मुन्द गूगला । १ चक्रधर चौपटा चक्रधर । ३२ चित्तामणि धाम माह्व । ३३ भास्कर कल्याण्याम । ३४ छाटम वाणी (हि०गु) छाटम । ३५ छाटा हरिणम इमर बारोट । ३६ छोटा चित्तामणि महात्म्यमगम । ३७ जक्या पट अथा । ३८ जगजावन चित्तास जगजावन । ३९ जाव चनावना तनूजा महाराज । ४० भूतणा पट कथा । ४१ नाग्नम्य मागर तुलजागम भट्ट (कम्पावना) ४२ रवियाण रूमर बागट । ४३ चिवात मागर (भाग १, २) मागर (जगन्नाथ त्रिपाटा) ४४ अबचरित समयराम । ४५ नभनाला समयराम । ४६ नभू वाणा नमूना । ४७ नवरत्न सागर मुकुट्याम । ४८ निना स्तुति रूमर बारोट । ४९ निरात काव्य (हि गु०) निरात । ५० पद सभर समयराम । ५१ प्रस्ताविक कुडनियाँ विहारीदास । ५२ पचकाण

- प्रव ५ रविमाहव । ५५ बडी चिन्तामणि महात्म्यमराम । ५६ ब्रह्मनाला
 अया । ५७ ब्रह्मतीता' प्रातमत्पाम । ५८ बाबू नाता ईमर वाराट ।
 ५९ बाघ चिन्तामणि रवि माहव । ५८ 'वाय सधा छात्प । ५९ भक्त
 मन्दिमावनी महात्म्यमराम । ६० भक्त नामावला प्रीतमत्पाम । ६१ भक्ति
 धम महिमा छात्प । ६२ भाग गाता (हि० पु०) रवि माहव ।
 ६३ मित्रराज चरित मुकुत्पाम । ६४ महात्म्यम नात प्रकाश
 महायमराम । ६५ 'मगल कीतन' मगलपास चतुमुज । ६६ मगल
 वन्ता विन्वम्भर । ६७ युमुफ जुलवा माहम्मट जमीन । ६८ यदुनत्प
 टृगणत्पाम । ६९ रघुवगमणि कृष्णत्पाम । ७० रविभाग प्रश्नात्तरी
 रवि माहव । ७१ रमगीता दाम । ७२ रम चन्द्र कल्याणत्पाम ।
 ७३ 'राम कलाम' ईमर वाराट । ७४ रामगुजार चिन्तामणि रवि
 तात्प । ७५ राम ग्मायण' माणिकदाम । ७६ राम मागर दवासाहव ।
 ७७ रङ्गाल सनसई रङ्गीलत्पाम । ७८ लीला प्रकाश मुकुत्पाम ।
 ७९ रिष्णुपट्ट जनुभवानत्प । ८० वराट ईमर वाराट ।
 ८१ श्री जन्वाजी नी साखिया (हि०गु०) अखा । ८२ 'गण बाण मुधा
 महात्म्यमराम । ८३ शिव रहस्य' रगछात्पजा दीवान । ८४ पटचक्र लावणी
 गणपतराम । 'पट घास्र मुकुदत्पाम । ८५ मत्स्य प्रवाह' माणिकत्पाम ।
 ८६ स्वाचार पत्रिका' कुरत्पाम । ८७ मत्तार भजनामृत मत्तारत्पाम
 विन्ता । ८८ 'मत्त-नोकी गीता प्रीतमत्पाम । ८९ 'मायी घन्थ वन्ता
 विद्वभर । ९० 'मायी घन्थ' प्रीतमत्पाम । ९१ मिद्धात वावना
 नाराणत्पाम । ९२ मुत्तर मागर मुकुत्पाम । ९३ मुञ्जत बाघ कवत्पाम ।
 ९४ सताप सुरत्पाम माणिकत्पाम । ९५ मत प्रिया अखा । ९६ रगिन्ताम
 र्मर वाराट । ९७ रगि मागर र्वा माहव । ९८ हरिकविनाम
 (पान प्रकाश) हरिराम । ९९ हम र्मर वाराट । १०० र्म तावत्र
 (पानगाता) कवेत्पाम । १०१ पानकटारा हर्गापिठ ठावर ।
 १०२ पानमास ताम । १०३ 'पानमास निमवत्पाम वाग ।
 १०४ पान प्रकाश कृष्णत्पाम ।

परिशिष्ट-४

प्रमुख सहायक ग्रन्थ-सूची

हिंदी ग्रन्थ—

- १ अक्षयरत्न म डा० कवर चन्द्रप्रकाशमि
म० म विन्व विद्यालय बनौला ।
- २ उत्तरी भारत की सत परम्परा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
प्र० भारता भण्डार प्रयाग ।
- ३ कबीर आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी
प्र हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर बम्बई ।
- ४ कबीर एक विवेचन डा० मरनामसिंह गर्मा
प्र हिन्दी साहित्य समार लिना- ।
- ५ कबीर की विचार धारा डा० गोविन्द त्रिगुणायन
प्र० साहित्य निकलन कानपुर ।
- ६ कबीर साहित्य की परम्परा आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
भारता भण्डार प्रयाग ।
- ७ बागी नागरी प्रचारिणी पत्रिका (त्रिमासिक) (मवन् २००८ वष १६)
बागी नागरी प्रचारिणी मभा द्वारा स० ।
- ८ बाप गाथा डा० भगीरथ मिश्र
नयनरु युनिवर्सिटी नवनरु ।
- ९ गुजरात की हिन्दी सेवा वा अम्बागकर नागर
(राजस्थान युनिवर्सिटी नाग स्नातन गाथ ग्रन्थ)
- १० गुजराती और ब्रजभाषा कृष्ण बाप का तुलनात्मक अ पपन
श० जगन्नीग गुप्त
प्र हिन्दी परिषद वि० वि प्रयाग ।
- ११ गुजराती साहित्य का इतिहास डा जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण त्र
प्र० हिन्दी ममिति सूचना विभाग
उत्तर प्रयाग ।

- १२ गुजरात के हिन्दी गौरव ग्रन्थ डा० अम्बागकर नागर
प्र० गंगा पुस्तकभाना नखनऊ ।
- १३ गोरख बानी डा० पीताम्बरदत्त बडध्वान
प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ।
- १४ गोरखनाथ और उनका युग डा० रागेय राघव
प्र० आत्माराम एण्ड सस दिन्ना ।
- १५ दादूदयाल की बानी स० पंडित सुधाकर द्विवेदी
प्र० काशी नागरी प्रचारिणी मभा
काशी ।
- १६ दादूदयाल की बानी भाग १ २ प्र० बल्लडियर प्रेम प्रयाग ।
- १७ निगुण हिन्दी वाच्यधारा डा० श्यामसुन्दर गुक्ल
(बनारस हि० यु० द्वारा स्वीकृत
गोध ग्रन्थ)
- १८ निगुण साहित्य सांस्कृतिक
पृष्ठभूमि डा० मातासिंह
प्र० काशी नागरी प्रचारिणी मभा
काशी ।
- १९ परमाथ सोपान डा० गान्ध,
प्र० भारतीय विद्याभवन बम्बई ।
- २० पाटल (सत विनोपाक) सन् १९५५, वष ३ अङ्क ६ ।
- २१ भक्त चरितांक
(ब्रह्मण विनोपाक) प्र० गाना प्रेम गोरखपुर ।
- २२ भारतवर्ष का इतिहास
भाग २ डा० इन्दिरा प्रसाद,
प्र० दण्डिन प्रेम विमिन् प्रयाग
सन् १८/१ ।
- २३ भारत के सत महात्मा श्री रामनाथ
प्र० चारा एण्ड क०, बम्बई ।
- २४ भारतीय आध्यात्म और
हिन्दी डा० मुनीनिन्दुमार चाटुया
प्र० राजवमन प्रकाशन लुडिना ।
- २५ भारतीय-रत्न प्र० बल्लभप्रसाद उपाध्याय ।
- २६ मध्यकालीन हिन्दी
कविप्रिया प्र० आत्माराम एण्ड सस, दिल्ली ।

- २७ मध्यकालीन भारतीय सङ्कृत म० म० गौरीगकर नीरावत ओभा
हि० ए ज्ञानानन्द १९५६।
- २८ मिथुन धु विनाद (भाग २) मिथुनधु
प्र गंगा पुस्तक माला लखनऊ
म १९५५।
- २९ मीराबाई की गदावली वत्सलियत प्रेम प्रयाग।
- ३० मीराबाई की भक्ति और उनकी काय साधना का अनुशीलन डा भगवानलाल तिवारा
(मागर विश्व विद्यालय द्वारा
स्वाङ्गत ग्रन्थ)
- ३१ राजस्थानीभाषा और साहित्य डा मोतानान मनारिया
प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।
- ३२ राजस्थानी भाषा और साहित्य डा० हीराचान माण्डवीरी
प्र० आधुनिक पस्तक भवन
कनकता-७।
- ३३ रामानन्द सम्प्रदाय तथा हिन्दी साहित्य पर उसका प्रभाव डा० बन्दीनारायण त्रीवास्तव
प्र हिन्दी परिषद प्रयाग।
- ३४ सत दादू और उनकी वाणी स अनात
प्र० राजद्रकुमार बलिया।
- ३५ सत दान सत काव्य डा० त्रिनाका नागयण शशिन
प्र साहित्य निवृत्तन कानपुर।
आ परगुराम चतुर्वेदी
प्र० विताव मन्त्र ज्ञानानन्द।
- ३७ सत वाणी अरु (कल्याण) प्र गीता प्रेम गोरखपुर।
- ३८ सत वाणी (मासिक पत्रिका) प्र त्रिजिगीवार पथ पटना।
- ९ सत साहित्य विशेषांक (साहित्य मदेग) प्र० महेंद्र १९५८।
- ४० सतबानी सग्रह १ २ प्र वत्सलियत प्रेम प्रयाग।
- ४१ सत साहित्य डा० मृगानमिन् प्रजापिया
प्र रूपमन्त्र प्रकाशन, दिल्ली-६।

- ४२ सद्गुरु कबीर साहेब
का साली ग्रन्थ टीकाकार विचारराम माह्व
प्र० कबीर धर्म वक्त्रक कार्यालय,
बड़ौना ।
- ४३ सूफीमत साधना और साहित्य श्री रामपूजन निवारी
प्र० नान मडल, बनारस स २०१ ।
- ४४ हिन्दी काव्य में निगुण सम्प्रदाय डा० पीताम्बररत्न बडध्वान ।
- ४५ हिन्दी साहित्य की मराठी सतों की देन आचार्य विनय माहन गर्मा,
प्र० बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना ।
- ४६ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास डा० रामकुमार वमा
प्र० रामनारायणनाल प्रयाग ।
- ४७ हिन्दी साहित्य का गृहत् इतिहास म० राजवती पण्डे,
प्र० काशी नागरी प्रचारिणी मभा,
काशी ।
- ४८ हिन्दी साहित्य का इतिहास आचार्य रामचन्द्र गुवन
प्र० काशी नागरी प्रचारिणी मभा
काशी ।
- ४९ हिन्दी साहित्य का आदिकाल आचार्य हजारी प्रमान् त्रिबनी
प्र० बिहार राष्ट्रभाषा परिषद पटना ।
- ५० हिन्दी साहित्य की भूमिका आचार्य हजारी प्रमान् त्रिबनी,
प्र० हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय,
बम्बई ।
- ५१ हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग डा० नामवरसिंह
प्र० तारभांगती प्रकाशन
रामहाबाद-१ ।
- ५२ हिन्दी की निगुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि डा० गोविन्द त्रिगुणासन ।

गुजराती ग्रन्थ—

- १ अखी एक अध्यायन श्री उमागकर जागी,
गुजरात वनाक्युत्तर सामायटा
अहमदाबाद ।
- २ अखाकत का यो भाग १ दि व० नमतागकर २० मन्ना
गुजरात वनाक्युत्तर सामायटा
अहमदाबाद ।
- ३ अप्रसिद्ध अक्षयवाणी स० श्री जगन्नाथ दामोदर त्रिपाठा
गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद ।
- ४ अखानी वाणी अने मनहर पद सस्तु साहित्य वर्क कायातय
अहमदाबाद ।
- ५ अखाना समकालीन समाजनु
रेखा दगन श्री काता वान ध्यास
गु० स० म अत्र न १९४२ ।
- ६ अ यात्म भजनमाला
(भाग १ २) स० कहानजी धमनिह
सन् १९०३ ।
- ७ अक्षर काव्य स० महामुत्तभाई चुनी नाल ।
- ८ आपणा कवियो श्री व० का गाम्ना
गुजरात वनाक्युत्तर सामायटा
अहमदाबाद ।
- ९ कन्दना स तो अन कविओ श्री दूनराय वाराणो स० २०१५ ।
- १० कविचरित (भाग १ २) श्री व० का० गाम्नी
गुजरात वनाक्युत्तर सामायटा
अहमदाबाद ।
- ११ कबीर अन कबीर सम्प्रदाय श्री विगनसिंह चावडा
फावस गुजराती मभा बम्बई ।
- १२ गुजराती साहित्य ना भाग
सूचक स्तम्भो अन बधू भाग
सूचक स्तम्भो श्री कृष्णनाल मोहननाल भवरा
गुजरात वनाक्युत्तर सामायटी
अहमदाबाद ।
- १३ गुजराती साहित्य परिषद
रिपोट भाग १ स ७ ।

- १४ गुजराती साहित्यनु रेखा दशन श्री २० मा० जोटे
(खण्ड १) गुजरात विद्या सभा अहमदाबाद ।
- १५ गुजरातनो सांस्कृतिक इतिहास श्री २० मो० जोटे
(खण्ड १) गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद ।
- १६ गुजराती भाषा अने साहित्य श्री न० मो० दिवेदिया,
गुजरात युनिवर्सिटी अहमदाबाद ।
- १७ गुजरात एक परिचय
(सन १९६१) स० रामलाल परीय
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद ।
- १८ गुजरात सय सग्रह
(सन १८८८ ई०) श्री नमद गकरवान ।
- १९ गुजराती साहित्यना स्वरूपो
(भाग १) डा० मजुनाल मजुमदार
आचार्य बुक शिपा बढीना ।
- २० गुजरातीओ ए हिंदी साहित्य
मा आपेलो कालो ध। डाह्याभाई दरासरी ।
- २१ गुजर साक्षर जयतिथो म जावणनाल जमरणी महता,
पान पुस्तक माला अहमदाबाद ।
- २२ गुजरात नो इतिहास श्री अटुल जफर नटवी
गुजरात वर्नाक्युलर गासायटी
अहमदाबाद ।
- २३ गुजरातनो इतिहास श्री गाविन्भार्क हायाभाई लमार्क,
(भाग १, २) गुजरात वर्नाक्युलर गासायटी
अहमदाबाद ।
- २४ गुजरातना भक्तो श्री माणैकवान गकरवान राणा
गन्तु साहित्य बंधक कार्यालय
अहमदाबाद ।
- २५ गुजराती हाथ प्रतोनो मजस्ति गुजरात वर्नाक्युलर गासायटी
याबो (सन १९ ९ ई०) अहमदाबाद ।
- २६ गवरो कीतन माला गोपब मन्त
प्र० कमनागकर गासायटी मन्त
अहमदाबाद ।
- २७ ग्रंथ अने ग्रंथकार (भाग ६) प्र० गुजरात वर्नाक्युलर गासायटी
अहमदाबाद ।

- २८ चरोत्तर सब सग्रह
(खेडा जिला) स० नाकमन प्रकाशन नडियाद ।
- ६ छोटमनो वाणी
(भाग १ से ३) मस्तु साहित्य वधक कार्यालय
अहमदाबाद ।
- ३० छोटमनो वाणी
(भाग १ से ४) मस्तु साहित्य वधक कार्यालय
अहमदाबाद ।
- ३१ छोटमकृत काव्य सग्रह
(भाग १) स० बमीनाल मणिलाल मेहता
भक्त जीवाजी किशोरदास स्मारक
ट्रस्टी मडल अहमदाबाद ।
- ४२ दिवाने सागर (भाग १ २) श्री जगन्नाथ दामोदर त्रिपाठी
प्र० जीवनलाल अमरमी मेहता
अहमदाबाद ।
- ३३ नवीन काव्य दोहन प्र० तथा स० श्री विनयचंद
गुलाबचंद शाह ।
- ३४ नभूवाणी स० नरभेराम प्राणकर भट्ट
गुजराती प्रिंटिंग प्रेस बम्बई ।
- ३५ नित्यानंद चरितामृत श्री कृष्णदत्त सूरि प्रणीत
(अनु० मंगलजी उद्धवजी)
निजानंद प्रेम जामनगर ।
- ३६ निरात काव्य स० गायानराम गर्मा
निरात मन्दि बडोदा ।
- ३७ नृसिंह वाणी विलास श्री नृसिंहाचार्य
(भाग १ से ३) श्रय साधक अधिकारी बंग
अहमदाबाद ।
- ३८ परिचित पद सग्रह मस्तु साहित्य वधक कार्यालय
अहमदाबाद ।
- २९ पद सग्रह (सतराम महाराज) श्री पुत्राभाई गामलभाई
सतराम मन्दि नडियाद ।
- ४० प्राचीन काव्य सुधा स० हृदयनाल विद्याराम रावल,
(भाग १ से ५) प्र० हमराज पुरुषोत्तम मावजी ।
- ४१ प्राचीन काव्य माला (भाग २) (कवयनपुराहित कविता)

- ४२ प्राचीन काव्य माला (भाग ५) (भाजाकृत कविता)
- ४३ प्राचीन काव्य माला (भाग ६) (राधावाईकृत कविता)
- ४४ प्राचीन काव्य माला (भाग ७) (बापु साहबकृत कविता)
- ४५ प्राचीन काव्य माला (भाग १०) (निराकृत कविता)
- ४६ प्राचीन काव्य माला (भाग २३ से २५) (धाराकृत कविता)
- ४७ प्राचीन काव्य (तन्मासिक फाइने)
- ४८ प्राचीन काव्य विनोद (भाग १) प्र० फावस गुजराती ग्रन्थमाला बम्बई । सन् १९४७ ।
- ४९ प्राचीन गुजराती छन्दो श्री रामनारायण विश्वनाथ पाठक, गुजरात विद्या सभा अहमदाबाद ।
- ५० प्रीतमदासना पदो सस्तु साहित्य बंधक कार्यालय, अहमदाबाद ।
- ५१ प्रीतमदासनी वाणी सस्तु साहित्य बंधक कार्यालय, अहमदाबाद ।
- ५२ महोत्सव ग्रन्थ प्र० फावस गुजराती सभा बम्बई ।
- ५३ बुद्धि प्रकाश (मासिक) अंक ८ अगस्त १९०१ ।
- ५४ वृहत विगत श्री रामनारायण विश्वनाथ पाठक गुजरात साहित्य परिषद् बम्बई । सन् १९५५ ई० ।
- ५५ वृहद काव्य दोहन (भाग १ से ८) स० इच्छाराम सूपराम नगई गुजराती प्रिंटिंग प्रेस बम्बई ।
- ५६ भजन सागर (भाग १ २) प्र० सस्तु साहित्य बंधक कार्यालय अहमदाबाद ।
- ५७ भजनिक काव्य सग्रह स० नृनाथनानान कानजी ।
- ५८ भारतीय सत्कारो अने ॥ दुर्गावत्त बे० नास्वी । तेनु गुजरात मा अवतरक
- ५९ भारतीय भाषाओं को समीक्षा (प० १, भाग २) ज्योत्र प्रियमन (अनु श्री क का नास्वी) फावस गुजराती सभा बम्बई ।

- ६ मध्यकालीन गुजराती साहित्य आचार्य अनतराय रावत
मकमिनन कम्पनी, बम्बई ।
- ६१ मध्यकालीन साहित्य प्रकारो डा० चन्द्रकान महेता
एन एम त्रिपाठी प्रा० नि० बम्बई
- ६२ मोरारबाई एक मनन डा० मजुवान मजमुनार
म० म० वि० त्रि० बलीग ।
- ६३ रविभाण अन सस्तु साहित्य बंधक कार्यालय
मोरारनी वाणी अहमदाबाद ।
- ६४ रविभाण सम्प्रदायनी वाणी स० न० म० भाणी बम्बई ।
- ६५ साहित्य प्रवेणिका श्री हिमतलाल ग० भ्रजारिया
एन० एम० त्रिपाठी प्रा० नि०
बम्बई ।
- ६६ सोरठी सतो श्री भवेरचंद मघाणी ।
- ६७ सोराष्ट्र सब सग्रह श्री नमदागकर सन् १८८८ इ०।
- ६८ सिद्धहेम आचार्य हेमचन्द्राचार्य ।
- ६९ सतोनी वाणी स० भगवानजी महाराज
सन् १९२० इ० ।
- ७० श्री अष्टाजीनी साखियो स० क० ए० ठाकर ।
- ७१ शाक्त सम्प्रदाय दी० ब नमदागकर द० महता
फावम गुजराता मभा बम्बई ।

अंग्रेजी ग्रन्थ—

- 1 A Critical Edition of Narahari s
Jnan Gita—By Suresh H Joshi
- 2 A History of Gujarat Vol II
By M S Commissariat
- 3 An Anthology of Critical Statements
- 4 Classical Poets of Gujarat—
& Their influence on Society & Morals By G Tripathi
- 5 Encyclopedia of Religion & Ethics By James Hastings
- 6 Formation of Maha Gujarat Maha Gujarat Parshad
V V Nagar 1954
- 7 Gujarat & Its Literature By Dr K M Munshi
- 8 Gazetteer of India (Gujarat State Surat Dist)
- 9 Gorakhnath & Kanphata Yogi By Briggs
- 10 Gujarati Phonology By Prof R L Turner
- 11 Kevalatwata in Gujarati Poetry
By Dr Yogindra Tripathi
- 12 Medieval Mysticism of India By K Sen
- 13 Main Tendencies in Medieval Gujarati Literature
By Dr M R Majumdar
- 14 Old Gujarati & Old Western Rajasthan
By Dr L P Tessitory
- 15 Philosophy of Akhaji, By K M Thakar
- 16 The Glory that was Gurjardesh (Val I II III)
By Dr K M Munshi
- 17 The Indian Philosophy (Vol I)
By S Dasgupta



अंग्रेजी ग्रन्थ—

- 1 A Critical Edition of Narahari s
Jnan Gita-By Suresh H Joshi
- 2 A History of Gujarat Vol II
By M S Commissariat
- 3 An Anthology of Critical Statements
- 4 Classical Poets of Gujarat—
& Their influence on Society & Morals By G Tripathi
- 5 Encyclopedia of Religion & Ethics By James Hastings
- 6 Formation of Maha Gujarat Maha Gujarat Parshad
V V Nagar 1954
- 7 Gujarat & Its Literature By Dr K M Munshi
- 8 Gazetteer of India (Gujarat State Surat Dist)
- 9 Gorakhnath & Kanphata Yogi By Briggs
- 10 Gujarati Phonology By Prof R L Turner
- 11 Kavalatwata in Gujarati Poetry
By Dr Yogindra Tripathi
- 12 Medieval Mysticism of India By K Sen
- 13 Main Tendencies in Medieval Gujarati Literature
By Dr M R Majumdar
- 14 Old Gujarati & Old Western Rajasthan
By Dr L P Tessitorty
- 15 Philosophy of Akhaji, By K M Thakar
- 16 The Glory that was Gurjardesh (Val I II III)
By Dr K M Munshi
- 17 The Indian Philosophy (Vol I)
By S Dasgupta

